Table of Contents

कॉपीराइट पृष्ठ
समर्पण
अंतर्वस्तु
पढ़ना शुरू करें
प्रस्तावना
अध्याय एक: इतिहास शिक्षक
अध्याय दो: रहस्य और गहराता है
अध्याय तीन: इतिहास के दुख
अध्याय चार: पुलिस से मुलाकात
अध्याय पाँच: अप्रत्याशित घटना
अध्याय छह: एक आगंतुक
अध्याय सात: नए संदिग्ध?
अध्याय आठ: भृगु का पुत्र
अध्याय नौ: माया का ताबीज
अध्याय दस: नोटबुक
अध्याय ग्यारह: कुछ अप्रत्याशित समाचार
अध्याय बारह: मदद के लिए एक अत्यावश्यक पुकार
अध्याय तेरह: एक और रहस्य
अध्याय चौदह, सबके सामने छिपा हुआ
अध्याय पंद्रह: कपूर की पड़ताल
अध्याय सोलह: रक्षक का आगमन
अध्याय सत्रह: डायरी
अध्याय अठारह: सपना
अध्याय उन्नीस पन्ना
अध्याय बीस: पांडवों का पतन
अध्याय इक्कीस: चट्टान की दीवार पर
अध्याय बाईस: माया दिल्ली छोड़ देती है
अध्याय तेईस: संगीत की घाटी
अध्याय चौबीस: गंधर्व परिषद
कपूर के लिए पच्चीस नए रहस्य - अध्याय 25
अध्याय छब्बीस के उत्तर और प्रश्न
अध्याय सत्ताईस: शुक्र चिंतन करता है
अध्याय अट्ठाईस: कुछ उत्तर
अध्याय उनतीस: अतीत की कहानी
अध्याय तीस और रहस्योद्घाटन
अध्याय इकत्तीस: अर्जुन को सत्य का ज्ञान होता है

अध्याय बत्तीस: अप्रिय पुनर्मिलन
अध्याय तैंतीस: पार्क में
अध्याय चौंतीस: पार्क में गाड़ी चलाना
अध्याय पैंतीस: पार्क में आतंक
अध्याय छत्तीस: जंगल से होकर उड़ान
अध्याय सैंतीस: खुले मैदान में आतंक
कपूर की फाइलों का अध्याय अड़तीस
अध्याय उनतीस: शुक्र की सेना
अध्याय चालीस: गुरुकुल का युद्ध
Chapter Forty-one Gurukul
अध्याय बयालीस: महामती परिषद
अध्याय तैंतालीस: परिषद की बहसें
अध्याय चौवालीस: परिषद के लिए और प्रश्न
अध्याय पैंतालीस: विचारों का आदान-प्रदान
अध्याय छियालीस: गुरुकुल में आपका स्वागत है
अध्याय सैंतालीस: माया चिंतन करती है
अध्याय अड़तालीसवाँ गुरुकुल दिवस 1
अध्याय उनतालीस: संघ के बारे में
अध्याय इक्यावनवाँ पाठ
अध्याय इक्यावन: कपूर की जांच
अध्याय बावन: ट्रैक और तरकीबें
अध्याय तिरपन: कपूर की खोज
अध्याय चौवन: अभिलेखागार
अध्याय पचपन: माया फिर से सपने देखती है
अध्याय छप्पन: माया अपनी परेशानियाँ साझा करती है
अध्याय सत्तावन में तिवारी की व्याख्या
अध्याय अट्ठावन: माया की योजना
अध्याय उनसठ: उत्तरों की तलाश
अध्याय साठ - अर्जुन चिंतन करता है
अध्याय इकसठ: अर्जुन को झटका लगा
अध्याय बासठ: युद्ध अभ्यास
अध्याय 63: और रहस्य
अध्याय चौंसठ गुप्त योजनाएँ
अध्याय पैंसठ - गंधर्व घाटी की ओर वापसी
अध्याय छियासठ: विश्ववासु से मुलाकात
अध्याय सड़सठ: ब्रह्मभाषा पर और अधिक जानकारी
अध्याय अड़सठ: गर्म पानी
अध्याय उनसठ: परिषद की बहसें
अध्याय सत्तर: माया फिर से यात्रा पर निकलती है
अध्याय इकहत्तर - एक महर्षि के साथ वार्तालाप

अध्याय बहत्तर: सत्यवचन की सलाह
अध्याय तिहत्तर: विश्वराज की खोज
अध्याय चौहत्तर: सत्यवचन का आगमन
अध्याय पचहत्तर: माया का रहस्य
अध्याय छिहत्तर: यात्रा का समय
अध्याय सतहत्तर: गुरुकुल की घेराबंदी
अध्याय अठहत्तर: खोया हुआ शहर
अध्याय उनहत्तर संदेह
अध्याय अस्सी: छिपा हुआ द्वीप
अध्याय इक्यासी - अंतिम संघर्ष
अध्याय बयासी: बहुत देर हो चुकी है
अध्याय 83: गेस्टहाउस पर हमला
अध्याय चौरासी: अंतिम युद्ध
अध्याय पचासी - सप्त
उपसंहार
लेखक का नोट
उच्चारण कुंजी
स्वीकृतियाँ
क्या आप क्वेस्ट क्लब में शामिल हो गए हैं?

THE पाताल भविष्यवाणी

भृगु के पुत्र

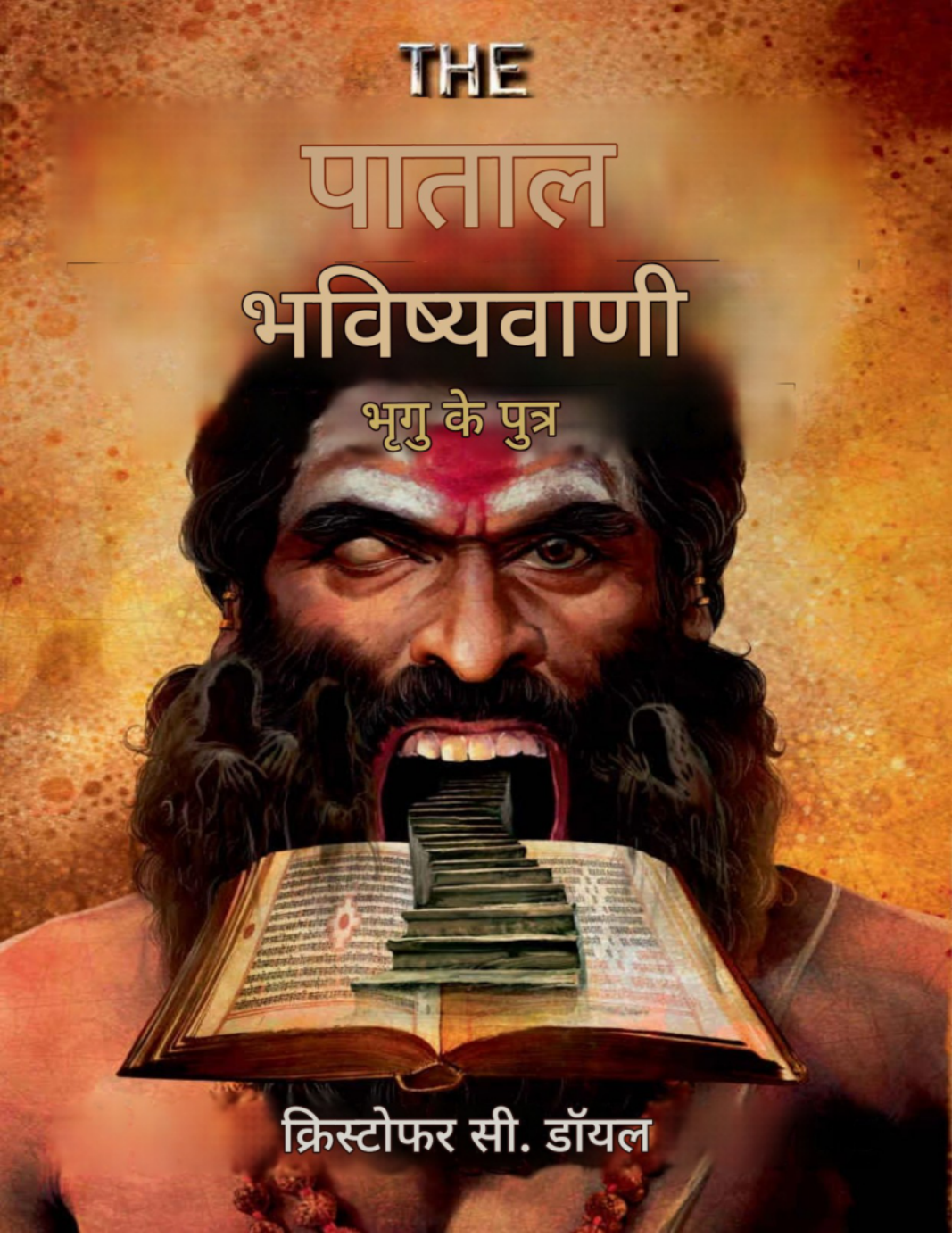

क्रिस्टोफर सी. डॉयल

Table of Contents

शीर्षक पेज
कॉपीराइट पृष्ठ
समर्पण
अंतर्वस्तु
पढ़ना शुरू करें
प्रस्तावना
अध्याय एक: इतिहास शिक्षक
अध्याय दो: रहस्य और गहराता है
अध्याय तीन: इतिहास के दुख
अध्याय चार: पुलिस से मुलाकात
अध्याय पाँच: अप्रत्याशित घटना
अध्याय छह: एक आगंतुक
अध्याय सात: नए संदिग्ध?
अध्याय आठ: भृगु का पुत्र
अध्याय नौ: माया का ताबीज
अध्याय दस: नोटबुक
अध्याय ग्यारह: कुछ अप्रत्याशित समाचार
अध्याय बारह: मदद के लिए एक अत्यावश्यक पुकार
अध्याय तेरह: एक और रहस्य
अध्याय चौदह, सबके सामने छिपा हुआ
अध्याय पंद्रह: कपूर की पड़ताल
अध्याय सोलह: रक्षक का आगमन
अध्याय सत्रह: डायरी
अध्याय अठारह: सपना
अध्याय उन्नीस पन्ना
अध्याय बीस: पांडवों का पतन
अध्याय इक्कीस: चट्टान की दीवार पर
अध्याय बाईस: माया दिल्ली छोड़ देती है
अध्याय तेईस: संगीत की घाटी
अध्याय चौबीस: गंधर्व परिषद
कपूर के लिए पच्चीस नए रहस्य - अध्याय 25
अध्याय छब्बीस के उत्तर और प्रश्न
अध्याय सत्ताईस: शुक्र चिंतन करता है
अध्याय अट्ठाईस: कुछ उत्तर

अध्याय उनतीस: अतीत की कहानी
अध्याय तीस और रहस्योद्घाटन
अध्याय इकत्तीस: अर्जुन को सत्य का ज्ञान होता है
अध्याय बत्तीस: अप्रिय पुनर्मिलन
अध्याय तैंतीस: पार्क में
अध्याय चौंतीस: पार्क में गाड़ी चलाना
अध्याय पैंतीस: पार्क में आतंक
अध्याय छत्तीस: जंगल से होकर उड़ान
अध्याय सैंतीस: खुले मैदान में आतंक
कपूर की फाइलों का अध्याय अड़तीस
अध्याय उनतीस: शुक्र की सेना
अध्याय चालीस: गुरुकुल का युद्ध
Chapter Forty-one Gurukul
अध्याय बयालीस: महामती परिषद
अध्याय तैंतालीस: परिषद की बहसें
अध्याय चौवालीस: परिषद के लिए और प्रश्न
अध्याय पैंतालीस: विचारों का आदान-प्रदान
अध्याय छियालीस: गुरुकुल में आपका स्वागत है
अध्याय सैंतालीस: माया चिंतन करती है
अध्याय अड़तालीसवाँ गुरुकुल दिवस 1
अध्याय उनतालीस: संघ के बारे में
अध्याय इक्यावनवाँ पाठ
अध्याय इक्यावन: कपूर की जांच
अध्याय बावन: ट्रैक और तरकीबें
अध्याय तिरपन: कपूर की खोज
अध्याय चौवन: अभिलेखागार
अध्याय पचपन: माया फिर से सपने देखती है
अध्याय छप्पन: माया अपनी परेशानियाँ साझा करती है
अध्याय सत्तावन में तिवारी की व्याख्या
अध्याय अट्ठावन: माया की योजना
अध्याय उनसठ: उत्तरों की तलाश
अध्याय साठ - अर्जुन चिंतन करता है
अध्याय इकसठ: अर्जुन को झटका लगा
अध्याय बासठ: युद्ध अभ्यास
अध्याय 63: और रहस्य

अध्याय चौंसठ गुप्त योजनाएँ
अध्याय पैंसठ - गंधर्व घाटी की ओर वापसी
अध्याय छियासठ: विश्ववासु से मुलाकात
अध्याय सड़सठ: ब्रह्मभाषा पर और अधिक जानकारी
अध्याय अड़सठ: गर्म पानी
अध्याय उनसठ: परिषद की बहसें
अध्याय सत्तर: माया फिर से यात्रा पर निकलती है
अध्याय इकहत्तर - एक महर्षि के साथ वार्तालाप
अध्याय बहत्तर: सत्यवचन की सलाह
अध्याय तिहत्तर: विश्वराज की खोज
अध्याय चौहत्तर: सत्यवचन का आगमन
अध्याय पचहत्तर: माया का रहस्य
अध्याय छिहत्तर: यात्रा का समय
अध्याय सतहत्तर: गुरुकुल की घेराबंदी
अध्याय अठहत्तर: खोया हुआ शहर
अध्याय उनहत्तर संदेह
अध्याय अस्सी: छिपा हुआ द्वीप
अध्याय इक्यासी - अंतिम संघर्ष
अध्याय बयासी: बहुत देर हो चुकी है
अध्याय 83: गेस्टहाउस पर हमला
अध्याय चौरासी: अंतिम युद्ध
अध्याय पचासी - सप्त
उपसंहार
लेखक का नोट
उच्चारण कुंजी
स्वीकृतियाँ
क्या आप क्वेस्ट क्लब में शामिल हो गए हैं?

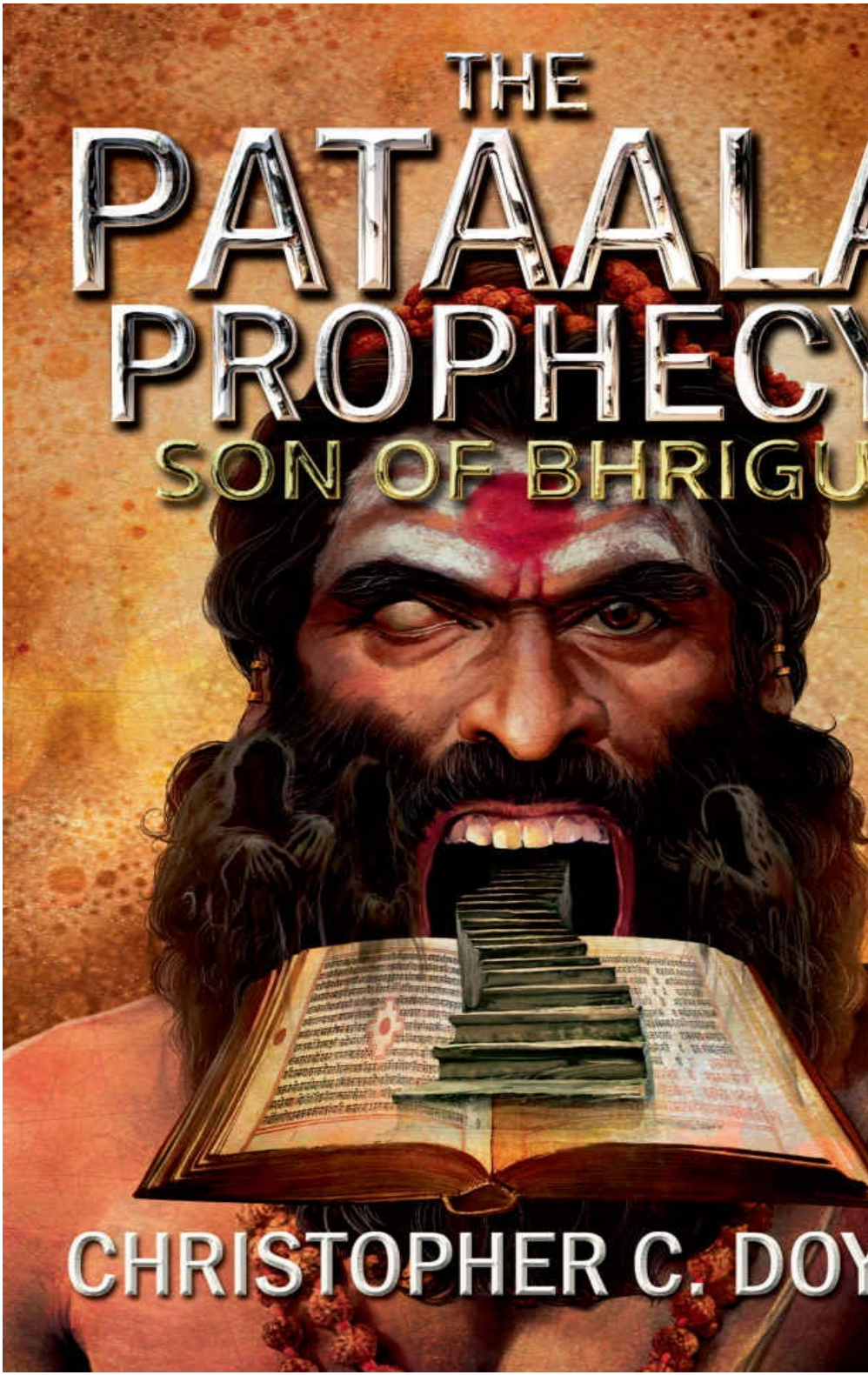
THE
PATAALA
PROPHECY
SON OF BHRIGU
CHRISTOPHER C. DOY

भृगु के पुत्र

क्रिस्टोफर सी. डॉयल बेहद लोकप्रिय महाभारत क्वेस्ट सीरीज़ के लेखक हैं। अपने पहले उपन्यास के प्रकाशन से पहले, क्रिस्टोफर ने दिल्ली के सेंट स्टीफंस कॉलेज और कोलकाता के आईआईएम से स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद कॉर्पोरेट जगत में अपना करियर बनाया। क्रिस्टोफर एक संगीतकार भी हैं और मिड लाइफ क्राइसिस नामक अपने बैंड के माध्यम से संगीत के प्रति अपने जुनून को जीते हैं। वे अपने परिवार के साथ नई दिल्ली में रहते हैं।

क्रिस्टोफर से निम्नलिखित पते पर संपर्क किया जा सकता है:
वेबसाइट: www.christophercdoyle.com
ईमेल: contact@christophercdoyle.com
www.facebook.com/authorchristophercdoyle
द क्वेस्ट क्लब: www.christophercdoyle.com/the-quest-club

क्रिस्टोफर सी. डॉयल द्वारा भी।

महाभारत का रहस्य

महाभारत खोज श्रृंखला

पुस्तक 1: अलेक्जेंडर का रहस्य

पुस्तक 2: ड्रुइड्स का रहस्य

एक रहस्य उजागर हुआ

The Pataala Prophecy: Book I

Son of Bhrigu

Christopher C. Doyle

वेस्टलैंड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड द्वारा प्रथम प्रकाशन, 2018, 61, द्वितीय मंजिल, सिल्वरलाइन बिल्डिंग, अलापक्कम मेन रोड, मदुरवॉयल, चेन्नई 600095
वेस्टलैंड और वेस्टलैंड लोगो, वेस्टलैंड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड या उसकी सहयोगी कंपनियों के ट्रेडमार्क हैं।
पाठ का कॉपीराइट © क्रिस्टोफर सी. डॉयल 2018
क्रिस्टोफर सी. डॉयल इस कृति के लेखक के रूप में पहचाने जाने के नैतिक अधिकार का दावा करते हैं।
ISBN: 9789386850478
10 9 8 7 6 5 4 3 2 1
यह एक काल्पनिक रचना है। नाम, पात्र, संगठन, स्थान, घटनाएँ और प्रसंग या तो लेखक की कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक रूप से प्रयुक्त किए गए हैं।
सर्वाधिकार सुरक्षित
आर. अजित कुमार द्वारा टाइपसेट किया गया
प्रकाशक की स्पष्ट लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक का कोई भी भाग पुनरुत्पादित, किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत या किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्यथा प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

यह पुस्तक मेरे जीवन के सभी शिक्षकों को समर्पित है।

जिन्होंने मुझे एक व्यक्ति के रूप में विकसित किया और मुझे वह बनाया जो मैं आज हूं।

जिसने मुझे गुरुकुल में अपनी विशेष शक्तियों को खोजने में सक्षम बनाया।

ज़िंदगी

और

आशा मिशिगन की स्मृति में।

अंतर्वस्तु

पढ़ना शुरू करें
प्रस्तावना
अध्याय एक: इतिहास शिक्षक
अध्याय दो: रहस्य और गहराता है
अध्याय तीन: इतिहास के दुख
अध्याय चार: पुलिस से मुलाकात
अध्याय पाँच: अप्रत्याशित घटना
अध्याय छह: एक आगंतुक
अध्याय सात: नए संदिग्ध?
अध्याय आठ: भृगु का पुत्र
अध्याय नौ: माया का ताबीज
अध्याय दस: नोटबुक
अध्याय ग्यारह: कुछ अप्रत्याशित समाचार
अध्याय बारह: मदद के लिए एक अत्यावश्यक पुकार
अध्याय तेरह: एक और रहस्य
अध्याय चौदह, सबके सामने छिपा हुआ
अध्याय पंद्रह: कपूर की पड़ताल
अध्याय सोलह: रक्षक का आगमन
अध्याय सत्रह: डायरी
अध्याय अठारह: सपना
अध्याय उन्नीस पन्ना
अध्याय बीस: पांडवों का पतन
अध्याय इक्कीस: चट्टान की दीवार पर
अध्याय बाईस: माया दिल्ली छोड़ देती है
अध्याय तेईस: संगीत की घाटी
अध्याय चौबीस: गंधर्व परिषद
कपूर के लिए पच्चीस नए रहस्य - अध्याय 25
अध्याय छब्बीस के उत्तर और प्रश्न
अध्याय सत्ताईस: शुक्र चिंतन करता है
अध्याय अट्ठाईस: कुछ उत्तर

अध्याय उनतीस: अतीत की कहानी

अध्याय तीस और रहस्योद्घाटन

अध्याय इकत्तीस: अर्जुन को सत्य का ज्ञान होता है

अध्याय बत्तीस: अप्रिय पुनर्मिलन

अध्याय तैंतीस: पार्क में

अध्याय चौंतीस: पार्क में गाड़ी चलाना

अध्याय पैंतीस: पार्क में आतंक

अध्याय छत्तीस: जंगल से होकर उड़ान

अध्याय सैंतीस: खुले मैदान में आतंक

कपूर की फाइलों का अध्याय अड़तीस

अध्याय उनतीस: शुक्र की सेना

अध्याय चालीस: गुरुकुल का युद्ध

Chapter Forty-one Gurukul

अध्याय बयालीस: महामती परिषद

अध्याय तैंतालीस: परिषद की बहसें

अध्याय चौवालीस: परिषद के लिए और प्रश्न

अध्याय पैंतालीस: विचारों का आदान-प्रदान

अध्याय छियालीस: गुरुकुल में आपका स्वागत है

अध्याय सैंतालीस: माया चिंतन करती है

अध्याय अड़तालीसवाँ गुरुकुल दिवस 1

अध्याय उनतालीस: संघ के बारे में

अध्याय इक्यावनवाँ पाठ

अध्याय इक्यावन: कपूर की जांच

अध्याय बावन: ट्रैक और तरकीबें

अध्याय तिरपन: कपूर की खोज

अध्याय चौवन: अभिलेखागार

अध्याय पचपन: माया फिर से सपने देखती है

अध्याय छप्पन: माया अपनी परेशानियाँ साझा करती है

अध्याय सत्तावन में तिवारी की व्याख्या

अध्याय अट्ठावन: माया की योजना

अध्याय उनसठ: उत्तरों की तलाश

अध्याय साठ - अर्जुन चिंतन करता है

अध्याय इकसठः अर्जुन को झटका लगा

अध्याय बासठः युद्ध अभ्यास

अध्याय **63:** और रहस्य

अध्याय चौंसठ गुप्त योजनाएँ

अध्याय पैंसठ - गंधर्व घाटी की ओर वापसी

अध्याय छियासठ: विश्ववासु से मुलाकात

अध्याय सड़सठ: ब्रह्मभाषा पर और अधिक जानकारी

अध्याय अड़सठ: गर्म पानी

अध्याय उनसठ: परिषद की बहसें

अध्याय सत्तर: माया फिर से यात्रा पर निकलती है

अध्याय इकहत्तर - एक महर्षि के साथ वार्तालाप

अध्याय बहत्तर: सत्यवचन की सलाह

अध्याय तिहत्तर: विश्वराज की खोज

अध्याय चौहत्तर: सत्यवचन का आगमन

अध्याय पचहत्तर: माया का रहस्य

अध्याय छिहत्तर: यात्रा का समय

अध्याय सतहत्तर: गुरुकुल की घेराबंदी

अध्याय अठहत्तर: खोया हुआ शहर

अध्याय उनहत्तर संदेह

अध्याय अस्सी: छिपा हुआ द्वीप

अध्याय इक्यासी - अंतिम संघर्ष

अध्याय बयासी: बहुत देर हो चुकी है

अध्याय **83:** गेस्टहाउस पर हमला

अध्याय चौरासी: अंतिम युद्ध

अध्याय पचासी - सप्त

उपसंहार
लेखक का नोट
उच्चारण कुंजी
स्वीकृतियाँ
क्या आप क्वेस्ट क्लब में शामिल हो गए हैं?

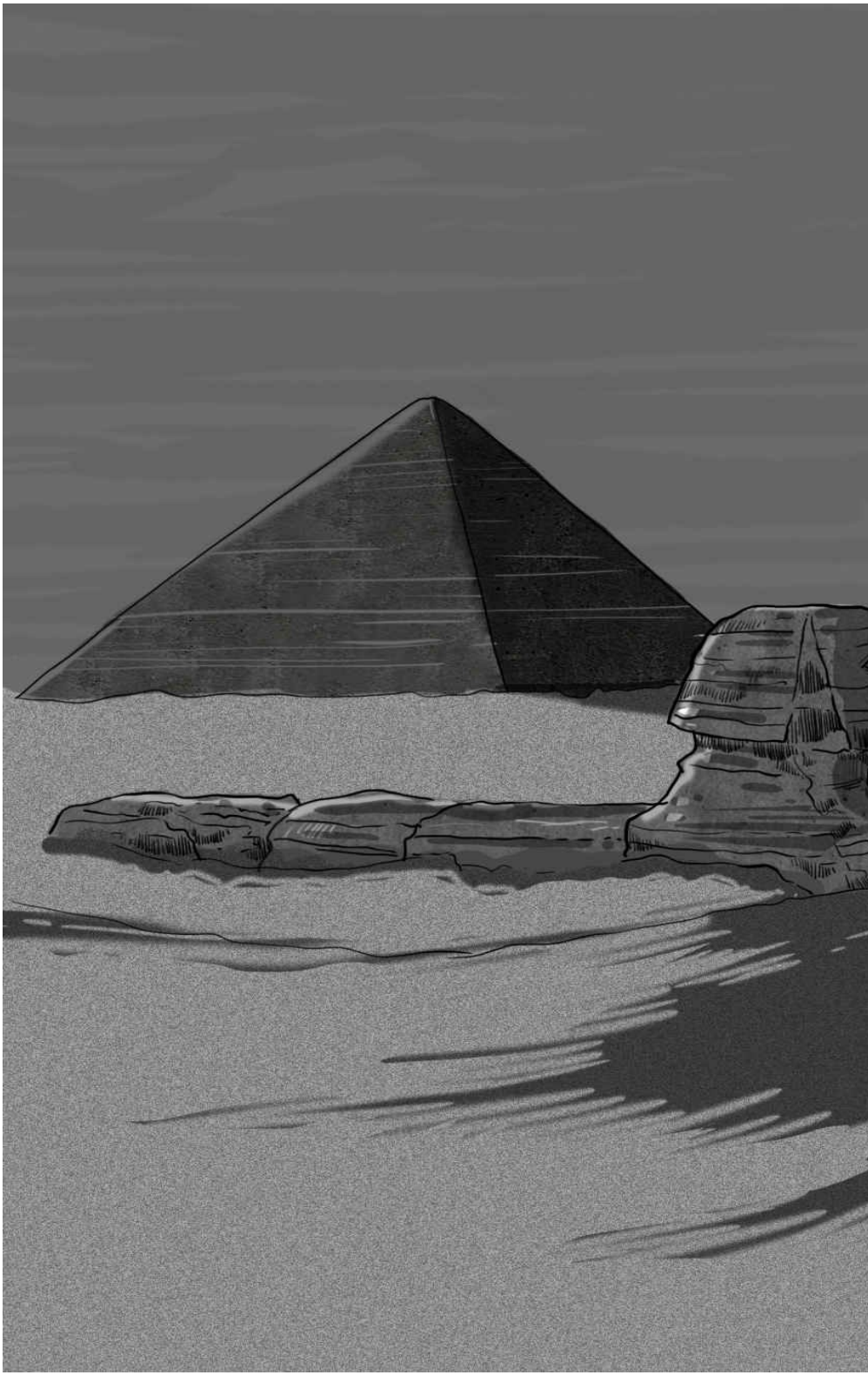

प्रियंका गुप्ता द्वारा बनाया गया चित्र

प्रस्तावना

सितंबर, 1799

गीज़ा, मिस्र

लुई एलेक्जेंडर बर्थियर ने चारों ओर देखा और कांप उठा।

लेकिन ठंड की वजह से नहीं।

यह उनका स्थान था।

सूरज के उदय के सामने रात अभी ढलना शुरू नहीं हुई थी, और रेगिस्तान के ऊपर फैले विशाल तारों के आवरण के किनारों पर उसके अंतिम निशान अभी भी बाकी थे। मौसम सुहावना था, लेकिन इतना ठंडा नहीं कि हवा में ठंडक महसूस हो।

कुछ और ही बात उसे परेशान कर रही थी। अनेक युद्धों का अनुभवी होने के नाते, उसे शायद ही कोई चीज़ विचलित कर पाती थी। फिर भी, आज रात उसे एक ऐसी बेचैनी महसूस हो रही थी जिसका अनुभव उसने पहले कभी नहीं किया था।

बर्थियर ने अपने साथ मौजूद दोनों सैनिकों के चेहरों पर एक नज़र डाली। मशालों की रोशनी में, उनके चेहरों पर उसकी अपनी चिंता, घबराहट और - हालांकि वह इसे स्वीकार करने से कतरा रहा था - डर झलक रहा था।

उन्होंने रात का अधिकांश समय गीज़ा पठार पर स्थित तीन पिरामिडों में से सबसे बड़े पिरामिड के आधार पर बने एक छोटे, अस्थायी शिविर में बिताया था। यह पिरामिड सैकड़ों फीट ऊँचा था, जिसका शिखर अंधेरे में खो गया था और इसका आधार उनकी मशालों की लौ की हल्की रोशनी से लगभग जगमगा रहा था।

कुछ ही दूरी पर एक और आकृति उभर रही थी - विशालकाय मानव-पशु की मूर्ति का सिर, अपने रहस्यमय भावों के साथ, जिसे आमतौर पर 'स्फ़िंक्स' के नाम से जाना जाता है। सदियों से रेत के टीलों के निरंतर विस्तार ने स्फ़िंक्स के पत्थर के शरीर के अधिकांश भाग को ढक दिया था, केवल सिर ही दिखाई दे रहा था।

इस जगह में कुछ अजीब सी बेचैनी थी। वह अपनी मर्जी से यहाँ नहीं आया होगा। फिर भी, उनके पास और क्या विकल्प था?

बर्थियर उन घटनाओं पर विचार कर रहे थे जो उन्हें यहाँ तक ले आई थीं। पिछले बारह महीने मिस्र में सैन्य अभियानों में बीते थे, जिनमें से सभी सफल नहीं रहे थे। लेकिन नेपोलियन बोनापार्ट के नेतृत्व वाले अभियान की सबसे खास बात वहाँ के अद्भुत वास्तुशिल्पीय खंडहर थे - आकाश की ओर उठते पत्थर के मंदिर, जो गुरुत्वाकर्षण को चुनौती देते थे; हजारों साल पहले पत्थर से तराशी गई विशाल मूर्तियाँ, जो प्राचीन शासकों को दर्शाती थीं - और वह टूटा हुआ पत्थर का स्तंभ जिसे एक महीने पहले ही कैप्टन पियरे बौचार्ड ने खोजा था। इसे 'रोसेटा स्टोन' नाम दिया गया था और इसने इतिहासकारों के बीच अभूतपूर्व उत्साह पैदा कर दिया था क्योंकि इसने मिस्र की उस लिपि को समझने का एक ज़रिया पेश किया था जो अब तक समझ से परे थी और देश के मंदिरों और कब्रों में आम तौर पर खुदी हुई थी।

फिर अचानक नेपोलियन ने फैसला किया कि वह गीज़ा पठार पर स्थित तीनों पिरामिडों में से

सबसे बड़े पिरामिड के अंदर एक रात बिताएगा। किसी ने उसे बताया था कि सिकंदर और जूलियस सीज़र ने भी ऐसा किया था, और नेपोलियन उन महान सेनापतियों के बराबर बनने की महत्वाकांक्षा से प्रेरित हो गया।

नेपोलियन के चीफ ऑफ स्टाफ रहे बर्थियर ने अपने जनरल से तर्क-वितर्क किया और उन्हें समझाने की कोशिश की, लेकिन इसका कोई फायदा नहीं हुआ।

बर्थियर ने दावा किया था, 'यह महज एक कहानी, एक मिथक है। हम जानते हैं कि महान पिरामिड हजारों साल पहले तक सीलबंद और अछूता था, जब तक कि मोहम्मद अल-मामून ने सुरंग खोदकर उसमें प्रवेश नहीं किया। तब सिकंदर और सीज़र उसमें कैसे प्रवेश कर सकते थे? वे तो प्रभु यीशु के जन्म से सदियों पहले रहते थे।'

नेपोलियन ने अपना मन बना लिया था। इसलिए पिछली शाम को बर्थियर और दो सैनिक फ्रांसीसी जनरल के साथ पिरामिड के उत्तरी भाग में सदियों पहले अल मामून द्वारा बनाए गए छेद से निकलने वाले संकरे और कम छत वाले रास्तों से होकर गुजरे थे। मशालों की रोशनी में बड़ी मुश्किल से वे ढलानदार सुरंगों से ऊपर चढ़कर सबसे ऊंचे कक्ष में पहुंचे, जहां पत्थर का ताबूत रखा था, जिसके बारे में माना जाता था कि इसे फिरौन खुफू के शव को रखने के लिए बनाया गया था, जिसने अपने लिए एक भव्य मकबरे के रूप में पिरामिड का निर्माण कराया था। बेशक, खुफू का शव कभी नहीं मिला, क्योंकि पिरामिड खाली पाया गया था, जिसमें न तो फिरौन की ममी का कोई निशान था और न ही खजाने का, और मिस्र के मकबरों में पाए जाने वाले सर्वव्यापी शिलालेखों का भी कोई निशान नहीं था।

गंभीर आशंकाओं के साथ, बर्थियर और सैनिकों ने अपने जनरल को कमरे में छोड़ दिया और उनके निर्देशों के अनुसार, इमारत से बाहर निकलकर बाहर डेरा डाल दिया और भोर में उनके लौटने की प्रतीक्षा करने लगे।

नेपोलियन ने स्वयं चिंता या भय का कोई संकेत नहीं दिखाया था। वह जिज्ञासु और उत्साहित प्रतीत हो रहा था; कमरे के कोनों और ताबूत में झाँक रहा था, उसके पास छोड़े जाने वाले एकमात्र दीपक की रोशनी में कक्ष की खाली दीवारों का निरीक्षण कर रहा था।

बर्थियर फिर से कांप उठा। यह एक गलती थी; उसे अपने अंदर तक महसूस हो रहा था। नेपोलियन ने जिस कक्ष पर कब्ज़ा करने का फैसला किया था, उसमें एक अजीब सी खामोशी छाई हुई थी। पिछली रात जब वह नेपोलियन को वहाँ बसाने के लिए उसके साथ गया था, तब भी उसने यही महसूस किया था। ऐसा लग रहा था मानो उस पत्थर के कमरे में कोई अदृश्य शक्ति मौजूद हो। ताबूत भले ही खाली था, लेकिन बर्थियर को यह महसूस हो रहा था कि उस कक्ष में कुछ तो है। पिरामिड हज़ारों सालों से खाली और बंद पड़ा था, इसके मूल प्रवेश द्वार को बनाने वालों ने छुपा दिया था। क्या यह संभव था कि इन सदियों में कोई आत्मा या दानव वहाँ रहने लगा हो?

उसने अपना सिर हिलाया, यह सोचकर कि वह शायद कल्पना कर रहा है। अल-मामून के घुसपैठ के बाद से कई लोग पिरामिड के अंदर गए थे। फिर भी, किसी ने भी भूत-प्रेतों या आत्माओं के बारे में बात नहीं की थी।

एक सैनिक की चीख ने उसकी तल्लीनता भंग कर दी।

उसने पिरामिड के आधार की ओर देखा। एक काली मानव आकृति लड़खड़ाती और ठोकर खाती हुई उनकी ओर बढ़ती हुई दिखाई दी।

नेपोलियन!

बर्थियर तेजी से उठा और अपने सेनापति की ओर दौड़ा, दोनों सैनिक उसके पीछे-पीछे तेजी से भागे।

वह बाकियों से पहले नेपोलियन के पास पहुंचा और अपने सेनापति का चेहरा देखकर सदमे से पीछे हट गया।

सामान्य रूप से मजबूत दिखने वाले उनके चेहरे पर अब भय और हताशा का भाव छाया हुआ था। पिछली रात का उत्साह और आत्मविश्वास गायब हो चुका था। उनका चेहरा मानो रक्तहीन हो गया था और वे एक शव की तरह लग रहे थे। उनकी बाहें इस प्रकार फैली हुई थीं मानो वे किसी सहारे, सहायता या बचाव की तलाश में हों।

बर्थियर ने नेपोलियन की बाहों को पकड़ लिया और उसे सहारा दिया, क्योंकि शक्तिशाली जनरल ने राहत की सांस लेते हुए मानो अपना सारा वजन उस पर डाल दिया था।

दोनों सैनिक अभी भी थोड़ी दूरी पर थे।

'क्या हुआ?' बर्थियर ने पूछा। 'उस भयानक संरचना के अंदर आपको क्या देखने को मिला? मुझे बताओ!'

नेपोलियन ने अपना सिर हिलाया और क्षण भर के लिए बर्थियर की आंखों में देखा, मानो उसकी उलझन और भय दूर हो गए हों।

नेपोलियन की प्रतिक्रिया सुनकर बर्थियर का खून जम गया। जनरल की आवाज भय से कांप रही थी।

'अगर मैंने तुम्हें बताया तो तुम कभी मेरी बात पर विश्वास नहीं करोगे।'

अध्याय एक

इतिहास शिक्षक

पहला दिन

आज

नई दिल्ली, भारत

धनंजय त्रिवेदी जल्दी-जल्दी आगे बढ़ रहे थे और चलते समय घबराए हुए नजरों से इधर-उधर देख रहे थे।

एक गहरा, अंधकारमय भय उसकी आत्मा को जकड़ रहा था।

और उसे यह बात समझ नहीं आई।

धनंजय नई दिल्ली के एक प्रतिष्ठित विद्यालय में इतिहास के शिक्षक थे। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्वर्ण पदक विजेता धनंजय का शिक्षा जगत में खुले दिल से स्वागत किया जा रहा था। शिक्षक बनने पर उन्होंने कई लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया था। उन्हें अपना काम बेहद पसंद था और उससे भी बढ़कर, उनके छात्र उन्हें बहुत प्यार करते थे। शायद ही कोई ऐसा छात्र रहा होगा जो धनंजय की कक्षाओं की प्रशंसा न करता हो, जो कि बेहद मनोरंजक मानी जाती थीं। वे एक अद्भुत मार्गदर्शक थे, जो अपने छात्रों को इतिहास की राहों पर कहानियों के माध्यम से इस तरह ले जाते थे कि वे कक्षा में मंत्रमुग्ध हो जाते थे। धनंजय की रणनीति सरल थी। उनका मानना था कि यदि उनके छात्र इतिहास का अध्ययन करने में आनंद लेंगे, तो वे अधिक ध्यान देंगे, अधिक जिज्ञासु होंगे और अधिक सीखेंगे।

कुछ अन्य शिक्षक इस बात पर शिकायत करते थे कि छात्र धनंजय के प्रति कितने समर्पित थे। ऐसा लगता था मानो कक्षा में कदम रखते ही वह उन पर जादू कर देता था।

जिस बात का किसी को पता नहीं था, वह यह थी कि उस बेहद लोकप्रिय इतिहास शिक्षक का अपना एक रहस्य था।

यही रहस्य आज की इस मुलाकात का कारण बना, जिसने उसे वर्तमान में बेचैनी की स्थिति में डाल दिया है।

यह सब बिल्कुल सामान्य ढंग से शुरू हुआ था, जब त्रिवेदी स्कूल के गेट से बाहर निकले तो एक युवक उनके पास आया। युवक की उम्र लगभग किशोरावस्था के अंत में थी; निश्चित रूप से उन्नीस या बीस वर्ष से अधिक नहीं थी।

'शुभ दोपहर, महोदय,' उन्होंने त्रिवेदी का अभिवादन एक मोहक मुस्कान के साथ किया। 'मैं विश्वराज हूँ।' फिर उनकी आवाज़ थोड़ी धीमी और रहस्यमयी हो गई। 'क्या मैं आपसे कुछ बात कर सकता हूँ?'

त्रिवेदी ने उस नाम को पहचान लिया था। उसने पहले भी यह नाम सुना था। वह युवक गण समुदाय का सदस्य था। त्रिवेदी की जिज्ञासा बढ़ गई। वह युवक उससे क्या चाहता होगा?

बिना देर किए, विश्वराज ने उसे एक तरफ बुला लिया। उसके शब्द संक्षिप्त और सटीक थे। त्रिवेदी विश्वराज की बातों को सुनकर चकित रह गया।

'तो देखिए, महोदय,' विश्वराज ने बातचीत की शुरुआत में अपनाए गए नरम स्वर में कहा,

‘मुझे पता है कि लड़का जीवित है। और मैं जानना चाहता हूँ कि वह कहाँ है। आप मुझे बताएँगे या फिर कीमत चुकानी पड़ेगी।’

त्रिवेदी ने अपने सामने खड़े युवक का जायजा लिया। यह एक अप्रत्याशित घटना थी। संघ का एक सदस्य बागी हो गया था। वह विश्वराज के इरादों या उद्देश्यों को समझ नहीं पा रहे थे, लेकिन उन्हें यह भी पता था कि संघ को विश्वराज के धर्मत्याग के बारे में जानकारी नहीं थी। लेकिन फिलहाल वे कुछ नहीं कर सकते थे। संघ को ही इस स्थिति से निपटने का फैसला करना था।

‘मुझे तुम्हें कुछ बताने की ज़रूरत नहीं है,’ उसने उपहास उड़ाते हुए कहा। ‘तुम्हारे शब्द खोखली धमकी हैं। अगर तुमने कुछ भी करने की कोशिश की, तो तुम बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ जाओगे। और तुम यह जानते हो।’ वह रुका, फिर बोला, ‘वैसे भी, मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा कि तुम किस बारे में बात कर रहे हो।’

विश्वराज ने कुछ नहीं कहा। उसका युवा चेहरा कठोर था और उसकी आँखें शिक्षक को भेद रही थीं।

अचानक, त्रिवेदी के हृदय की गहराइयों में एक अनजाना भय जागृत हुआ। युवक को उसने भले ही हल्के में लिया हो, लेकिन उसे महसूस हुआ कि कुछ तो कमी है। कुछ ऐसा जो उसके अवचेतन मन को कुरेद रहा था, पर खुलकर सामने नहीं आ रहा था।

वह मुँह फेरकर चला गया। यह बैठक समाप्त हो चुकी थी। लेकिन घर जाते समय उसके मन में बार-बार एक ही विचार आ रहा था।

विश्वराज को उस लड़के के बारे में कैसे पता चला?

अपने अपार्टमेंट के बाहर खड़े होकर जब वह सामने के दरवाजे की चाबियों से जूझ रहा था, तो उसके दिमाग में कई तरह की संभावनाएं कौंध रही थीं। इस घटना को अनदेखा नहीं किया जा सकता था। खासकर इसलिए क्योंकि यह उस लड़के से संबंधित थी।

उसने लोहे की जाली वाला दरवाजा खोला, फिर अंदर के लकड़ी के दरवाजे की कुंडी खोली और अंदर कदम रखते हुए दोनों दरवाजों को अंदर से बंद कर दिया।

कुछ क्षणों के लिए वह दीवार से टिककर हांफने लगा। उसे अपनी घबराहट समझ में नहीं आ रही थी। विश्वराज तो बस एक शक्तिहीन युवक था, जो अपनी धमकी को पूरा करने में असमर्थ था। तो फिर उस लड़के से हुई संक्षिप्त बातचीत ने उसे इतना विचलित क्यों कर दिया था?

उसने झटपट अपना मोबाइल फोन निकाला और एक नंबर डायल किया। कॉल कनेक्ट होते ही वह तेजी से बोलने लगा और जो कुछ हुआ था उसका वर्णन करने लगा। दूसरी तरफ मौजूद व्यक्ति ने उसे दिलासा भरे शब्द कहे और उसे शांत किया, जिससे उसकी सांसें धीमी हो गईं।

बातचीत खत्म होते-होते त्रिवेदी लगभग संभल गए थे। उन्होंने कॉल काट दी और अपना फोन डाइनिंग टेबल पर रख दिया।

तभी उसे यह बात समझ में आई। विश्वराज से हुई मुलाकात के बाद से वह जिस वजह से बेचैन महसूस कर रहा था, उसका कारण उसे पता चल गया।

उसने इसे पहले क्यों नहीं देखा था?

जैसे ही सच्चाई का एहसास हुआ, अपार्टमेंट में आग लग गई। आग हर जगह फैल गई। ऐसा

लग रहा था मानो फ्लैट का हर कण एक ही क्षण में अचानक जल उठा हो।

त्रिवेदी को अब पता चल गया था कि विश्वराज के बारे में उसकी सोच गलत थी। उसने बहुत बड़ी गलती की थी। और उसे इसकी कीमत अपनी जान देकर चुकानी पड़ेगी। लेकिन इस बात से उसे उतना दुख नहीं था जितना इस तथ्य से कि अब किसी और को बताने में बहुत देर हो चुकी थी। वह बस यही उम्मीद कर सकता था कि उसकी मृत्यु दूसरों को चेतावनी देगी।

दुनिया का भविष्य दांव पर लगा था।

अध्याय दो

रहस्य और गहराता जा रहा है

दूसरा दिन
नई दिल्ली

पुलिस अधीक्षक रमन कपूर अपनी मेज पर रखी प्रारंभिक पोस्टमार्टम रिपोर्ट को टकटकी लगाकर देख रहे थे। आईपीएस के एक महत्वाकांक्षी युवा पुलिस अधिकारी, उन्हें स्वयं पुलिस आयुक्त द्वारा त्रिवेदी हत्याकांड का प्रभार सौंपा गया था।

और यह कितना सनसनीखेज मामला था! एक इतिहास शिक्षक की उसके ही फ्लैट में रहस्यमय परिस्थितियों में हत्या कर दी गई। वह मामले के पेचीदा तथ्यों पर विचार कर रहा था, साथ ही रिपोर्ट की सामग्री को समझने की कोशिश भी कर रहा था। कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था।

यह निराशा का भाव—स्पष्ट सुरागों का अभाव या आगे बढ़ने की दिशा का अभाव—ही कपूर के लिए इस मामले को रोमांचक बना रहा था। चुनौती ने उन्हें रोमांचित कर दिया था। अगर पुलिस कमिश्नर ने यह मामला उन्हें न सौंपा होता, तो पूरी संभावना थी कि वे इसे खुद ही मांग लेते, सिर्फ इसलिए कि उन्हें बिना किसी स्पष्ट सुराग के मामले को सुलझाने का रोमांच मिलता। उनकी उत्कृष्ट जांच-पड़ताल का रिकॉर्ड आईपीएस के उनके कई साथियों के लिए ईर्ष्या का विषय था। हालांकि जांच के उनके अपरंपरागत तरीकों को उनके वरिष्ठ अधिकारी हमेशा पसंद नहीं करते थे, फिर भी उनके आलोचक भी इस बात से सहमत थे कि कपूर का दृढ़ संकल्प बेजोड़ था। वे किसी भी मामले की गहराई में उतरते, हर सुराग की जांच करते, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो, और ऐसे सुराग खोज निकालते जो असंभव लगते थे, जब तक कि मामला सुलझ न जाए। उन्होंने हर परिस्थिति में सबसे जटिल मामलों को सुलझाने के लिए एक खौफनाक प्रतिष्ठा हासिल कर ली थी।

और यह शायद अब तक का सबसे कठिन मामला था जिसका उन्हें सामना करना पड़ा था। वे जांच को लेकर बेहद उत्साहित थे। यह मामला उनके करियर का सबसे अहम पड़ाव साबित हो सकता था।

कपूरी ने रिपोर्ट की अनगिनत बार समीक्षा की। अब तक उन्हें इसकी विषयवस्तु मुंह जुबानी याद हो चुकी थी।

त्रिवेदी के पड़ोसियों ने दिल दहला देने वाली चीखें सुनीं और स्कूल मास्टर के फ्लैट की ओर दौड़े, लेकिन उन्हें वह अंदर से बंद और ताला लगा हुआ मिला। अंदर जाने का कोई रास्ता नहीं था; बाहरी दरवाजा ठोस लोहे का बना था। पुलिस के आने का इंतजार करते हुए जब उन्होंने फ्लैट में घुसने की कोशिश की, तब तक त्रिवेदी की चीखें मंद पड़ चुकी थीं और उनकी जगह सन्नाटा छा गया था।

पुलिस एक घंटे बाद पहुंची। लोहे की ग्रिल वाले दरवाजे को काटकर अपार्टमेंट में प्रवेश करने के लिए आवश्यक औजार लाने में एक और घंटा लग गया।

त्रिवेदी का बेजान शरीर डाइनिंग टेबल के बगल में फर्श पर पड़ा था, जिस पर उनका मोबाइल

फोन रखा था। फ्लैट में सरसरी नज़र डालने पर पता चला कि किसी भी चीज़ को छेड़ा या हटाया नहीं गया था। भला चोरी कैसे हो सकती थी? प्रवेश द्वार के दोनों दरवाजे अंदर से बंद थे - पुलिस को अंदर जाने के लिए लोहे के साथ-साथ लकड़ी के दरवाजे भी तोड़ने पड़े थे।

तभी पहला रहस्य सामने आया। पड़ोसियों को चीख-पुकार और दर्द भरी आवाज़ों से आगाह होने के बावजूद, शिक्षक के शरीर पर चोट के कोई निशान नहीं थे। मृत्यु के कारण का कोई संकेत नहीं मिला। शव परीक्षण का आदेश दिया गया।

और अब जब पोस्टमार्टम के शुरुआती नतीजे आ चुके थे, तो उन्होंने कई नए सवाल खड़े कर दिए थे।

मृत व्यक्ति के आंतरिक अंगों में तीव्र ताप के सभी लक्षण दिखाई दे रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो त्रिवेदी किसी धधकती आग में फंस गए हों, बच निकलने में असमर्थ रहे हों और अंततः जिंदा जल गए हों। रिपोर्ट में उनके अंगों के रंग और बनावट का विस्तृत वर्णन किया गया था, जिससे यह निष्कर्ष स्पष्ट हो गया कि उन्हें पांचवीं डिग्री का जलने का घाव था। उस व्यक्ति के बचने की कोई उम्मीद नहीं थी।

रहस्य यहीं छिपा था। पांचवीं डिग्री के जलने से आमतौर पर होने वाले झुलसने के निशानों के विपरीत, त्रिवेदी की त्वचा बिल्कुल अक्षुण्ण थी। वास्तव में, उनके वस्त्र भी सुरक्षित थे। ऐसा लग रहा था मानो आग ने उनके आंतरिक अंगों को जलाकर राख कर दिया हो और उनकी त्वचा और वस्त्र अछूते रहे हों।

बात यहीं खत्म नहीं हुई। त्रिवेदी के फेफड़ों में धुएं के साँस लेने या दम घुटने से मौत का कोई संकेत नहीं मिला, जो भीषण आग में फंसे लोगों की मौत का एक आम कारण है। उनके फेफड़े और श्वसन मार्ग साफ थे, या यूँ कहें कि नई दिल्ली जैसे प्रदूषित शहर में रहने के दौरान वे जितने साफ हो सकते थे, उतने साफ थे।

कपूरी को यह बात समझ नहीं आ रही थी। क्या पोस्टमार्टम में कुछ छूट गया था? जब किसी व्यक्ति के कपड़े और त्वचा आग से अछूते थे, तो आंतरिक जलन से उसकी मौत कैसे हो सकती है?

उसने फोन उठाया और एक नंबर डायल किया।

फोन का जवाब मिलते ही कपूर सीधे मुद्दे पर आ गए। 'त्रिवेदी के फोन पर आखिरी कॉल थी। मैं उस व्यक्ति से मिलना चाहता हूं जिससे उन्होंने बात की थी। कल।'

उसने रिसीवर नीचे रख दिया और अपनी कुर्सी पर पीछे झुक गया, उसकी भौंहें सिकुड़ गईं क्योंकि वह इस मामले को सुलझाने का तरीका सोचने की कोशिश कर रहा था।

चाहे वह इसे किसी भी तरह से विश्लेषण करने की कोशिश करे, वह केवल एक ही निष्कर्ष पर पहुंच सकता था।

हालात वैसे नहीं थे जैसे दिख रहे थे। यहाँ कुछ बड़ा घट रहा था। कुछ ऐसा जो उसे समझ नहीं आ रहा था।

वह केवल यही आशा कर सकता था कि उन्हें यह पता लगाने में बहुत देर न हो जाए कि वे क्या थे।

अध्याय तीन

इतिहास के दुख

तीसरा दिन

आज

नई दिल्ली

इतिहास को धिक्कार है!

अर्जुन ने अपनी पाठ्यपुस्तक पर तिरछी नज़र डाली, लेकिन वह जानता था कि वह अन्याय कर रहा है। विषय की कोई गलती नहीं थी। वास्तव में, दो दिन पहले तक उसे इतिहास बहुत पसंद था।

तभी उन्हें धनंजय त्रिवेदी, जिन्हें छात्र प्यार से डीजे सर कहते थे, की मृत्यु की खबर मिली। इस खबर ने उन्हें पूरी तरह से तोड़ दिया।

अर्जुन पिछले दस वर्षों से, नर्सरी से ही, इसी स्कूल में पढ़ रहा था और अपने अधिकांश शिक्षकों को बहुत पसंद करता था। वह कभी कक्षा में टॉप करने वालों में से नहीं रहा, लेकिन पढ़ाई में मेहनती था, हालांकि थोड़ा बातूनी और चंचल स्वभाव का था।

खेलों के प्रति उनका झुकाव हमेशा से ही अधिक रहा था और वे इनमें उत्कृष्ट प्रदर्शन करते थे। एथलेटिक्स, तैराकी और टेनिस में पुरस्कार जीतने के अलावा, वे फुटबॉल, बास्केटबॉल और क्रिकेट भी खेलते थे। उन्होंने इन सभी खेलों में स्कूल का प्रतिनिधित्व किया था और अंतर-विद्यालयीय प्रतियोगिताओं में कई बार विजयी टीम का हिस्सा रहे थे।

वर्षों से उनके शिक्षकों ने उनकी प्रतिभा को पहचाना और धैर्यपूर्वक उनका मार्गदर्शन किया। बेशक, जब वे कक्षा में ख्यालों में खो जाते या बगल में बैठे छात्र से छुपकर बातें करते, तो वे उन्हें डांटते भी थे; लेकिन साथ ही वे उन्हें प्रोत्साहित भी करते और उनमें छिपी प्रतिभा को निखारने का प्रयास करते थे। अर्जुन उनके धैर्य की सराहना करते थे और उनके मार्गदर्शन के लिए आभारी थे। यही एक कारण था कि उन्हें स्कूल इतना पसंद था - शिक्षकों का योगदान ही सब कुछ था।

और फिर थे डीजे सर। स्कूल के सभी शिक्षकों में सर्वश्रेष्ठ। वो... कुछ अलग ही थे। जहाँ दूसरे शिक्षक छात्रों को प्रोत्साहित करते थे, वहीं डीजे सर में उन्हें प्रेरित करने की क्षमता थी। इतिहास के प्रति उनके प्रेम ने उनके छात्रों को विषय पर ध्यान केंद्रित करने और उसमें अच्छा प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया। अर्जुन भी उन्हीं की वजह से इस विषय की ओर आकर्षित हुआ था। और अब उनके शिक्षक चले गए...

'अर्जुन!' डीजे सर की जगह आई सुमित्रा की आवाज़ ने उसके विचारों को बीच में ही रोक दिया। 'मुझे नहीं पता तुम्हारे माता-पिता तुम्हें स्कूल क्यों भेजते हैं। उनके पैसे की बर्बादी और मेरे कीमती समय की बर्बादी!'

अर्जुन ने मुंह बनाया। महज दो दिनों में ही उसे इतिहास से घोर नफरत हो गई थी। और वह जानता था कि यह सुमित्रा की वजह से था।

धनंजय त्रिवेदी के अचानक निधन से विद्यालय प्रशासन असमंजस में पड़ गया था। तत्काल एक प्रतिस्थापन की आवश्यकता थी, और इतिहास विभाग ने सुमित्रा को कक्षाएं सौंप दीं।

सुमित्रा पिछले चार वर्षों से ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षा के छात्रों को इतिहास पढ़ा रही थीं।

वरिष्ठ कक्षाओं में उनकी प्रतिष्ठा का असर नौवीं कक्षा तक भी पहुंच चुका था।

दिल्ली के सेंट स्टीफंस कॉलेज से इतिहास में पीएचडी प्राप्त सुमित्रा के चार साल पहले स्कूल में शामिल होने पर बच्चों में काफी उत्साह था। छात्रों को एक ऐसी शिक्षिका का स्वागत करने की उम्मीद थी जो ज्ञान में डूबी हुई हो और विषय से प्रेम करती हो।

इसके विपरीत, उन्हें जल्द ही पता चला कि एक उत्साही शिक्षिका होने के बजाय, वह वास्तव में बच्चों से नफरत करती थी। उसने यह बात अपने कुछ पसंदीदा छात्रों से निजी तौर पर स्वीकार की थी। ज़ाहिर है, किसी ने भी इस बारे में सार्वजनिक रूप से बात नहीं की; ऐसा करने से उसका गुस्सा भड़क उठता और निश्चित रूप से फेल ग्रेड मिलता। वैसे भी, वह किसी भी ऐसे छात्र को, जिसे वह नापसंद करती थी, बिना किसी को बताए E ग्रेड देने के लिए जानी जाती थी।

अर्जुन और उसके सहपाठियों ने पाया कि उसकी प्रतिष्ठा बिल्कुल सही थी। बल्कि, वह उनकी अपेक्षा से कहीं अधिक खूंखार थी। चाहे इसका कारण यह हो कि उसे लगता था कि उसे माध्यमिक विद्यालय में पढ़ाने के लिए पदावनत कर दिया गया है, या अतिरिक्त कार्यभार से उसे चिढ़ थी, वह कहानियों में बताई गई बातों से कहीं अधिक प्रतिशोधी और कठोर हो गई थी। बेशक, अपनी आदत के अनुसार, उसने कक्षा में चार-पाँच छात्रों को अपना पसंदीदा चुन लिया था। ये छात्र उसकी हर बात ध्यान से सुनते थे और उसे बहुत मानते थे। बाकी कक्षा के छात्र उससे नफरत करते थे।

स्पष्ट है कि अर्जुन उन चुनिंदा लोगों में से नहीं थे।

'तुम टर्मिनल परीक्षा में फेल हो जाओगे।' सुमित्रा ने अर्जुन से अभी बात पूरी नहीं की थी। 'मैं ये सुनिश्चित करूंगी।'

अर्जुन ने अपने मुंह से निकलने वाले ताने को बड़ी मुश्किल से रोका।

उसे जवाब देने का कोई फायदा नहीं था, खासकर बहस के जरिए।

उसने फैसला किया कि चुप रहना ही बेहतर है।

स्कूल की छुट्टी की घंटी बजने से उसे राहत मिली। राहत महसूस करते हुए उसने जल्दी से अपनी किताबें बैग में भरीं और सुमित्रा मैम के बारे में सारी बातें भूलकर गलियारे में छात्रों की भीड़ के साथ स्कूल के गेट की ओर चल पड़ा।

उसके कदमों में एक अलग ही फुर्ती थी। स्कूल खत्म होने की वजह से नहीं—उसे तो स्कूल में रहना बहुत पसंद था—बल्कि इसलिए कि उसके चाचा वीरेंद्र सिंह ने उस दिन उसे तलवारबाजी की एक नई तकनीक सिखाने का वादा किया था। वीरेंद्र तीसरी कक्षा से ही अर्जुन को तलवारबाजी सिखा रहे थे। यह एक अनोखा खेल था जिसका व्यावहारिक उपयोग बहुत कम था क्योंकि यह कोई संगठित या मान्यता प्राप्त खेल नहीं था जिसमें वह प्रतिस्पर्धा कर सके, लेकिन फिर भी अर्जुन को यह खेल बहुत पसंद था। उसके चाचा ने उसे समझाया था कि यह खेल बुद्धि, सतर्कता, रणनीति और प्रतिक्रिया की गति को शक्ति और चपलता के साथ इस तरह जोड़ता है जैसा कि बहुत कम खेलों में होता है। उन्होंने शुरुआत में लकड़ी की छड़ियों को तलवार के रूप में इस्तेमाल किया था, लेकिन अर्जुन जन्मजात खिलाड़ी था और सातवीं कक्षा तक आते-आते उसने

इस कला को इतनी अच्छी तरह सीख लिया था कि वह असली तलवारों से प्रशिक्षण लेने लगा था। उसे प्रशिक्षण में आनंद आता था और वह इसका बेसब्री से इंतजार करता था—यह गहन और थका देने वाला था, लेकिन किसी तरह मानसिक रूप से स्फूर्तिदायक भी था।

प्रशिक्षण के दौरान वह अपने मन से सभी अप्रिय विचारों को दूर कर सकता था। उदाहरण के लिए, सुमित्रा का विचार, खासकर आज।

वीरेंद्र ने आज अर्जुन को जो तकनीक सिखाने का वादा किया था, वह केवल एक ऐसे तलवारबाज़ को सिखाई जा सकती थी जिसने एक निश्चित स्तर की महारत हासिल कर ली हो; इस स्तर तक पहुँचने में आमतौर पर सात से दस साल लगते थे। अर्जुन यह जानकर बेहद रोमांचित था कि उसके चाचा ने केवल छह साल के प्रशिक्षण के बाद ही उसे इस योग्य समझा था।

जैसे ही वह गेट के पास पहुँचा, एक लड़की ने उसे हाथ हिलाकर मुस्कुराया। 'हे एजे!' उसने पुकारा।

अर्जुन ने भी मुस्कुराते हुए जवाब दिया। माया और वह सिर्फ़ घनिष्ठ मित्र ही नहीं थे, बल्कि साथ-साथ पले-बढ़े थे। उसके चाचा और माया के पिता इलाहाबाद के पुराने दोस्त थे और दोनों लगभग एक ही समय पर दिल्ली आए थे। उनका घर भी एक-दूसरे के घर से कुछ ही दूरी पर था और वे लगभग हर दिन मिलते थे। माया और वह रोज़ स्कूल के बाद साथ घर जाते थे, सिवाय उन दिनों के जब उसे खेल अभ्यास के लिए रुकना पड़ता था।

वे दोनों साथ में काफी समय बिताने लगे और समय के साथ उनका रिश्ता और भी मजबूत होता चला गया। माया हमेशा हंसमुख और हर बात को लेकर बेहद आशावादी थी। वह एक अच्छी श्रोता और वफादार दोस्त थी। वह इकलौती लड़की थी जिस पर वह अपने राज़ों को साझा करने में भरोसा कर सकता था।

दोनों किशोर अर्जुन के चाचा को ढूंढने लगे। वीरेंद्र उन्हें सुबह स्कूल छोड़ते थे और स्कूल के बाद लेने आते थे। जिन दिनों अर्जुन की खेल की प्रैक्टिस होती थी, वीरेंद्र पहले माया को लेने जाते थे और फिर प्रैक्टिस खत्म होने पर अर्जुन को लेने वापस आते थे। यह सिलसिला तब से चला आ रहा था जब से दोनों बच्चे स्कूल जाने लगे थे।

पिछले साल जब अर्जुन आठवीं कक्षा में दाखिल हुआ था, तब उसने इस दैनिक दिनचर्या से बाहर निकलने की कोशिश की थी।

‘मैं स्कूल अकेले जाने के लिए काफी बड़ा हो गया हूँ,’ उसने अपनी माँ प्रमिला से बहस करते हुए कहा था। ‘बहुत सारे बच्चे ऐसा करते हैं। वे ऑटो, मेट्रो या बस से स्कूल आते हैं। यह पूरी तरह सुरक्षित है। मुझे स्कूल छोड़ने और लेने की क्या ज़रूरत है?’

लेकिन प्रमिला ने साफ इनकार कर दिया था। उन्होंने कहा था, 'समय आने पर तुम अपनी मर्जी से कुछ भी करने के लिए स्वतंत्र होगे।' अर्जुन रूठ गया और गुस्से से भड़क उठा, लेकिन उसकी मां पर कोई असर नहीं हुआ। स्कूल आने-जाने का रोज़ाना का सिलसिला जारी रहा।

अर्जुन ने भी अपने चाचा से बात करने की कोशिश की थी, लेकिन उसके शब्द प्रमिला के शब्दों की ही प्रतिध्वनि थे।

वीरेंद्र ने अर्जुन के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, 'जब तुम तैयार हो जाओगे, मैं तुम्हें आत्मनिर्भर बनने और जीवन की बागडोर अपने हाथों में लेने के लिए प्रेरित करूंगा। तुम अपनी मां और मुझ पर निर्भरता छोड़कर दुनिया में अपनी जगह बनाओगे। लेकिन अभी वह समय नहीं आया है। यह एक खतरनाक शहर है। तुम्हें इसका एहसास नहीं है क्योंकि... खैर, हमने तुम्हें पनाह दी है। तुम्हें एक दिन इन सबका सामना करना ही होगा, लेकिन तभी जब तुम तैयार हो जाओगे। तब तक मैं बस इतना ही कह सकता हूं, मुझ पर भरोसा रखो। कृपया।'

बड़े लोग कितने भावुक हो सकते हैं! वह तो बस थोड़ी आज़ादी चाहता था... छी! अर्जुन मन ही मन बहुत क्रोधित हुआ, पर इस मुद्दे को दोबारा उठाने का कोई फायदा नहीं था। यह व्यर्थ ही होता। वह उनकी संशयता से निपटना नहीं चाहता था। अर्जुन सोचता है कि क्या माया भी उसके जैसी ही बंधनों में जकड़ी और दूसरों पर निर्भर महसूस करती है। आखिर वह भी तो काफी सुरक्षित जीवन जी रही थी।

'अरे, देखो, ये तुम्हारी माँ हैं।' माया ने अर्जुन का हाथ खींचते हुए कहा, क्योंकि उसने गेट के बाहर खड़े अभिभावकों के बीच प्रमिला को देख लिया था, हर कोई अपने बच्चों की एक झलक पाने की कोशिश में स्कूल के प्रवेश द्वार की ओर उत्सुकता से देख रहा था।

वे जल्दी से प्रमिला की ओर बढ़े। 'चाचा कहाँ हैं?' अर्जुन ने पूछा। 'आज हमारी तलवारबाजी का अभ्यास है। उन्होंने कहा था कि वे...'

'उसे माया के पापा के साथ कहीं जाना पड़ा है,' प्रमिला ने बीच में टोकते हुए कहा। 'वे जल्दी लौट आएंगे। उनके लौटने तक माया हमारे साथ रहेगी,' यह कहते हुए बच्चे कार में बैठ गए।

चौथा अध्याय

पुलिस से मुलाकात

एसपी कपूर का कार्यालय
नई दिल्ली

एसपी रमन कपूर ने डेस्क के सामने बैठे दो व्यक्तियों पर नज़र डाली। दोनों की उम्र लगभग एक जैसी लग रही थी, लगभग चालीस से चालीस वर्ष के बीच। डॉ. नरेश उपाध्याय के रूप में अपना परिचय देने वाले व्यक्ति लंबे और दुबले-पतले थे, जिनका माथा उभरा हुआ था। वे एक स्थानीय स्कूल में इतिहास विभाग के प्रमुख थे। दूसरे व्यक्ति, वीरेंद्र सिंह, लंबे और सुगठित थे और अपनी उम्र के हिसाब से बेहद चुस्त-दुरुस्त थे, जो उनके पेशे के अनुरूप था। वे शहर भर में शाखाओं वाले एक प्रसिद्ध जिम के मालिक थे। दोनों ने मृतक धनंजय त्रिवेदी के मित्र होने का दावा किया।

'तो, पीड़ित से बात करने वाले आप आखिरी व्यक्ति थे,' कपूर ने उपाध्याय से पूछा। यह एक आरोप जैसा लग रहा था और कपूर को तुरंत अपने लहजे पर पछतावा हुआ। उन्हें खूंखार अपराधियों से निपटने की आदत थी, न कि अपने सामने बैठे दो लोगों जैसे सभ्य लोगों से। उन्हें लगा कि उन्हें पूछताछ के अपने सामान्य तरीके में बदलाव करना चाहिए था।

उपाध्याय ने सिर हिलाया। ऐसा लग रहा था मानो उन्होंने कपूर के इशारे पर ध्यान ही नहीं दिया हो। उनकी आँखों में उदासी और थकावट झलक रही थी।

'और आप, महोदय?' कपूर ने अपनी निगाहें वीरेंद्र सिंह की ओर घुमाईं।

उस हट्टे-कट्टे आदमी ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'काश, मरने से पहले मैंने उससे बात कर ली होती। वह मेरा घनिष्ठ मित्र था। हम तीनों कई सालों तक इलाहाबाद में साथ रहे थे।'

'और महज़ संयोग से आप सब नई दिल्ली में आ गए।' यह एक बयान था, लेकिन कपूर ने इसमें संदेह का पुट डालकर इसे लगभग एक प्रश्न में बदल दिया।

उपाध्याय ने जवाब दिया, 'मुझे खुशी है कि ऐसा हुआ। जैसा कि वीरेंद्र ने कहा, हम अच्छे दोस्त थे।'

कपूरी को अपनी सूझबूझ पर गर्व था। वह एक कुशल अधिकारी थे और लोगों के बारे में उनका आकलन शायद ही कभी गलत होता था। उन्हें यह आभास हो रहा था कि यद्यपि दोनों व्यक्ति ईमानदार प्रतीत हो रहे थे, लेकिन उनकी कहानी में कुछ और भी छिपा था जिसे वे छिपा नहीं रहे थे। उन्होंने सीधे मुद्दे पर आने का फैसला किया।

कपूर ने उपाध्याय से कहा, 'मैंने आपको मिलने के लिए इसलिए बुलाया है क्योंकि आपने धनंजय त्रिवेदी की हत्या से ठीक पहले उनसे बात की थी।'

उपाध्याय की आंखें चौड़ी हो गईं। 'हत्या?' उन्होंने वीरेंद्र से एक त्वरित नजर का आदान-प्रदान किया, जिसे एसपी ने तुरंत देख लिया।

'जी हां, हत्या,' कपूर ने पुष्टि की, 'और वह भी बेहद रहस्यमय। मुझे यह स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं है कि हम इस मामले को सुलझाने की पूरी कोशिश कर चुके हैं। मुझे उम्मीद थी कि आप इस मामले पर कुछ प्रकाश डाल सकेंगे। हमें हर संभव मदद की जरूरत है।'

उपाध्याय ने कपूर को गंभीर स्वर में आश्वासन देते हुए कहा, 'हम आपकी हर संभव मदद

करेंगे। हम धनंजय के हत्यारे को न्याय के कटघरे में लाने के अलावा और कुछ नहीं चाहते।'

कपूरी ने सिर हिलाया। 'अच्छा। आप मुझे यह बताकर शुरुआत कर सकते हैं कि त्रिवेदी और आपने उस आखिरी फोन कॉल के दौरान क्या बात की थी।'

'ज़रूर,' उपाध्याय ने जवाब दिया। 'उसने मुझे बताया कि उस दिन स्कूल के बाहर उसकी मुलाकात एक युवक से हुई थी और वह जानना चाहता था कि क्या मैं उस व्यक्ति को जानता हूँ।'

कपूरी की आंखें सिकुड़ गईं। क्या यही वह सुराग था जिसकी उन्हें तलाश थी?

'और यह युवक कौन था?' उसने पूछा।

'इलाहाबाद का एक युवा छात्र। उसने अपना नाम विश्वराज बताया।'

'और क्या आप उन्हें जानते थे?' कपूर ने जोर देकर पूछा।

उपाध्याय ने स्वीकार किया, 'मैंने उनके बारे में सुना है, लेकिन मैं यह नहीं कह सकता कि मैं उन्हें जानता हूं, और यही बात मैंने धनंजय को भी बताई। अगर वह वही विश्वराज हैं, तो उन्होंने उस स्कूल में पढ़ाई की थी जहां मैंने कुछ समय तक पढ़ाया था, इसलिए मैं इस नाम से परिचित हूं।'

'विश्वराज,' कपूर ने विचारशील भाव से दोहराया, मानो वह नाम को अपनी स्मृति में अंकित करने की कोशिश कर रहे हों। 'कोई विवरण?'

उपाध्याय ने सिर हिलाया। 'जैसा कि मैंने कहा, मैं उस लड़के को नहीं जानता।'

'मेरा मतलब था, क्या त्रिवेदी ने आपको कोई विवरण दिया था?'

'नहीं, उसने ऐसा नहीं किया,' उपाध्याय ने रुककर कहा। 'आपको ऐसा क्यों लगता है कि यह हत्या थी?'

कपूरी ने कुछ क्षणों तक इस प्रश्न पर विचार किया। फिलहाल, इस मामले को सुलझाने का यही एकमात्र ज़रिया प्रतीत हो रहा था। उन्होंने स्पष्टवादी होने का फैसला किया। उन्होंने उन्हें प्रारंभिक पोस्टमार्टम रिपोर्ट और उसके चौंकाने वाले निष्कर्षों के बारे में बताया।

यह बात उसकी नजर से नहीं बची कि जब उसने बताया कि पीड़ित की मौत गंभीर आंतरिक जलन के कारण हुई थी, लेकिन उसके शरीर पर बाहरी जलन के कोई निशान नहीं थे, तो दोनों पुरुषों ने एक बार फिर एक त्वरित नजरें मिलाईं।

'तो,' कपूर ने निष्कर्ष निकालते हुए कहा, 'आप इस सब के बारे में क्या सोचते हैं? और क्या आप पीड़ित के बारे में कुछ बताना चाहेंगे जिससे हमें इस घटना के पीछे के व्यक्ति को ढूंढने में मदद मिल सके?'

वीरेंद्र अब तक शांत और गंभीर मुद्रा में बैठे थे। उन्होंने भारी स्वर में कहा, 'एसपी साहब, आपने जो बताया है— पोस्टमार्टम रिपोर्ट का निष्कर्ष—वह शारीरिक रूप से असंभव है।' उन्होंने बगल में बैठे अपने मित्र की ओर एक नज़र डाली और फिर कपूर की ओर। 'मैं अंधविश्वासी नहीं हूँ, लेकिन अगर आपकी बात सच है, तो यह पुलिस का मामला नहीं है। यह किसी अलौकिक घटना से जुड़ा मामला लगता है।'

कपूर उसे घूर रहा था, उसे समझ नहीं आ रहा था कि वो मज़ाक कर रहा है या नहीं। लेकिन वीरेंद्र भी बिना पलक झपकाए उसे घूर रहा था। एसपी समझ गया कि वो आदमी गंभीर है। उसने

थोड़ा अविश्वास से सिर हिलाया।

उन्होंने दृढ़ता से कहा, 'मैं अलौकिक चीज़ों में विश्वास नहीं करता। इस हत्या का कोई तर्कसंगत कारण होना चाहिए। और चाहे इसके पीछे कोई भी हो, हम इसकी तह तक पहुँचेंगे।' उन्होंने बारी-बारी से दोनों व्यक्तियों की ओर देखा। 'आपका समय देने और मुझसे मिलने आने के लिए धन्यवाद। आपके सहयोग के लिए आभारी हूँ।'

दोनों आदमी जाने के लिए उठे।

'एक और बात,' कपूर ने कहा जब वे लोग मुड़े। 'कृपया मुझे बताए बिना शहर मत छोड़ना। मैं आप दोनों से कुछ और सवाल पूछना चाहूँगा। यह एक निवेदन है।'

जैसे ही वे दोनों आदमी उसके कमरे से निकले, कपूर ने फोन उठाया और एक नंबर डायल किया। उसने निर्देश दिया, 'मैं चाहता हूँ कि उन पर नज़र रखी जाए। हाँ, उन दोनों पर जो अभी मुझसे मिलने आए थे। वे कुछ छुपा रहे हैं और मैं पता लगाना चाहता हूँ कि वह क्या है।'

अध्याय पाँच

आकस्मिक घटना

अर्जुन का घर
नई दिल्ली

‘लेकिन हम जा क्यों रहे हैं?’ अर्जुन का मन उथल-पुथल में था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि अचानक क्या हो रहा है।

उसके चाचा और माया के पिता कुछ देर पहले घर लौटे थे। तब से वे दोनों और अर्जुन की माँ एक कमरे में बंद हैं, जाहिर तौर पर किसी महत्वपूर्ण बात पर चर्चा कर रहे हैं।

माया और वह अगले दिन होने वाली इतिहास की परीक्षा के बारे में बातें कर रहे थे। यह परीक्षा तीन दिन पहले होनी थी, लेकिन सुमित्रा के दो पसंदीदा छात्र उस दिन स्कूल नहीं आए थे, इसलिए उसने परीक्षा की तारीख बदल दी थी।

‘कल परीक्षा के लिए समय पर पहुंच जाना, एजे,’ माया हंसते हुए बोली। ‘वह तुम्हारे लिए परीक्षा की तारीख नहीं बदलेगी!’

‘ओह, मैं ज़रूर आऊंगा,’ अर्जुन ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

ठीक उसी समय, बड़े लोग अपनी 'गुप्त बैठक' से बाहर आ गए थे। माया और उसके पिता भी थोड़ी देर बाद चले गए।

तभी वीरेंद्र ने चौंकाने वाला खुलासा किया था।

उन्होंने घोषणा की, 'हम शहर छोड़ रहे हैं। हम तीनों। तुरंत।'

हैरान होकर अर्जुन ने अपनी माँ से स्पष्टीकरण मांगा। प्रमिला, मानो बेफिक्र होकर, ज़रूरी सामान पैक कर रही थी। तभी उसे समझ आया। उसे पहले से ही पता था! वे नरेश चाचा से इसी बारे में बात कर रहे थे।

लेकिन वजह क्या हो सकती है? और इतनी जल्दी क्यों? और वे कहाँ जा रहे थे? क्या वे कभी लौटेंगे? कब? इतिहास की परीक्षा का वह क्या करेगा? सुमित्रा तो उसकी जान ही ले लेगी!

लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। वीरेंद्र और प्रमिला दोनों ही चुप रहे।

‘जिमों का क्या होगा?’ उसने जवाब पाने के लिए बेताब होकर पूछा।

‘शर्मा को सूचित कर दिया गया है। वैसे भी वही जिम चलाते हैं। मेरी कमी महसूस नहीं होगी,’ वीरेंद्र के पास तुरंत जवाब था। शर्मा वीरेंद्र की कंपनी के मुख्य परिचालन अधिकारी थे, जो इन जिमों की मालिक थी।

पराजित होकर अर्जुन उदास और निराश होकर अपने कपड़े सूटकेस में भरने लगा। उससे कभी कोई कुछ साझा नहीं करता था। सारे फैसले बड़े ही लेते थे। उनमें से किसी ने भी उसकी भावनाओं पर ध्यान नहीं दिया, न ही यह सोचा कि क्या वह कहीं और जाना चाहेगा।

अपनी किताबें और खेल का सामान देखकर अर्जुन को गहरा दुख हुआ, क्योंकि वह इनमें से कुछ भी अपने साथ नहीं ले जा सकता था। वीरेंद्र ने साफ-साफ कह दिया था: वे कम सामान लेकर ही यात्रा करेंगे। उसके चाचा ने सिर्फ अभ्यास की तलवारों के सेट के लिए छूट दी थी, जिसे अर्जुन ने अब बड़े प्यार से एक लकड़ी के बक्से में पैक किया, जिसे खास तौर पर तलवारों

को ले जाने के लिए बनाया गया था।

कुछ ही समय में, उनके सूटकेस पैक कर वीरेंद्र की लैंड क्रूजर में लोड कर दिए गए।

जाने से पहले अर्जुन ने घर पर आखिरी नजर डाली। क्या वह कभी उस घर को दोबारा देख पाएगा? या अपने स्कूल के दोस्तों को?

'माया का क्या हुआ?' उसे अचानक याद आया कि उसने उससे बात नहीं की थी। 'मुझे उसे फोन करना होगा।' उसने अपना फोन निकाला।

वीरेंद्र ने गाड़ी चलाते हुए दृढ़ता से कहा, 'पहुँचने पर आप उससे बात कर सकते हैं। वैसे भी, मुझे यकीन है कि उसके पिता उसे बता देंगे।'

प्रमिला ने अपने बेटे की ओर देखा, वह अपने सबसे अच्छे दोस्त को पीछे छोड़ने के उसके दुख को समझ रही थी। 'अर्जुन, इसके पीछे एक कारण है,' उसने कहा। 'मैं वादा करती हूँ कि हम सब कुछ समझा देंगे। बस कुछ देर धैर्य रखो। कृपया।'

अर्जुन की आँखों में आँसू भर आए और उसने अपनी बाहों को कसकर मोड़कर खुद को गले लगा लिया। वह खिड़की से बाहर देखने लगा, अपनी सच्ची भावनाओं को छिपाने की कोशिश कर रहा था।

कुछ ही घंटे पहले तक वह स्कूल के काम और सुमित्रा को लेकर परेशान था। और अब अचानक ऐसा लगा जैसे उसकी जिंदगी ही बदल गई हो।

उसे यह नहीं पता था कि अब सब कुछ पहले जैसा कभी नहीं रहेगा।

अध्याय छह

एक आगंतुक

माया का घर
नई दिल्ली

‘क्या बात है पापा?’ माया ने पूछा। उसके पिता का आमतौर पर हंसमुख चेहरा आज गंभीर और उदास था, मानो क्षितिज पर कोई तूफान मंडरा रहा हो। अर्जुन के घर से लौटते समय वे असामान्य रूप से चुप और मग्न थे। माया अपने डिजिटल वॉकमैन में अपने पसंदीदा गाने सुन रही थी। अब, घर पहुँचते ही, माया ने सोचा कि वह पता लगाने की कोशिश करेगी कि उन्हें क्या परेशान कर रहा है।

उपाध्याय मानो किसी समाधि से जागे। उन्होंने जवाब देने में कुछ क्षण लिए। अंत में, हल्की सी मुस्कान बिखेरते हुए उन्होंने कहा, 'अरे, कुछ खास नहीं। बस आज कुछ बुरी खबर मिली है।'

‘बुरी खबर है, है ना?’ माया ने अपने हेडफ़ोन वापस लगाए और संगीत सुनने लगी। साफ़ था कि उसके पिता उससे कोई भी जानकारी साझा करने के इच्छुक नहीं थे। इसलिए, उसने सोचा, या तो यह ज़्यादा ज़रूरी नहीं था या उसे इसके बारे में पता नहीं होना चाहिए था। दोनों ही मामलों में, इसके बारे में उनसे बार-बार पूछना व्यर्थ लग रहा था। जब उनका मन करेगा, वे खुद बता देंगे।

घर में प्रवेश करते हुए माया ने उपाध्याय से कहा, 'अगर आपको मेरी जरूरत हो तो मैं अपने कमरे में रहूंगी, पापा। कल मेरा एक टेस्ट है।'

उपाध्याय ने अनमने ढंग से सिर हिलाया और अध्ययन कक्ष की ओर चल दिए। यहीं पर वे अपना अधिकांश समय पढ़ने और शोध करने में व्यतीत करते थे। उनके अध्ययन कक्ष की तीन दीवारों पर किताबों की अलमारियां लगी हुई थीं। वे विशेष रूप से एक अलमारी की ओर बढ़े और उस पर रखी पुस्तकों के शीर्षक देखने लगे। अंततः, उन्हें वह मिल गया जिसकी उन्हें तलाश थी। एक पुरानी चमड़े की डायरी, जो काफी घिसी-पिटी और पुरानी हो चुकी थी।

उसने डायरी खोली और पन्ने पलटे, जिन पर संस्कृत में हाथ से लिखे हुए लेख अंकित थे।

जब वह अपने इच्छित पृष्ठ पर पहुँचा, तो उसने भौंहें चढ़ा लीं और अपनी मेज पर बैठ गया, ध्यानपूर्वक लेख पढ़ने लगा। अंत में, उसने किताब बंद कर दी और कुछ देर तक दूर कहीं देखता रहा, विचारों में खोया हुआ।

कुछ देर बाद, वह उठा और किताबों की अलमारी की ओर बढ़ा। उसने कुछ किताबें हटाईं तो दीवार में बनी तिजोरी का दरवाजा दिखाई दिया। उसने तिजोरी खोली और उसमें से एक कागज निकाला। उसने उसे ध्यान से पढ़ा और फिर मेज पर जाकर उसे उस नोटबुक में रख दिया जिसे वह कुछ देर पहले पढ़ रहा था।

फिर वह तिजोरी के पास लौटा और उसमें से कुछ निकाला। वह एक चेन में बंधा हुआ सोने का ताबीज था। उसने अपनी हथेली में रखे ताबीज को ध्यान से देखा, फिर अपनी उंगलियों से उसे जकड़कर तिजोरी को बंद कर दिया।

सब कुछ पहले जैसा हो जाने का पक्का करने के बाद, वह माया के कमरे की ओर बढ़ा और दरवाज़ा खटखटाया। 'माया?'

‘जी पापा, अंदर आइए!’

उसने दरवाजा खोला और कमरे में प्रवेश किया।

‘माफ़ करना, प्रियतमा, तुम्हें परेशान करने के लिए, लेकिन मैं तुम्हें यह देना चाहता था।’ उसने अपनी हथेली खोली और ताबीज़ दिखाया। ‘अब से तुम्हें इसे हमेशा पहनना होगा।’

‘अरे पापा, ये सब किसलिए है?’ माया ने मुँह बनाया। ‘कहीं ये आपकी कोई और रस्म तो नहीं है? आपको तो पता ही है कि मुझे ये सब पसंद नहीं है...’ उसने अपनी बात अधूरी छोड़ दी। उसके पिता पहले से ही जानते थे कि इन सब बातों को लेकर उसके मन में क्या भाव हैं।

उनकी नज़र में ऐसी छोटी-मोटी चीज़ों के प्रति उनकी उपेक्षा के पीछे गहरी जड़ें थीं। उनकी माँ का निधन तब हो गया था जब वह बहुत छोटी थीं। हालाँकि उनके पिता ने उन्हें इतना प्यार दिया था जितना ज़्यादातर बच्चों को अपने माता-पिता दोनों से भी नहीं मिलता, फिर भी उन्हें माँ की कमी खलती थी। किसी तरह, पिता अलग होते हैं। कुछ बातें थीं जो वह उनसे कह नहीं सकती थीं; कुछ बातें थीं जो वह उनके साथ साझा नहीं कर सकती थीं। कुछ बातें थीं जिनके लिए उन्हें माँ की ज़रूरत थी। वह अपने पिता से बहुत प्यार करती थीं और उन्हें अपनी माँ की कोई खास याद नहीं थी, लेकिन वह उन्हें बहुत याद करती थीं।

और यह सवाल हमेशा उसके मन में बना रहा: अगर अनुष्ठानों, प्रार्थनाओं, ताबीजों और ऐसी अन्य चीजों में इतनी अपार शक्ति थी, तो उसके पिता ने उसकी मां को बचाने के लिए उनका इस्तेमाल क्यों नहीं किया?

ऐसा नहीं था कि वह उसे अपनी माँ को बचाने के लिए पर्याप्त प्रयास न करने का दोषी ठहरा रही थी; शायद उसने कोशिश की हो—वह नहीं जानती थी और उसने कभी उससे पूछा भी नहीं था; यह न केवल उसके निजी विचारों में दखल देना होता, बल्कि उस दुख को भी ठेस पहुँचाना होता जो उसने अपनी पत्नी को इतनी कम उम्र में खोने पर महसूस किया था। और चाहे उसने कोशिश की हो या न की हो, इससे केवल रीति-रिवाजों, प्रार्थनाओं और ताबीज़ जैसी दिखावटी चीज़ों की सीमाओं का पता चलता है। वे वास्तव में किसी काम के नहीं थे।

उपाध्याय ने मुस्कुराने की कोशिश की, एक कमजोर, नम मुस्कान। 'यह तुम्हारी सुरक्षा के लिए है, मेरे प्रिय। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हें इसकी आवश्यकता न पड़े, लेकिन फिर भी... मुझसे वादा करो कि तुम इसे हर समय पहनोगे और एक पल के लिए भी इसे अपने से अलग नहीं होने दोगे।'

माया ने विरोध करना शुरू किया, लेकिन अपने पिता का चेहरा देखकर वह रुक गई। एक पल के लिए उसे लगा कि उसके चेहरे पर डर की एक झलक है, और फिर वह गायब हो गई।

वह अचंभित रह गई। बचपन से ही वह अपने पिता को निडर मानती आई थी। उसे साफ याद है, एक बार तो उन्होंने सड़क दुर्घटना में घायल एक ड्राइवर को जान से मारने पर तुली भीड़ का डटकर सामना किया था। वे दंगा करने वाली भीड़ में घुस गए और अपनी जान की परवाह किए बिना उन्हें शांत किया। यही थे उनके पिता; हमेशा अपने सिद्धांतों के लिए खड़े रहने को तैयार, हमेशा निडर।

फिर भी, उसे यकीन था कि उसने आज पहली बार उसके चेहरे पर डर देखा था। उसके दिल

में एक भयानक आशंका घर कर गई। उसके पिता किस बात से डर रहे थे?

यह समझते हुए कि वह अपने अनुरोध को लेकर गंभीर था, उसने बिना कुछ कहे उससे ताबीज ले लिया और उसे अपने गले में पहन लिया।

तभी दरवाजे की घंटी बजी।

'मैं देख लेता हूँ कौन है। तुम अपनी पढ़ाई जारी रखो।' उपाध्याय ने घंटी का जवाब देने के लिए जाते समय दरवाजा बंद कर दिया।

'हाय दीया,' उसने दरवाजे पर खड़ी युवती का मुस्कुराते हुए अभिवादन किया। 'अंदर आ जाओ।'

दीया उनके स्कूल में बारहवीं कक्षा की छात्रा थी। लेकिन उपाध्याय और कुछ ही लोग जानते थे कि वह कोई साधारण छात्रा नहीं थी। वह गण की सदस्य भी थी।

'तुमने फोन क्यों नहीं किया?' उसने पूछा और उसे सोफे पर बैठने का इशारा किया। 'तुम्हें पता है कि आमने-सामने की मुलाकातों से यथासंभव बचना चाहिए।'

'यह बहुत महत्वपूर्ण था, महामति ध्रुव,' दीया ने उपाध्याय को उनके असली नाम और संघ के वरिष्ठ सदस्यों को दी जाने वाली सम्मानजनक उपाधि से संबोधित करते हुए समझाया।

'दिया, चुप रहो!' उपाध्याय आगे झुके। 'उसका नाम मेरे घर में भी नहीं लिया जा सकता। अब बताओ, क्या इसका संबंध विश्वराज से है?'

दिया ने सिर हिलाया। 'हमें पता चल गया है कि वह कहाँ छिपा है।' उसने चारों ओर देखा। 'क्या मुझे एक कलम और कागज मिल सकता है? मैं आपको एक नक्शा बनाकर दूंगी।'

उपाध्याय उठे और अध्ययन कक्ष में चले गए। उन्हें उम्मीद जगी। धुंध छंटने लगी थी। उन्हें नहीं पता था कि त्रिवेदी के साथ जो कुछ हुआ, उसमें उस लड़के की क्या भूमिका थी, और उन्हें यकीन नहीं हो रहा था कि विश्वराज इतना शक्तिशाली था कि उसने उनके मित्र की हत्या कर दी। लेकिन विश्वराज ने त्रिवेदी को धमकी दी थी। उनके मित्र ने अपनी आखिरी बातचीत में उन्हें यह बात बताई थी। और उस लड़के को कुछ ऐसा पता था जो केवल उपाध्याय, त्रिवेदी, वीरेंद्र और कुछ ही लोगों को पता होना चाहिए था। यह अत्यंत आवश्यक था कि वह विश्वराज से मिले और अधिक जानकारी प्राप्त करे। उन्हें यह जानना था कि इसमें कौन-कौन शामिल थे।

सभी तथ्य एक ही दिशा की ओर इशारा कर रहे थे। एक ही व्यक्ति की ओर। यह सोचकर वह अनायास ही कांप उठा। यह कोई सुखद विचार नहीं था।

लेकिन निर्णायक जवाब केवल विश्वराज ही दे सकता था। अब जब उन्होंने उसका छिपने का स्थान खोज लिया था, तो बस समय की बात थी।

उसने एक कागज और एक कलम ली और मुड़ गया।

उपाध्याय अपनी जगह पर ही जम गए।

अध्ययन कक्ष में उनकी मेज से खुले दरवाजे के माध्यम से वह सोफा दिखाई दे रहा था, जिस पर दीया को बैठना था।

लेकिन वह अब वहां नहीं बैठी थी।

उसकी जगह एक विशालकाय, प्रभावशाली कद-काठी वाला व्यक्ति बैठा था, जिसकी लंबाई

साढ़े छह फीट से भी अधिक थी और घनी काली दाढ़ी थी। उसके काले बाल पीछे की ओर लंबे होकर कंधों तक पहुँच रहे थे और उसने एक आँख पर पट्टी बाँध रखी थी।

वह अपनी दूसरी आंख से अध्ययन कक्ष में उपाध्याय की ओर सीधे देख रहा था।

इतिहास के शिक्षक की रीढ़ की हड्डी में एक सिहरन दौड़ गई। तो त्रिवेदी की हत्या के बारे में उनका अनुमान सही था। यह वही ताकतवर आदमी था, जिसकी संलिप्तता का उन्हें डर था। लेकिन, हालांकि उन्होंने कभी न कभी उससे सामना होने की उम्मीद की थी, उन्होंने यह नहीं सोचा था कि इतनी जल्दी होगा। और निश्चित रूप से अपने ही घर में तो बिल्कुल नहीं।

वह उस टकराव के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं था जिसके बारे में वह जानता था कि वह होने वाला है।

अध्याय सात

नए संदिग्ध?

एसपी कपूर का कार्यालय
नई दिल्ली

एसपी रमन कपूर ने फोन नीचे रखा और अभी-अभी मिली खबर पर विचार करने लगे। पीड़ित के दो दोस्तों में से एक, वीरेंद्र सिंह, मुलाकात के बाद सीधे घर चला गया था और अपनी बहन और भतीजे के साथ घर से निकला था। उन पर नज़र रखने के लिए तैनात पुलिसकर्मी ने बताया था कि वे सूटकेस ले जा रहे थे। ज़ाहिर है, तीनों शहर छोड़कर जा रहे थे।

उनके माथे पर शिकन आ गई। आखिर चल क्या रहा था? क्या यह महज़ एक संयोग था? शायद वीरेंद्र और उनके परिवार ने पहले से ही छुट्टी की योजना बना रखी थी? कपूर को अंदर से लग रहा था कि ऐसा नहीं है। उन्होंने दोनों से साफ-साफ कहा था कि अगर वे शहर से बाहर जाने का इरादा रखते हैं तो उन्हें बता दें। सिंह ने आने वाली किसी यात्रा के बारे में कुछ नहीं बताया था। अगर कोई योजना होती तो वह कपूर को जरूर बता देते।

अगर सिंह ऐसा चाहते तो।

यही मुख्य बात थी। यह यात्रा योजनाबद्ध थी या नहीं, सिंह का कपूर को सूचित करने का कोई इरादा नहीं था। हालांकि इस अचानक पलायन का त्रिवेदी की हत्या से कोई संबंध होने का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं था, कपूर की अंतरात्मा ने उन्हें इस ओर सोचने के लिए प्रेरित किया।

उसके मन में एक और विचार पनपने लगा था। उन आदमियों से एक ही मुलाकात के बाद उसने खुद को यकीन दिला दिया था कि वे ईमानदार और नेक लोग हैं जिनका हत्या से कोई लेना-देना नहीं हो सकता। लेकिन क्या उसने कोई गलती की थी?

क्या यह संभव था कि उसने इस मामले के संदिग्धों को भागने दिया हो?

कपूर को विश्वास नहीं हो रहा था कि उसकी अंतरात्मा उसे धोखा दे रही है। उनसे मुलाकात के दौरान उनके व्यवहार में ऐसा कुछ भी नहीं था जिससे अपराध में उनकी प्रत्यक्ष संलिप्तता का संकेत मिले।

उपाध्याय के घर पर अब भी निगरानी रखी जा रही थी। कपूर को सूचना मिली थी कि शिक्षक से कुछ देर पहले एक व्यक्ति मिलने आया था। तो कम से कम उपाध्याय तो शहर में ही थे। क्या वे अब खतरे से बाहर थे? कपूर को याद था कि जब भी उन्होंने कोई महत्वपूर्ण बात उठाई होती, तो वे लोग एक-दूसरे को तिरछी नजरों से देखते थे। अगर सिंह इसमें शामिल था, तो यह बहुत संभव था कि उपाध्याय भी इसमें शामिल हों।

बहुत सारी संभावनाएं हैं और पर्याप्त सबूत नहीं हैं।

कपूरी ने मन ही मन सोचा, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। सिंह की गाड़ी का अभी भी पीछा किया जा रहा था। उसके आदमी को स्पष्ट निर्देश थे कि सिंह जहाँ भी जाए, उसका पीछा करे।

वह मामले की तह तक जाएगा।

चाहे जो हो जाए।

अध्याय आठ

भृगु के पुत्र

माया का घर

नई दिल्ली

दोनों आदमी एक-दूसरे को घूरते हुए खड़े थे, उनकी आंखें एक-दूसरे पर टिकी हुई थीं।

सन्नाटा इतना गहरा था कि कान सुन्न हो रहे थे।

फिर घुसपैठिए ने बोलना शुरू किया। उसकी आवाज़ गहरी थी, फिर भी मधुर थी, और कुछ मायनों में उसके डरावने रूप से मेल नहीं खाती थी।

ध्रुव, तुम हैरान नहीं लग रहे हो।

उपाध्याय ने खुद को शांत करने की कोशिश की। बैठक में प्रवेश करते हुए और उस विशालकाय व्यक्ति के सामने बैठते हुए उन्होंने सादगी से कहा, 'मुझे आपकी ही उम्मीद थी।'

दीया कहीं नजर नहीं आ रही थी। उसने कमरे में चारों ओर इशारा किया।

‘क्या यह तुम्हारा एक और भ्रम है, भृगु पुत्र?’ उसने पूछा।

उपाध्याय के प्रश्न पर प्रसन्न होकर उस विशालकाय व्यक्ति ने हल्की सी मुस्कान बिखेरी। “जी हाँ। 5000 वर्षों तक ध्यान में लीन रहने के बाद भी, मेरी कला अभी भी बरकरार है। आपको मानना ही पड़ेगा।”

उपाध्याय के मन में एक गहरा, अंधकारमय भय घर कर गया। वह पहले भी उस घुसपैठिए का सामना कर चुके थे और जानते थे कि वह कभी भी उसका मुकाबला नहीं कर सकते थे। उपाध्याय को इस बात का भी दुखद अहसास था कि भृगु के पुत्र ने पिछले 5,000 वर्ष ध्यान में बिताए थे और ऐसी शक्तियां प्राप्त की थीं जो उनके पास पहले कभी नहीं थीं।

फिर भी, उसने खुद को संभाला। वह आदमी अब उसके घर में था। उसके पास ज्यादा विकल्प नहीं थे। वह जानता था कि क्या होने वाला है।

और वह जानता था कि इसका अंत कैसे होगा।

उन्हें एक और बात समझ में आई। अगर दीया एक भ्रम था, तो यह आदमी गण के बारे में जानता था। वह उपाध्याय का पता लगाने के लिए पर्याप्त ज्ञान रखता था।

‘तुमने दीया के साथ क्या किया?’ उसने लड़की के प्रति अपनी चिंता को अपने डर पर हावी करते हुए पूछा।

उस विशालकाय व्यक्ति ने मुस्कुराया; लेकिन उसकी मुस्कान उसकी आँखों तक नहीं पहुँची। ‘तुम क्या सोचते हो?’ उसने तीखे स्वर में पूछा, फिर हाथ हिलाते हुए कहा, ‘तुच्छ बातों में समय बर्बाद न करें।’

उसने उपाध्याय की आँखों में आँखें डालकर कहा, ‘मुझे वो लड़का चाहिए। त्रिवेदी को ठिकाने लगाने के बाद, मुझे पता था कि लड़के के भागने के लिए जो भी ज़िम्मेदार है, वो अपना असली रूप दिखाएगा। और तुमने दिखा दिया।’ उसने कंधे उचकाते हुए कहा, ‘मतलब, मुझे हमेशा से तुम पर शक था, लेकिन मेरे पास इसका कोई सबूत नहीं था। पर आखिरकार, मुझे पता चल गया। और, हम यहाँ हैं। बिल्कुल पुराने दिनों की तरह, है ना?’ उसने बेपरवाही से बात की,

लेकिन उपाध्याय उसके बेजान शब्दों के पीछे छिपे खतरे को समझ गया था।

‘क्या तुमने धनंजय को मार डाला?’ उपाध्याय गुस्से से आग बबूला हो रहे थे। ‘और तुम्हें पता था कि इलाहाबाद में जो कुछ हुआ उसमें उसका कोई हाथ नहीं था?’

अजनबी ने अधीरता से अपनी जीभ चटकाई। 'त्रिवेदी तो बस एक मोहरा था। देखो, उसने मुझे सीधे तुम्हारे पास पहुँचा दिया। इसलिए मैं यहाँ हूँ। और मुझे वह लड़का चाहिए। इस बार मैं तुम्हें अपने रास्ते में नहीं आने दूँगा, ध्रुव।'

उपाध्याय ने आने वाली चुनौती के लिए खुद को तैयार किया। वह आगे झुके और घुसपैठिए की आँखों में आँखें डालकर बोले, ‘शुक्र, तुम कभी उस बालक तक नहीं पहुँच पाओगे।’ उनकी आवाज़ कठोर थी। ‘तुम सप्तऋषियों की चेतावनी भूल गए हो। जो तुमने 5000 साल पहले शुरू किया था, उसे जारी रखने की हिम्मत मत करो। तुम्हें रोक दिया जाएगा।’

शुक्र क्रोध से लाल होते हुए तुरंत खड़े हो गए। उन्होंने गरजते हुए कहा, ‘तुम सप्तऋषियों से मुझे धमकाने की हिम्मत कैसे करते हो?’ ‘ये शक्तिहीन समूह? ध्रुव, ये कलियुग है। अब तो देवता भी मुझे नहीं रोक सकते! ये सब अपने महलों और हवेलियों में बैठे-बैठे असहाय और लाचार होकर देखते रह सकते हैं!’

वह धमकी भरे लहजे में उपाध्याय की ओर बढ़ा। ‘अब मैं किसी भी चीज को मुझे रोकने नहीं दूंगा। मुझे लड़का दे दो। मुझे बताओ कि वह कहाँ है और मैं तुम्हें छोड़ दूंगा।’ उसकी आवाज छोटे से बैठक कक्ष में गूंज उठी।

उपाध्याय की आँखों में चुनौती की चमक थी। उन्होंने सच्चाई से कहा, 'मुझे नहीं पता कि वह कहाँ है। लेकिन अगर मुझे पता भी होता, तो मैं उसे आपके हवाले नहीं करता।'

‘बहुत खूब। मैंने तुम्हें मौका दिया और तुमने ठुकरा दिया। तो फिर हम इसे मुश्किल तरीके से ही करेंगे।’

उपाध्याय की आंखें तब चौड़ी हो गईं जब उन्हें एहसास हुआ कि शुक्र के मन में क्या चल रहा है।

अध्याय नौ

माया का ताबीज

माया का घर

नई दिल्ली

माया को किसी आदमी के चिल्लाने की हल्की सी आवाज़ सुनाई दी। वह घबराकर अपनी किताब से नज़रें उठाकर देखने लगी। यह उसके पिता की आवाज़ नहीं थी। ज़रूर यह उस आगंतुक की आवाज़ होगी जिसने दरवाज़े की घंटी बजाई थी। पहले तो उसे अपने पिता और आगंतुक की धीमी-धीमी बातचीत सुनाई दी। फिर अचानक उसे तेज़ आवाज़ें सुनाई दीं। घबराकर माया अपने दरवाज़े की ओर चली गई, उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह बैठक में जाए या नहीं।

उसका हाथ अभी भी दरवाजे के हैंडल पर ही था, तभी अचानक शोरगुल बंद हो गया। अब सन्नाटा छा गया था।

कोई आवाज नहीं।

वहाँ एक अजीब सी शांति छाई हुई थी। इससे वह घबरा गई।

वहां क्या हो रहा था?

उसके पिता के घर आने वाले मेहमान हमेशा मृदुभाषी, विनम्र और आमतौर पर विद्वान लोग होते थे - बिल्कुल उसके पिता की तरह। हालांकि घर में विभिन्न अकादमिक और राजनीतिक मुद्दों पर अक्सर चर्चा होती थी, लेकिन उसे अपने घर में कभी भी ऊंची आवाज में बात होते हुए याद नहीं है।

माया ने अपने गले में लटके ताबीज को छूते हुए यह तय करने की कोशिश की कि आगे क्या करना है।

सन्नाटा छाया रहा। माया जानती थी कि उसे क्या करना है। उसने अपने कमरे का दरवाजा खोला और बैठक कक्ष की ओर जाने वाले गलियारे में कदम रखा।

जो दृश्य उसकी आंखों के सामने आया, उससे वह भयभीत हो गई।

ग्रेटर नोएडा

ताज एक्सप्रेसवे

'जी सर,' सादे कपड़ों में मौजूद कांस्टेबल ने बिना नंबर वाली जिप्सी में अपने ईयरपीस पर कहा। 'वे नोएडा में सिर्फ एक जगह रुके थे, एक घर से कुछ लेने के लिए। मुझे नहीं पता क्या था, लेकिन दोबारा चलने से पहले वे कुछ मिनट कार में बैठे रहे।'

'वे अब कहाँ हैं?' एसपी कपूर की आवाज उनके ईयरपीस पर सुनाई दी।

'वे आगरा की ओर जा रहे हैं। उन्हें नहीं पता कि मैं उनका पीछा कर रहा हूँ।'

'और इसे ऐसे ही बनाए रखना, हरीश। मैं चाहता हूँ कि तुम उनका पीछा उनके अंतिम गंतव्य तक करो। अगर तुम्हें कुछ भी असामान्य लगे तो मुझे तुरंत फोन करना। चाहे आधी रात ही क्यों न हो!'

'जी सर,' वीरेंद्र सिंह के परछाईं माने जाने वाले हरीश ने बात खत्म करते हुए कहा।

अध्याय दस

नोटबुक

माया का घर

नई दिल्ली

माया अपने सामने के दृश्य को देखकर स्तब्ध रह गई।

वह चीखना चाहती थी लेकिन चीख नहीं सकी।

अपने पिता को हवा में, ज़मीन से दो फीट ऊपर, सीधा लटका हुआ देखकर उसकी आँखों में भय और निराशा के आँसू भर आए। उसका शरीर अकड़ा हुआ था और चेहरा विकृत था, हालाँकि दर्द या क्रोध के कारण, वह समझ नहीं पा रही थी।

लेकिन एक बात स्पष्ट थी। उसके पिता के सामने पीठ करके और हाथ बांधे खड़ा वह विशालकाय व्यक्ति, उनके वश में था। ऐसा लग रहा था मानो वह व्यक्ति धीमी आवाज़ में कुछ बुदबुदा रहा हो।

माया ने उन शब्दों को सुन लिया।

संस्कृत ।

उसके पिता ने उसे यह भाषा सिखाई थी। उसने इसे तुरंत पहचान लिया।

यह बात उसे बुरी तरह से झकझोर गई।

वह व्यक्ति मंत्रों का जाप कर रहा था!

माया को अपनी सुनी हुई बात पर विश्वास नहीं हो रहा था। यह असंभव था!

उसे प्राचीन वैदिक ग्रंथों में कुछ मंत्र मिले थे, जिन्हें उसके पिता ने उसे पढ़ने के लिए कहा था। लेकिन उसे कभी विश्वास नहीं हुआ कि वे वास्तव में काम करते हैं। वे उन अनुष्ठानों का हिस्सा थे जिनमें वह विश्वास नहीं करती थी। फिर भी, यह आदमी निश्चित रूप से मंत्रों का जाप कर रहा था और जैसे-जैसे वह सुनती गई, उसे भय के साथ समझ में आया कि वह क्या करने की कोशिश कर रहा है।

क्या हो रहा था? माया को लगा जैसे उसका सिर फट जाएगा। अचानक, अपने डर और निराशा के बीच, उसने एक फुसफुसाती हुई आवाज़ सुनी, जो उसके दिमाग की सतह को सहला रही थी।

'माया !'

यह बहुत धीमी आवाज़ थी, मानो दूर से आ रही हो। उसने लगभग इसे अनसुना ही कर दिया था, लेकिन फिर उसे यह आवाज़ दोबारा सुनाई दी।

और फिर।

जैसे कोई उसे पुकार रहा हो। आवाज़ जानी-पहचानी लग रही थी, फिर भी ऐसी थी जैसी उसने पहले कभी नहीं सुनी थी।

उस विशालकाय व्यक्ति ने अभी तक उसे देखा ही नहीं था। या फिर, अगर देखा भी था, तो वह उसे अनदेखा कर रहा था, अपना सारा ध्यान उसके पिता पर केंद्रित कर रहा था, जो अपनी मनचाही चीज हासिल करने में लगा हुआ था।

माया की असहाय निगाहें अपने पिता के चेहरे पर पड़ीं और उसे समझ में आया कि उसका चेहरा क्यों विकृत था।

आवाज तो उसकी ही थी! वह अपने विचारों के जरिए उससे बात करने की कोशिश कर रहा था!

माया के आसपास इतनी विचित्र घटनाएँ घट रही थीं कि उसके पास अपने पिता की टेलीपैथिक शक्तियों पर विचार करने का समय ही नहीं था। वह बस इतना जानती थी कि उसके पिता उससे संवाद करने की कोशिश कर रहे थे। उसे किसी भी तरह, हर हाल में जवाब देना ही था।

उसने उसे ध्यान से देखा, और अब उसने गौर किया कि उसकी आंखें अपने प्रतिद्वंद्वी पर टिकी हुई थीं, मानो वह अपने मन से मुकाबला कर रहा हो, उसे रोकने की कोशिश कर रहा हो।

धीरे-धीरे वह बैठक कक्ष से पीछे हटकर गलियारे में और अंदर चली गई, अपने दिमाग में गूंज रही आवाज़ पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश कर रही थी। जितना अधिक वह ध्यान लगाती, आवाज़ उतनी ही स्पष्ट होती जाती।

'मेरी बात ध्यान से सुनो,' उसके पिता की आवाज़ ने आग्रह किया। 'मैं उसे ज़्यादा देर तक रोक नहीं सकता, जब तक कि मैं उसे यह न बता दूं कि मैं तुमसे संपर्क में हूं। मेरी मेज़ पर रखी हस्तलिखित डायरी उठाओ और भाग जाओ! इस घर से निकल जाओ! वीरेंद्र को फोन करो। उसे बताओ। अभी जाओ! सोचने में समय बर्बाद मत करो। बस जैसा मैं कहता हूं वैसा करो। पीछे मुड़कर मत देखना। और वापस मत आना।' थोड़ी देर का विराम हुआ। आवाज़ अब धीमी होती जा रही थी। 'यह बात हमेशा याद रखना: मैं तुमसे प्यार करता हूं।'

आवाज थम गई और उपाध्याय के होठों से दर्द भरी चीख निकल पड़ी। अंततः उसका प्रतिद्वंदी उस पर विजय प्राप्त कर चुका था।

'शुक्र, तुम कभी सफल नहीं होगे...' माया ने अपने पिता को संघर्ष करते हुए ये शब्द कहते सुना। 'मैंने अपना भाग्य पूरा कर लिया है। अब मुझे मार भी दो तो तुम्हें कुछ हासिल नहीं होगा।'

'ध्रुव, तुम्हें मरते हुए देखना ही मेरे लिए काफी होगा,' उस आदमी ने गुस्से से गुर्राते हुए कहा। 'तुमने मुझसे पंगा लेने के लिए इतनी कोशिशें कीं। क्या तुम्हें सच में लगा था कि तुम अपनी जान बचाकर भाग जाओगे?'

माया ने काफी कुछ सुन लिया था। वह जानती थी कि उसे अपने पिता की चेतावनी पर तुरंत अमल करना होगा, वरना बहुत देर हो जाएगी। चीखने की तीव्र इच्छा को दबाते हुए, उसने बैठक में घट रहे दर्दनाक दृश्य से खुद को दूर किया। भय और घबराहट के बादल उसके दिमाग में छाए हुए थे, इसलिए वह कुछ सोच नहीं पा रही थी और केवल अपने पिता के निर्देशों का पालन कर रही थी।

उसने अपने जूते उतारे और नंगे पैर गलियारे में धीरे-धीरे चलने लगी, जूते हाथ में थामे हुए, इस बात का पूरा ध्यान रखते हुए कि कोई आवाज़ न हो। उसे नहीं लगता था कि शुक्र (जैसा कि उसके पिता उस बड़े आदमी को बुलाते थे) को अभी तक उसके अस्तित्व के बारे में पता था। उसने यही राज़ रखने की योजना बनाई थी।

गलियारा एक और दरवाजे से होते हुए अध्ययन कक्ष में जाता था, जिसमें कालीन बिछा हुआ था।

उसने अपने जूते पहने और यथासंभव चुपचाप चलकर डेस्क तक गई।

इस विषय पर तीन पुस्तकें थीं।

डर से उसके हाथ कांप रहे थे। उसे तुरंत कुछ करना था।

उसके पिता ने हस्तलिखित डायरी का जिक्र किया था। उसने पहली किताब खोली। वह छपी हुई थी।

दूसरी किताब एक पुरानी चमड़े की नोटबुक थी।

क्या यही वह कारण हो सकता है?

माया ने नोटबुक का एक पन्ना बेतरतीब ढंग से खोला। नोटबुक से एक कागज़ फिसलकर डेस्क के नीचे गायब हो गया। माया ने देखा कि उस पर देवनागरी लिपि में लिखा हुआ था।

एक हस्तलिखित डायरी। बस यही थी।

वह कागज का पन्ना ढूंढने के लिए कालीन पर घुटनों के बल बैठ गई। उसने उसे मेज के नीचे देखा। माया उठी और डायरी उठाकर उसे लेने के लिए दबे पांव मेज के चारों ओर जाने की तैयारी करने लगी।

उसने खुद को सीधे शुक्र की ओर देखते हुए पाया। शुक्र की निगाहें उस पर टिकी हुई थीं।

माया वहीं रुक गई। अपने पिता की पीड़ा देखकर भय और दर्द से उसका मन सुन्न हो गया था, और वह बचने का रास्ता खोजने की कोशिश कर रही थी। शुक्र अभी भी बैठक में उसके पिता को यातना दे रहा था, लेकिन ऐसा लग रहा था कि उसने उन्हें इतना कमजोर कर दिया था कि अब वह माया पर ध्यान केंद्रित कर सकता था। उसने माया को घूरकर देखा।

उसके साथ कुछ हो रहा था। वह ठीक से सोच नहीं पा रही थी।

शुक्र की निगाहें माया पर इस कदर गड़ी हुई थीं कि वह स्तब्ध रह गई। उसे ऐसा लगा मानो उसकी आत्मा की गहराई में उतरकर उसकी गहरी भावनाओं को पढ़ रही हों, उसके सबसे काले विचारों को कुरेद रही हों। लेकिन माया के भीतर कुछ ऐसा था जिसने उसे अपनी पूरी ताकत से इसका विरोध करने के लिए मजबूर किया।

अचानक, उसने देखा कि कोहरा छंट रहा है। वह सोचने में सक्षम हो गई।

किसी चीज ने शुक्र की उसके दिमाग पर पकड़ को तोड़ दिया था।

वह उसके पिता थे। वह चिल्ला रहे थे।

'भागो, माया!'

उसने सोचने के लिए समय नहीं निकाला। उसके पिता की आवाज़ में जो बेचैनी थी, उनकी विनती में जो हताशा थी, वही उसके लिए काफी थी।

शुक्रा की आँखों से नज़रें हटाते हुए वह तेज़ी से भाग गई। अध्ययन कक्ष के बाहर का गलियारा रसोईघर की ओर जाता था, जहाँ से एक पिछला दरवाज़ा घर के पीछे एक संकरी गली में खुलता था।

बचने का रास्ता बहुत करीब था।

भागते समय अचानक उसके सिर में एक तेज रोशनी कौंध गई।

वह एकदम सुन्न पड़ गई और लड़खड़ाने लगी।

बैठक कक्ष से क्रोध की एक जोरदार आवाज सुनाई दी।

इसके साथ ही पीड़ा और दर्द की एक चीख भी सुनाई दी।

और मृत्यु।

माया ने खुद को अध्ययन कक्ष के फर्श पर लेटी हुई पाया, और चमड़े की डायरी को कसकर पकड़े हुए थी।

जो कुछ हो रहा था, उस पर सोचने का समय नहीं था। उसे आगे बढ़ते रहना था।

खुद को संभालते हुए वह दौड़कर अध्ययन कक्ष के दरवाजे की ओर भागी।

इस बार, उसे कोई नहीं रोक सका। वह गलियारे से दौड़ती हुई रसोई में गई, जहाँ उसने बाहर जाने वाले दरवाजे के कुंडी खोलने के लिए थोड़ी देर तक मशक्कत की।

फिर वह घर के पीछे वाली गली में थी। रसोई का दरवाजा उसके पीछे बंद हो गया।

माया ने घबराई हुई आँखों से चारों ओर देखा।

उसे यहां सुरक्षित महसूस नहीं हो रहा था।

वह कहाँ जा सकती थी?

अध्याय ग्यारह

कुछ अप्रत्याशित समाचार

एसपी कपूर का कार्यालय
नई दिल्ली

रमन कपूर ने फोन की घंटी बजते ही उसे उठा लिया। यह अजीत का फोन था, जो उपाध्याय पर नज़र रखने के लिए तैनात कांस्टेबल था। उसकी पिछली रिपोर्ट स्कूल मास्टर के यहाँ आए एक आगंतुक के बारे में थी। वह व्यक्ति तब से उपस्थित नहीं हुआ था।

‘जी?’ कपूर ने उत्सुकता से पूछा, घटनाक्रम जानने के लिए।

अजीत की आवाज धीमी और गंभीर थी। 'सर,' उसने कहना शुरू किया, फिर हिचकिचाया। 'उपाध्याय का निधन हो गया है।'

‘मर गया?’ कपूर ने हैरानी से पूछा। यह वह बात थी जिसकी उन्हें बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी। कुछ ही घंटे पहले तक वह आदमी बिल्कुल स्वस्थ और तंदुरुस्त था।

‘जी सर,’ कांस्टेबल ने समझाना शुरू किया, ‘मैं आपके आदेशानुसार बाहर निगरानी रख रहा था। कुछ मिनट पहले, मुझे घर से चीखने की आवाज़ें सुनाई दीं। फिर, श्री उपाध्याय से मिलने आया हुआ आदमी तेज़ी से बाहर निकला और सामने का दरवाज़ा खुला छोड़कर चला गया।’ वह फिर हिचकिचाया। ‘सर, मुझे पता है कि आपने मुझे श्री उपाध्याय से दूरी बनाए रखने और किसी भी तरह से उनसे संपर्क न करने का निर्देश दिया था। लेकिन चीखों और खुले दरवाज़े ने मुझे संदेह में डाल दिया और मैं चिंतित हो गया। इसलिए मैंने जाँच करने का फैसला किया।’

‘और आपको उपाध्याय मृत मिले। लेकिन क्या आप निश्चित हैं? क्या आपने डॉक्टर को बुलाया है?’

'जी महोदय, इसमें कोई संदेह नहीं है। उसका शरीर टुकड़े-टुकड़े हो गया है। बैठक कक्ष में हर जगह खून फैला हुआ है।'

कपूरी को अपनी सुनी हुई बात पर यकीन नहीं हो रहा था। उन्होंने खुद को संभाला। 'तुरंत बैकअप के लिए कॉल करो। मैं रास्ते में हूँ।'

'सर, मैंने बैकअप के लिए रेडियो पर संदेश भेज दिया है। मैंने आपको फोन करने से पहले ही ऐसा कर दिया था।'

‘अच्छा आदमी,’ कपूर ने सहमति में सिर हिलाया। ‘क्या घर में कोई और था?’

'नहीं, महोदय।'

‘मुझे लगा था कि उपाध्याय की एक बेटी है?’

जी हाँ, महोदय। और वे दोनों साथ घर आए थे। लेकिन शव मिलने के बाद मैंने घर की सरसरी तलाशी ली। घर में और कोई नहीं है।

‘तुम्हारा क्या मतलब है? वह कहाँ गायब हो सकती है?’ कपूर चिंतित हो रहे थे। यह मामला दिन-ब-दिन और भी जटिल होता जा रहा था।

‘मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता, महोदय। मैंने उसे घर से निकलते हुए नहीं देखा। लेकिन मुझे एक और निकास मिल गया। घर के पीछे रसोई का दरवाजा एक गली में खुलता है जो उसके

पीछे से होकर गुजरती है।'

'मुझे लगता है कि आपने गली की भी जाँच कर ली होगी?'

जी हां, महोदय। लड़की का कोई पता नहीं चला।

वह उठा। 'हमें उस लड़की को ढूंढना ही होगा। वही एकमात्र ऐसी व्यक्ति है जो हमें बता सकती है कि उस घर में वास्तव में क्या हुआ था,' उसने फोन रखने से पहले कहा।

कपूरी के मन में कई तरह के विचार उमड़ रहे थे। हो सकता है कि लड़की ने अपने पिता के साथ जो कुछ हुआ, उसे देखा हो। या शायद उसने सब कुछ होते हुए देखा हो और मदद के लिए भागी हो। कपूरी को यही ज़्यादा संभव लग रहा था; अपने पिता को बेरहमी से मारते देख एक बच्ची में शायद भागने की हिम्मत न हो। उन्हें बस यही उम्मीद थी कि लड़की को किसी भी तरह का कोई नुकसान न पहुँचा हो।

जब कपूर ने एक कांस्टेबल को अपनी कार तैयार करने का इशारा किया, तो वह सोचने लगा कि क्या यह हत्या त्रिवेदी की हत्या से जुड़ी हुई है।

दो दोस्त, दो हत्याएं। इनके बीच कोई न कोई संबंध जरूर था।

लेकिन वह क्या था?

उसके लिए सच्चाई का पता लगाने का एकमात्र तरीका वीरेंद्र सिंह और उपाध्याय की बेटी को ढूंढना था।

अब उसे दो लोगों का शिकार करना था।

उपाध्याय के घर के पास

नई दिल्ली

आँखों से बहते आँसुओं से आँखें चौंधियाई माया गली में दौड़ पड़ी, दोनों ओर के घरों को पार करते हुए बिना रुके मदद माँगने का ख्याल भी नहीं आया। उसके पिता ने उसे घर छोड़ने और वापस न लौटने के लिए साफ मना कर दिया था, चाहे वह उनकी मदद करने ही क्यों न आए। उनके दर्द भरे चीखने-चिल्लाने की आवाज़ अभी भी उसके कानों में गूँज रही थी। उसे अपने घर से जितना हो सके उतना दूर जाना था।

माया जानती थी कि उसके पिता अब तक मर चुके होंगे। उनके लहजे में व्याप्त बेचैनी और भाग जाने के लिए उनका ज़ोरदार आग्रह, ये सब उसे बता रहे थे कि उन्हें भी अपने अंजाम का पता था। वहाँ और रुकना उसके लिए निश्चित मृत्यु थी। हालाँकि वह नहीं जानती थी कि वह अजनबी कौन था या वह उनके घर में घुसकर उसके पिता को क्यों मारना चाहता था, लेकिन वह जानती थी कि वह उसे नुकसान पहुँचाने में ज़रा भी संकोच नहीं करेगा।

उसने अध्ययन कक्ष से उठाई हुई डायरी को कसकर पकड़ रखा था। उसे नहीं पता था कि उसके पिता ने इसे इतना महत्वपूर्ण क्यों समझा था। लेकिन अगर उन्होंने उसे इसे लाने के लिए कहा था, भले ही उस व्यक्ति द्वारा पकड़े जाने का खतरा था जिसे वे शुक्र कहकर पुकारते थे, तो इसमें कुछ तो खास बात होगी।

लेकिन वह इसका क्या करती? उसे तो यह भी नहीं पता था कि वह इस समय कहाँ जा रही है।

माया की दुनिया भ्रम और आतंक के बवंडर से भरी हुई थी।

इसलिए वह भाग गई। यही एकमात्र उपाय था जो वह कर सकती थी।

गली एक बड़ी सहायक सड़क पर खुलती थी। माया ने रुककर फैसला नहीं किया। वह बाईं ओर मुड़ी और दौड़ती रही।

कुछ मिनटों बाद, उसने अपनी गति धीमी कर दी और अपने आसपास के वातावरण का जायजा लिया, उसकी सांसें तेज चल रही थीं। सड़क की बत्तियाँ अभी-अभी जलनी शुरू हुई थीं। उसके सामने, कुछ ही सौ गज की दूरी पर एक मेट्रो स्टेशन दिखाई दे रहा था।

वह रुकी और एक पल के लिए सोचने लगी। उसके पेट में दर्द हो रहा था और उसे सांस लेने की ज़रूरत थी। वह कितनी दूर दौड़ी थी? उसे ठीक से पता नहीं था, लेकिन उसे लग रहा था कि उसने घर से काफ़ी दूरी बना ली है। फिलहाल के लिए।

जब उसने होश संभालने की कोशिश की तो उसे अपने पिता के शब्द याद आ गए। उसे अब याद आया कि उनके पिता ने उसे अपने दोस्त वीरेंद्र को फोन करने के लिए कहा था।

लेकिन उसके पास उसका नंबर नहीं था।

अर्जुन।

बिल्कुल।

उसने अपनी जींस की जेबें चेक कीं और भगवान का शुक्रिया अदा किया। उसका फोन उसके पास था।

उसने फोन निकाला और अर्जुन का नंबर डायल किया।

अध्याय बारह

मदद के लिए एक अत्यावश्यक अपील

ताज एक्सप्रेस हाईवे

Uttar Pradesh

अर्जुन ने फोन बजते ही उस पर नजर डाली।

'यह माया है,' उसने घोषणा की। 'मुझे पता है कि आपने कहा था कि मैं उससे तभी बात कर सकता हूँ जब हम अपने गंतव्य पर पहुँच जाएँ,' उसने अपने गंतव्य की अस्पष्टता पर ज़ोर देते हुए कहा, 'लेकिन अगर वह अभी फोन कर रही है, तो इसका मतलब है कि उसके पिता ने उसे पहले ही बता दिया है। वह मुझसे बात करना चाहती है।'

वीरेंद्र ने कहा, 'ठीक है। आप फैसला ले लीजिए। मुझे लगता है कि यही उचित होगा।'

तभी फोन की घंटी बजना बंद हो गई।

'कोई बात नहीं, अर्जुन। दोबारा कॉल करने की जरूरत नहीं है,' वीरेंद्र ने अपने भतीजे के अनुसार कुछ ज्यादा ही लापरवाही से कहा। 'अगर कोई जरूरी बात होगी तो वो तुम्हें कॉल कर लेगी।'

अर्जुन उदास और चिढ़कर फोन को घूर रहा था। वह माया से बात करना चाहता था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि इतनी पाबंदियां क्यों लगाई जा रही हैं। उनका जाना इतना अचानक और चुपके से क्यों हुआ कि उसे अपनी सबसे अच्छी दोस्त को फोन करने की भी इजाजत नहीं मिली? उसने मुंह बनाया और अपने अंदर उमड़ रहे गुस्से को दबाने की कोशिश की।

उसने फोन को घूरते हुए कठोर निगाहों से देखा और दोबारा बजने की कोशिश की। लेकिन फोन नहीं बजा।

चलो माया, वापस कॉल करो! मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ!

फोन पर कोई आवाज नहीं आई।

मेट्रो स्टेशन के पास

नई दिल्ली। माया ने अपने आँसू रोकने की कोशिश की। अर्जुन ने उसका फोन नहीं उठाया था। उसकी स्थिति की निराशा और बेबसी उस पर हावी हो रही थी।

रात की गहरी छाया चुपके से रेंगती हुई, गोधूलि को दूर धकेलती हुई, आकाश के ताने-बाने में समाहित होती जा रही थी।

माया ने खुद को शांत करने की कोशिश की, उसे सोचने-समझने की ज़रूरत थी। अब बस एक ही रास्ता बचा था। अर्जुन थोड़ी ही दूर रहता था। जहाँ वह खड़ी थी, वहाँ से पैदल पंद्रह मिनट का रास्ता था।

नए दृढ़ संकल्प के साथ, उसने अपने आँसू पोंछे और सड़क पर चल पड़ी। वह अर्जुन के घर जाएगी और वहाँ वीरेंद्र से मिलेगी। माया को नहीं पता था कि उसे इतनी ताकत कहाँ से मिल रही है। वह बस इतना जानती थी कि उसके भीतर कुछ उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहा था, उसे हार मानने या पीछे हटने नहीं दे रहा था। वह कॉलोनी की मुख्य सड़क पर पहुँच गई - यह वही सड़क थी जो उसके घर के पास से गुजरती थी। उसे अभी भी समझ नहीं आ रहा था कि

कुछ देर पहले उसके घर में क्या हुआ था। लेकिन वह इसके बारे में सोचना नहीं चाहती थी। उसे डर था कि अगर उसने सोचा तो वह कमजोर पड़ जाएगी। अपने डर और घबराहट को काबू में रखने का एकमात्र तरीका था सोचना बंद करना और काम करते रहना। वह जितना ज्यादा उस भयानक अनुभव के बारे में सोचती, उतना ही बुरा महसूस करती।

माया अर्जुन के घर की ओर गली में चलती रही। वह अपना ध्यान भटकाने के लिए आसपास देखती रही, सड़क पर कारों, मोटरसाइकिलों, स्कूटरों और साइकिलों को देखती रही, पेड़ों पर चहचहाते पक्षियों को देखती रही जो रात को सोने की तैयारी कर रहे थे; और कभी-कभार राहगीरों को भी देखती रही। किसी भी तरह वह अपने पिता के बारे में सोचना बंद करना चाहती थी।

जैसे ही वह अर्जुन के घर के पास पहुंची, उसने देखा कि उसके चाचा की बड़ी लैंड क्रूजर कार बाहर अपनी सामान्य जगह पर खड़ी नहीं थी।

उसका दिल बैठ गया। अगर वीरेंद्र घर पर नहीं है, तो वह क्या करेगी? वह प्रमिला या अर्जुन से उसे बुलाने के लिए कह सकती है, लेकिन उसे वापस आने और उसके साथ घर लौटने में समय लगेगा।

घर का सामने का दरवाजा थोड़ा खुला हुआ था।

यह अजीब था। वीरेंद्र सिंह भी सुरक्षा को लेकर उतने ही सतर्क थे जितने उनके पिता थे। दोनों घरों के मुख्य दरवाजों पर कई कुंडी लगी हुई थीं। और दोनों ही मामलों में स्पष्ट निर्देश थे कि किसी भी परिस्थिति में बच्चों द्वारा दरवाजा नहीं खोला जाएगा। दरवाजा खोलने वाला कोई वयस्क ही होगा।

उपाध्याय को जब भी कहीं बाहर जाना होता था, जैसा कि वे अक्सर करते थे, वे माया को वीरेंद्र और प्रमिला के पास छोड़ जाते थे। और वीरेंद्र के घर में, नियम के अनुसार, दरवाजा हर समय बंद और कुंडी लगा रहता था।

किसी बात ने उसे आशंकित कर दिया। वह प्रवेश द्वार तक गई और धीरे से सामने का दरवाजा धक्का देकर खोला। दरवाजा खुल गया।

घर के अंदर अंधेरा था।

और सन्नाटा पसरा हुआ था।

ऐसा लग रहा था मानो पर्दे भी बंद कर दिए गए हों।

अर्जुन और प्रमिला कहाँ थे? उसकी पहली प्रतिक्रिया तो उन्हें पुकारने की थी, लेकिन भीतर गहरे दबे डर ने उसे रोक लिया।

सब लोग कहाँ थे?

और दरवाजा खुला क्यों था?

माया ने अपनी हिम्मत जुटाई, घर के अंदर कदम रखा और आंशिक रूप से खुले दरवाजे से कमरे में प्रवेश कर रही शाम की धुंधली रोशनी में चारों ओर देखने के लिए स्थिर खड़ी हो गई।

अचानक हवा बेहद ठंडी हो गई और उसे ठंडी हवा का एक झोंका लगा।

कुछ तो गड़बड़ थी।

लगभग उसी समय, एक दुर्गंध ने उसकी नाक पर हमला कर दिया। ऐसा लग रहा था मानो वह गंध सर्वव्यापी हो, कमरे की हवा में घुल रही हो और सामने के दरवाजे से बाहर से आने वाली ताजी हवा को रोक रही हो।

उसे अचानक एहसास हुआ कि वह अकेली नहीं है। कमरे में कोई और भी था।

कोई व्यक्ति नहीं।

कुछ ।

वह चीख पड़ी।

अध्याय तेरह

एक और रहस्य

अर्जुन का घर
नई दिल्ली

माया से कुछ ही फीट की दूरी पर एक विचित्र और भयानक प्राणी तैर रहा था। उसकी त्वचा बेजान और सूखी हुई लग रही थी, और खुरदरी प्रतीत हो रही थी, जिस पर सूखी हुई सिलवटें और लकीरें दिखाई दे रही थीं। उसके अंगों की त्वचा के नीचे बहुत कम मांसपेशियां थीं, जो पतली और कमजोर थीं। वह प्राणी शांत दिन में बिना हवा के काले धुएं की तरह चमक रहा था। वह ठोस होते हुए भी आकारहीन प्रतीत हो रहा था, एक लंबी गर्दन के ऊपर एक सुस्पष्ट सिर, चेहरे में धंसी हुई गहरी आंखें और एक पतली सूंड जिसमें से एक फूला हुआ पेट निकला हुआ था।

माया ने अपनी आंखों के कोने से देखा कि उसी तरह का एक दूसरा प्राणी दूसरी तरफ से उसकी ओर आ रहा है।

दोनों प्राणी रुक गए और हवा में मंडराते हुए, निर्जीव, काली, धंसी हुई आंखों से उसे घूरने लगे।

वह फिर से चीखी।

कोई, या कुछ, सीढ़ियों से नीचे लुढ़कता हुआ आया जो ऊपरी मंजिल की ओर जाती थीं। जीव क्षण भर के लिए विचलित हो गए।

माया के पास एक मिनट भी गंवाने का समय नहीं था। उसने सामने का दरवाजा झट से खोला और घर से बाहर निकलकर उसी दिशा में दौड़ पड़ी जहाँ से वह आई थी।

उसे नहीं पता था कि उसने अर्जुन के घर में अभी-अभी क्या देखा था; या यह भी कि क्या यह एक मतिभ्रम था।

एक बात तो निश्चित थी। अर्जुन और उसका परिवार घर में नहीं थे।

लेकिन कुछ और भी था।

उपाध्याय हाउस
नई दिल्ली

एसपी कपूर ने बैठक कक्ष का सावधानीपूर्वक निरीक्षण किया। फोरेंसिक टीम अपने काम में व्यस्त थी और वह उनके काम में बाधा नहीं डालना चाहते थे।

जिस व्यक्ति को उसने उपाध्याय की जासूसी करने का काम सौंपा था, वह बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बोल रहा था।

यह वास्तव में एक रक्तपात था।

क्या हो सकता था?

अजीत ने बताया था कि जब आगंतुक अंदर आया था तो वह निहत्था लग रहा था और जब वह निकला तो उसके हाथ खाली थे, और उसके शरीर पर खून का एक धब्बा भी नहीं था। यदि वह रहस्यमय आगंतुक ही हत्यारा था, जो कि सबसे तार्किक अनुमान था, तो हत्या का हथियार

कहाँ था?

और उपाध्याय की इतनी बेरहमी से हत्या क्यों की गई? यह महज़ चोरी की घटना नहीं हो सकती थी। यह नफ़रत से उपजी हत्या लग रही थी। इसके पीछे कोई न कोई कहानी ज़रूर होगी।

कुछ ही घंटे पहले, स्कूल मास्टर अपने दफ्तर में उससे बात कर रहे थे। और अब... कपूर ने चारों ओर देखा और सिहर उठा। यह दृश्य कमजोर दिल वालों के लिए नहीं था।

वह घर से बाहर निकल गया। जब तक फॉरेंसिक टीम अपना काम पूरा नहीं कर लेती, तब तक वह अंदर कुछ नहीं कर सकता था। हालांकि, अध्ययन कक्ष का निरीक्षण करते समय उसके मन में एक बात आई थी।

अध्ययन कक्ष की तीन दीवारों पर लगी अलमारियों में से एक अलमारी से तीन किताबें गायब थीं।

अध्ययन की मेज पर दो किताबें मिलीं, जिन्हें संभवतः शेल्फ से निकाला गया था। जब उसके आदमियों ने यह देखने की कोशिश की कि क्या किताबें शेल्फ के खाली स्थान में फिट हो सकती हैं, तो उन्हें एहसास हुआ कि एक और किताब शायद गायब है।

कपूरी को नहीं पता था कि यह मामला महत्वपूर्ण है या नहीं। उन्हें बस इतना पता था कि घर से गायब एकमात्र वस्तु वह किताब ही थी। उन्हें लगातार यह आशंका सता रही थी कि इसका हत्या से कुछ संबंध ज़रूर है। लेकिन आखिर क्या हो सकता है?

मामले की जांच के लिए नियुक्त फोरेंसिक विशेषज्ञ ने घर के बाहर आकर उनके विचारों को बाधित कर दिया। कपूर ने पूछा, 'क्या आपको हत्या का हथियार मिला, सुरेश?'

फोरेंसिक विशेषज्ञ ने उसकी ओर देखा। ‘आप जानते हैं, इस मामले का सबसे अजीब पहलू यही है। यह तो बस मेरी पहली धारणा है, लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि मैं सही हूँ। शव की जांच के बाद हमें और जानकारी मिलेगी और मुझे पूरा विश्वास है कि पोस्टमार्टम से हमें कुछ और जानकारी मिलेगी, लेकिन...’ वह रुका, ‘यह बात थोड़ी अटपटी लगेगी...’

‘आगे बढ़ो।’ कपूर को इस मामले में सामने आने वाले अजीबोगरीब तथ्यों की आदत पड़ रही थी।

“खैर, बात सिर्फ इतनी है कि शरीर को चीर-फाड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया था, न कि काटकर अलग किया गया था। मुझे नहीं लगता कि इसके लिए किसी हथियार का इस्तेमाल किया गया था। बिखरे हुए ऊतकों की मेरी जांच से यही पता चलता है...”

कपूर ने अपना हाथ ऊपर उठाया, वह समझ गया था कि सुरेश अपनी कहानी को किस ओर ले जा रहा है। 'मुझे उन खौफनाक विवरणों से बख्श दो।' उसने इस नए दृष्टिकोण पर विचार किया। 'कोई भी इंसान इतना ताकतवर नहीं होता कि दूसरे को टुकड़े-टुकड़े कर दे।'

सुरेश ने सिर हिलाया। 'मुझे समझ नहीं आ रहा कि इसका क्या मतलब निकालूं। यह... यह शारीरिक रूप से संभव ही नहीं है। लेकिन ऐसा हुआ।'

‘धन्यवाद, सुरेश।’ कपूर के मन में एक रोमांच दौड़ गया। और भी सवाल। कोई जवाब नहीं। यह मामला दिन-ब-दिन और भी दिलचस्प होता जा रहा था।

उसका फोन बजा। यह कांस्टेबल हरीश का फोन था, जो वीरेंद्र सिंह पर नजर रख रहा था।

‘जी?’ कपूर खबर जानने के लिए उत्सुक थे।

महोदय, वे अभी-अभी एक्सप्रेसवे के किनारे रुके हैं। मुझे पक्का नहीं पता, लेकिन मुझे लगता है वीरेंद्र सिंह फोन पर बात कर रहे हैं। नोएडा में थोड़े समय के लिए रुकने के बाद यह उनका पहला पड़ाव है। वे अब तक काफी तेज गति से चल रहे थे।

‘उनके साथ बने रहो। अब वह इस मामले में और भी महत्वपूर्ण हैं। एकमात्र जीवित कड़ी। जब भी आप कहीं रुकें, हमें सूचित करते रहें। हम आपको स्थानीय पुलिस से जोड़ देंगे। आपको अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता हो सकती है। सावधान रहें। यह खतरनाक हो सकता है। यदि वीरेंद्र सिंह और उनके परिवार पर हमला होता है, तो आपको अतिरिक्त सहायता बुलानी चाहिए और उनकी मदद करनी चाहिए। मैं इस मामले में एक और महत्वपूर्ण कड़ी खोना नहीं चाहता। क्या मैं स्पष्ट हूँ?’

जी हाँ, महोदय। समझ गया।

कपूरी ने अपना फोन जेब में रख लिया। उनकी भौंहें तन गईं।

किसी ने त्रिवेदी की हत्या कर दी थी। अपनी मृत्यु से पहले त्रिवेदी ने उपाध्याय से बात की थी। अब उनकी भी मृत्यु हो चुकी थी। उनकी हत्या कर दी गई थी।

और दोनों पुरुषों की मौत रहस्यमय तरीके से हुई थी।

बिना किसी गवाह के।

उसके मन में मृत व्यक्ति की बेटी का ख्याल आया। अभी तक उसकी कोई खबर नहीं थी।

वह कहाँ थी?

अध्याय चौदह

सामान्य नज़रों से ओझल

मेट्रो स्टेशन
नई दिल्ली

माया हांफते हुए मेट्रो स्टेशन में घुसी, वह अर्जुन के घर से दौड़कर आई थी।

वह बिना सोचे-समझे भाग गई थी कि उसे कहाँ जाना है। लेकिन भागते-भागते, मानो उसके पैर उसे वापस मेट्रो स्टेशन ले आए हों। लोगों से भरी होने के कारण यह एक अच्छा फैसला था। उसे यहाँ सुरक्षित महसूस हुआ। कम से कम वह अकेली तो नहीं थी।

वापस आने का छोटा सा रास्ता भी उसे बहुत लंबा लगा। हर कदम पर उसे ऐसा लग रहा था मानो कोई उसका पीछा कर रहा हो, उसे ढूंढ रहा हो। उन भयानक जीवों की छवि बार-बार उसके दिमाग में उभर रही थी, मानो वे गली में उसका पीछा कर रहे हों।

लेकिन कुछ भी नहीं हुआ था और वह स्टेशन पर सुरक्षित पहुंच गई थी, हालांकि उसकी सांस फूल रही थी।

उसके पास टिकट खरीदने के लिए पैसे नहीं थे और वैसे भी, उसके पास जाने के लिए कोई जगह नहीं थी। लोगों के बीच होने के आराम को खोए बिना, एकांत में बात करने के लिए एक कोने में जाकर, उसने अर्जुन को फिर से फोन किया।

वह कहाँ था? क्या वह सुरक्षित था? उसके चाचा और माँ का क्या हुआ था? उनके घर में अजीबोगरीब जीव क्यों थे?

उसका सिर चकरा गया।

इस बार कॉल कनेक्ट हो गई।

'माया!' अर्जुन लगभग चिल्ला उठा।

उसकी आवाज़ सुनकर माया को इतना सुकून मिला कि वह फूट-फूटकर रोने लगी और फोन पर फूट-फूटकर बातें करने लगी। जो सदमा उसने झेला था और अर्जुन के सुरक्षित होने की खबर से मिली राहत उसके लिए असहनीय थी। अब तक उसने किसी तरह अपने डर, चिंता और घबराहट को दबाए रखा था। लेकिन अब उसका सब्र टूट गया और वह खुद को संभाल नहीं पाई।

'अरे, कोई बात नहीं,' अर्जुन को लगा कि उसके अचानक चले जाने से वो टूट गई है, इसलिए उसने उसे दिलासा देने की कोशिश की। दरअसल, उसकी आँखों में भी थोड़ी नमी आ गई थी। 'हम फिर भी मिलेंगे। मुझे नहीं पता हम कहाँ जा रहे हैं, लेकिन मुझे यकीन है कि वो ज़्यादा दूर नहीं है। और वैसे भी, व्हाट्सएप और स्नैपचैट तो हैं ही!'

'तुम कहाँ हो, एजे?' माया ने खुद को संभाला। एजे की कही कोई बात उसे चुभ गई थी। 'मुझे समझ नहीं आ रहा... तुम कहाँ जा रहे हो?'

'तुम्हारा मतलब है कि तुम्हें पता नहीं था?' अर्जुन की आवाज में हैरानी सुनकर उसने सुना। 'मुझे लगा था कि तुम्हारे पिताजी ने अब तक तुम्हें बता दिया होगा।'

पिता का नाम सुनते ही माया को गहरा दुख हुआ। लेकिन अब उसके भीतर भावनाओं का सागर सूख चुका था और केवल दर्द और हानि की एक सुन्न अनुभूति ही बची थी। अब आँसू नहीं

निकल रहे थे।

'पापा...' वह हिचकिचाई, शब्द बोल पाने में असमर्थ। 'मुझे लगता है पापा मर गए हैं।' खुद को काबू में रखने की कोशिश के बावजूद उसकी आवाज कांप रही थी।

'क्या?' अर्जुन की आवाज़ में हैरानी साफ झलक रही थी। कुछ देर तक दोनों चुप रहे। माया जानती थी कि वह शब्दों के लिए संघर्ष कर रहा है।

"कोई उनसे मिलने आया था," उसने कांपती हुई आवाज़ में कहा, और उस असहज चुप्पी को तोड़ दिया। "उसका नाम शुक्र था। मुझे लगता है उसने पिताजी को मार डाला।" ये शब्द कहते हुए उसकी सिसकी फूट पड़ी।

'शुक्र?' अर्जुन ने भी वही बात दोहराई। वह अब भी कुछ बोल नहीं पा रहा था।

'अर्जुन, मुझे फोन दो,' माया ने वीरेंद्र की आवाज सुनी।

'माया के पिता... उनकी हत्या कर दी गई है,' उसने अर्जुन को यह कहते हुए सुना, संभवतः उसने फोन अपने चाचा को सौंप दिया था।

वीरेंद्र ने तुरंत फोन उठाया। माया उसकी आवाज़ में तनाव, अपने पुराने दोस्त की हत्या की खबर सुनकर गहरा सदमा और थोड़ी सी नाराज़गी महसूस कर सकती थी।

'मुझे बताओ क्या हुआ, माया। मैं सारी जानकारी जानना चाहता हूँ। कुछ भी मत छिपाना।'

माया ने उसे वह सब कुछ बताया जो उसने ऊंची आवाजें सुनने और अपने कमरे से बाहर निकलने के बाद देखा और सुना था।

'और तुमने अपने पिता को उसे शुक्र कहते हुए स्पष्ट रूप से सुना?' वीरेंद्र ने पूछा।

'जी हां, चाचा जी। और शुक्र ने पापा को ध्रुव कहा। मुझे नहीं पता क्यों।'

चुप्पी का एक पल था।

माया ने सबसे पहले बोलना शुरू किया। वह वीरेंद्र को भी उसके घर में हुए अपने अनुभव के बारे में बताना चाहती थी। उसकी आवाज़ कांप रही थी क्योंकि उसे अचानक आई ठंडक और वहाँ दिखाई देने वाले जीवों की दुर्गंध याद आ रही थी।

हैरानी की बात यह है कि वीरेंद्र ने ज्यादा प्रतिक्रिया नहीं दी। न ही उन्होंने अपने घर में अलौकिक प्राणियों के होने पर कोई अविश्वास दिखाया।

इसके बजाय उसने पूछा, 'क्या तुम्हारे पास अभी भी वह ताबीज है जो तुम्हारे पिता ने तुम्हें दिया था?'

'जी... जी हाँ, मैं पहनती हूँ। मैंने इसे पहना हुआ है।' माया हैरान थी। वीरेंद्र को ताबीज के बारे में कैसे पता चला? उसे यकीन था कि उसने इसके बारे में वीरेंद्र को नहीं बताया था। और वो इसके बारे में क्यों पूछ रहा था? क्या उसे अपने घर में हो रही घटनाओं की चिंता नहीं थी? या उसके पिता के साथ जो हुआ था उसकी?

'अच्छा। चाहे कुछ भी हो जाए, इसे मत उतारना। यही एक वजह है कि तुम अभी तक ज़िंदा हो।' इसके बाद कोई और स्पष्टीकरण नहीं दिया गया। 'तुम अभी कहाँ हो?'

मैं अपने घर के पास वाले मेट्रो स्टेशन पर हूँ।

'वहीं रहो। वहां जाना तुम्हारा सही फैसला था। इस समय तुम्हारे लिए वही सबसे सुरक्षित

जगह है। इतने सारे लोगों के बीच वे तुम पर हमला नहीं करेंगे। और, चाहे कुछ भी हो जाए, घर वापस जाने के बारे में सोचना भी मत।'

माया को आश्चर्य हुआ कि वीरेंद्र इतना आश्वस्त कैसे लग रहा था या उसे इतनी जानकारी कैसे थी। वह उससे पूछना चाहती थी कि 'वे' कौन थे और उन्होंने उस पर हमला क्यों किया। लेकिन वह जानती थी कि कोई स्पष्टीकरण नहीं मिलेगा। और, आखिरकार, उसके पिता ने इशारा किया था कि वीरेंद्र को पता होगा कि क्या करना है। वह उस पर भरोसा कर सकती थी।

'क्या तुम मेरे लिए आओगे?' माया की उम्मीदें बढ़ गईं।

'नहीं।' उसके जवाब से उसका दिल बैठ गया। 'हम बहुत दूर आ गए हैं और अभी हमें बहुत लंबा रास्ता तय करना है। इसमें बहुत समय लगेगा। मैं किसी को फोन करने जा रहा हूँ जो तुम्हें लेने आएगा। चिंता मत करो, वह तुम्हें ढूंढ लेगा। तुम यहीं रहो।'

'लेकिन... मैं उसे पहचान कैसे पाऊंगी?' माया सोचने लगी। वह चिंतित थी। वीरेंद्र जिस नए व्यक्ति की बात कर रहा था, वह कौन था?

'उसने तुम्हारे जैसा ही ताबीज पहना होगा। उससे कहो कि वह तुम्हें दिखाए। चिंता मत करो। शुक्र और उसके गिरोह के लोग कभी भी वह ताबीज नहीं पहनेंगे। मुझ पर भरोसा रखो।'

माया को वीरेंद्र पर भरोसा था। वह उसके पिता का सबसे करीबी दोस्त था।

'हिम्मत रखो, बच्चे। तुम जल्द ही सुरक्षित हो जाओगे।' वीरेंद्र ने कॉल काट दी।

माया वहीं खड़ी रही, खुद को गले लगाए और सोचती रही कि उसका रक्षक कब आएगा।

इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि आगे क्या होगा?

अध्याय पंद्रह

कपूर जांच करता है

अर्जुन का घर
नई दिल्ली

एसपी कपूर ने बैठक कक्ष में चारों ओर देखा। वे कुछ देर पहले ही यहाँ पहुँचे थे और उन्होंने घर को अँधेरे में डूबा हुआ पाया, पर्दे कसकर बंद थे और सामने का दरवाजा खुला हुआ था।

थोड़ी सी तलाशी लेने पर पता चला कि घर खाली था। ऐसा प्रतीत हुआ कि शहर से भागने की हड़बड़ी में वीरेंद्र और उसके परिवार ने घर में ताला लगाना तक भूल गए थे। इससे साफ संकेत मिलता है कि उनका वापस लौटने का कोई इरादा नहीं था।

कपूरी को इससे ज़्यादा कुछ उम्मीद नहीं थी। आख़िरकार, उन्हें पता था कि वीरेंद्र सिंह कुछ घंटे पहले अपनी बहन और भतीजे के साथ निकल चुके थे। अब वे आगरा जा रहे थे। कपूरी को उनके ठिकाने के बारे में लगातार जानकारी मिल रही थी।

उसे वास्तव में पता नहीं था कि वह इस घर में क्या खोजने की उम्मीद कर रहा था। शायद रहस्य का कोई सुराग। कुछ भी, ऐसा कुछ जो वीरेंद्र और उन दो हत्याओं के बीच संबंध को साबित कर सके जिनकी कपूर अब जांच कर रहा था।

उसके मन में एक सिद्धांत पनपने लगा था। उपाध्याय और सिंह, दोनों इलाहाबाद से दिल्ली आए थे। त्रिवेदी भी वहीं से आया था। उनका अतीत आपस में जुड़ा हुआ था। क्या पता वे सब वहाँ किसी चीज़ में शामिल रहे हों? शायद वे सब उससे बचने के लिए दिल्ली आए हों। और ये हत्याएँ... शायद उनका अतीत ही उनका पीछा कर रहा हो। अगर ऐसा था, तो वीरेंद्र सिंह अगला निशाना होगा।

कांस्टेबल ने जो बताया था, उससे ऐसा प्रतीत होता था कि उपाध्याय उस रहस्यमय अजनबी को जानते थे जो उनसे मिलने आया था और जो इस समय उनका मुख्य संदिग्ध था। इससे तीनों व्यक्तियों और उस अजनबी के बीच संभावित संबंध का संकेत मिलता था।

इससे यह बात समझ में आती है कि त्रिवेदी की हत्या की जानकारी मिलने के बाद सिंह ने अपना सामान पैक करके क्यों भाग गया था। उसे पता था कि वह खतरे में है। लेकिन फिर उपाध्याय भी क्यों नहीं भागा?

इसके बजाय, उन्होंने अजनबी का अपने घर में स्वागत किया था। यह बात समझ से परे थी। अगर सिंह इतना डर गया था कि तुरंत शहर छोड़कर चला गया, तो उपाध्याय को भी चिंतित होना चाहिए था।

कुछ न कुछ कमी जरूर थी। जब तक वह उन कमियों को नहीं सुलझा लेता, तब तक कुछ भी समझ में नहीं आएगा।

उसने हवा को सूंघा। उसने अपने एक आदमी से पूछा, 'क्या तुम्हें कुछ गंध आ रही है?'

कांस्टेबल ने भी सूंघा और अपनी नाक सिकोड़ी। 'महोदय, एक गंध है। बहुत हल्की है, लेकिन है।'

कपूरी ने राहत भरी सांस लेते हुए सिर हिलाया। उन्हें लगा था कि उनका दिमाग उन्हें धोखा दे

रहा है। इतनी सारी रहस्यमयी घटनाओं के बीच, वे निश्चित नहीं हो पा रहे थे। क्या वह गंध महत्वपूर्ण थी? उन्हें ऐसा नहीं लगा और उन्होंने इस विचार को मन से निकाल दिया।

वीरेंद्र सिंह के उस सुबह के शब्द उसके दिमाग में बार-बार गूंज रहे थे।

यह मामला अलौकिक घटनाओं से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है।

क्या उस आदमी को सचमुच अपनी बातों पर यकीन था या वह जांच को गुमराह करने की कोशिश कर रहा था? कपूर ने दृढ़ निश्चय से अपने होंठ भींच लिए। वह सच्चाई का पता लगाकर रहेगा। सिंह के असली राज़ खुलने में बस कुछ ही समय बाकी था। और जब ऐसा होगा, कपूर वहीं मौजूद रहेगा।

आगरा-ग्वालियर राजमार्ग

'क्या हुआ?' अर्जुन अब और चुप नहीं रह सका। 'क्या वह ठीक है? माया के पिता को क्या हुआ? मैं उससे बात करना चाहता हूँ।'

माया से बात खत्म करने के बाद वीरेंद्र ने गाड़ी की रफ्तार और भी तेज कर दी। ऐसा लग रहा था मानो उसे अपनी मंजिल तक पहुंचने की और भी ज्यादा जल्दी हो।

अर्जुन परेशान था। माया की बातों से वह इतना स्तब्ध रह गया था कि उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे या कैसे प्रतिक्रिया दे। यह मानना मुश्किल था कि नरेश चाचा की मौत हो गई है, और उन्हें शुक्र नाम के उस शख्स ने मार डाला है। वह इतना सदमे में था कि वीरेंद्र और माया के बीच की बातचीत उसने मुश्किल से ही सुनी।

अब जब वह लगभग ठीक हो चुका था, तो वह माया से बात करना चाहता था। वह उसके साथ रहना चाहता था, उसे दिलासा देना चाहता था और उसे सांत्वना देना चाहता था। वह कहाँ जाएगी? वह क्या करेगी?

वीरेंद्र ने जवाब दिया, 'इस समय उससे बात करने से कोई फायदा नहीं होगा। वह अभी भी सदमे में है और उसे ठीक होने के लिए समय चाहिए। हमारे पहुँचने के बाद आप उससे जितनी चाहें उतनी बात कर सकते हैं।'

'लेकिन उसे किसी की देखभाल की जरूरत है,' अर्जुन ने विरोध किया। 'क्या हमें उसके लिए वापस नहीं जाना चाहिए?'

वीरेंद्र ने दृढ़ता से कहा, 'हम दिल्ली वापस नहीं जा रहे हैं। हमने दिल्ली इसलिए छोड़ी थी और वह कारण अभी भी वही है। बल्कि, हालात और भी बदतर हो गए हैं।'

'तो तुम शुक्र को जानते हो?' अर्जुन ने अनुमान लगाया। 'क्या यही वह कारण है जिसकी वजह से हमने दिल्ली छोड़ी?'

प्रमिला अपनी सीट पर घूमी और उसे आश्वस्त भरी नज़र से देखा। 'अर्जुन, हमें थोड़ा समय दो। हम जो कुछ भी कर रहे हैं, उसके पीछे एक ठोस कारण है। मैं तुम्हें वादा करती हूँ कि तुम्हें समय आने पर सब कुछ बता दिया जाएगा।'

'लेकिन माया?' अर्जुन ने ज़िद की। 'उसे अकेला नहीं छोड़ा जा सकता! अगर हम उसके लिए वापस नहीं गए, तो वह क्या करेगी? कहाँ जाएगी? दिल्ली में उसका कोई और नहीं है जिसके पास वह जा सके!'

‘मैंने इसका इंतज़ाम कर दिया है।’ वीरेंद्र का लहजा तीखा था। क्या लड़का सुन नहीं रहा था? उसने आह भरी। अर्जुन पहले से ही उनके अचानक चले जाने से परेशान था, और माया की खबर ने उसकी परेशानी और बढ़ा दी होगी। उसका लहजा नरम पड़ गया। ‘मैंने एक दोस्त से कहा है कि वह माया को ले आए और अपने घर ले जाए। वह भरोसेमंद आदमी है। उसकी पत्नी और वह माया का अच्छे से ख्याल रखेंगे। तुम उसकी चिंता मत करो। वह ठीक रहेगी।’

अर्जुन संतुष्ट नहीं था, पर वह अपने चाचा को अच्छी तरह जानता था। एक बार मन बना लेने पर वे पीछे नहीं हटते थे। अर्जुन के पास स्थिति को स्वीकार करने और अच्छे की उम्मीद करने के अलावा कोई चारा नहीं था। वह उदास होकर कार की पिछली सीट पर बैठ गया और खिड़की से बाहर देखने लगा। घुटन का जाना-पहचाना एहसास उसके अंदर उमड़ आया। मानो वह किसी सुनहरी जेल में कैद हो। सुरक्षित तो था, पर न तो अपनी बात रख सकता था और न ही बाहर निकल सकता था।

ऐसा नहीं था कि उसका जीवन दुखमय था। लेकिन पंद्रह साल का होने के कारण वह और अधिक स्वतंत्रता चाहता था। उससे छोटे बच्चों को ज़्यादा आज़ादी थी। जबकि उसके परिवार में न तो प्रमिला और न ही वीरेंद्र को यह एहसास था कि वह लगभग एक वयस्क हो चुका है!

गाड़ी चलाते हुए वीरेंद्र ने मन ही मन आह भरी। उसे समझ आ गया था कि अर्जुन कैसा महसूस कर रहा है। और वह चाहता था कि काश हालात कुछ और होते।

फिलहाल, अर्जुन के मन में अपनी भावनाओं को लेकर कोई विशेष प्राथमिकता नहीं थी।

उसने अपने दोस्त के बारे में सोचा। उपाध्याय और वीरेंद्र ने त्रिवेदी की हत्या के पीछे की परिस्थितियों पर विस्तार से चर्चा की थी और सभी बातें एक ही संभावना की ओर इशारा कर रही थीं।

उपाध्याय की मृत्यु ने केवल एक ही बात साबित की थी। उनके निष्कर्ष सही थे।

वह कब तक खतरे को टाल सकता था?

अध्याय सोलह

बचावकर्मी पहुँचता है

मेट्रो स्टेशन
नई दिल्ली

माया ने अपनी घड़ी देखी और कांप उठी। वैसे तो ज़्यादा ठंड नहीं थी—सर्दियाँ आने में अभी कुछ महीने बाकी थे और शाम सुहावनी थी। लेकिन वह आधे घंटे से ज़्यादा समय से यहाँ अकेली इंतज़ार कर रही थी और सोच रही थी कि उसका मददगार कब आएगा।

उसने खुद को दिलासा देने की कोशिश की कि वीरेंद्र की कॉल का जवाब देने और मेट्रो स्टेशन तक पहुँचने में समय लगेगा। उसे पता नहीं था कि वह दिल्ली के किस हिस्से से आएगा। अगर वह दूर से आ रहा था, तो शहर की सड़कों पर ट्रैफिक में फंसकर यहाँ पहुँचने में उसे काफी समय लग जाएगा।

उसने चारों ओर लोगों की ओर देखा। स्टेशन पर लगातार लोगों का आना-जाना लगा हुआ था। लोग घर जाने के लिए ट्रेन पकड़ रहे थे। या फिर लोग बड़ी संख्या में स्टेशन पर पहुँचकर, तितर-बितर होकर अपने-अपने घर की ओर चल दिए। थके हुए चेहरे, सुस्त शरीर, उदास मन उत्सुकता, सपनों भरी निगाहों और खुशी के भावों से भरे हुए थे।

उनमें से कौन उसके लिए आएगा?

उसकी नज़र एक छोटे कद के, मोटे आदमी पर पड़ी, जिसने टी-शर्ट और जींस पहनी हुई थी और सिर पर बेसबॉल कैप लगाई हुई थी, जो तेज़ी से उसकी ओर बढ़ रहा था। उसे मन से निकाल कर, उसने भीड़ में मौजूद लोगों के चेहरों पर नज़र दौड़ाई। लेकिन उसे कोई भी ऐसा व्यक्ति नज़र नहीं आया जो संभावित उम्मीदवार हो।

'माया?' बगल से आई एक कोमल आवाज ने उसे चौंका दिया।

यह वही हट्टा-कट्टा आदमी था जिसे उसने अभी-अभी देखा था।

वह आखिरी व्यक्ति जिससे उसे ऐसी उम्मीद थी।

उसने मुस्कुराते हुए उससे कहा, 'मैं रतन तिवारी हूं। वीरेंद्र ने मुझे फोन करके तुम्हारे लिए आने को कहा था। घबराओ मत। अब तुम सुरक्षित हो।'

उसने संदेह भरी निगाहों से उसकी ओर देखा।

वह उसके चेहरे के भाव समझ गया था। उसने अपनी टी-शर्ट के कॉलर के अंदर हाथ डालकर एक सोने की चेन निकाली, जिसमें एक ताबीज लगा हुआ था। उसने उसे जितना हो सके आगे बढ़ाया ताकि वह उसे देख सके।

तिवारी ने कहा, 'ये लीजिए। वीरेंद्र ने मुझे अपनी पहचान के प्रमाण के तौर पर यह दिखाने के लिए कहा था।'

माया ने ताबीज का अध्ययन किया। वह बिल्कुल उसके ताबीज जैसा ही प्रतीत होता था।

उसने भी मुस्कुराते हुए जवाब दिया, 'धन्यवाद, तिवारीजी।'

तिवारी ने मुस्कुराते हुए उससे कहा, 'मुझे रतन कहो।' 'मुझे 'अंकल' और 'जी' सुनना बिल्कुल पसंद नहीं है। इससे मुझे अपनी असल उम्र से कहीं ज्यादा बूढ़ा महसूस होता है। वैसे, मैं इतना

बूढ़ा नहीं हूँ,' उसने ठहाका लगाते हुए कहा।

माया का मन प्रसन्न हो गया। इस व्यक्ति के आसपास खुश रहना स्वाभाविक था। उसकी मुस्कान और हंसमुख स्वभाव संक्रामक था। उसके बारे में कुछ ऐसा था जो बहुत सुकून देने वाला था। उसने उसके पिता या हाल ही में हुए उसके दर्दनाक अनुभवों का ज़िक्र नहीं किया, हालांकि यह असंभव ही था कि वह उनके बारे में न जानता हो। वीरेंद्र ने उसे ज़रूर बताया होता। माया इस राहत के लिए आभारी थी; फिलहाल वह केवल अपनी यादों से ही निपट सकती थी, और वह नहीं चाहती थी कि कोई और उन्हें फिर से कुरेद दे।

तिवारी ने आगे कहा, 'चलो फिर। चलते हैं।' उन्होंने स्टेशन से बाहर निकलने की ओर इशारा किया।

माया तिवारी के साथ चलने लगी। 'हम कहाँ जा रहे हैं?'

तिवारी ने मुस्कुराते हुए उससे कहा, 'मेरी पत्नी तुम्हारे लिए रात का खाना बना रही है। तुम आज रात हमारे घर पर रुकोगी। कल सुबह... खैर, कल की बात अलग है, तब हम इस बारे में सोच लेंगे। लो, हम यहाँ हैं, और ये रही मेरी गाड़ी।'

माया आगे वाली यात्री सीट पर बैठ गई, जबकि तिवारी लगातार बातें करता रहा।

अपनी सीट बेल्ट बांध लें। और चलिए चलते हैं!

तिवारी की बातें सुनते-सुनते माया के मन में एक बात खटक रही थी। तिवारी कल क्या होने वाला है, इस बारे में इतना गोलमोल जवाब क्यों दे रहे थे? उसे उम्मीद थी कि आगे कोई योजना तो होगी। आखिर, वह तिवारी और उनकी पत्नी के साथ पूरी जिंदगी तो नहीं बिता सकती थी।

सुबह उसका क्या इंतजार कर रहा था?

आगरा से आगे राजमार्ग पर कहीं

'सर, वे आगरा में नहीं रुके,' कांस्टेबल हरीश ने कपूर को सूचना दी।

'उन्होंने ऐसा नहीं किया? तो वे कहाँ जा रहे हैं?'

'मुझे पक्का पता नहीं है, लेकिन अगर मुझे अनुमान लगाना हो, तो शायद ग्वालियर, महोदय।'

कपूरी ने झटपट आगरा और ग्वालियर के बीच की दूरी गूगल पर खोजी। उन्होंने सहमति जताते हुए कहा, 'आप सही हो सकते हैं। ग्वालियर सड़क मार्ग से आगरा से सिर्फ दो घंटे से थोड़ा अधिक दूर है। जब आप पहुंच जाएं तो मुझे बता देना।'

'ठीक है, महोदय।' हरीश ने जम्हाई ली और सड़क पर ध्यान केंद्रित करने के लिए माथे पर शिकन डाली। जिस कार का वह पीछा कर रहा था, वह अपने यात्रियों के लिए खाना खाने के लिए भी नहीं रुकी थी। स्पष्ट था कि वे ग्वालियर में खाना खाने की योजना बना रहे थे।

वह सोच रहा था कि जब वे अपने गंतव्य पर पहुंचेंगे तो उन्हें क्या पता चलेगा।

अध्याय सत्रह

डायरी

रतन तिवारी का घर
नई दिल्ली

माया बिस्तर पर बैठ गई और अपने पिता के अध्ययन कक्ष से लाई गई हस्तलिखित डायरी को ध्यान से पढ़ने लगी।

वे तिवारी के घर पहुंच गए थे और उनकी पत्नी ने माया की खूब खातिरदारी की, उसके लिए हॉट चॉकलेट बनाई, जिसे कुकीज़ के साथ परोसा गया, और फिर दाल, रोटी, तली हुई भिंडी और आलू से बनी एक स्वादिष्ट करी का शानदार डिनर तैयार किया।

रात के खाने के दौरान तिवारी माया को चुटकुलों और रोचक किस्सों से खूब मनोरंजन कराते रहे। उन्होंने महाभारत की कुछ कहानियों पर भी अपने विचार साझा किए। तिवारी संस्कृत में पीएचडी थे और दिल्ली विश्वविद्यालय के दक्षिण परिसर के एक कॉलेज में पढ़ाते थे। उन्हें यह जानकर बेहद खुशी हुई कि माया भी संस्कृत में पारंगत थीं और उन्होंने प्राचीन ग्रंथ पढ़े थे।

खाना खाने के बाद ही उसे थकान महसूस होने लगी। माया को इस बात का एहसास ही नहीं था कि वह शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से कितनी कमजोर हो चुकी है। अब तक उसने जिन विचारों और भावनाओं को बेरहमी से दबा रखा था, वे सब एक साथ उमड़ पड़े, मानो उसे अपने अंदर समा लेने और अपनी तीव्रता से डुबो देने की धमकी दे रहे हों।

तिवारी और उनकी पत्नी ने यह भांप लिया कि माया एक खतरनाक स्थिति की ओर बढ़ रही है, इसलिए उन्होंने उसे आराम करने और कुछ देर सोने की सलाह दी।

शुभ रात्रि कहते हुए माया ने तिवारी को धीमी आवाज़ में कुछ बुदबुदाते हुए सुना। उनकी सधी हुई आवाज़ से माया को लगा कि वह किसी मंत्र का जाप कर रहे हैं, लेकिन उनका थका हुआ दिमाग इतना सुस्त था कि वह उनके शब्दों को ठीक से समझ नहीं पाईं, जो वह धीरे-धीरे, लगभग खुद से ही बुदबुदा रहे थे।

जैसे ही माया रात को अपने शयनकक्ष में दाखिल हुई, शांति, सुकून और खामोशी का एक अद्भुत एहसास उस पर मीठी सुगंध के बादल की तरह छा गया। उसने खुद को उसमें डुबो दिया, और अपने थके हुए मन और शरीर को उसकी कोमलता के आगे आत्मसमर्पण करने दिया।

लेकिन माया को नींद नहीं आ रही थी। उसे पहले कुछ करना था। नींद से लड़ते हुए उसने डायरी उठाई। घर से भागने के बाद से ही वह बिना सोचे-समझे उस डायरी को अपने पास रखती आई थी। लेकिन अब आखिरकार उसके पास जिज्ञासा जगाने का समय था। डायरी में क्या था? यह इतनी महत्वपूर्ण क्यों थी कि उसके पिता ने भागने से पहले उसे डायरी वापस लाने पर ज़ोर दिया था? अगर उन्होंने इसे इतना महत्वपूर्ण समझा था कि शुक्र द्वारा देखे जाने का जोखिम भी उठाया जा सकता था, तो उन्होंने उसे यह क्यों नहीं बताया कि डायरी का क्या करना है?

वह अपने पिता के शब्दों को बार-बार मन ही मन दोहरा रही थी, यह याद करने की कोशिश कर रही थी कि उन्होंने वास्तव में क्या कहा था। क्या उससे कुछ छूट गया था? क्या कोई महत्वपूर्ण सुराग था जिसे वह समझ नहीं पाई थी?

उसके पिता के शब्द उसके मन में बस गए थे। उन्होंने उससे कहा था कि डायरी उठाओ और भाग जाओ। उसे वीरेंद्र को फोन करके सब कुछ बताना था। बस इतना ही।

डायरी का क्या करना है, इसके बारे में कुछ भी नहीं बताया गया।

तो फिर इसका महत्व क्या था? उसने उसे इसे सुरक्षित रखने के लिए कहा ही क्यों था?

स्पष्टतः उसके पिता नहीं चाहते थे कि यह शुक्र के हाथों में पड़े। इस संभावना ने कई नए प्रश्न खड़े कर दिए।

उसके मन में एक विचार आया। क्या यही वह कारण हो सकता है जिसके चलते शुक्र उनके घर आया था? क्या वह डायरी की तलाश में आया था और उसे पता चल गया था कि वह उसके पिता के पास है? और क्या शुक्र ने उसके पिता की हत्या इसलिए की थी क्योंकि उन्होंने डायरी का पता बताने से इनकार कर दिया था?

माया ने डायरी खोली। शायद उसमें जवाब छिपे हों।

उसने साफ-सुथरी लिखावट वाले पन्ने पलट-पलट कर देखे। डायरी पर सरसरी नज़र डालते समय उसे लगा था कि लिखावट हिंदी में है, क्योंकि लिपि देवनागरी थी। लेकिन अब उसे एहसास हुआ कि कुछ लिखावट संस्कृत में थी, हालांकि कई पन्ने एक अजीब, अपरिचित भाषा में लिखे हुए थे, जिसे वह समझ नहीं पा रही थी।

पन्ने पलटते समय उसकी नज़र एक श्लोक पर पड़ी। यह एक मंत्र था। उसने शीर्षक देखा। इसे नरसिम्हा मंत्र कहा जाता था।

उसने भौंहें चढ़ा लीं।

Narsimha .

उसने यह शब्द पहले कहाँ सुना था?

फिर उसे याद आया। विष्णु के अवतार नरसिंह की कहानी, जो आधे मनुष्य और आधे शेर थे और जिन्होंने दिति के पुत्र हिरण्यकशिपु का वध किया था। ब्रह्मा ने हिरण्यकशिपु को वरदान दिया था कि उसे न तो मनुष्य मार सकता है और न ही पशु। तब विष्णु ने नरसिंह का रूप धारण किया - जो न तो मनुष्य थे और न ही पशु, बल्कि दोनों का मिश्रण थे - और असुर के चीर-फाड़ कर तीनों लोकों पर उसके अत्याचार का अंत कर दिया।

क्या इस मंत्र का उस कहानी से कोई संबंध था? मंत्रों को भोले-भाले लोगों के लिए मानने की उनकी पुरानी धारणा के बावजूद, वे उत्सुक थीं। हिरण्यकशिपु की कहानी, जिसने अपने पुत्र प्रहलाद को मारने के कई असफल प्रयास किए थे, केवल इसलिए कि प्रहलाद विष्णु का कट्टर भक्त था, नरसिंह अवतार के प्रकट होने के साथ समाप्त हुई थी। लेकिन इस मंत्र का इससे क्या संबंध था?

माया ने मंत्र को जोर से पढ़ा।

‘उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखं

नरसिम्हम भीषणं भद्रं मृत्योर मृत्युं नमाम्यहम्

‘उग्राम विराम महा विष्णु’
ज्वलनतुम सर्वतो मुखम
नरसिंगम भीशनम भद्रम
मृत्युर् मृत्युम् नममि अहम्’

इसे पढ़ने के बाद वह वापस बैठ गई। अब क्या होगा? जब कुछ नहीं हुआ, तो उसने जम्हाई ली और डायरी के कुछ और पन्ने पलटे। उन पन्नों पर भी वही अनजानी भाषा में लिखी कविताएँ थीं जो उसे पहले के पन्नों में मिली थीं। उसकी नज़र कुछ रेखाचित्रों और हाथ से बनाए गए रेखाचित्रों पर पड़ी। ये क्या थे? हर रेखाचित्र या रेखाचित्र के साथ एक कैप्शन था। लेकिन कैप्शन सभी उसी अजीब भाषा में थे जिसमें डायरी का आधा हिस्सा लिखा हुआ प्रतीत हो रहा था।

उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। जब वह इस किताब को पढ़ भी नहीं सकती थी, तो उसके पिता ने उससे इस किताब का क्या काम करवाया था?

उसने फिर जम्हाई ली। इस बार उसने नींद के प्रकोप को रोकने की कोशिश नहीं की। डायरी को एक तरफ रखकर, उसने लाइट बंद की और लेट गई, आखिरकार नींद की बाहों में समा गई।

अध्याय अठारह

सपना

रतन तिवारी का घर

नई दिल्ली

माया का शरीर बुरी तरह से हिल गया और वह चौंककर उठ बैठी।

कुछ क्षणों के लिए वह बुरी तरह से भ्रमित हो गई, उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह कहाँ है।

धीरे-धीरे माया को अपने आसपास की जगह का एहसास हुआ। वह रतन तिवारी के फ्लैट के अतिथि कक्ष में थी। वह डायरी पढ़ रही थी और फिर सो गई थी।

तभी अचानक किसी चीज़ से उसकी नींद टूट गई। वह हैरान थी। उसकी नींद किसने खराब की? उसे साफ तौर पर महसूस हुआ कि उसका शरीर ज़ोर से झटका खा गया।

उसके मन के धुंधले कोनों से यादें वापस आने लगीं। वह सपना।

उसे अब याद आ गया।

धीरे-धीरे, जैसे महीन कपड़े पर स्याही का धब्बा फैलता है, वैसे ही सपने की याद मजबूत होती गई और अधिक स्पष्ट होती गई क्योंकि उसने जो सपना देखा था उसकी छवियां और अधिक स्पष्ट होती गईं।

और वह कैसा सपना था! एक ऐसा सपना जो जितना हैरान करने वाला था उतना ही चौंकाने वाला भी, जितना डरावना था उतना ही अद्भुत भी।

माया ने सपना देखा कि वह बिस्तर से उठकर खिड़की से बाहर निकलकर तारों से भरे आकाश में तैर रही है। यह एक अद्भुत अनुभूति थी, हल्कापन का एहसास, लगभग भारहीनता का अनुभव, और न केवल उड़ने की क्षमता बल्कि ऊपर से दुनिया को देखने की क्षमता भी।

सपने में विचार जितनी तेज़ी से बदलते थे, उतनी ही तेज़ी से वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर भी जाती रहती थी। एक पल वह तिवारी के घर के ऊपर मंडरा रही थी; अगले ही पल वह अपने घर के बैठक कक्ष में थी—वही कमरा जहाँ कुछ घंटे पहले उसके पिता की बेरहमी से हत्या कर दी गई थी। उसे आश्चर्य हुआ कि वह घर की दीवारों के आर-पार जाने में सक्षम थी।

खून से सने कालीन और सोफे को देखकर उसका आश्चर्य पल भर में दुख में बदल गया। दीवारों पर भी खून के धब्बे थे। इस दृश्य को और सहन न कर पाने के कारण, उसके विचार अनजाने में अर्जुन के घर की ओर मुड़ गए। पलक झपकते ही वह उसी कमरे में पहुँच गई जहाँ उसने उस शाम उन दो भयानक जीवों को देखा था। लेकिन अब, उसके सपने में, कमरा खाली था, और ऐसा लग रहा था जैसे वह हमेशा से, इतने सालों से, वैसा ही रहा हो।

माया अर्जुन के बारे में सोच रही थी और अचानक वह एक अनजान जगह पर पहुँच गई। उसने वीरेंद्र की लैंड क्रूज़र को एक संकरी, एक लेन वाली सड़क पर चलते देखा, जिसके दोनों ओर खेत थे। दूर क्षितिज पर काले रंग का एक असमान विस्तार था - मानो काले बादल इकट्ठा हो रहे हों और आसपास के ग्रामीण इलाकों में तबाही मचाने की तैयारी कर रहे हों।

काले बादलों का ख्याल आते ही शुक्र की याद आ गई। वह कौन था? उसके पिता उसे कैसे जानते थे? उसके पास ऐसी कौन सी अज्ञात शक्ति थी जिसने उसे उसके पिता को इस तरह

सताने में सक्षम बनाया था?

शुक्र के नाम का ख्याल आते ही, लगभग तुरंत ही वह लैंड क्रूजर में सवार होकर उस जगह से दूर एक ऐसी जगह पहुंच गई, जो रात से भी ज्यादा अंधेरी थी, जहां तारों की रोशनी भी दिखाई नहीं देती थी।

यहां भारी जनसमूह जमा था। माया उनके ऊपर मंडरा रही थी, नीचे के दृश्य को समझने में असमर्थ। अब सपने में एक अजीब सी बेचैनी घर कर गई थी। वह खुद को इस जगह से, नीचे मौजूद भीड़ से दूर ले जाना चाहती थी, लेकिन वह ऐसा नहीं कर पा रही थी।

दूर से उसे एक आकृति दिखाई दी। इस सभा का नेता। उसे आश्चर्य हुआ कि वह कौन है, और बेहतर ढंग से देखने के लिए वह उसके करीब चली गई।

जिस पथरीले चबूतरे पर वह अपने अनुयायियों को संबोधित कर रहा था, उस पर मशालों की रोशनी पड़ रही थी, तभी उसने उसे अचानक पहचान लिया।

यह शुक्रा थी! वह उस पट्टी, उस चेहरे और उस एक आंख को पहचानने में गलती नहीं कर सकती थी, जिसने उसके घर के अध्ययन कक्ष में उसे इतनी तीखी निगाहों से घूरा था कि वह इस्पात को भी पिघला सकती थी।

शुक्र के सामने एकत्रित भीड़ के आगे खड़े लोगों पर मशालों की टिमटिमाती रोशनी पड़ रही थी। उन्हें देखकर माया भय से कांप उठी।

वे इंसान नहीं थे। सामान्य मनुष्य नहीं थे।

यह एक विचित्र समूह था। उनमें से कुछ तो उन जीवों की हूबहू प्रतिकृतियाँ थीं जिनसे वह अर्जुन के घर पर मिली थी। लेकिन कुछ अन्य भी थे, जो दिखने में कहीं अधिक भयानक थे, जिनकी आँखें खून से लाल थीं; कुछ अनाम जीव थे, जिनके मुँह से थूक टपक रहा था, तो कुछ के दाँत नुकीले और बाहर निकले हुए थे। ऐसा लग रहा था मानो नरक की आबादी इस जगह पर उतर आई हो।

या फिर यह साक्षात नरक था?

माया चीखने की कोशिश कर रही थी, लेकिन चीख नहीं पा रही थी। वह बेतहाशा बाहर निकलने का रास्ता ढूंढ रही थी, कुछ भी जिससे वह यहाँ से दूर जा सके।

शुक्र अपने उत्सुक श्रोताओं पर चिल्ला रहा था। माया को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या कह रहा है। वह जानना भी नहीं चाहती थी कि वह क्या कह रहा है। वह बस वहाँ से निकलना चाहती थी!

लेकिन ऐसा लग रहा था मानो सपने में भी वह इस भयानक जगह में फंसी हुई हो। वह मदद के लिए चिल्लाना चाहती थी, पर कोई आवाज़ नहीं निकल रही थी। माया हताश हो गई। उसे पता था कि वह सपना देख रही है, फिर भी वह जाग नहीं पा रही थी। यह बुरा सपना कब तक चलेगा?

तिवारी का मुस्कुराता हुआ, गोल चेहरा अचानक उसके दिमाग में आ गया, उसकी सुखद संगति से मिलने वाला आराम और सुरक्षा उसे नीचे के भयावह दृश्य से एक स्वागत योग्य राहत प्रदान कर रही थी।

पलक झपकते ही उसे नीचे के भयावह दृश्य से दूर ले जाया गया और वह तिवारी के अतिथि कक्ष में अपने बिस्तर की गर्माहट और आराम में वापस आ गई।

तभी वह अचानक झटके से जाग उठी और सोचने लगी कि वह कहां है।

उसके सपने के दृश्य इतने सजीव थे, मानो चटख रंगों में उकेरे गए हों। हालांकि वह जानती थी कि यह एक सपना था, फिर भी वह कांप रही थी। सपने का आखिरी हिस्सा, खासकर, एक भयानक सपने जैसा था।

अंततः, थकान एक बार फिर उस पर हावी हो गई। उसने सपने का अर्थ समझने या ये सब सपने में क्यों आए, यह जानने की कोशिश छोड़ दी और गहरी नींद में डूब गई।

अध्याय उन्नीस

पन्ना

चौथा दिन

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के पास

मध्य प्रदेश

‘हम कहाँ हैं?’ लैंड क्रूज़र के एक और झटके से जागते हुए अर्जुन ने धीरे से कहा। पिछले एक घंटे से सड़क ऊबड़-खाबड़ थी, फिर भी अर्जुन पिछले कुछ घंटों में से ज़्यादातर समय सोता रहा। लंबी यात्रा की थकान उस पर हावी हो गई थी।

वे लगभग 12 घंटे से बिना रुके गाड़ी चला रहे थे, केवल ग्वालियर में थोड़ी देर के लिए खाना खाने के लिए रुके थे। उसके बाद, उन्होंने अपनी यात्रा फिर से शुरू की और आधी रात को ओरछा और झांसी से गुजरे। ऐसा लग रहा था कि केवल वही लोग जाग रहे थे, जबकि जिन कस्बों और गांवों से वे गुजर रहे थे, वे गहरी नींद में सो रहे थे।

वीरेंद्र जरा भी थका हुआ नहीं लग रहा था। आगरा से ग्वालियर जाते समय माया से बात करने के बाद उसने कुछ घंटों के लिए गाड़ी की स्टीयरिंग प्रमिला को सौंप दी थी। लेकिन इस दौरान उसने झपकी नहीं ली थी। बल्कि वह गहरी सोच में डूबा हुआ था।

अर्जुन ने पूरी यात्रा के दौरान अपने फोन की प्लेलिस्ट से खुद को व्यस्त रखा था, लेकिन वह भी बार-बार वही गाने सुनकर ऊबने लगा था।

वीरेंद्र ने गंभीर स्वर में कहा, "बस पहुंचने ही वाले हैं," वह उतना ही सतर्क था जितना दिल्ली से निकलते समय था। "बस कुछ ही मिनट बाकी हैं।"

उसने अभी तक अर्जुन को अपनी मंज़िल के बारे में नहीं बताया था। अगर प्रमिला को पता भी था, तो उसने भी चुप रहना ही बेहतर समझा, बस बीच-बीच में अर्जुन से पूछती रही कि उसे भूख लगी है या प्यास। उसने सब कुछ सामान्य रखने की कोशिश की, और ग्वालियर में अपने आखिरी बार आने के बारे में बताया, जो कई साल पहले की बात थी। अर्जुन जानता था कि वह उसके लिए सब कुछ आसान बनाने की कोशिश कर रही है, लेकिन वह अब और चुप नहीं रह सकता था। उसे जवाब चाहिए थे।

एसयूवी एक बड़े से बोर्ड के पास से गुजरी जिस पर 'पन्ना राष्ट्रीय उद्यान' लिखा था। अर्जुन ने बोर्ड और पार्क के बंद दरवाजों को देखा और अपनी घड़ी पर नजर डाली।

कुछ ही देर में, क्षितिज पर प्रकाश की पहली किरणें दिखाई देने लगेंगी, जो भोर के आगमन का संकेत देंगी और एक नए दिन की शुरुआत का ऐलान करेंगी।

वे एक छोटे से गाँव से गुज़रे। एक झोपड़ी के बाहर खंभे से बंधी एक बकरी सुबह-सुबह शांति भंग करने वाले वाहन पर नाराज़ होकर मिमियाने लगी। अर्जुन ने मन ही मन सोचा, "यह बकरी तो अनिद्रा से पीड़ित है," और मुस्कुरा दिया।

लैंड क्रूज़र की खिड़कियों से, वह उत्सुकतापूर्वक उस गांव को देखता रहा, जिसके दोनों ओर जंगल शुरू हो रहा था।

इस जंगल में कौन-कौन से अजूबे छिपे हैं? अर्जुन सोचने लगा। वह कभी पन्ना नहीं गया था,

लेकिन चारों ओर घने पत्तों को देखकर उसे यकीन था कि यह पार्क घूमने के लिए बहुत ही शानदार जगह होगी। उसे याद आया कि सातवीं कक्षा में पढ़ते समय उसके भूगोल के एक शिक्षक ने इसका ज़िक्र किया था। अर्जुन को लगा कि काश उसने उस समय ध्यान से सुना होता। यह किसी भूवैज्ञानिक संरचना के संदर्भ में था, लेकिन अब उसे याद नहीं था।

लैंड क्रूजर के अचानक रुकने से वह अपनी तल्लीनता से बाहर आ गया।

वीरेंद्र ने कार को एक तरफ खिसकाकर सड़क के ऊबड़-खाबड़, बिना पक्की सड़क वाले किनारे पर पार्क कर दिया, जो वाहन को पार्क करने के लिए काफी चौड़ा था।

वीरेंद्र ने घोषणा की, 'ठीक है। हम यहाँ हैं।'

तीनों कार से उतरे और अपने अंगों को फैलाया, जो लंबी ड्राइव के कारण अकड़ गए थे।

‘अब क्या?’ अर्जुन ने मन ही मन सोचा।

दिल्ली छोड़ने के बाद पहली बार वीरेंद्र ने अपने चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आने दी।

‘तुम कुछ बहुत ही अद्भुत देखने वाले हो,’ उसने अर्जुन से कहा। ‘चलो।’

अध्याय बीस

पांडवों का पतन

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के पास
मध्य प्रदेश

पूरब की ओर आसमान में हल्की रोशनी होने लगी थी, और वे पेड़ों के बीच से होकर सड़क से नीचे की ओर जाने वाला एक रास्ता मुश्किल से देख पा रहे थे, जहाँ कार खड़ी थी।

तीनों उस रास्ते पर चलना शुरू किया और जल्द ही पत्थरों से बनी एक सीढ़ी पर पहुँच गए, जो शायद पास की पहाड़ियों से तराशी गई थीं। वीरेंद्र ने अपने मोबाइल फोन की टॉर्च चालू कर दी।

'अब संभलकर चलना,' उसने उन्हें आगाह करते हुए कहा और पीछे-पीछे चलने लगा ताकि प्रमिला और अर्जुन उसके मोबाइल फोन से बीम पर नीचे उतरने का रास्ता देख सकें। 'आगे गहरी खाई है। आपको बाईं ओर एक रेलिंग दिखेगी। उससे दूर रहना। एहतियात के तौर पर।'

सीढ़ियों से उतरते समय अर्जुन ने प्रमिला का हाथ सुरक्षात्मक ढंग से पकड़ रखा था। वीरेंद्र ने जैसा पहले ही चेतावनी दी थी, उनके बाईं ओर एक रेलिंग थी। वह हरे रंग से रंगी हुई थी और उसके पार अर्जुन घने पेड़ों के बीच एक विशाल काला गड्ढा देख सकता था। यद्यपि वह गड्ढे की रूपरेखा और उसके फैलाव का स्पष्ट अनुमान लगा सकता था, लेकिन धीरे-धीरे बढ़ते सूर्योदय के कारण वह उस खाई की कोई विशेषता या उसके भीतर क्या है, यह नहीं देख पा रहा था।

अर्जुन को यह आभास हुआ कि उसके चाचा पहले भी यहाँ आ चुके थे। और शायद एक से अधिक बार।

वीरेंद्र ने आग्रह किया, 'चलते रहो। हम लगभग पहुँच चुके हैं।'

अब रास्ता ढलान की ओर नीचे जा रहा था, और रेलिंग रास्ते के किनारों पर लगी हुई थी। अंत में, वे समतल भूमि पर पहुँच गए।

वीरेंद्र ने चेतावनी देते हुए कहा, 'सब लोग सावधान रहें। सीधे चलते रहें। अगर आप बाईं ओर गए तो पानी में गिर जाएंगे।'

भोर हो चुकी थी और धुंधली रोशनी में अर्जुन अब कुछ बारीकियाँ देख पा रहा था।

उसके पीछे वह रास्ता था जो सड़क के किनारे काफी ऊपर खड़ी लैंड क्रूज़र से नीचे की ओर जाता था, जो अब नज़र से ओझल हो चुकी थी। वे अब खाई के तल पर, उस खाई के किनारे पर खड़े थे जिसे उन्होंने सीढ़ियों के नीचे स्थित ऊंचे स्थान से देखा था। उसके दाहिनी ओर और सामने घना जंगल था - पेड़ एक-दूसरे से सटे हुए थे मानो रात भर ठंड से बचने के लिए एक-दूसरे से लिपटे हुए हों। बाईं ओर उसे मुश्किल से पानी का एक बड़ा जलाशय दिखाई दे रहा था, शायद कोई झील? और उसके आगे, एक खड़ी ढलान ज़मीन से लगभग लंबवत ऊपर उठती हुई, हवा में ऊंची उठती जा रही थी।

'यह क्या है?' अर्जुन ने वीरेंद्र से पूछा, और खड़ी ढलान वाली चट्टान पर कुछ दूरी पर स्थित एक धुंधले, गहरे धब्बे की ओर इशारा किया।

वीरेंद्र ने उससे कहा, "मेरे बेटे, ये पांडव गुफाएँ हैं, और वहाँ," उसने झील के उस किनारे की

ओर इशारा करते हुए कहा, जो उनके खड़े होने की जगह के ठीक सामने था, “पांडव जलप्रपात हैं। ऐसा कहा जाता है कि पांडव अपने वनवास के दौरान यहाँ आए थे। लेकिन हम वहाँ नहीं जा रहे हैं।”

भोर के धुंधले प्रकाश में, अर्जुन ने इस स्थान की भव्य सुंदरता को देखा नहीं, बल्कि महसूस किया। यद्यपि रंग फीके थे और प्रकाश न के बराबर था, फिर भी एक विचित्र, सुखद शांति का अहसास था। सन्नाटा डरावना नहीं, बल्कि सुकून देने वाला था।

लेकिन वह अब भी असमंजस में था।

दिन के इस अजीब समय में वे इस सुनसान जगह पर क्या कर रहे थे?

चित्र: ईशान त्रिवेदी

अध्याय इक्कीस

चट्टान की दीवार पर

पांडव जलप्रपात

मध्य प्रदेश

अर्जुन, प्रमिला का हाथ पकड़े हुए, अपने चाचा के पीछे-पीछे चल रहा था, हालाँकि अब वे समतल ज़मीन पर चल रहे थे। वे झील के किनारे बने पेड़ों के बीच से गुज़रते हुए एक कंक्रीट के रास्ते पर चल रहे थे, जो सीधे दूर छोर पर स्थित खड़ी चट्टान की ओर जा रहा था।

जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गए, खाई की तलहटी में स्थित झील की विशेषताएं सुबह की हल्की रोशनी में धीरे-धीरे प्रकट होने लगीं। झील और खाई, जो किसी भी प्रकार के वन आवरण से रहित थीं, क्षितिज से निकल रही सूर्य की पहली किरणों से जगमगा उठीं, मानो रात के अंधेरे से बाहर निकल रही हों।

अर्जुन को अब झील का गहरा पन्ना रंग दिखाई दे रहा था। दूर किनारे पर पानी की पतली धारा बह रही थी, जो इस मौसम में झरने का बचा हुआ हिस्सा थी; जिस चट्टान की ओर वे चल रहे थे, उसके गहरे भूरे, काले और गहरे भूरे रंग, जो घनी वनस्पतियों से ढकी हुई थी, मानो पतले पर्दों की तरह चट्टान के किनारे को ढके हुए हों, फिर भी उसकी प्राकृतिक सुंदरता को झलकने दे रही थीं; इन सबने मिलकर उसके आसपास के वातावरण को जादुई बना दिया था।

उनके ठीक सामने, चट्टान की दीवार में तराशी गई, ज़मीनी स्तर पर बनी गुफाओं के पत्थर के अग्रभाग प्रतीत हो रहे थे, जो या तो प्राकृतिक रूप से या मानव निर्मित थे। गुफाओं की इस निचली पंक्ति के ऊपर, चट्टान की दीवार में एक और गुफा थी - वही गुफा जिसे अर्जुन ने पहले देखा था।

उस समय यह अस्पष्ट था, लेकिन अब इसका पीला आंतरिक भाग अधिक स्पष्ट था और अर्जुन इसके भीतर कलाकृतियाँ देख सकता था, हालांकि वह यह नहीं बता पा रहा था कि वे क्या थीं।

लेकिन वीरेंद्र गुफाओं की ओर नहीं जा रहा था। इसके बजाय, वह उनसे दूर, कंक्रीट के रास्ते से हटकर पेड़ों के झुंड से होते हुए चट्टान की दीवार के दूसरे हिस्से की ओर बढ़ रहा था, जो लताओं से ढका हुआ था और उस पर कुछ भी नहीं था।

वे चट्टान के किनारे तक पहुंचे और वहीं खड़े हो गए।

‘अब क्या?’ अर्जुन ने अपने चाचा से पूछा।

‘अब हम इंतजार करते हैं।’ वीरेंद्र ने अपनी हथेली से चट्टान की दीवार पर तीन बार प्रहार किया।

अर्जुन हैरान था। उसके चाचा को क्या हो गया था? वीरेंद्र बहुत अजीब व्यवहार कर रहा था और उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्यों। उसे यहाँ जंगल के बीचोंबीच, झील के किनारे खड़े होकर, अपने चाचा को चट्टान की दीवार पर थप्पड़ मारते हुए देखकर अजीब सा लग रहा था। उसकी माँ अपने भाई के इस अजीब व्यवहार से बिल्कुल भी परेशान नहीं लग रही थी। क्या कोई उसे बताएगा कि आखिर क्या हो रहा है?

उन्हें अपना जवाब पाने के लिए ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा।

पांडव जलप्रपात

मध्य प्रदेश

दिल्ली से भागे तीनों अपराधियों का पीछा कर रहे हरीश ने अविश्वास से अपनी आंखें मल लीं।

उसने देखा कि वीरेंद्र ने लैंड क्रूजर को पार्क किया और उसमें सवार तीनों लोग बाहर निकले और पांडव जलप्रपात के नीचे स्थित झील की ओर जाने वाले रास्ते पर चल पड़े।

वह सोच रहा था कि वे इस सुनसान जंगल में, भोर के धुंध में क्या करने की योजना बना रहे हैं, लेकिन उसने अपने बॉस के निर्देशानुसार, सावधानीपूर्वक दूरी बनाए रखते हुए, कर्तव्यनिष्ठा से उनका पीछा किया।

जब वीरेंद्र कंक्रीट के रास्ते से हटकर चट्टान की ओर बढ़ा, तो हरीश ने गुफाओं में से एक में शरण ली, जहाँ से उसने अपना सिर बाहर निकालकर तीनों को देखा, जो गुफा के ऊपर चट्टान से लटकती हुई और गुफा के प्रवेश द्वार को ढकने वाली एक लता से आंशिक रूप से छिपा हुआ था।

जैसे-जैसे दिन बढ़ता गया और झील पर छाए अंधेरे में ढलने लगा, हरीश को गुफा में और गहराई तक जाना पड़ा, जिसका मतलब था कि उसकी दृष्टि पहले की तरह स्पष्ट नहीं थी, खासकर इसलिए कि जंगल का वह हिस्सा जहां वीरेंद्र, प्रमिला और अर्जुन खड़े थे, अभी भी अर्ध-अंधेरे में डूबा हुआ था, घने पेड़ों की छाया में था, जिससे भोर की हल्की रोशनी भी नहीं पहुंच पा रही थी।

हरीश को लगा कि उसने तीनों के साथ एक चौथे व्यक्ति को भी शामिल होते देखा। वह एक महिला जैसी लग रही थी, लेकिन वह निश्चित नहीं था।

वह अचानक कहाँ से प्रकट हो गई थी? और इस अजीब समय में, जंगल में बिल्कुल अकेली वह यहाँ क्या कर रही थी?

फिर, जैसे ही उसने देखा, वे चारों गायब हो गए।

एक पल पहले वे एक साथ huddled होकर धीमी आवाज में बात कर रहे थे, जिससे वह उनकी बातें सुन नहीं पा रहा था।

अगले ही पल वे गायब हो गए।

उसे केवल चट्टान का मुख ही दिखाई दे रहा था।

उसने बेहतर नज़ारा पाने के लिए सारी सावधानी को दरकिनार करते हुए अपना सिर बाहर निकाला।

लेकिन वहां कोई नजर नहीं आया।

उसने घबराकर चारों ओर देखा।

किसी भी चीज ने जंगल की शांति को भंग नहीं किया।

अचंभित होकर वह सावधानीपूर्वक उस स्थान की ओर बढ़ा जहाँ उसने वीरेंद्र को चट्टान पर हाथ से प्रहार करते देखा था। वह सटीक स्थान के बारे में निश्चित नहीं था, लेकिन उसने उस क्षेत्र का अनुमान लगाया और उन तीनों के निशान खोजने लगा जिनका वह दिल्ली से पीछा करते हुए आया था।

लेकिन उनका कोई अता-पता नहीं था।

वह वापस चट्टान के पास गया और उसे उसी तरह थप्पड़ मारा जैसे उसने वीरेंद्र को करते देखा था।

कुछ नहीं। बस हार्ड रॉक।

असमंजस में पड़कर वह वापस उस जगह की ओर चल पड़ा जहाँ उसकी कार खड़ी थी, लैंड क्रूज़र से सुरक्षित दूरी पर, सड़क के मोड़ और पेड़ों के झुरमुट के कारण जो लगभग सड़क के किनारे तक फैले हुए थे, वह दिखाई नहीं दे रही थी।

उसे यह बात अपने बॉस को बतानी थी। रमन कपूर इससे खुश नहीं होंगे।

वह इसे कैसे समझाएगा?

अध्याय बाईस

माया दिल्ली से रवाना हो जाती है

रतन तिवारी का घर
नई दिल्ली

माया ने आँखें खोलने के लिए बहुत संघर्ष किया। उसकी पलकें मानो वज़न से बंधी हुई थीं। वह मुश्किल से कुछ घंटे ही सो पाई थी। इस बार उसे किसने जगाया? क्या सुबह हो गई थी?

दरवाजे पर दस्तक हुई थी।

यही होना चाहिए। कोई दरवाजे पर दस्तक दे रहा था।

पर्दे लगे हुए थे और कमरा अंधेरा था, इसलिए वह कुछ भी नहीं देख पा रही थी।

आधी नींद में ही सही, वह बिस्तर से उठी और लड़खड़ाते हुए दरवाजे की ओर बढ़ी।

रतन की पत्नी मेघा बाहर खड़ी थीं, उनके चेहरे पर बड़ी सी मुस्कान थी।

'सुप्रभात, माया!' उसने मुस्कुराते हुए कहा। 'रतन ने मुझे तुम्हें जगाने के लिए कहा था। तुम दोनों को जल्दी निकलना होगा। तुम्हें जल्दी शुरुआत करनी होगी, क्योंकि अभी लंबा रास्ता तय करना है। मैं नाश्ता बना रही हूँ। क्या तुम्हें भरवां पराठे पसंद हैं?'

माया ने हल्की सी मुस्कान दी, उसे अभी भी नींद आ रही थी और वह भ्रमित महसूस कर रही थी। पिछली रात का सपना उसके मन और शरीर पर भारी पड़ रहा था। यह सपना न केवल मानसिक रूप से थकाने वाला था, बल्कि आश्चर्यजनक रूप से वह शारीरिक रूप से भी बहुत थकी हुई थी।

सपना नहीं, भयानक सपना।

'कुछ ही मिनटों में आती हूँ,' उसने धीमी आवाज़ में जवाब दिया।

मेघा ने उसे एक नई टी-शर्ट देते हुए कहा, 'लो, ये तुम्हारे लिए थोड़ी बड़ी हो सकती है, क्योंकि ये मेरी है और, खैर, मैं अब पंद्रह साल की नहीं हूँ।' उसने हंसते हुए कहा, 'लेकिन तुम्हारे पास नए कपड़े नहीं हैं, इसलिए मैंने सोचा कि तुम्हें ये दे दूं।'

माया ने कृतज्ञतापूर्वक वस्त्र स्वीकार कर लिया और मेघा नाश्ता बनाने के लिए चली गई।

आधे घंटे में माया ने नहा लिया और मेघा की टी-शर्ट पहन ली, साथ में वही जींस जो उसने कल पहनी थी। पराठों की खुशबू उसके कानों में पड़ी और उसे अचानक भूख लगने लगी। पिछली रात के बुरे सपने के सारे ख्याल फिलहाल किनारे रख दिए गए।

'तो हम कहाँ जा रहे हैं?' माया ने नाश्ते की मेज पर, अपने जीवन के सबसे स्वादिष्ट पनीर पराठों के निवाले खाते हुए पूछा। उसके पिता खाना बनाने में बहुत अच्छे नहीं थे और नाश्ते में आमतौर पर टोस्ट और एक गिलास दूध ही होता था। नाश्ते की मेज पर मुस्कुराते हुए अपने पिता की अचानक याद ने माया को चौंका दिया। उसने आँसू रोकने के लिए जल्दी से अपने पराठे का एक टुकड़ा निगल लिया।

लेकिन अजीब बात यह थी कि रतन आज सुबह कुछ उदास लग रहा था। उसकी जानी-पहचानी मुस्कान गायब थी और रात के खाने के दौरान जो लगातार बातें होती रहती थीं, वो नाश्ते में नहीं थीं। वो अपने गंतव्य के बारे में भी बात करने से बच रहा था। माया सोच रही थी कि क्या

किसी बात ने उसे उदास कर दिया है या फिर वो सुबह जल्दी उठने वाला इंसान ही नहीं है।

उसने खुद ही इस मामले को अपने हाथ में लेने का फैसला किया। बहुत कुछ हो चुका था और उसे ही इसका खामियाजा भुगतना पड़ा था। उसे लगा कि उसे यह जानने का हक है कि क्या हो रहा है। वीरेंद्र के फोन पर कहे गए रहस्यमय शब्दों ने उसकी मदद नहीं की, बल्कि उसे और बेचैन कर दिया था।

'अगर शुक्र मेरे पीछे पड़ जाए तो क्या होगा?' उसने सीधे तिवारी की ओर देखा।

उसके शब्दों का प्रभाव तुरंत ही दिखाई दिया।

तिवारी के हाथ से पराठे का वो टुकड़ा गिर गया जिसे वो मुंह में डालने ही वाले थे। मेघा, जो उन दोनों को खाना परोस रही थी, बीच रास्ते में ही रुक गई। मानो कुछ पलों के लिए समय ठहर गया हो।

तिवारी ने माया की आंखों में देखते हुए उससे कहा, 'अगर उसे तुम्हारे पीछे आना होता, तो वह कल ही आ गया होता। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। इसका एक बहुत अच्छा कारण है। वह तुम्हारे पीछे नहीं पड़ा है।'

नाश्ते का बाकी समय खामोशी में बीता। मेघा और तिवारी दोनों ही उसके सवाल से परेशान लग रहे थे। आखिर उन्हें इतनी चिंता क्यों थी? उन्हें कितना पता था? माया को कुछ समझ नहीं आ रहा था।

बातचीत न होने से माया को कोई चिंता नहीं थी। वह अपने ही विचारों में डूबी हुई थी। तीन सवाल उसके मन में घूम रहे थे।

शुक्र किस दुर्भाग्यशाली व्यक्ति के पीछे पड़ा था?

और उसने उसके पिता की हत्या क्यों की?

क्या उसे कभी जवाब मिलेंगे?

अध्याय तेईस

संगीत की घाटी

पांडव जलप्रपात

मध्य प्रदेश

अर्जुन का मुंह खुला का खुला रह गया जब उसने देखा कि एक महिला चट्टान के किनारे से बाहर निकली है। क्या वह सिर्फ कल्पना कर रहा था?

वह अब तक देखी गई सबसे खूबसूरत महिला थी। रेशमी ब्लाउज और पैरों तक पहुँचने वाली लंबी रेशमी स्कर्ट पहने, उसने ब्लाउज के ऊपर दुपट्टे की तरह रेशमी कपड़ा ओढ़ा हुआ था। उसके गहने—कान की बालियाँ, नथ और हार—हीरों से जगमगा रहे थे। और जब वह बोलती थी, तो उसकी आवाज़ मधुर और कोमल होती थी।

'कनकप्रताप, आपका फिर से स्वागत है,' उन्होंने वीरेंद्र की ओर मुस्कुराते हुए कहा, फिर प्रमिला की ओर मुड़ीं। 'और यज्ञसेनी, आपके लिए हमारे दिल में हमेशा एक खास जगह है।' उन्होंने अर्जुन की ओर मुड़कर पूछा, 'और ये कौन हैं?'

अर्जुन उस महिला के आकर्षण में इतना खो गया था कि वह यह पूछना भूल गया कि कनकप्रताप और यज्ञसेनी कौन थे। उसने घूरने से बचने की पूरी कोशिश की, लेकिन उसके कान में शब्द ठीक से सुनाई भी नहीं दिए।

वीरेंद्र ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, 'तुम्हें देखकर अच्छा लगा, वर्षा। बहुत दिनों बाद मिले।' उन्होंने अर्जुन की ओर इशारा करते हुए कहा, 'यह मेरा भतीजा अर्जुन है। रुद्रप्रताप का बेटा।'

वर्षा ने अर्जुन को देखकर मुस्कुराते हुए कहा, 'अर्जुन, आपको हमारे बीच पाकर हमें बहुत खुशी हो रही है। गंधर्वों की भूमि में आपका स्वागत है। मेरे साथ आइए।'

वह मुड़ी और उनके ऊपर खड़ी विशाल चट्टान की पथरीली दीवार से होकर गुजरी।

प्रमिला उसके पीछे-पीछे चट्टान के बीच से चलती हुई गई और धीरे-धीरे गायब हो गई।

'चलो फिर,' वीरेंद्र ने अर्जुन को अपने पीछे आने का इशारा किया और चट्टान में गायब हो गया।

अर्जुन वहीं खड़ा रह गया, उसका मुंह खुला का खुला रह गया, उसे समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या करे।

वीरेंद्र चट्टान से बाहर निकलते हुए फिर से प्रकट हुआ। उसने चट्टान की दीवार की ओर इशारा किया।

'यह एक भ्रम है,' उसने समझाया। उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया और उसे चट्टान के आर-पार धकेल दिया। वह बीच में ही गायब हो गया, मानो कोहनी से काट दिया गया हो।

वीरेंद्र ने अर्जुन को बताया, "बस इसमें से गुज़र जाओ और तुम गंधर्वों की भूमि में पहुँच जाओगे। यह एक ऐसा यंत्र है जो यहाँ आने वाले अजनबियों को अंदर आने से रोकता है। इसे हमारी दुनिया से उनकी दुनिया में जाने वाला द्वार समझो। कुछ ही मनुष्यों को अंदर जाने की अनुमति है और गंधर्व साथी के बिना तुम अंदर नहीं जा पाओगे, जब तक कि तुम्हें अंदर जाने का मंत्र न पता हो।" उन्होंने अर्जुन की हैरानी देखकर समझाया।

वह फिर से चट्टान के बीच से गुजरा और अर्जुन हिचकिचाते हुए उसके पीछे-पीछे चला।

उसे आश्चर्य हुआ जब उसने चट्टान की दीवार को छुआ, तो ऐसा लगा जैसे वह पिघलकर तरल बन गई हो और उसके शरीर के चारों ओर बहने लगी हो। जैसे-जैसे वह चट्टान में और गहराई तक जाता गया, तरल उसके सामने से हटकर उसके पीछे जमता हुआ प्रतीत हुआ। वह सीधे चट्टान के आर-पार चल रहा था, पत्थर उसके दोनों ओर और पीछे स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था।

कुछ कदम चलने के बाद वह चट्टान से बाहर निकल आया और सामने के दृश्य को निहारने लगा।

चट्टान के भीतरी लगभग अंधेरे से निकलकर जब वह दोबारा दिन के उजाले में आया तो उसने पहले पलकें झपकाईं और फिर आंखें सिकोड़ीं। यह जगह मानो किसी दूसरे ही समय क्षेत्र में थी। सूरज आसमान में काफी ऊपर था, और आसमान बिल्कुल साफ था, बादलों का नामोनिशान नहीं था।

वह वर्षा, प्रमिला और वीरेंद्र के साथ एक हरी-भरी घाटी के किनारे खड़ा था, जो चारों ओर दूर-दूर तक फैली पहाड़ियों से घिरी हुई थी। घाटी की पूर्वी सीमा के पास एक संकरी नदी बह रही थी और नदी के दोनों किनारों पर हरे-भरे, पेड़ों से ढके घास के मैदान फैले हुए थे। यह सब अवास्तविक लग रहा था!

दक्षिणी भाग में, पहाड़ियों का ढलान धीरे-धीरे बढ़ता था और पहाड़ी पर सुंदर पत्थर के मकान बिखरे हुए थे। दूरी पर, पत्थर के मकानों के नीचे, चौकों के चारों ओर बड़ी-बड़ी इमारतें बनी हुई थीं, जिनमें सबसे बड़ा चौक सबसे बड़ी इमारत के सामने था।

जब वे वहां खड़े होकर अपने सामने फैली सुंदरता को निहार रहे थे, तभी संगीत की मधुर ध्वनि उन तक पहुंची।

कुल मिलाकर दृश्य शांत और निर्मल था।

वर्षा ने वीरेंद्र से कहा, 'वे तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं।'

वह मुड़ी और बड़ी सहजता से ढलान से नीचे घाटी की ओर चल पड़ी। उतरते समय अर्जुन ने पीछे मुड़कर उस रास्ते को देखा जिससे वे आए थे, लेकिन उसे उस जादुई प्रवेश द्वार का कोई निशान नहीं दिखा जिसका उन्होंने अभी-अभी इस्तेमाल किया था। उनके पीछे केवल चट्टानी टीला था, जिसके पार कोई ऐसा रास्ता नहीं था जिससे प्रवेश किया जा सके।

वे घाटी के तल पर पहुँचे और ऊपर से दिखाई देने वाली इमारतों की ओर चल पड़े।

अब चारों ओर संगीत की ध्वनि गूंज रही थी। गाने वालों की आवाज़ें शुद्ध और मधुर थीं। खुशनुमा संगीत और वाद्ययंत्रों की सुरीली ताल ने तुरंत उनका मन प्रसन्न कर दिया। दिल्ली से बारह घंटे से अधिक की लंबी, लगभग बिना रुके, यात्रा के बावजूद, वे असाधारण रूप से तरोताज़ा महसूस कर रहे थे।

अर्जुन को अब भी यकीन नहीं हो रहा था कि यह सब हो रहा है। क्या वह सचमुच गंधर्वों के बीच था या यह कोई अद्भुत सपना था?

उन्होंने जीवन भर प्रमिला से उनके बारे में सुना था, जब वह उन्हें महाकाव्यों की कहानियां सुनाती थीं। वे जानते थे कि वे दिव्य संगीतकार हैं। लेकिन उन्होंने हमेशा उन कहानियों को मिथक

ही माना था, कभी उन्हें सच नहीं समझा था। उन्होंने कभी यह उम्मीद नहीं की थी कि एक दिन वे उनके बीच होंगे और उनका संगीत प्रत्यक्ष सुनेंगे।

जैसे ही वे घाटी में स्थित विशाल भवनों के पास पहुँचे, गंधर्वों का एक समूह उनसे मिलने के लिए बाहर आया। वे सभी मुस्कुराए और छोटे समूह को प्रणाम किया। उनमें से पुरुषों ने वीरेंद्र के पास आकर उन्हें गले लगाया, जबकि महिलाओं ने प्रमिला को गले लगाया।

अर्जुन ने गौर किया कि गंधर्वों में पुरुष भी रेशमी वस्त्र पहने हुए थे। उन्होंने कमर तक लंबी, छोटी आस्तीनों वाली और अलंकृत कॉलर वाली कुर्तियां और टखनों तक फैली ढीली-ढाली टांगें पहनी हुई थीं, जिनमें पिंडलियों के पीछे एक चीरा लगा था जिससे उनके बेहतरीन ढंग से बने चमड़े के जूते दिखाई दे रहे थे।

स्पष्टतः, वीरेंद्र और प्रमिला दोनों ही इन लोगों के लिए जाने-पहचाने थे। उनका स्वागत पुराने दोस्तों की तरह किया जा रहा था।

अर्जुन किनारे पर बेचैनी से खड़ा था, असहज और उपेक्षित महसूस कर रहा था। वह अभी भी इस बात को समझने की कोशिश कर रहा था कि उसके सामने बात कर रहे और हंस रहे ये खूबसूरत लोग, शानदार कपड़ों में, गंधर्व थे - ऐसे प्राणी जिनके अस्तित्व पर उसने कभी विश्वास ही नहीं किया था।

गर्मजोशी से स्वागत और अभिवादन के आदान-प्रदान के बाद वर्षा ने वीरेंद्र से कहा, 'आओ। विश्ववासु तुम्हारा इंतजार कर रहा है।'

‘विश्ववासु इन गंधर्वों का राजा है,’ प्रमिला ने अर्जुन के कान में फुसफुसाते हुए कहा, क्योंकि उसने देखा कि वह थोड़ा खोया हुआ सा लग रहा था।

अर्जुन ने लापरवाही से सिर हिलाया, मानो उसने विश्ववासु के बारे में पहले सुना हो। वह नहीं चाहता था कि उसकी माँ को पता चले कि वह कितना असहज महसूस कर रहा है। उसे उसकी निरंतर सुरक्षा की ज़रूरत नहीं थी। वह घाटी की सबसे बड़ी इमारत की ओर जाने वाले अन्य लोगों के पीछे-पीछे चल पड़ा।

अध्याय चौबीस

The Gandharva Council

गंधर्व घाटी

वर्षा के नेतृत्व में समूह घाटी में स्थित सबसे विशाल इमारत की ओर बढ़ा, जिसके सामने एक विशाल चौक था। जैसे-जैसे वे पास पहुँचते गए, संगीत की आवाज़ तेज़ होती गई। यह इमारत के अंदर से आ रही थी।

अर्जुन को आश्चर्य हुआ कि क्या यह संगीत कार्यक्रमों का रंगमंच था। उसने प्रमिला से गंधर्वों की संगीत प्रतिभा के बारे में कहानियां सुनी थीं, और आज वह स्वयं इसका अनुभव कर रहा था। उसने जो संगीत सुना वह किसी दिव्य अनुभव से कम नहीं था।

वे इमारत में दाखिल हुए और भव्य प्रवेश द्वार से होते हुए एक संकरे गलियारे में चले गए, जो अचानक एक विशाल हॉल में खुल गया।

अर्जुन विस्मय से छत को निहार रहा था, जो उनके ऊपर ऊँचाई तक फैली हुई थी और चटख रंगों से सजी भित्तिचित्रों से सुशोभित थी। इतने विशाल हॉल में खंभों की अनुपस्थिति देखकर वह और भी आश्चर्यचकित हो गया। यहाँ तक कि दीवारें भी चमकीले रंगों से रंगी हुई थीं।

वीरेंद्र ने अर्जुन को हैरानी से देखते हुए उसके पास जाकर कहा, 'यह कितना अद्भुत है, है ना? अर्जुन, राजा को प्रणाम अवश्य करना। और याद रखना, कोई प्रश्न नहीं पूछना। तुम्हारे जो भी प्रश्न हों, मैं बाद में उत्तर दे दूंगा।'

अर्जुन ने सिर हिलाया, वह अभी भी उस भव्य सभागार को देखकर अचंभित था। तो यह इमारत शायद एक महल थी जहाँ राजा निवास करते थे। उन्हें एहसास हुआ कि यह किसी प्रकार का दरबार था, एक ऐसा सभागार जहाँ राजा अपनी प्रजा से मिलते थे।

उसने सीधे आगे देखा और वाकई, दूर छोर पर एक ऊंचे चबूतरे पर, सोने से जड़े सिंहासन पर, जो उसके जीवन में देखे गए सबसे बड़े रत्नों से सजा था, एक व्यक्ति बैठा था, जो निश्चित रूप से राजा था। राजा की भव्य प्रतिमा के सामने संगीतकार बैठे थे, जो उस मनमोहक धुन को बजा रहे थे जिसने न केवल हॉल बल्कि पूरे भवन को गूंजने दिया था। अर्जुन ने अनुमान लगाया कि संगीत किसी वास्तुशिल्पीय युक्ति के माध्यम से गूंज रहा था और फैल रहा था।

जैसे ही समूह पास आया, राजा ने अपना हाथ उठाया और संगीत अचानक बंद हो गया। वह अपने सिंहासन से उठे और उतरे और धीरे-धीरे उनकी ओर चलने लगे।

राजा लंबा-चौड़ा आदमी था, उसकी युवावस्था की खूबसूरती उसकी वास्तविक उम्र को झुठला रही थी। उसके लंबे काले बाल कंधों तक लहरा रहे थे और उसके सुगठित शरीर का गठन उसके सुनहरे वस्त्र के बावजूद स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था।

वीरेंद्र और प्रमिला राजा के पास आकर प्रणाम किया। अर्जुन एक पल के लिए झिझका, असमंजस में था, और फिर उसने भी प्रणाम किया।

राजा मुस्कुराए। उन्होंने वीरेंद्र से कहा, 'कनकप्रताप, आपका स्वागत है,' फिर प्रमिला और यज्ञसेनी की ओर मुड़े। उन्होंने अर्जुन की ओर देखा, 'आपका भतीजा?'

अर्जुन ने अपने चाचा की ओर हैरानी से देखा। कनकप्रताप? आज दूसरी बार उसने अपने चाचा

को इस तरह संबोधित होते सुना था।

वीरेंद्र ने सिर हिलाया। “हे विश्ववासु, गंधर्वों के बीच रहना हमेशा सुखद होता है,” उन्होंने उत्तर दिया। “यह मेरा भतीजा अर्जुन है। रुद्रप्रताप का पुत्र।”

‘स्वागत है अर्जुन,’ विश्ववासु ने मुस्कुराते हुए उससे कहा। फिर वह वीरेंद्र की ओर मुड़ा। ‘चलो, निजी कक्ष में चलते हैं। बहुत कुछ चर्चा करनी है।’

विश्ववासु ने हाथ हिलाया और संगीतकारों ने एक बार फिर अपना प्रदर्शन शुरू कर दिया। सितार की मधुर धुनें हवा में गूंज उठीं और राजा समूह को सिंहासन के पीछे दीवार में बने एक दरवाजे की ओर ले गए।

अर्जुन ने अनुमान लगाया कि उस दरवाजे के पीछे एक दूसरा, छोटा कमरा होगा—एक ऐसा कमरा जिसमें हर किसी को जाने की अनुमति नहीं थी। उसकी जिज्ञासा और उत्साह तेजी से बढ़ रहा था। क्या उसकी माँ और चाचा सचमुच गंधर्व राजा को जानते थे? और उन्हें किसलिए अंदर ले जाया जा रहा था? क्या उसे वीरेंद्र के वादे के मुताबिक कुछ जवाब मिलेंगे, या और भी रहस्य उजागर होंगे?

अध्याय पच्चीस

कपूर के लिए नए रहस्य

एसपी कपूर का आवास
नई दिल्ली

एसपी कपूर ने पूछा, 'तुम्हारा मतलब क्या है कि वे गायब हो गए? तीन इंसान शारीरिक रूप से कैसे गायब हो सकते हैं?'

आखिरकार हरीश ने पन्ना से एसपी कपूर को फोन करके परेशान करने वाली खबर दी। कुछ देर तक वह टालमटोल करता रहा, क्योंकि उसे पता था कि वह जो रिपोर्ट देने वाला है उसका कोई स्पष्टीकरण नहीं होगा और उसे उम्मीद थी कि वीरेंद्र और उसका परिवार किसी तरह आ जाएगा। लेकिन अंत में, कर्तव्य की भावना प्रबल हुई और उसने जानकारी देने में देरी करने के बजाय कपूर के गुस्से का सामना करने का फैसला किया।

'क्या आपको यकीन है कि आपसे कोई गलती नहीं हुई? यह कहीं छिपाने की कोशिश तो नहीं है!' कपूर गरजते हुए बोले।

हरीश धैर्यपूर्वक अपने बॉस का गुस्सा सुनता रहा। उसे कपूर के गुस्से की उम्मीद थी। लेकिन उसने सोचा, कपूर का गुस्सा उसके गुस्से के बराबर तो हो ही नहीं सकता। उत्तर भारत के आधे हिस्से में अपने शिकार का पीछा करने और एक पल के लिए भी उसे अपनी नज़रों से ओझल न होने देने के बाद, उसका बिना किसी निशान के गायब हो जाना, उस लंबी दौड़ का सबसे बुरा अंत था जिसमें वह अभी-अभी लगा हुआ था। वह अपने बॉस को अच्छी तरह जानता था। जल्द ही, उसका गुस्सा शांत हो जाएगा।

यह सच था कि कपूर का गुस्सा जल्द ही शांत हो गया और जैसे ही उन्होंने तर्क को समझा, उन्हें एहसास हुआ कि वे हरीश को बेवजह डांट रहे थे। वे अपने आदमी को अच्छी तरह जानते थे। चाहे कुछ भी हो जाए, हरीश अपना कर्तव्य नहीं छोड़ता।

लेकिन हरीश उसे जो बता रहा था, उसे कोई भी बात - बिलकुल कोई भी बात - समझा नहीं सकती थी। इसके पीछे कोई न कोई तर्कसंगत कारण तो होना ही चाहिए था।

'शायद वे जंगल में गायब हो गए हों,' कपूर ने बेतुकी संभावना जताते हुए सुझाव दिया। 'या फिर उन्होंने शॉर्टकट लिया हो और वापस सड़क पर आ गए हों।'

हरीश अपनी बात पर अड़ा रहा। 'नहीं, साहब। जब वे मेरी नज़र से ओझल हो गए, तो मैंने आसपास के जंगल में कुछ देर तक उन्हें ढूंढा। वे वहाँ नहीं थे। जब मैं वापस ऊपर गया, तो वहाँ कोई नहीं था, बस लैंड क्रूज़र वहीं खड़ी थी जहाँ उसे छोड़ा गया था। अगर वे सच में वापस चले गए होते, तो वे लैंड क्रूज़र को अपने सारे सामान के साथ वहाँ क्यों छोड़ते? एक तो उन्हें अपनी कार की ज़रूरत होती— इन इलाकों में सार्वजनिक परिवहन मिलना मुश्किल है। और फिर, अगर वे किसी तरह भागने में कामयाब भी हो जाते, तो वे अपने सामान ज़रूर साथ ले जाते!'

कपूरी को हरीश के तर्क से सहमत होना पड़ा। लेकिन फिर भी वह जो कुछ हुआ था उसे स्वीकार नहीं कर पा रहे थे।

'वहीं रहो,' उसने निर्देश दिया। 'हिलो मत। इंतज़ार करो। अगर उनके बैग अभी भी कार में हैं,

तो वे वापस आ जाएँगे।' उसने कॉल काट दिया।

लगभग तुरंत ही, उसका फोन फिर बज उठा।

यह सुरेश ही था, जो एक फोरेंसिक वैज्ञानिक है, जिसने पिछली शाम उपाध्याय के घर का दौरा किया था।

'सुबह-सुबह आपको परेशान करने के लिए क्षमा करें।'

'मुझे उम्मीद है कि इतनी जल्दी फोन करने का आपके पास कोई अच्छा कारण होगा।' कपूर इस मामले में अपना एकमात्र सुराग खोने से अभी भी आहत थे।

सुरेश ने जवाब दिया, 'आपकी इच्छानुसार मैंने शव परीक्षण और फोरेंसिक जांच में तेजी ला दी है, और मुझे लगा कि आप यह जानना चाहेंगे कि हमें क्या मिला है।'

'उत्तर?'

'ठीक है, बिल्कुल नहीं,' सुरेश ने स्वीकार किया, 'लेकिन निश्चित रूप से कल शाम की तुलना में अधिक था।'

'बोलते रहो। मैं सुन रहा हूँ।'

'सबसे पहले, प्रारंभिक पोस्टमार्टम रिपोर्ट। मेरा अनुमान सही निकला। पीड़ित पर किसी भी प्रकार के धारदार हथियार या औजार के इस्तेमाल का कोई सबूत नहीं है। मांसपेशियों और स्नायुबंधन में दरारें...'

'मुझे खून-खराबे से बचाओ,' कपूर ने गुस्से से कहा। 'मुझे कहानी का अंत बताओ।'

'अच्छा, ठीक है।' सुरेश की आवाज़ में दुख झलक रहा था। 'बस सोचा कि आपको यह जानना अच्छा लगेगा कि हमने यह किस आधार पर पता लगाया। ठीक है, हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि चारों अंगों को अलग-अलग दिशाओं में अत्यधिक बल से खींचा गया, जिससे शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो गए।'

कपूरी ने माथे पर शिकन डाली। 'ऐसा करने के लिए शक्तिशाली ताकतों की जरूरत होगी।'

'बिल्कुल,' सुरेश ने सहमति जताई। 'आपको पता है, मैंने पढ़ा है कि पुराने समय में, यह एक प्रकार की सज़ा थी। एक आदमी के अंगों को चार घोड़ों से बांध दिया जाता था और उन्हें चार अलग-अलग दिशाओं में पूरी गति से दौड़ाया जाता था। पीड़ित...'

'जी हां, मैं समझ गया,' कपूर ने अधीरता से उसे रोकते हुए कहा। वह एक पुलिस अधिकारी था और हिंसा उसके काम का हिस्सा थी। लेकिन, हालांकि वह भीड़ का सामना कर सकता था और अपराधियों पर गोली चलाने में उसे कोई संकोच नहीं था — उसने वास्तव में मुठभेड़ों में कुछ अपराधियों को मार गिराया था — फिर भी खून-खराबे के लिए उसके पास पर्याप्त साहस नहीं था।

'अच्छा, ठीक है।' सुरेश निराश लग रहा था। 'खैर, इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि हत्या का हथियार क्यों नहीं मिला। किसी हथियार का इस्तेमाल नहीं किया गया था।'

'यह मानना मुश्किल है कि एक आदमी ऐसा कर सकता था,' कपूर ने गुस्से से कहा। 'हम जानते हैं कि वहां केवल एक ही व्यक्ति था जो उपाध्याय की हत्या कर सकता था - संदिग्ध।'

सुरेश ने पलटवार करते हुए कहा, 'मेरा काम हमारी जांच के तथ्यों का विश्लेषण करना और

आपको एक रिपोर्ट देना है। मैं इस मामले का जांचकर्ता नहीं हूं।'

'और तुमने मुझे सुबह-सुबह इस समय फोन करके यह बताया? एक ऐसी पहेली जिसका हमारे पास कोई जवाब नहीं है?'

सुरेश ने गुस्से से भरी आवाज़ में कहा, 'अभी और भी कुछ है।' उसे लग रहा था कि कपूर उसके एहसान के लिए पर्याप्त कृतज्ञता नहीं दिखा रहा था। उसे इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि हरीश से हुई बातचीत ने कपूर का दिन खराब कर दिया था। 'हमें कुछ उंगलियों के निशान मिले हैं जिनकी अभी तक पहचान नहीं हो पाई है।'

'आह!' कपूर की आवाज में बातचीत शुरू होने के बाद पहली बार उत्साह झलक रहा था।

"खैर, ये तो मिली-जुली खबर है। बुरी खबर ये है कि हमें उंगलियों के दो निशान मिले हैं। एक निशान घर के सामने वाले गेट पर, खास तौर पर गेट की कुंडी पर मिला। दूसरा निशान सामने वाले दरवाजे के हैंडल पर मिला, जो दरवाजे के अंदर की तरफ है।" वो थोड़ी देर रुके, ताकि बात समझ में आ जाए।

कपूरी को बात तुरंत समझ आ गई। उन्होंने कहा, 'तो, आपका मतलब यह है कि घर में प्रवेश करने के लिए गेट खोलने वाला व्यक्ति घर से बाहर निकलने के लिए मुख्य द्वार खोलने वाले व्यक्ति से अलग था। यह कैसे संभव है?'

'बिल्कुल सही। मुझे पता है कि यह बात समझ में नहीं आ रही है। लेकिन मैं आपको बस तथ्य बता रहा हूँ। हमने पूरे घर से उंगलियों के निशान लिए हैं। पीड़ित के, उसकी बेटी के और दो अन्य लोगों के। संभवतः नौकरानी और किसी अन्य दोस्त के। बेशक, हम इसकी पुष्टि तभी कर पाएंगे जब आपके लड़के नौकरानी को ढूंढ लेंगे और उस "दोस्त" की पहचान कर लेंगे।'

'तथ्यों को आसानी से समझाया जा सकता है। उंगलियों के निशान पर तारीख या समय अंकित नहीं है। ये उसी दिन पहले आए किसी आगंतुक के हो सकते हैं। हम उस समय उपाध्याय पर नज़र नहीं रख रहे थे, इसलिए हमें पता नहीं चल सकता।'

कुछ देर का सन्नाटा छा गया। फिर सुरेश ने हिचकिचाते हुए कहा, 'अजीत ने अपने बयान में कहा है कि उसने संदिग्ध को गेट खोलते हुए देखा था।'

'सही।'

'तो फिर गेट और दरवाजे के हैंडल दोनों पर उंगलियों के निशान मिलने चाहिए थे। लेकिन ऐसा नहीं है। संदिग्ध को गेट पर भी उंगलियों के निशान छोड़ने चाहिए थे। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। हम इसका क्या स्पष्टीकरण दें?'

'अजीत को पूरा यकीन है कि उसने घर में सिर्फ एक ही व्यक्ति को अंदर आते और बाहर जाते देखा: संदिग्ध व्यक्ति को। दो अलग-अलग लोग नहीं। हो सकता है संदिग्ध ने गेट और दरवाजा खोलने के लिए अलग-अलग हाथों का इस्तेमाल किया हो? इससे उंगलियों के निशान में अंतर का पता चल सकता है।'

'नहीं, ऐसा नहीं होगा। क्योंकि दोनों प्रकार के प्रिंटों में सिर्फ यही अंतर नहीं है।'

'तुम्हारा क्या मतलब है? पहेलियों में बात मत करो।'

सुरेश ने बताया, 'हाथों का आकार अलग-अलग है। गेट पर बने निशानों वाले हाथ दरवाजे के

हैंडल पर बने निशानों वाले हाथों से काफी छोटे हैं। ये निशान निश्चित रूप से दो अलग-अलग लोगों के हैं।'

सन्नाटा छा गया।

'हेलो?' सुरेश ने अनिश्चितता से कहा।

'मैं अभी भी यहीं हूँ,' कपूर ने जवाब दिया। 'बस सोच रहा था। खैर, मुझे बताने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।'

उसने कॉल काट दी और अपने बालों में हाथ फेरा, उसकी भौंहें सिकुड़ी हुई थीं, क्योंकि वह सुरेश द्वारा अभी-अभी कही गई बातों पर विचार कर रहा था।

इस मामले में कुछ भी समझ से परे लग रहा था—लोगों का गायब होना, अलौकिक शक्ति वाला एक संदिग्ध, और ऐसे उंगलियों के निशान जिनकी व्याख्या नहीं हो पा रही थी। और हां, त्रिवेदी की मौत का रहस्य भी अभी अनसुलझा था।

वीरेंद्र सिंह के शब्द उसे याद आ गए। उन्होंने कहा था, अलौकिक। एक पल के लिए इस संभावना पर विचार करते हुए कपूर अनायास ही कांप उठा। उसने तुरंत उस विचार को मन से निकाल दिया। वह अलौकिक घटनाओं में विश्वास नहीं करता था। न ही वह अंधविश्वासी था।

हर बात का कोई न कोई तर्कसंगत कारण जरूर होता है। और वह उसे ढूंढ निकालेगा।

अध्याय छब्बीस

उत्तर एवं प्रश्न

विश्ववासु का निजी कक्ष
गंधर्व घाटी

कक्ष में पॉलिश की हुई सतह वाली एक लंबी लकड़ी की मेज और उसके चारों ओर कई कुर्सियाँ थीं। मेज के शीर्ष पर एक सोने की परत चढ़ी कुर्सी थी, जिस पर अब विश्ववासु बैठे थे। अन्य गंधर्व - तीन पुरुष और तीन महिलाएं, जिनमें वर्षा भी शामिल थीं, जिन्होंने दिल्ली से आए नवप्रवेशियों का स्वागत किया था - वीरेंद्र, प्रमिला और अर्जुन के साथ विश्ववासु के दोनों ओर कुर्सियों पर बैठे थे।

राजा ने अपने दाहिनी ओर बैठे वीरेंद्र को घूरकर देखा। उन्होंने कहना शुरू किया, “तो, कनक, तुम्हारी उपस्थिति इस बात की पुष्टि है कि हम जो सच मानते हैं, वह सच है।”

जब विश्ववासु ने वीरेंद्र को 'कनक' कहकर संबोधित किया तो अर्जुन थोड़ा सहम गया, लेकिन अपने चाचा के फुसफुसाए चेतावनी भरे शब्दों को याद करके उसने खुद को संभाला।

लेकिन विश्ववासु ने अर्जुन की प्रतिक्रिया को पहले ही देख लिया था, हालांकि उन्होंने कुछ नहीं कहा।

वीरेंद्र ने सिर हिलाया, मानो उसे इस तरह संबोधित किए जाने की आदत हो। “जब हमने दिल्ली छोड़ी, तो यह अनुमान के आधार पर एहतियात के तौर पर था। धनंजय के साथ जो हुआ, उसे समझाने का यही एकमात्र तार्किक तरीका लग रहा था। हम तीनों ने दिल्ली इसलिए छोड़ी क्योंकि हमें लगा कि चाहे अनुमान सही हो या गलत, हम ज़रूरत से ज़्यादा सावधान नहीं रह सकते। सबसे अच्छा उपाय यही था कि हम चले जाएं। और, जब हम यहां आ रहे थे, तो हमें ऐसी खबर मिली जिसने हमारे संदेह की पुष्टि कर दी।”

विश्ववासु ने धीरे से कहा, 'ध्रुव, मुझे आश्चर्य हो रहा था कि वह तुम्हारे साथ क्यों नहीं आया।'

वीरेंद्र ने कड़वाहट से कहा, “वह यह देखने के लिए रुका था कि हमारा शक सही है या नहीं। उसने कहा था कि अगर तलाशी में कुछ गड़बड़ हुई तो संघ उसकी रक्षा करेगा। अगर मुझे ज़रा भी आभास होता...” उसने सिर हिलाया और दूसरी तरफ देखने लगा।

अर्जुन समझ गया था कि वीरेंद्र बहुत दुखी है। उसे लगा जैसे उसके चाचा रोने ही वाले हैं। लेकिन ध्रुव कौन था? वे किसके बारे में बात कर रहे थे? और धनंजय कौन था? इस नाम से अर्जुन सिर्फ डीजे सर को ही जानता था। लेकिन उसके चाचा उन्हें जानते ही नहीं होंगे। वह उलझन में था, लेकिन चुप रहा। वीरेंद्र से सवाल पूछने और उसके जवाब जानने के लिए बाद में काफी समय होगा।

वीरेंद्र ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, ‘हमें जरा भी अंदाजा नहीं था कि हालात इतने बिगड़ जाएंगे। हम सोच रहे थे कि हम शुक्र का पीछा कर रहे हैं। लेकिन असल में, वह हमारा पीछा कर रहा था। पता नहीं कैसे, उसे इलाहाबाद में हुई घटना की जानकारी मिल गई थी। और वह हमारे पीछे पड़ गया। सौभाग्य से, हम तीनों के लिए - और शायद पूरी दुनिया के लिए - हम तब तक दिल्ली छोड़ चुके थे। लेकिन ध्रुव वहीं रुक गया था। अब मुझे सब समझ आ गया है,

शुक्र की चाल समझ आ गई है। धनंजय की हत्या सिर्फ एक छलावा था, हमारा ध्यान भटकाने की एक चाल थी। और यह कामयाब भी हो गई। जब हम शुक्र के छिपने की जगह ढूंढने की कोशिश कर रहे थे, तभी वह हम पर हमला करने आ गया। बेचारे ध्रुव के पास बचने का कोई मौका ही नहीं था।'

विश्ववासु ने अपना सिर हिलाया, उसका चेहरा गंभीर था, जो खबर सुनकर उसे हुए दर्द को दर्शाता था।

'ध्रुव की एक पुत्री थी, है ना?' राजा ने अंततः मेज के चारों ओर छाए उदास सन्नाटे को तोड़ते हुए पूछा। 'एक साध्वी।'

'जी हां,' वीरेंद्र ने पुष्टि की। 'उसका नाम माया है। ध्रुव ने किसी तरह उसे चेतावनी दी और उसे कवच पहनाया। वह किसी तरह घर से जान बचाकर भागने में कामयाब रही। उसी ने हमें फोन करके खबर दी।'

ये शब्द सुनकर अर्जुन चौंक गया। जिस 'ध्रुव' की बात हो रही थी, क्या वो माया के पिता थे? उसे समझ नहीं आया। अचानक उसके जान-पहचान वालों के दो-दो नाम कैसे हो गए? उसने तो हमेशा माया के पिता को नरेश अंकल के नाम से ही जाना था। और साध क्या होता है?

विश्ववासु की पैनी नजरों ने अर्जुन के आश्चर्य को फिर से देखा। उन्होंने वीरेंद्र से कहा, 'तुमने उसे बताया नहीं है,' और अर्जुन की ओर इशारा किया।

'नहीं,' वीरेंद्र ने सिर हिलाते हुए कहा। 'अभी नहीं।'

विश्ववासु ने सिर हिलाया। 'मुझे लगता है कि आपने ऐसा न करके सही किया।' वह रुका। 'और माया के बारे में क्या?'

मैंने संघ के एक सदस्य से उसका ख्याल रखने को कहा है। वह उसे सुरक्षित हमारे पास ले आएगा। दरअसल, वे अभी रास्ते में हैं।

माया पन्ना जा रही थी? यह खबर सुनकर अर्जुन की आंखें फटी रह गईं। दिल्ली छोड़ने के बाद से यह सबसे अच्छी खबर थी जो उसने सुनी थी।

'तो आप उसे गुरुकुल ले जाने की योजना बना रहे हैं?' विश्ववासु ने एक भौंह ऊपर उठाई।

एक बार फिर, अर्जुन को समझ नहीं आया कि वह क्या कहना चाह रहा था। लेकिन ऐसा लग रहा था कि उसके चाचा को इसका सीधा मतलब समझ आ गया था।

'जी हां,' वीरेंद्र की आवाज दृढ़ थी। 'मैं करूंगा। उसके पिता ने मानवता के इतिहास के सबसे अंधकारमय दौर में दुनिया को जाने से रोकने के प्रयास में अपनी जान गंवाई है। हम उसे अकेला नहीं छोड़ सकते। हम पर उनका इतना फर्ज है। और आखिर ध्रुव एक महर्षि थे। हमें यह नहीं भूलना चाहिए।'

'वंश मायने नहीं रखता, कनक,' विश्ववासु ने जवाब दिया। 'तुम कौन हो, तुम्हारा जन्म कहाँ हुआ, तुम्हारे पिता कौन थे—ये सब बातें केवल साधकों के लिए मायने रखती हैं। संघ या गण के लिए नहीं। तुम नियमों को उतना ही जानती हो जितना मैं। गुरुकुल में केवल उन्हीं को प्रवेश की अनुमति है जिन्हें गण के लिए चुना गया है।' उन्होंने कंधे उचकाते हुए कहा, 'लेकिन मैं तुम्हें रोकने वाला कौन होता हूँ? मैं इस जगह का संचालक नहीं हूँ।'

वीरेंद्र के चेहरे पर सख्ती छा गई। 'वह यहीं रहेगी। मैं यह सुनिश्चित करूंगा। उसके पास जाने के लिए और कोई जगह नहीं है।'

अर्जुन आश्चर्य से देखता रहा, उसे एक भी शब्द समझ नहीं आ रहा था कि क्या चर्चा हो रही है। उसका सिर चकरा गया।

'तो शुक्र लौट आया है,' विश्ववासु ने माया का विषय टालते हुए आगे कहा। 'पिछले चौदह वर्षों में वह कहाँ था? और अब उसकी क्या योजना है? हम उससे निपटने के लिए तैयार नहीं हैं।'

वीरेंद्र ने सहमति जताते हुए कहा, 'सच है। कुछ समय के लिए तो हमें लगा कि हमने उसे आखिरी बार देख लिया है। कि हमारे पास तैयारी करने के लिए काफी समय था।' उसने गंधर्व राजा की ओर देखा। 'लेकिन भविष्यवाणी तो है ही, तुम्हें पता है।'

विश्ववासु के चेहरे पर एक मनोरंजक भाव आ गया। स्पष्ट रूप से, वह भविष्यवाणी पर विश्वास नहीं करता था, चाहे वह कुछ भी हो।

'भविष्यवाणी की बात करें तो,' वह हँसते हुए बोले। 'हमें उन पुराने श्लोकों पर समय बर्बाद नहीं करना चाहिए जिनका अब कोई मतलब नहीं रह गया है। इसके बजाय, मैं आपको युद्ध की तैयारी करने की सलाह दूंगा। हम इसमें आपका साथ देंगे। हमारे पास कोई विकल्प नहीं है। तीनों लोक बड़े खतरे में हैं। याद रखें, भविष्यवाणियाँ केवल उसी समय सटीक होती हैं जब वे की जाती हैं। समय के साथ, उनमें भी बदलाव आ सकता है, यह उसमें शामिल लोगों के कार्यों पर निर्भर करता है। यही कर्म का नियम है।'

वीरेंद्र ने पलटवार करते हुए कहा, 'यह भविष्यवाणी सप्तऋषियों ने की थी, किसी मामूली ज्योतिषी ने नहीं। भविष्यवाणियाँ निश्चित रूप से बदल सकती हैं यदि वे मान्यताएँ बदल जाएँ जिन पर वे आधारित हैं। लेकिन ऐसा नहीं हुआ है। अभी तक तो नहीं।'

विश्ववासु के चेहरे से मुस्कान गायब हो गई। उसने सिर हिलाया। 'कनक, तुम भविष्यवाणी पर बहुत ज्यादा भरोसा करती हो। तुम भूल जाती हो कि तुम्हें भविष्यवाणी का केवल एक हिस्सा ही पता है। कौन जाने बाकी हिस्से क्या कहते हैं?'

वीरेंद्र ने कोमल लेकिन दृढ़ स्वर में कहा, 'शुक्र को भविष्यवाणी पर पूरा विश्वास है। इसीलिए तो वह चौदह वर्ष पूर्व इलाहाबाद आया था। और मुझे भी। हमने अपना जीवन समर्पित कर दिया है, बहुत त्याग किया है, ताकि भविष्यवाणी सच हो सके। और यह सच होगी!' उन्होंने विश्ववासु की ओर सीधे देखा। 'हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि ऐसा ही हो। शुक्र को कोई नहीं रोक सकता। न तुम, न मैं, न संघ। न ही देवता और न ही सप्तऋषि। और यह बात तुम मुझसे बेहतर जानते हो।'

अध्याय सत्ताईस

शुक्र प्रतिबिंबित करता है

अज्ञात स्थान

भारत

शुक्र गुफा में बैठे विचारों में डूबे हुए थे। 5000 वर्ष पूर्व, सप्तऋषियों से संघर्ष के बाद, वे इस गुप्त स्थान पर आ पहुँचे थे। पराजित और अपमानित होकर, वे शरण की तलाश में उनके बीच से भाग निकले थे। और उन्हें यह स्थान मिल गया था। उस संकरी घाटी की आकस्मिक खोज, जो उस नदी के उद्गम स्थल तक जाती थी जिसने घाटी को तराशा था, उनके लिए वरदान साबित हुई। इसी खोज ने उन्हें घाटी के ऊपर स्थित पर्वतों की ढलान पर बनी गुफा तक पहुँचाया था।

गुफा के बारे में कुछ ऐसा था जो उसे अजीब तरह से परिचित लगा। उसने गुफा का अच्छी तरह से अन्वेषण किया और अंततः उसके पिछले हिस्से में एक संकरी दरार खोज निकाली जो एक खड़ी ढलान वाले मार्ग से होकर पहाड़ की ढलान के भीतर बनी इस प्राकृतिक गुफा में जाती थी।

तब उसे समझ आया कि वह जगह उसे जानी-पहचानी क्यों लग रही थी। वह जगह लगभग वैसी ही थी जैसी उसने बहुत पहले एक दूसरी संरचना देखी थी; फर्क सिर्फ इतना था कि वह संरचना देवताओं द्वारा एक विशेष उद्देश्य के लिए बनाई गई थी।

शुक्र ने उसी क्षण निश्चय कर लिया था कि वह अपने उद्देश्य की पूर्ति होने तक यहीं ध्यान करेगा। उसे स्पष्ट रूप से पता था कि वह क्या चाहता है—उसे क्या चाहिए—और इससे उसे क्या लाभ होगा। सप्तऋषियों के हाथों मिली पराजय ने वास्तव में उसे जीवन का एक उद्देश्य प्रदान किया था। वह जानता था कि उसकी तपस्या फलदायी होगी। वह जानता था कि उसकी भक्ति की सराहना की जा रही है। और अब, यह उससे भी आगे बढ़ेगी।

शुक्र को सबसे अधिक निराशा इस बात से होती थी कि उन्हें अपनी सारी इच्छाएँ पूरी नहीं हो पाती थीं। और यह तपस्या की कमी के कारण नहीं था। शुक्र ने एकाग्रचित्त होकर अपने लक्ष्य का पीछा किया था। उन्होंने 5000 वर्षों तक ध्यान किया था। उनकी भक्ति और लगन के फलस्वरूप उन्हें ऐसी शक्तियाँ प्राप्त हुई थीं जो उन्हें पहले से कहीं अधिक शक्तिशाली बना देती थीं।

लेकिन पंद्रह साल पहले उनकी ध्यान साधना अचानक भंग हो गई थी। यह विडंबना ही थी। जिन बढ़ी हुई शक्तियों ने उन्हें बलवान बनाया था, उन्हीं शक्तियों ने उन्हें बाहरी कंपन के प्रति अधिक संवेदनशील भी बना दिया था। और इसी के कारण उनकी सुनियोजित तपस्या में खलल पड़ा था।

ध्यान की गहरी अवस्था में रहते हुए उनकी आंतरिक चेतना को स्पर्श करने वाले ब्रह्मांडीय कंपन ने उन्हें एक स्पष्ट संदेश दिया था।

एक बच्चे का जन्म हुआ था। और वह कोई साधारण बच्चा नहीं था। वह भविष्यवाणी का बच्चा था। वह बच्चा जो उसे 5000 साल पहले शुरू किए गए अपने लक्ष्य को हासिल करने से रोकने के लिए नियत था।

चेतावनी को नज़रअंदाज़ करना मूर्खता होती। शुक्र तुरंत बच्चे की तलाश में जुट गया। भले ही उसकी ध्यान साधना भंग हो गई हो और उसकी सावधानीपूर्वक बनाई गई योजनाएँ विफल हो गई हों, फिर भी बच्चे को मारकर अपनी स्थिति को मजबूत करने और अपनी शक्ति को सुदृढ़ करने का एक अवसर था।

तपस्या से प्राप्त शक्तियाँ उसके काम आईं। आत्माओं का लोक अब उसके वश में था और बच्चे की खोज में उसने उन्हीं की सहायता ली। छह महीने बाद उसे बहुप्रतीक्षित समाचार मिला—बच्चा मिल गया था। वह एक लड़का था और इलाहाबाद में था।

उसके बाद सब कुछ आसान हो गया था। शुक्र ने बच्चे को मार डाला, जिससे तात्कालिक खतरा टल गया। कोई वंशज नहीं बचा, कोई संबंध नहीं, कोई अनसुलझा पहलू नहीं। भविष्यवाणी विफल हो गई थी।

कलियुग आ चुका था। सप्तऋषि और देव असहाय थे; उनकी शक्तियाँ कमजोर हो गई थीं और भू-लोक के मामलों पर उनका प्रभाव काफी कम हो गया था। शुक्र संतुष्ट थे। अब उन्हें अतिरिक्त शक्तियाँ प्राप्त करने के लिए ध्यान करने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि उनकी योजनाओं के लिए मुख्य खतरा टल चुका था।

या कम से कम उस समय तो उसने यही सोचा था।

शुक्र ने फैसला कर लिया था कि अब उसकी योजना को अमल में लाने का सही समय आ गया है। लेकिन उसने उन अनेक बाधाओं का अनुमान नहीं लगाया था जिनका उसे सामना करना पड़ेगा।

सबसे पहले तो, भू-लोक का स्वरूप उसके 5,000 वर्षों के प्रवास में पूरी तरह बदल चुका था। कलियुग के प्रारंभ में जो संसार था, अब वह वैसा नहीं रहा था। यहाँ तक कि भारतवर्ष भी अब एक अलग स्थान बन चुका था, जहाँ के लोग और भूगोल पूरी तरह भिन्न थे। उसका आत्मविश्वास क्षण भर में ही चकनाचूर हो गया था। जो पहले बच्चों का खेल प्रतीत होता था, वह अचानक पहेलियों के एक जटिल खेल में तब्दील हो गया था।

और वह पहेलियाँ सुलझाने में अच्छा नहीं था। बल्कि, वह पहेलियों से नफरत करता था।

इसी वजह से उसने पिछले चौदह साल उस कुंजी की तलाश में बिताए थे जो उसे अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक चीजों को खोजने का साधन मुहैया करा सके।

और उसे वह मिल गया था।

लेकिन इसी खोज के दौरान उन्होंने एक चौंकाने वाली खोज की। एक ऐसी खोज जिसने उन्हें अंदर तक झकझोर दिया और उनके भीतर ऐसा क्रोध भर दिया जिससे तीनों लोक कांप उठें।

बच्चा जीवित था।

उसे धोखा दिया गया था। जिस लड़के को उसने मारा था, वह भविष्यवाणी में वर्णित बच्चा नहीं था। यह कैसे हो सकता था, यह उसकी समझ से परे था। लेकिन यही सच था। वह अपने मिशन में असफल हो गया था। और उसकी पूरी योजना गंभीर खतरे में थी।

शुक्र अपनी अगली चाल की योजना बना रहा था, तभी उसे सौभाग्य का साथ मिला। उसे एक ऐसा व्यक्ति मिल गया जो उसकी मदद कर सकता था। जिसने उसकी मदद की थी। और वह

भविष्यवाणी के उस बालक का पता लगाने में भी कामयाब हो गया। वहाँ उसे उस विस्तृत योजना के बारे में पता चला जो उसे हराने और उसके मिशन को विफल करने के लिए रची गई थी।

शुक्र के लिए उन लोगों के भाग्य का फैसला करना आसान था जो उसकी महत्वाकांक्षाओं को साकार करने में बाधा बन रहे थे। वह उन्हें जीवित नहीं रहने दे सकता था।

शुक्र ने उस निशान का पीछा करते हुए नई दिल्ली तक का सफर तय किया था।

लेकिन, एक बार फिर, लड़का भाग निकलने में कामयाब रहा।

शुक्र उठे और गुफा की पूरी लंबाई में टहलते हुए गहन चिंतन करने लगे।

वह परेशान था। उपाध्याय के घर में कुछ ऐसा घटित हो गया था जिसे वह असंभव समझता था। कुछ ऐसा जो कभी नहीं होना चाहिए था।

उस समय, आवेग में आकर और अपनी योजनाबद्ध कार्रवाई को अंजाम देने पर पूरी तरह ध्यान केंद्रित करते हुए, उसने उस असामान्य घटना पर कोई ध्यान नहीं दिया था।

अब, चिंतन करने के लिए मिले समय की सुविधा के साथ, यह बात उसे परेशान करने लगी थी।

अब उसे पता चल गया था कि लड़का कहाँ है; उसे कहाँ ले जाया गया है। जब वह बैठकर सोच रहा था, तभी लड़का गंधर्वों के साथ था।

लेकिन यह वह विचार नहीं था जिसने वास्तव में उसे परेशान किया और उसकी निराशा को बढ़ाया।

उपाध्याय के घर में जो कुछ हुआ था, उसकी याद उसके मन में कौंध गई। उसने अपने द्वारा बोले गए मंत्र को याद करते हुए दांत पीसे। और उसके परिणामस्वरूप जो कुछ हुआ था, उसे भी याद किया। वह सदमे में था, लेकिन उसे समझ नहीं पा रहा था।

और इसी घटना ने उनके मन में एक अनसुलझा विचार पैदा कर दिया था; एक ऐसा विचार जो समय के साथ बढ़ता गया, और अंत में एक पूर्ण संदेह के रूप में फूट पड़ा।

क्या भविष्यवाणी में वर्णित बच्चे के बारे में उनकी बात सही थी?

अध्याय अट्ठाईस

कुछ उत्तर

गंधर्व घाटी

अर्जुन घाटी की प्राकृतिक सुंदरता को निहारते हुए वीरेंद्र और प्रमिला के पीछे-पीछे उस रास्ते पर चल रहा था जो घाटी के दक्षिणी हिस्से की रक्षा करने वाले पहाड़ों की ढलान पर ऊपर की ओर जाता था। वर्षा के नेतृत्व में, दिल्ली से आए तीनों लोग गंधर्वों के घरों के बीच से रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ रहे थे। एक-दूसरे से काफी दूरी पर, विशाल अंतरालों के साथ बने ये घर, पत्थर की इमारत से निकली हुई खिड़कियों की तरह पहाड़ की ढलान पर कतारबद्ध थे।

वह घरों से सटे सुव्यवस्थित बगीचों की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सका, जिनमें से प्रत्येक में अनेक रंगों के फूलों की भरमार थी। झोपड़ियों की खिड़कियों में रंगीन, रेशमी पर्दे शरमाते हुए लहरा रहे थे। कुछ पर्दे खुले हुए थे जिनसे रसोईघर दिखाई दे रहे थे, जहाँ से दोपहर के भोजन के लिए खाना पकने की सुगंध आ रही थी।

अर्जुन को अचानक भूख का एहसास हुआ। ग्वालियर में भोजन के लिए रुकने के बाद, खाने का समय ही नहीं मिला था। वे सीधे पन्ना तक गाड़ी चलाते हुए आए थे। उन्हें उम्मीद थी कि गंधर्व उन्हें कुछ भोजन परोसेंगे।

कुछ देर बाद वे एक छोटे से घर के पास पहुँचे, जिसकी खिड़कियों पर नीले रंग के चिक ब्लाइंड्स लगे थे। घर के सामने एक बगीचा था - हरी घास का एक छोटा सा टुकड़ा और कुछ चमकीले मौसमी फूल - जो एक लकड़ी के गेट से घिरा हुआ था। थकी हुई आँखों को वह बगीचा बहुत सुकून देने वाला लगा और वे कृतज्ञतापूर्वक बैठक कक्ष में दाखिल हुए और वहाँ रखी आरामदायक कुर्सियों पर बैठ गए।

'मुझे यकीन है कि आपको भूख लगी होगी,' वर्षा ने मुस्कुराते हुए उनसे कहा। 'खाना रास्ते में है।'

उसके जाने के बाद, एक अजीब सी खामोशी छा गई। एक तो वे सब थके हुए थे और थोड़ी देर बैठकर आराम करने का मौका पाकर उन्हें बहुत अच्छा लगा। दूसरा, हालांकि अर्जुन के मन में कई सवाल थे, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि शुरुआत कहाँ से करे या इस विषय को कैसे उठाए।

लेकिन वह जानता था कि यही उसके लिए सच्चाई का पता लगाने का मौका है। स्पष्ट रूप से, मामला जैसा दिख रहा था वैसा नहीं था। उसे यह जानना ज़रूरी था कि मामला कितना पेचीदा है।

उसने वीरेंद्र की ओर देखा, जो कुर्सी पर सिर पीछे की ओर झुकाए और आंखें बंद किए बैठा था।

'चाचा जी, ये सब क्या है?' उसने पूछा। 'हम यहाँ क्यों हैं? ये लोग आपको कनकप्रताप क्यों कह रहे हैं? आप आखिर हैं कौन?'

वह अपनी ही स्पष्टवादिता से चकित था।

वीरेंद्र ने अपनी आँखें खोलीं। 'मुझे लगता है हमें आपको स्पष्टीकरण देना होगा,' उसने पश्चाताप भरे स्वर में कहा। 'लेकिन अर्जुन, उस नाम का सम्मानपूर्वक प्रयोग करना। मैं तुम्हें

इसका अर्थ समझाता हूँ।' वह रुका और फिर अर्जुन की आँखों में देखा।

आपको यह कहानी ध्यान से सुननी होगी।

आगरा-ग्वालियर राजमार्ग

माया अचानक जाग उठी और चारों ओर देखा तो खुद को तिवारी की छोटी सी कार में पाया। तिवारी ने उसे देखकर मुस्कुराया। 'अच्छी नींद आई?' उसने पूछा। 'तुम गहरी नींद में सो रही थी।'

उसने थोड़ा शरमाते हुए मुस्कुराते हुए सिर हिलाया। कहीं न कहीं उसे नींद आ गई थी। पिछली रात के भयानक सपने के बाद, उसे सच में नींद पूरी करने की ज़रूरत थी। चिकनी सड़क, कार के इंजन की हल्की आवाज़ और सुहावने मौसम ने मिलकर उसे गहरी, स्वप्नहीन नींद में सुला दिया था।

'भूख लगी है?' तिवारी ने सिर हिलाकर कार की पिछली सीट की ओर इशारा किया। 'पीछे केले रखे हैं। और पानी भी।'

माया को खास भूख नहीं लग रही थी, लेकिन उसका मुंह थोड़ा सूख रहा था, इसलिए तिवारी ने गाड़ी किनारे रोक दी और दोनों ने अपनी प्यास बुझाई।

'क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकती हूँ?' यात्रा दोबारा शुरू करने के बाद माया ने तिवारी की ओर मुड़कर पूछा।

तिवारी ने उत्सुकता से उसकी ओर देखा, फिर अपना ध्यान वापस राजमार्ग पर केंद्रित कर लिया। 'ज़रूर, माया। मुझे लगता है कि मैं समझ गया हूँ कि तुम क्या पूछना चाहती हो। लेकिन पूछो। मैं अपनी क्षमता के अनुसार तुम्हें जवाब दूंगा।'

माया एक पल के लिए झिझकी। उसने पिछली रात के सपने के बारे में बहुत सोचा था। वह यह जानना चाहती थी कि उसका क्या मतलब था। हालांकि, तिवारी के अच्छे स्वभाव और उस पर अपने भरोसे के बावजूद, वह सपने के बारे में खुलकर बात नहीं कर पा रही थी। वह सपना बहुत ही अजीब था।

लेकिन अभी भी कुछ सवाल थे जिनके जवाब वह जानना चाहती थी।

शुक्र कौन था? वह उसके घर क्यों आया था? वह उसके पिता से क्या चाहता था?

और, वह बड़ा सवाल जो आज सुबह नाश्ते की मेज पर उसके मन में आया था।

शुक्र वास्तव में किसकी तलाश में था?

अध्याय उनतीस

अतीत की कहानी

गंधर्व घाटी

वीरेंद्र ने अर्जुन से कहा, 'मेरा असली नाम कनकप्रताप सिंह है। मेरे बड़े भाई रुद्रप्रताप सिंह तुम्हारे पिता थे।'

'क्या?' अर्जुन को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। इतने समय से वह वीरेंद्र को अपनी माँ का भाई जानता था। वीरेंद्र और प्रमिला ने भाई-बहन होने का नाटक क्यों किया?

'और मेरा असली नाम यज्ञसेनी है,' प्रमिला ने आगे कहा। 'जिस ध्रुव के बारे में आप सुनते आ रहे हैं, वह माया के पिता थे, जिन्हें आप नरेश अंकल के नाम से जानते हैं। उन्होंने भी अपना नाम बदल लिया था। मुझे पता है कि यह आपके लिए उलझन भरा है, अर्जुन, लेकिन हम सभी को अपना नाम बदलने के पीछे एक वाजिब कारण है।' उसने वीरेंद्र की ओर देखा, जिसने सिर हिलाकर उसे आगे बोलने के लिए कहा।

प्रमिला ने आगे बताया, "जब तुम लगभग एक साल के थे, तब शुक्र इलाहाबाद में हमारे घर के दरवाजे पर आ गया। हमें पता ही नहीं था कि वह कौन है। सौभाग्य से, ध्रुव चाय पीने आया था और उसने समझ लिया कि शुक्र क्या चाहता है। तुम्हारे पिता और ध्रुव ने शुक्र का सामना करने का फैसला किया, जबकि वीरेंद्र और मैं तुम्हें लेकर भागने में कामयाब हो गए। हम दिल्ली आ गए। बाद में, ध्रुव माया के साथ हमसे मिल गया। उसने हमारे डर की पुष्टि कर दी। शुक्र उन दोनों के लिए बहुत शक्तिशाली साबित हुआ। उसने तुम्हारे पिता को मार डाला था और ध्रुव बाल-बाल बचा था। इसलिए हम तीनों ने अपने नाम और अपनी जिंदगी बदल ली, ताकि शुक्र दोबारा हमें ढूंढने न आए। और हम लगभग चौदह साल तक उसे चकमा देते रहे, हालांकि हम हमेशा सतर्क रहते थे, हमेशा उसके पीछे पड़ने से डरते रहते थे। मुझे नहीं पता कि इतने समय बाद भी वह हमें कैसे ढूंढ पाया।"

अर्जुन को समझ नहीं आया।

'शुक्र कौन है?' उसने और स्पष्टता पाने की चाह में पूछा। 'और वह हमारे पीछे क्यों पड़ा है? उसने मेरे पिता की हत्या क्यों की?'

प्रमिला ने आह भरी और वीरेंद्र की ओर देखा। यह स्पष्ट था कि वह उम्मीद कर रही थी कि वीरेंद्र ही आगे की बात समझाएगा।

वीरेंद्र ने सहमति में सिर हिलाया। 'मैं तुम्हें बताऊंगा। लेकिन तुम मुझ पर विश्वास करोगे या नहीं, यह एक अलग बात है।'

'चाचा जी, मैं आपकी किसी भी बात पर अविश्वास क्यों करूं?' अर्जुन असमंजस में था। 'मुझे जानना ही है। कृपया।'

वीरेंद्र ने आगे कहा, "यह सब समझने के लिए हमें 5,000 साल पीछे जाना होगा। शायद उससे भी ज़्यादा। शुक्राचार्य—या शुक्र, जैसा कि हम उन्हें कहते हैं—महज़ पूर्व रहने वाले एक बुद्धिमान और महान ऋषि भृगु के पुत्र थे। दुर्भाग्य से, पुत्र अपने पिता के बिल्कुल विपरीत निकले। शुक्र असुरों से जुड़ गए और उनके गुरु बन गए। भगवान शिव के परम भक्त होने के

कारण, उन्होंने कठोर तपस्या से मृतकों को पुनर्जीवित करने की विद्या प्राप्त कर ली। यह एक दुर्लभ क्षमता थी। शुक्र स्वयं एक महान ऋषि थे। काश उन्होंने अपनी शक्तियों का उपयोग अच्छे कार्यों के लिए किया होता। इसके बजाय, वे असुरों को तीनों लोकों पर अधिकार दिलाने के तरीके खोजते रहे। 5,000 वर्ष पूर्व, सप्तऋषियों ने उनकी योजनाओं को रोकने का निश्चय किया। उन्होंने उन्हें चेतावनी दी कि यदि उन्होंने पाताल लोक के द्वार खोलने का प्रयास जारी रखा तो इसके गंभीर परिणाम होंगे। शुक्र अंतर्धान हो गए।" 5000 वर्षों तक किसी को नहीं पता था कि वह कहाँ गया था या उसका क्या हुआ था। फिर, अचानक, वह चौदह वर्ष पहले इलाहाबाद में प्रकट हुआ।

अर्जुन का सिर चकरा गया। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि वह क्या सुन रहा है। यह सब तो पौराणिक कथाओं से निकला हुआ लग रहा था! भला ऐसा कैसे सच हो सकता है?

इस कहानी ने उन्हें इतिहास की कक्षा और डीजे सर द्वारा महाभारत पर की गई चर्चा की याद दिला दी। उन्हें प्राचीन महाकाव्य की कहानियाँ सुनाना बहुत पसंद था और वे उन्हें इतने सजीव ढंग से सुनाते थे कि कहानियाँ बिल्कुल वास्तविक लगती थीं। उन्होंने एक बार उन्हें शुक्र और कच की कहानी सुनाई थी, जो देवताओं के गुरु बृहस्पति के पुत्र थे और शुक्र से ही मृतकों को पुनर्जीवित करने का ज्ञान प्राप्त करने वाले एकमात्र व्यक्ति थे। शुक्र की पुत्री देवयानी कच से प्रेम करती थी और उनसे विवाह करना चाहती थी। उन्हें उस कहानी के कुछ अंश आज भी याद थे।

लेकिन वह सब तो मिथक था! कल्पना थी!

फिर भी, उसके चाचा और मां उससे इन पौराणिक कहानियों के मुख्य पात्र के बारे में इस तरह बात कर रहे थे मानो वह व्यक्ति सचमुच मौजूद हो।

उसके मन में एक विचार आया। 'अगर शुक्र वापस आ गया है, तो सप्तऋषि उसकी देखभाल वैसे क्यों नहीं कर सकते जैसे उन्होंने 5000 साल पहले की थी?'

'अर्जुन, यह इतना आसान नहीं है जितना लगता है। यह द्वापर युग था, 5000 साल पहले,' प्रमिला ने उत्तर दिया। 'यह महाभारत काल के आसपास की बात है, जब भगवान कृष्ण इस धरती पर विराजमान थे।'

अर्जुन का आश्चर्य और बढ़ गया। उसकी माँ भगवान कृष्ण के बारे में ऐसे बात कर रही थी मानो वे सचमुच अस्तित्व में थे। वह जानता था कि बहुत से लोग महाकाव्य का आदर करते हैं, लेकिन उसके लिए महाभारत केवल एक कहानी थी, इससे अधिक कुछ नहीं।

प्रमिला ने आगे कहा, "भगवान कृष्ण के इस संसार से चले जाने के साथ ही कलियुग की शुरुआत हुई। यह ब्रह्मांड के विनाश और सृष्टि के पुनर्चक्रण से पहले का चौथा और अंतिम चरण है।" उसने अर्जुन की ओर देखा। "मैंने तुम्हें चारों युगों के बारे में बताया है, याद है?"

अर्जुन को अच्छी तरह याद था।

प्रमिला ने आगे कहा, 'कलियुग में सप्तऋषियों और देवताओं की शक्ति क्षीण हो गई है। भूलोक में – हमारे संसार में – देवताओं के प्रकट होने और मनुष्यों के मामलों में हस्तक्षेप करने की सभी कथाएँ कलियुग से पूर्व की हैं। चौथे युग के प्रारंभ होने के बाद, उन्हें अपने-अपने लोकों में लौटना पड़ा, जहाँ मनुष्य अब नहीं पहुँच सकते।'

वीरेंद्र ने उसे सुधारते हुए कहा, 'सभी मनुष्य नहीं। कुछ मनुष्य सैद्धांतिक रूप से स्वर्गलोक जा सकते हैं। लेकिन ऐसा बहुत कम होता है। वे लोक आमतौर पर हमारे लिए वर्जित हैं।'

'सच है,' प्रमिला ने सहमति जताते हुए कहा। 'सप्तऋषियों के साथ भी ऐसा ही है। भूलोक में उनकी शक्ति का कोई खास उपयोग नहीं है, हालांकि वे ब्रह्मांड के सुचारू संचालन को सुनिश्चित करते रहते हैं। लेकिन वे मनुष्यों के मामलों में हस्तक्षेप नहीं कर सकते और न ही करते हैं। वे शुक्र को नहीं रोकेंगे, क्योंकि वे ऐसा कर ही नहीं सकते।'

वीरेंद्र ने बीच में टोकते हुए कहा, 'इसके अलावा, हमें आशंका है कि शुक्र ने पिछले 5,000 वर्ष तपस्या में बिताए हैं। यदि उन्होंने भगवान शिव से और वरदान मांगे और प्राप्त किए हैं, तो कौन जाने तब से उन्होंने कितनी शक्तियां अर्जित कर ली होंगी। उनके लिए कलियुग अपनी योजनाओं को अमल में लाने का सही समय है।'

जो कुछ वह सुन रहा था, उसके बारे में अपनी आशंकाओं के बावजूद, अर्जुन को अपनी रीढ़ की हड्डी में सिहरन सी दौड़ती हुई और दिल में उतरती हुई महसूस हुई।

'लेकिन वह हमारे पीछे क्यों पड़ा है?' उसने दुख भरे स्वर में पूछा।

अध्याय तीस

और अधिक रहस्योद्घाटन

आगरा-ग्वालियर राजमार्ग

मध्य प्रदेश

गाड़ी मध्य भारत की उन घाटियों से गुज़री थी, जो कुछ दशकों पहले तक इस क्षेत्र में आतंक मचाने वाले डाकुओं के कारण कुख्यात थीं। अब शांत होने के बावजूद, घाटियाँ अभी भी भयावह और डरावनी लग रही थीं। माया कल्पना कर सकती थी कि एक समय में डाकुओं ने इस क्षेत्र में रहने वाले ग्रामीणों के दिलों में कितना खौफ पैदा किया होगा।

‘तो शुक्र क्या चाहता है?’ माया ने खाइयों से नज़रें हटाकर और अपने मन में उठने वाले जवाबों पर ध्यान केंद्रित करते हुए पूछा। ‘उसने मेरे पिता को क्यों मारा?’

तिवारी ने हैरानी से उसकी तरफ देखा।

माया ने होंठ दबाकर सिर हिलाया, मानो अपनी पीड़ा को दबाने की कोशिश कर रही हो। 'हाँ, रतन, मुझे पता है। तुम्हें मुझसे यह बात छुपाने की ज़रूरत नहीं है। मेरे पिता मर चुके हैं। मेरे पास सबूत नहीं हैं, लेकिन मुझे ऐसा महसूस होता है। शुक्र ने मेरे पिता की हत्या की है। मैं जानना चाहती हूँ कि उसने ऐसा क्यों किया।'

तिवारी ने उससे कहा, 'तुम शुक्र को जानती हो, बस तुम्हें अभी इसका एहसास नहीं है। तुमने कई प्राचीन ग्रंथ पढ़े हैं। भृगु के पुत्र शुक्राचार्य को याद है?'

यह जानकर माया की आंखें चौड़ी हो गईं। 'आप मज़ाक कर रहे होंगे।' उसने अविश्वास से तिवारी की ओर देखा। उसका चेहरा गंभीर था। उसकी हमेशा वाली खुशी मानो गायब हो गई थी, उसकी जगह एक गहरी उदासी छा गई थी, जिससे माया को पता चला कि वह न केवल गंभीर था, बल्कि चिंतित भी था।

वह पीछे झुककर बैठ गई और अपने विचारों को सुलझाने की कोशिश करने लगी, जो मानो एक बवंडर में फंस गए थे।

तिवारी जो कह रही थीं, वह कैसे संभव था? वैदिक परंपरा के शुक्राचार्य तो हजारों साल पहले जीवित थे! वे तो केवल महाभारत और अन्य प्राचीन संस्कृत ग्रंथों की कहानियों के पात्र थे, जो उनके पिता ने उन्हें सुनाई थीं।

तिवारी ने उनके मन की बात समझते हुए कहा, 'आप सही कह रही हैं। शुक्र सचमुच हजारों साल पुराने ग्रंथों का एक पात्र है। लेकिन वेदों, पुराणों और महाकाव्यों की कई कहानियां प्रतीकात्मक या आध्यात्मिक हो सकती हैं, फिर भी आपने यह तो नहीं माना होगा कि उनका कोई आधार ही नहीं था? कि वे कोरी कल्पना थीं? क्या आपके मन में कभी यह ख्याल नहीं आया कि इनमें से कुछ पात्र सचमुच अस्तित्व में रहे होंगे?'

माया ने स्वीकार किया कि उसने भी कई बार ऐसा ही सोचा था। 'लेकिन अगर वह वही शुक्राचार्य हैं जिनके बारे में इतने साल पहले लिखा गया था, तो वह आज भी जीवित कैसे हो सकते हैं?' वह अब भी अविश्वास में थी।

तिवारी ने समझाया, ‘वे एक योगी हैं। एक बहुत शक्तिशाली योगी। सर्वोच्च कोटि के ऋषि।

याद रखिए, वे स्वयं ब्रह्मा के पोते हैं।'

'मुझे पता है,' माया ने उत्तर दिया। 'मैंने शुक्र के पिता भृगु की उत्पत्ति के बारे में पढ़ा है।'

'ज़रा इस बारे में सोचो, और तुम्हें एहसास होगा कि तुम यह सब पहले से ही जानते थे। तुमने बस कभी इस पर ध्यान नहीं दिया, वास्तविकता को स्वीकार करने की तो बात ही छोड़ दो।'

उसकी इच्छा के विरुद्ध, उसके मन में वह दृश्य याद आ गया जो उसने अपने कमरे से बाहर कदम रखते ही देखा था। उसके पिता हवा में तैर रहे थे, और शुक्र की अदृश्य पकड़ से बचने के लिए उससे संवाद करने का प्रयास कर रहे थे।

शुक्र जिस मंत्र का जाप कर रहा था!

यह बात उसे बिजली के झटके की तरह लगी।

ऐसा हो ही नहीं सकता।

फिर भी, वह वहीं था।

शुक्र द्वारा जपे जा रहे मंत्र को वह समझ चुकी थी। उसके पिता ने उसे बहुत छोटी उम्र से ही संस्कृत सीखने के लिए प्रेरित किया था, जबकि यह कभी भी विद्यालय के पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं था। परिणामस्वरूप, उसने भाषा को बहुत आसानी से और शीघ्रता से सीख लिया था और वह संस्कृत पढ़ने, लिखने और बोलने में भी निपुण थी। मंत्रों का ज्ञान न होने के बावजूद, वह उनका सही अर्थ समझ सकती थी।

शुक्राचार्य के बारे में उसने जो कुछ भी पढ़ा था, उससे उसे पता था कि उनमें किसी के मन से जानकारी प्राप्त करने की क्षमता थी। और वे ठीक यही कर रहे थे।

शुक्र ने अपने पिता के मन की बात जानने के लिए उस मंत्र का प्रयोग किया था!

लेकिन वह क्या खोज रहा था? शुक्र के पिता को ऐसा क्या पता था कि उन्हें उससे जबरदस्ती जानकारी निकलवानी पड़ी?

उसने तिवारी की ओर मुड़कर कहा, 'ठीक है। अगर वह सचमुच प्राचीन ग्रंथों में वर्णित शुक्राचार्य ही थे, तो मुझे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे धरती पर अपने कथित जीवनकाल के हजारों साल बाद कैसे प्रकट हुए। मुझे लगता है कि यहाँ कुछ ऐसी बातें हैं जिनके बारे में मुझे अभी तक पता नहीं है।' उसकी आवाज़ में कड़वाहट झलक रही थी। 'लेकिन मैं फिर भी यह जानना चाहती हूँ कि उन्होंने मेरे पिता को क्यों मारा। मेरे पिता का इससे क्या लेना-देना था?'

तिवारी कुछ क्षणों के लिए चुप हो गए, वे सोच रहे थे कि उन्हें क्या कहना चाहिए। वे इस अनाथ लड़की के प्रति ईमानदार रहना चाहते थे। उसने अपने पिता को एक भयानक अंत को प्राप्त होते देखा था, और तिवारी के हृदय में उसके लिए अपार करुणा थी। लेकिन वे संघ के नियमों से भी बंधे हुए थे। और वे माया के बारे में अभी पूरी तरह से नहीं जानते थे। उन्होंने पहले छानबीन करने का निर्णय लिया।

'माया, धनंजय त्रिवेदी तुम्हारे गुरु थे, है ना? क्या उन्होंने कभी तुमसे गण के बारे में बात की थी?'

'गाना?' माया के हैरान चेहरे ने सब कुछ बयां कर दिया। उसे यह भी आश्चर्य हुआ कि रतन

तिवारी धनंजय त्रिवेदी को कैसे जानते थे, लेकिन उसने पूछा नहीं। कई नई बातें सामने आ रही थीं और माया अभिभूत महसूस कर रही थी। फिलहाल, उसके लिए सबसे महत्वपूर्ण बात उसके पिता की मृत्यु थी। उसे इस बारे में यथासंभव अधिक से अधिक जानकारी जुटानी थी।

तिवारी कुछ देर और सोचते रहे। उस लड़की ने गण के बारे में कभी सुना ही नहीं था, जिसका सीधा सा मतलब था कि उसे कभी भर्ती के लिए संपर्क ही नहीं किया गया था। त्रिवेदी उसके स्कूल के लिए नियुक्त भर्ती अधिकारी थे और ज़ाहिर है उन्होंने उसे उपयुक्त नहीं समझा था। फिर भी, वह ध्रुव की बेटी थी। लेकिन फिर, अगर वह संभावित उम्मीदवार नहीं थी, तो वीरेंद्र उसे गुरुकुल में क्यों बुलाना चाहते थे? वह इन स्पष्ट विरोधाभासों को समझ नहीं पा रहे थे।

'आपके सवाल का जवाब देने के लिए,' उसने सोच-समझकर शब्दों का चयन करते हुए कहना शुरू किया, क्योंकि वह ज्यादा कुछ बताना नहीं चाहता था, 'आपके पिताजी महर्षि थे।' वह उसकी ओर मुड़ा और उनकी निगाहें कुछ पल के लिए मिलीं, फिर उसने अपना ध्यान वापस सड़क पर लगा दिया।

माया के मुंह से अचानक एक गहरी सांस निकल गई। वह जानती थी कि महर्षि क्या होते हैं। उसने उनके बारे में काफी कुछ पढ़ा था। लेकिन यह बात समझ से परे थी! महर्षि तो सदियों पहले हुआ करते थे। आज के ज़माने में तो नहीं! आज के ज़माने में किसी के पास वो शक्तियां नहीं हैं जो महाभारत और अन्य वैदिक ग्रंथों के महर्षियों के पास थीं। ऊपर से, ये तो उसके पिता की बात हो रही थी। उसके शांत स्वभाव वाले, विद्वान और किताबी पिता। भला वो महर्षि कैसे हो सकते थे? क्या वो उन्हें जानती ही नहीं थी...?

फिर भी, उसे याद था कि उसके पिता ने उस आखिरी दिन उससे कैसे बात की थी। वे शब्द सीधे उसके मन को छू गए थे।

टेलीपैथी।

प्राचीन महर्षियों की तरह।

क्या यह सच हो सकता है?

तिवारी ने नरमी से कहा, 'उनका असली नाम ध्रुव था। वे जीवित महर्षियों में से सबसे शक्तिशाली थे। शुक्र से उनके जैसा युद्ध कोई और नहीं कर सकता था।'

माया ने बिना कुछ कहे सिर हिलाया। उसे एहसास हुआ कि वीरेंद्र ने जो कुछ उसने देखा था, वह तिवारी को बता दिया होगा।

'उन्होंने कहा कि वे उसे ज्यादा देर तक रोक नहीं सकते,' उसने धीरे से कहा, तिवारी से ज्यादा खुद से, तिवारी के शब्दों के माध्यम से सामने आ रही उस अद्भुत कहानी पर उसे धीरे-धीरे और अधिक विश्वास होने लगा था।

एक और याद उसके मन में कौंध गई। 'मुझे लगता है शुक्र ने मुझ पर किसी तरह का कब्ज़ा जमा लिया था। मेरे दिमाग पर। एक ऐसी पकड़ जिससे मैं खुद को छुड़ा नहीं पा रही थी। लेकिन पिताजी ने उसे तोड़ दिया। उन्होंने मुझे भागने को कहा।' उसने तिवारी की तरफ देखा। 'शुक्र का तो वह मुकाबला ही नहीं कर सकता था। और अब, मैं समझ सकती हूँ क्यों। ब्रह्मा का पोता। सप्तऋषि का पुत्र। भला कौन उसका सामना कर सकता था?'

तिवारी का ध्यान आगे के रास्ते पर केंद्रित रहा। 'दरअसल, मैं उस घटना की बात नहीं कर रहा था जो आपने देखी। मैं चौदह साल पहले इलाहाबाद में हुई घटना की बात कर रहा था।'

अध्याय इकत्तीस

अर्जुन को सच्चाई का पता चलता है

गंधर्व घाटी

वीरेंद्र ने धीरे-धीरे बोलते हुए, हर शब्द पर ज़ोर देते हुए कहा, 'हम नहीं। शुक्र हमारे पीछे नहीं पड़ा है।' वह रुका और गहरी सांस ली, स्पष्ट रूप से कुछ और समझाने का इरादा रखता था।

इससे पहले कि वह अपनी बात पूरी कर पाता, अर्जुन बीच में कूद पड़ा। 'तो फिर हमने दिल्ली क्यों छोड़ी?' उसने गुस्से और व्यथा से पूछा।

'अर्जुन, मेरी बात सुनो,' वीरेंद्र ने बड़ी मुश्किल से खुद को शांत किया। ऐसा लग रहा था जैसे अर्जुन जानबूझकर उसे परेशान कर रहा हो। वह जानता था कि उसे लड़के के साथ धैर्य रखना होगा। दिल्ली से, जहाँ उसने अपना पूरा बचपन बिताया था, अचानक उखड़ जाना और अपने स्कूल, अपने दोस्तों को पीछे छोड़कर शहर से भाग जाना उसके लिए बहुत बड़ा झटका रहा होगा। और अभी तक उसे यह भी नहीं पता था कि यह सब किस लिए हो रहा है।

अर्जुन ने हाथ जोड़कर वीरेंद्र को घूरने से बचने की कोशिश की।

वीरेंद्र ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, 'हम क्षत्रिय हैं। लेकिन साधारण क्षत्रिय नहीं। हम चंद्रवंशी हैं—चंद्र वंश के, जो सोम के पुत्र बुद्ध के वंशज हैं। हम इतिहास में पूजनीय राजा और ऋषि ययाति के प्रत्यक्ष वंशज हैं। संपूर्ण क्षत्रिय वंश का नेतृत्व करने और मानवता की रक्षा करने का दायित्व हमारे कंधों पर है। मेरी पीढ़ी में, आपके पिता रुद्रप्रताप ने यह दायित्व संभाला था। उनके पुत्र होने के नाते, उनकी मृत्यु के बाद यह दायित्व आपको सौंपा गया है।'

प्रमिला उठी और अर्जुन के पास गई। वह उसके पीछे खड़ी हो गई, एक हाथ उसके कंधे पर रखा।

वीरेंद्र ने एक और गहरी सांस ली और बोलना जारी रखा। 'शुक्र ययाति के वंश को मिटाना चाहता था। इसीलिए उसने तुम्हारे पिता की हत्या की। और वह यहीं नहीं रुका। उसने तुम्हें भी मारने की कोशिश की। ध्रुव की वजह से ही तुम मौत से बच पाए।' वह थोड़ा हिचकिचाया, फिर बोला। 'ध्रुव ने हम सबको इलाहाबाद से भागने में मदद की। उसके बिना तुम ज़िंदा नहीं होते। हममें से कोई भी ज़िंदा नहीं होता।'

अर्जुन को अजीब सा लगा। उसने अपने पिता को कभी नहीं देखा था, लेकिन असुरों के गुरु, एक प्राचीन ऋषि के हाथों उनकी मृत्यु की कहानी सुनकर उसे सब कुछ अवास्तविक सा लगा। वह अब भी इस बात को समझने की कोशिश कर रहा था कि वह राजाओं के उस वंश से संबंध रखता है जो पौराणिक कथाओं में अपने वीरतापूर्ण कार्यों के लिए प्रसिद्ध है।

क्या यह सब सच था? उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि उसकी अपनी माँ और चाचा इतनी मनगढ़ंत कहानी बना सकते हैं। उसने खुद देखा था कि वीरेंद्र कितनी जल्दबाजी में उन्हें दिल्ली से यहाँ तक लाया था।

जो बातें पहले अजीब लग रही थीं, अब समझ में आने लगी हैं।

वीरेंद्र लगातार गाड़ी चला रहा था, रास्ते में बस कुछ ही जगह रुका; संक्षिप्त और जल्दबाजी में, मानो कोई उनका पीछा कर रहा हो।

क्योंकि शुक्र द्वारा उनका पीछा किए जाने का खतरा मंडरा रहा था।

माया से हुई बातचीत और अर्जुन द्वारा शुक्र का नाम दोहराए जाने पर वीरेंद्र की तत्काल प्रतिक्रिया। उसके चाचा ने लगभग उसके हाथ से फोन छीन लिया था। उस समय तो उसे समझ नहीं आया था कि ऐसा क्यों हुआ, लेकिन अब उसे समझ आ गया था।

शुक्र उन सभी के जीवन के लिए सबसे बड़ा खतरा था।

माया को शुक्र द्वारा अपने पिता की हत्या की खबर मिली। अब उसे हत्या के पीछे का मकसद समझ में आ गया। बिल्कुल! अगर माया के पिता ने उन्हें इलाहाबाद से भागने में मदद की होती, तो शुक्र निश्चित रूप से अपनी योजनाओं को विफल करने का बदला लेने पर तुला होता।

जैसे ही उसने तथ्यों को जोड़ना शुरू किया, उसके मन में एक भयानक भय छा गया।

सभी बातें एक ही अटल तथ्य की ओर इशारा करती थीं। यदि शुक्र ययाति के वंश को मिटाना चाहता था और इलाहाबाद में ऐसा करने में असफल रहा था, तो वह अब इस कार्य को पूरा करना चाहेगा।

उनके चाचा की बातें सच साबित हुईं। शुक्र उनके पीछे नहीं पड़ा था।

शुक्र उसके पीछे पड़ा था।

ग्वालियर-झांसी राजमार्ग

माया चुप थी। वह सदमे में बैठी थी।

सदमाग्रस्त।

तिवारी ने जो कुछ कहा था, उसे सुनकर उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे कैसा महसूस करना चाहिए। एक तरफ तो उसके मन में गर्व की भावना उमड़ रही थी। अपने पिता के प्रति गर्व और सम्मान; जिस तरह से उन्होंने इलाहाबाद में शुक्र से युद्ध किया था, उसके लिए गर्व।

दूसरी ओर, ध्रुव द्वारा अर्जुन की सुरक्षा सुनिश्चित करने का चौंकाने वाला खुलासा भी हुआ। उसके पिता ने शुक्र को यह विश्वास दिलाया था कि वह अर्जुन और उसकी माता को मारने में सफल हो गया है, लेकिन ऐसा करने के लिए उसे एक सर्वोच्च बलिदान देना पड़ा था।

उसके पिता की चाल ने अर्जुन को अपनी जान और परिवार के साथ भागने में कामयाब बना दिया था। लेकिन इसकी कीमत क्या थी? उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि उसके पिता ने ऐसा अकल्पनीय काम कर दिया था। या यह कि उसे उनके उस भयानक रहस्य के बारे में पता ही नहीं था; एक ऐसा रहस्य जिसे उन्होंने इतने सालों तक छुपाए रखा था, और उसके बड़े होने के दौरान कभी भी इसका जरा सा भी संकेत नहीं दिया था।

माया कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि उसके पिता ने पिछले चौदह वर्षों में इतने भयानक रहस्य को कैसे छिपाकर रखा था।

उसने अपना चेहरा अपने हाथों में छिपा लिया और रोने लगी, अपने अंदर उमड़ रही परस्पर विरोधी भावनाओं से जूझ रही थी।

तिवारी ने चिंता से माया की ओर देखा, लेकिन कुछ नहीं कहा। वह समझ गया था कि माया किस दौर से गुजर रही है। बेहतर यही था कि उसे अपनी भावनाओं को व्यक्त करने दिया जाए।

अगले कुछ घंटों तक कार में सन्नाटा छाया रहा। माया सोच में डूबी बैठी रही, कभी आंखें बंद

करके, तो कभी खिड़की से बाहर गुजरते हुए नजारों को निहारती रही।

वे झांसी और ओरछा से तेज़ी से गुज़रे और पन्ना राष्ट्रीय उद्यान की ओर जाने वाली संकरी सड़क पर पहुँच गए। अब अंधेरा छा रहा था और तिवारी चाहते थे कि दिन का उजाला मिटने से पहले वे अपने गंतव्य तक पहुँच जाएँ। माया ने उन्हें अर्जुन के घर में अपने अनुभव के बारे में बताया था और तिवारी जानते थे कि इसका क्या मतलब है।

अचानक, खिड़की से बाहर देख रही माया चौंक उठी। वह घबराकर चारों ओर देखने लगी, सामने फैली सड़क और दोनों ओर फैले खेतों को।

'उम, कुछ ढूंढ रहे हो?' तिवारी ने पूछा।

माया असमंजस में दिखते हुए अपनी सीट पर वापस बैठ गई। उसने संक्षिप्त जवाब दिया, 'बस कुछ जाँच कर रही थी।'

तिवारी ने उससे कहा, 'हम लगभग पहुँच ही गए हैं। बस कुछ ही मील और चलना बाकी है।'

माया ने अनमने भाव से सिर हिलाया। तिवारी चिंतित थे। दिल्ली से निकलते समय माया यह जानने के लिए ज़िद कर रही थी कि वे कहाँ जा रहे हैं। तिवारी ने अभी तक उसे बताया नहीं था, लेकिन अब उसे अपने गंतव्य में कोई दिलचस्पी नहीं रह गई थी।

उसे बस यही उम्मीद थी कि उसने उसके पिता के बारे में सच बताकर सही काम किया है। वे लगभग पन्ना पहुँच चुके थे। जल्द ही वह अर्जुन और वीरेंद्र से मिलेगी। वह जानता था कि अर्जुन और माया अच्छे दोस्त थे।

लेकिन यह सब तब की बात है जब उसने और तिवारी ने इस बारे में बात नहीं की थी।

जब माया उनसे मिलेगी तो उसकी क्या प्रतिक्रिया होगी?

अध्याय बत्तीस

अप्रिय पुनर्मिलन

पांडव जलप्रपात

मध्य प्रदेश

शाम ढलने के साथ ही छोटा सा समूह गंधर्व घाटी के प्रवेश द्वार, चट्टान के किनारे खड़ा था। झील और जंगल सुनसान थे। जैसे ही सूरज डूबने लगा, इक्का-दुक्का पर्यटक भी गायब हो गए, और आसपास कोई और नहीं था।

वर्षा और अन्य गंधर्वों द्वारा वीरेंद्र और प्रमिला को विदाई देते समय अर्जुन उदास मन से देखता रहा।

जब से उसके चाचा और माता ने उसे अपनी असली पहचान, अपने परिवार का इतिहास और वंश के बारे में बताया था, तब से वह सदमे में था। सब कुछ उसे अवास्तविक सा लग रहा था।

अर्जुन दिनभर गंधर्व कुटिया के एक कमरे में बंद रहा, और केवल तभी बाहर निकला जब राजा के रसोईघर से उनके लिए भोजन आया। यह विश्वास करना कठिन था कि कल ही वह एक साधारण स्कूली छात्र था, जो इतिहास की परीक्षा की तैयारी कर रहा था। अब अचानक, वह राजाओं के एक प्राचीन वंश का उत्तराधिकारी बन गया था, जो भारतीय पौराणिक कथाओं में सबसे सम्मानित और वीर योद्धाओं में गिने जाते हैं।

लेकिन, यह अब कोई मिथक नहीं था। यह बिल्कुल वास्तविक था।

वीरेंद्र ने अब तक उसके चारों ओर जो सुरक्षा कवच बना रखा था, अब वह बात समझ में आने लगी। वे सारी बातें जिन्होंने उसे घुटन दी थी और उसकी आज़ादी को सीमित कर दिया था—उसके चाचा का रोज़ उसे स्कूल छोड़ने और लेने जाना; जीवन भर वीरेंद्र या प्रमिला के बिना घर से बाहर न निकलने देना; जन्मदिन की पार्टियों, स्कूल के कार्यक्रमों और मेलों में अकेले न जाना, दोस्तों के साथ फ़िल्म देखने न जाना। इस नियम का कभी कोई अपवाद नहीं था। उसके चाचा या माँ हमेशा उसके आसपास मंडराते रहते थे। उसे यह कभी समझ नहीं आया और उनकी निरंतर उपस्थिति से वह अक्सर परेशान रहता था। अब जाकर उसे समझ आया कि उनके लिए हर समय उस पर नज़र रखना इतना ज़रूरी क्यों था।

और अब यह बात जानने के बाद भी वह बिल्कुल भी खुश नहीं था।

अर्जुन को अब अपने चाचा द्वारा सिखाई गई तलवारबाजी की शिक्षाओं का वास्तविक उद्देश्य समझ आ गया था। वह कभी-कभी सोचता था कि उसके चाचा ने अपनी तलवारबाजी की कला कहाँ से सीखी होगी, लेकिन यह कभी ज़रूरी नहीं लगा, इसलिए उसने कभी पूछा नहीं था। अब जवाब स्पष्ट था। यह स्पष्ट था कि उसके परिवार में युद्धकला की कला पीढ़ियों से चली आ रही थी। उसके पिता उसे सिखाने के लिए मौजूद नहीं थे, इसलिए उसके चाचा ने उसे सिखाया था।

क्या उनके पिता भी एक कुशल तलवारबाज थे? यह विचार अर्जुन के मन में कौंध गया, इससे पहले कि उसे इसके व्यापक निहितार्थ का फिर से एहसास हुआ।

उन्हें मानवता की रक्षा करने की अपने परिवार की जिम्मेदारी को निभाना था।

अर्जुन को कुछ हद तक अपर्याप्तता का एहसास हुआ। वह महज पंद्रह साल का लड़का था।

इस ज़िम्मेदारी को वह कैसे निभाएगा, यह उसकी समझ से परे था। वीरेंद्र ने भी कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया था। बस इतना कहा था कि उसके पिता की ज़िम्मेदारी अर्जुन को विरासत में मिली है।

महान।

और अब वे गुरुकुल जा रहे थे। पता नहीं वो क्या था। वीरेंद्र और प्रमिला ने इस बारे में फिर से चुप्पी साध रखी थी। अर्जुन को बस इतना ही समझ आया था कि वो जगह उनके लिए सुरक्षित होगी।

जहां वह सुरक्षित रहेगा।

जहां शुक्र उस तक नहीं पहुंच पाएगा।

अर्जुन हैरान थे। उन्हें लगा था कि शुक्र अत्यंत शक्तिशाली हैं। वीरेंद्र ने उन्हें बताया था कि कलियुग के आगमन और शुक्र की कथित 5,000 वर्षों की तपस्या ने उनकी शक्ति को और भी बढ़ा दिया था। यदि यह सच था, तो कोई स्थान इतना अभेद्य कैसे हो सकता है कि वह शुक्र को रोक सके?

और अभी भी कुछ ऐसी बातें थीं जो उसे समझ में नहीं आई थीं। ऐसे सवाल जो अनसुलझे और अनुत्तरित रह गए थे।

जैसे, माया के पिता ने अर्जुन की जान कैसे बचाई थी? वे शुक्र को धोखा देकर इलाहाबाद से कैसे भाग निकले थे? शुक्र जैसे शक्तिशाली ऋषि को मूर्ख बनाना इतना आसान तो नहीं होता। फिर भी, माया के पिता ने मानो यही कर दिखाया था।

लेकिन अगर शुक्र अब उनका पीछा कर रहा था, तो इसका साफ मतलब था कि उसे धोखे का पता चल गया था। सवाल यह था कि कैसे? उसे कैसे पता चला कि अर्जुन अभी भी जीवित है? और उसे कैसे पता चला कि अर्जुन कहाँ मिलेगा? अगर डीजे सर और माया के पिता दोनों मर चुके थे, तो यह स्पष्ट था कि शुक्र अपने लक्ष्य के बेहद करीब था। लेकिन अभी तक उसने उसे हासिल नहीं किया था।

इसका मतलब यह था कि वह सर्वज्ञ नहीं था। न ही अचूक। अर्जुन ने खुद को याद दिलाया कि वह एक बार पराजित हो चुका था और दोबारा पराजित हो सकता था।

इस बात का एहसास होने के बावजूद, अर्जुन के मन में डर बढ़ता जा रहा था: शुक्र विशेष रूप से उसे निशाना बना रहा था। यदि भृगु के पुत्र ने इलाहाबाद से दिल्ली तक अर्जुन का पीछा किया था, तो उसे पन्ना तक और फिर गुरुकुल तक उसका पीछा करने से कौन रोक सकता था?

अपने जीवन में पहली बार अर्जुन सचमुच भयभीत हो गया था। अगर उसके चाचा, जिन्होंने इतने वर्षों तक उसकी रक्षा की थी, शुक्र से बचने के लिए दिल्ली से भागने जितना चिंतित थे, तो इसका मतलब था कि शुक्र को डर था कि यह खतरा उसके बस से बाहर है।

और अर्जुन को यह विचार बिल्कुल भी पसंद नहीं आया।

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान

मध्य प्रदेश

सूरज लगभग डूब चुका था और पार्क के गेट बंद थे। आसपास कोई नहीं था। रेंजर रात के लिए जा चुके थे।

तिवारी ने अपनी कार गेट के सामने खड़ी की और उतरते हुए डूबते सूरज की ओर चिंता भरी नजर डाली। उन्होंने माया को हिदायत दी, 'माया, कृपया कार में ही रहो।'

माया ने सिर हिलाया। वह यह जानने के लिए उत्सुक थी कि वे यहाँ क्यों रुके थे, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। उसने तिवारी को पार्क के गेट की ओर धीरे-धीरे जाते देखा, जो लोहे की जंजीर से सुरक्षित था, जिसे दोनों गेटों की सलाखों के चारों ओर कई बार लपेटा गया था और एक बड़े ताले से बंद किया गया था।

तिवारी गेट के सामने खड़े होकर कुछ बुदबुदा रहे थे। माया को छोटी कार की खुली खिड़कियों से उनकी आवाज़ सुनाई दे रही थी, लेकिन वह समझ नहीं पा रही थी कि वह क्या कह रहे हैं या किससे बात कर रहे हैं।

वह चौंक उठी। क्या उसे धुंधली रोशनी में कुछ भ्रम हो रहा था? उसने आंखें गड़ाकर देखा। नहीं, वह कल्पना नहीं कर रही थी। यह सचमुच हो रहा था। वह ताला, जिसने अब तक गेट को मजबूती से बंद कर रखा था, अब तिवारी के हाथ में था।

उसकी नज़र के सामने ही, फाटकों के चारों ओर लगी जंजीर खुलने लगी, लहराती हुई तब तक खुलती रही जब तक कि वह केवल एक फाटक से लटकती नहीं रह गई। तिवारी ने अपना हाथ बढ़ाया और जंजीर की एक कड़ी में ताला लगा दिया।

तिवारी को शांति से कार की ओर वापस जाते देख माया अचंभित रह गई।

अभी-अभी क्या हुआ था?

सवाल अनुत्तरित ही रह गया। जैसे ही तिवारी कार के पास पहुंचे, एक बड़ी गाड़ी आकर उनके बगल में आकर रुक गई।

माया ने वीरेंद्र की लैंड क्रूज़र को पहचान लिया। जैसे ही उसे एहसास हुआ कि वीरेंद्र, प्रमिला और अर्जुन यहाँ हैं, उसके शरीर में एक अजीब सी ठंडी सनसनी दौड़ गई।

उसे असहज महसूस हो रहा था। तिवारी ने उसे बताया नहीं था कि वे उनसे मिलने वाले हैं।

'माया!' अर्जुन खुशी से झूमते हुए एसयूवी से बाहर उछल पड़ा। यही उसके दिन की एकमात्र अच्छी बात थी। वीरेंद्र ने जब बताया था कि माया पन्ना में उनके साथ आने वाली है, तब से वह इस पल का बेसब्री से इंतजार कर रहा था।

माया ने अपनी आँखें बंद कर लीं और अपनी भावनाओं पर काबू पाने की कोशिश की। यह अर्जुन था। उसका बचपन का दोस्त। वे साथ पले-बढ़े थे। एक-दूसरे के जीवन के हर महत्वपूर्ण पल का हिस्सा रहे थे। उसे देखकर खुश और राहत महसूस होनी चाहिए थी।

लेकिन कुछ बदल गया था। उसके भीतर कुछ मर गया था। माया इसे समझ नहीं पा रही थी। इस पुनर्मिलन से उसका एक हिस्सा सिकुड़ गया था।

वह दिल से चाहती थी कि वह कहीं और होती।

अध्याय तैंतीस

पार्क में

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान
मध्य प्रदेश

'अरे, एजे,' माया मुस्कुराई जब अर्जुन तिवारी की कार की ओर भागा। उसने उत्साह दिखाने की कोशिश की, लेकिन तमाम कोशिशों के बावजूद उसकी आवाज़ में उदासी थी जो उसकी मनस्थिति को ज़ाहिर कर रही थी।

अर्जुन ने उसकी आवाज़ में उत्साह की कमी को महसूस किया। 'क्या बात है, माया?' खुशी की बड़ी सी मुस्कान की जगह चिंता का भाव आ गया।

लगभग तुरंत ही, उसे खुद पर गुस्सा आने लगा। आखिर उसे क्या हो गया था? माया के पिता की शुक्र ने बेरहमी से हत्या कर दी थी, और वह उससे पूछ रहा था कि मामला क्या है। कोशिश करने पर भी वह इससे ज़्यादा मूर्खतापूर्ण सवाल नहीं पूछ सकता था। ज़ाहिर है, माया ने उसके सौहार्दपूर्ण स्वागत का कोई जवाब नहीं दिया।

'तुम्हारे पिताजी के बारे में सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ, माया,' उसने कहा, उसे इस बात का एहसास था कि उसने अभी तक माया को अपनी संवेदना व्यक्त नहीं की थी। 'मैं...' शब्द फिर से उसके मुंह से नहीं निकले। क्या माया शुक्र के बारे में जानती थी? अपने पिता की हत्या के पीछे की कहानी के बारे में? क्या उसे पता था कि इलाहाबाद में क्या हुआ था?

'रतन ने मुझे बताया कि तुमने दिल्ली क्यों छोड़ी।' माया ने जल्दी से विषय बदलने की कोशिश की। वह अपने पिता के बारे में सोचना बर्दाश्त नहीं कर सकती थी, अभी नहीं। उसने अपने अंदरूनी संघर्ष को शांत करने की कोशिश की। अतीत में जो भी हुआ हो, अर्जुन की जान को बहुत बड़ा खतरा था। उसे आश्चर्य हुआ कि क्या उसे इस खतरे की पूरी गंभीरता का भी अंदाजा था।

दोनों अपनी भावनाओं से जूझ रहे थे, इसलिए वहां एक असहज, अजीब सी खामोशी छा गई।

अर्जुन ने उदास होकर सिर हिलाया। 'शुक्र मेरे पीछे पड़ा है। मुझे पता है। अभी-अभी मुझे बताया गया है। मैं डरा हुआ हूँ, माया। अगर उसने मुझे ढूंढ लिया तो क्या होगा?' उसके चेहरे पर उदासी छा गई।

माया उसकी आँखों में खौफ देख सकती थी। वह अपने सारे विचार भूल गई। उसके सामने उसका सबसे पुराना दोस्त खड़ा था, डरा हुआ और एक शक्तिशाली ऋषि द्वारा पीछा किया जा रहा था, जिसकी क्रूरता उसने खुद देखी थी। उसका दिल उसके लिए तड़प उठा। उसने उसका हाथ थाम लिया और उसे दिलासा देते हुए हल्के से दबाया।

अर्जुन ने कृतज्ञता से उसकी ओर देखा। 'हम गुरुकुल जा रहे हैं,' उसने कहा, अब वह अपने आसन्न भाग्य के विचारों में पूरी तरह डूबा हुआ था। 'चाचा और माँ कहते हैं कि हम वहाँ सुरक्षित रहेंगे। मैं वहाँ सुरक्षित रहूँगा।' उसने अपना सिर हिलाया। 'मुझे इतना यकीन नहीं है। भगवान ही जाने शुक्र को कोई कैसे रोक सकता है।'

माया के मन में एक बार फिर अचानक कड़वाहट छा गई। पिछली बार जब शुक्र ने अर्जुन को

मारने की कोशिश की थी, तब उसके पिता ने उसे रोक दिया था।

इस बार उसके पिता वहाँ नहीं थे। वे मर चुके थे। अर्जुन की रक्षा करने के कारण शुक्र ने उन्हें मार डाला था।

माया ने जिन भावनाओं को कुछ समय के लिए दबा रखा था, वे अचानक उमड़ पड़ीं। तिवारी के शब्द अभी भी उसके दिमाग में गूंज रहे थे, जिनमें बताया गया था कि ध्रुव ने इलाहाबाद में अर्जुन की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए क्या किया था। माया ने पूरी यात्रा के दौरान खुद को यही समझाने की कोशिश की थी कि अर्जुन निर्दोष था। वह उस समय तो बस एक बच्चा था, उसे पता ही नहीं था कि क्या हो रहा है। असल में वह अपने पिता से नाराज़ थी, अर्जुन से नहीं। लेकिन लाख कोशिश करने के बावजूद, वह इस बात को अपने मन से नहीं निकाल पा रही थी कि अर्जुन उसके पिता के बलिदान की वजह से ही ज़िंदा था।

'चलो, तुम दोनों, जल्दी करो।' वीरेंद्र की गंभीर और कठोर आवाज उन तक पहुंची। वह और तिवारी, प्रमिला के साथ एक तरफ खड़े थे, धीमी आवाज में बातें कर रहे थे और बीच-बीच में पश्चिम की ओर देख रहे थे, जहां सूरज तेजी से क्षितिज के नीचे डूब रहा था। 'हमें गुरुकुल जल्दी पहुंचना है।'

वीरेंद्र ने गेट का दरवाजा धक्का देकर खोला, जबकि माया और अर्जुन तिवारी की कार में चढ़ गए।

तिवारी ने ड्राइवर की सीट पर बैठते हुए और गियर बदलते हुए कहा, 'ठीक है, चलो चलते हैं।' उन्होंने माया की तरफ मुस्कुराते हुए रियर व्यू मिरर में दिख रहे अर्जुन को आँख मारी।

इसी बीच, वीरेंद्र ने भी लैंड क्रूज़र स्टार्ट कर दी, जो सबसे आगे निकल गई और पार्क के गेट से होते हुए अंदर चली गई। तिवारी भी उस बड़ी कार के पीछे-पीछे अंदर गए, लेकिन थोड़ी देर के लिए रुककर गाड़ी से उतरे और गेट की ओर भागे। कुछ ही मिनटों में वे वापस आ गए।

'गेट खुले नहीं छोड़ सकते,' उसने बच्चों की ओर देखकर मुस्कुराते हुए कहा। 'नहीं चाहते कि रेंजरों को पता चले कि हम बंद होने के समय के बाद अंदर गए थे।'

दोनों कारें पार्क के प्रवेश द्वार से जंगल की ओर जाने वाली संकरी डामर की सड़क पर तेजी से दौड़ रही थीं।

नई दिल्ली

एसपी रमन कपूर बेहद नाराज़ थे। सारे सुराग सूख चुके थे। इस मामले से जुड़े सभी लोग मानो गायब हो गए थे— उपाध्याय की बेटी, वीरेंद्र और उसका परिवार, और वह अजनबी जो मुख्य संदिग्ध था। किसी ने भी कोई सुराग नहीं छोड़ा था। और अगर उपाध्याय की बात मानी जाए तो वह उस रहस्यमय विश्वराज को तो गिन ही नहीं रहे थे, जिससे त्रिवेदी अपनी हत्या से कुछ मिनट पहले मिला था। आखिर वे सब कहाँ गायब हो गए?

कपूरी को यह बात बिल्कुल पसंद नहीं थी, लेकिन उन्हें मानना पड़ा कि वे असमंजस में थे। और उन्हें यह अच्छा भी नहीं लगा। इससे उनका आगे बढ़ने और और सुराग खोजने का संकल्प और भी मजबूत हो गया। उन्होंने पहले कभी हार नहीं मानी थी। और वे इसे अपना पहला अनसुलझा मामला नहीं बनाना चाहते थे।

उसका फोन बजा और उसने उसे झट से उठा लिया, अनिश्चितता के उस सागर में एक जीवन रेखा की तरह, जिसमें यह मामला तेजी से उलझता चला गया था।

'जी हां, हरीश,' हरीश के अभिवादन करते ही वह फोन पर चिल्लाया। 'मुझे बताओ कि तुम्हारे पास कोई जानकारी है।'

जी हाँ, हरीश की आवाज़ में झिझक और तनाव था। "वे थोड़ी देर पहले फिर से दिखाई दिए। मैंने उनका पीछा करते हुए पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के द्वार तक गया। वहाँ पहले से ही एक दूसरी कार खड़ी थी। दूसरी कार से एक आदमी और एक लड़की उतरे। वे थोड़ी देर तक बातें करते रहे और फिर वापस अपनी कारों में बैठकर पार्क के अंदर चले गए। मुझे नहीं पता कि वे अंदर कैसे गए, लेकिन उन्होंने अपने पीछे गेट बंद कर दिया। मैं ताला तोड़कर उनके पीछे अंदर जा रहा हूँ। बस आपको इसकी सूचना देना चाहता था।"

कपूरी ने सिर हिलाया। 'ठीक है, आगे बढ़ो। अगर कोई आपत्ति हो तो मैं संभाल लूंगा। लेकिन सावधान रहना। बहुत जल्द अंधेरा होने वाला है। पार्क में कोई रोशनी नहीं होगी, और आसपास जानवर जरूर होंगे। बाघ वगैरह। अपनी पीठ का ध्यान रखना।'

'जी हां, ठीक है।' हरीश ने बात खत्म की।

कपूर फोन को घूरते रहे।

वीरेंद्र सिंह आखिर क्या कर रहा था?

और दूसरी कार में बैठी लड़की... क्या वह उपाध्याय की बेटी हो सकती है? अगर वह थी, तो वह पन्ना कैसे पहुँची? और उसके साथ वह आदमी कौन था? क्या वीरेंद्र को उपाध्याय की मृत्यु के बारे में पता था? क्या उसने उस दूसरे अज्ञात व्यक्ति के ज़रिए लड़की को पन्ना लाने का इंतज़ाम किया था? या उपाध्याय की बेटी का अपहरण हुआ था? हरीश के बयान से तो उसे ऐसा कुछ नहीं लगा।

एक और संभावना थी जिस पर उन्होंने विचार नहीं किया था। क्या इन सबके पीछे वीरेंद्र सिंह का हाथ था?

और वे सभी लोग पार्क के अंदर क्या कर रहे थे?

अध्याय चौंतीस

पार्क में गाड़ी चलाना

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान
मध्य प्रदेश

पार्क से गुज़रते हुए अर्जुन ने माया को गंधर्वों, उनकी घाटी के गुप्त प्रवेश द्वार और विश्ववासु से अपनी मुलाकात के बारे में उत्साह से बताया। माया चुपचाप सुनती रही, न कोई टिप्पणी की और न ही बीच में टोकी। किसी तरह, वह अर्जुन के उत्साह और उमंग में शामिल नहीं हो पा रही थी। उसे लग रहा था कि यह अर्जुन का रोमांच है और उसे जबरदस्ती इसमें घसीटा गया है। इस समय, वह बस अपने विचारों में खो जाना चाहती थी।

'क्या हुआ?' अर्जुन ने किसी से विशेष रूप से नहीं पूछा, क्योंकि तिवारी ने अचानक ब्रेक लगा दिया। उनके आगे वाली लैंड क्रूज़र बिना किसी चेतावनी के रुक गई थी।

वीरेंद्र बड़ी एसयूवी से उतरे और अपनी कार की ओर बढ़े। तिवारी ने जिज्ञासा भरी निगाहों से उनकी ओर देखा।

वीरेंद्र ने तिवारी से कहा, 'अगर हम सब एक ही कार में बैठ जाएं तो बेहतर होगा। हम जल्दी पहुंच जाएंगे।'

तिवारी ने सिर हिलाकर माया और अर्जुन को गाड़ी बदलने का इशारा किया। दोनों ने बात मान ली और वीरेंद्र के कहने पर लैंड क्रूज़र की ओर तेज़ी से चल पड़े। लैंड क्रूज़र की पिछली सीट से वे उत्सुकता से तिवारी को गाड़ी चलाते हुए देखते रहे, जो जंगल में और अंदर की ओर जाने वाले एक कच्चे रास्ते पर, थोड़ी ही दूरी पर स्थित एक चट्टानी टीले की ओर जा रहा था।

प्रतीक्षा करते हुए वीरेंद्र एसयूवी के स्टीयरिंग व्हील पर बेचैनी से थपथपा रहा था और बीच-बीच में डूबते सूरज को पेड़ों के ऊपर से देख रहा था। उसके चेहरे पर चिंता साफ झलक रही थी।

बाहर, जैसे-जैसे सूरज क्षितिज के नीचे डूबता गया, परछाइयाँ गहरी होती गईं। आसमान के नीले कैनवास पर नारंगी और गुलाबी रंग की आखिरी लकीरें, मानो किसी चौड़े ब्रश की बेतरतीब स्ट्रोक से बनी हों, अंधेरे के आकाश को निगलने से पहले आकाश को जीवंत करने वाली चमक और रंगों की आखिरी लहर, फीकी पड़ने लगीं।

तिवारी घने जंगल के अंधेरे से दौड़ता हुआ आया और दरवाजा खोलकर कार में कूद गया। तिवारी के दरवाजा बंद करने से पहले ही वीरेंद्र ने रफ्तार बढ़ा दी और वे तेजी से निकल गए। माया और अर्जुन ने हैरानी से एक-दूसरे को देखा।

इतनी जल्दी क्या थी?

वीरेंद्र ने शिकायत करते हुए कहा, 'हमें देर हो रही है।'

तिवारी ने जवाब दिया, 'हमें जोखिम उठाना ही होगा। इसके अलावा कोई और रास्ता नहीं है।'

वीरेंद्र ने जवाब में हल्की सी आह भरी। जाहिर तौर पर उसे भी एहसास हो गया था कि देर हो या न हो, आगे बढ़ने के अलावा कोई चारा नहीं था।

लैंड क्रूज़र की बत्तियाँ जल उठीं, और आगे की सड़क पर छाए अंधेरे को चीरती हुई आगे बढ़ने लगीं।

वीरेंद्र ने अचानक चेतावनी दी, 'कसकर पकड़ लो,' और ठीक उसी क्षण कार अचानक दाईं ओर मुड़ गई, पक्की सड़क से उतरकर जंगल की ओर जाने वाले कच्चे रास्ते पर बिना गति धीमी किए चली गई। बड़ी एसयूवी अपने सस्पेंशन पर लड़खड़ा गई, फिर स्थिर हुई और पूरी रफ्तार से आगे बढ़ते हुए ऊबड़-खाबड़ जंगल के रास्ते पर चलने लगी।

लैंड क्रूज़र के पहियों से उड़ती धूल के विशाल गुबार के बीच, रास्ते के दोनों ओर लगे पेड़ उनकी गाड़ी के आगे बढ़ने के साथ ही तेज़ी से पीछे छूटते चले गए। धूल के कण हेडलाइट्स की दोहरी किरणों में नाच रहे थे, लेकिन इससे वीरेंद्र का हौसला कम नहीं हुआ और उन्होंने अपनी गति स्थिर बनाए रखी।

कार के अंदर बैठे लोग झटकों से बचने के लिए हर संभव कोशिश कर रहे थे। यह स्पष्ट था कि वीरेंद्र गुरुकुल पहुँचने तक इसी गति से गाड़ी चलाता रहेगा।

'क्या सबने अपने ताबीज़ पहने हुए हैं?' तिवारी ने अचानक पूछा, उनकी आवाज कांप रही थी क्योंकि वह पीछे की सीट पर उछल रहे थे, कोशिश कर रहे थे कि कहीं बच्चों में से किसी पर न गिर जाएं।

सभी ने एक स्वर में इसकी पुष्टि की।

‘हम नोएडा में रुके थे,’ अर्जुन ने माया से रुक-रुक कर कहा। ‘चाचा ने उन्हें वहाँ रहने वाले एक दोस्त से लिया था।’ उसने अपनी कमीज़ के अंदर हाथ डाला और एक सोने का ताबीज़ निकाला, जो माया को उसके पिता द्वारा दिए गए ताबीज़ जैसा ही था।

माया सोच रही थी कि हर कोई इन ताबीजों को बहुत अहमियत देता है। यहां तक कि वीरेंद्र, जिसे वह हमेशा एक समझदार और तर्कसंगत व्यक्ति मानती थी, ने भी कहा था कि उसकी जान उस ताबीज की वजह से बची है जिसे वह पहनती है। लगता है कि वह अकेली है जिसे इन ताबीजों पर विश्वास नहीं है। अब भी, जब वह अपने पिता द्वारा दिया गया ताबीज पहने हुए है, तब भी उसे पूरा यकीन नहीं है। धातु का एक छोटा सा टुकड़ा उनकी रक्षा कैसे कर सकता है? खासकर शुक्र जैसे शक्तिशाली प्राणी के सामने?

‘कनक!’ तिवारी की आवाज तनावग्रस्त और पतली थी। ‘वे आ गए! तुम सही थीं!’

‘धत् तेरे की!’ वीरेंद्र ने दांत पीसते हुए जवाब दिया। ‘मैं उनके आने से पहले नदी तक पहुँचने की उम्मीद कर रहा था।’

माया के विचार बीच में ही रुक गए, उसने खिड़की से बाहर देखा और सोचने लगी कि तिवारी किस बारे में बात कर रही है।

लेकिन बाहर कुछ भी नहीं था।

बस अंधेरा। और धूल। पेड़ उनके पीछे विपरीत दिशा में तेजी से दौड़ रहे थे।

वे किस बात को लेकर इतने चिंतित थे?

फिर, बिना किसी चेतावनी के, वह उसकी खिड़की पर प्रकट हो गया।

माया चीख पड़ी।

अध्याय पैंतीस

पार्क में आतंक

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान
मध्य प्रदेश
माया फिर से चीख पड़ी।

सूखे चेहरे से घूरती हुई बेजान, नीरस आँखें, पतले अंग, स्पष्ट रूप से दिखाई देने वाली कमजोर, काली पड़ी हुई सूंड और फूला हुआ पेट—यह वही प्राणी था जिससे वह दिल्ली में अर्जुन के घर में मिली थी। या, ठीक उसी जैसा कोई दूसरा प्राणी।

खिड़की पर अचानक प्रकट होने के बाद वह चेहरा एक इंच भी नहीं हिला। ऐसा लग रहा था मानो वह शीशे से चिपक गया हो, हालांकि माया जानती थी कि ऐसा संभव नहीं था। किसी तरह, वह प्राणी कार की गति के बावजूद उसके साथ-साथ चल रहा था।

लेकिन यही वह चीज़ नहीं थी जिसने उसे भयभीत कर दिया था। उस प्राणी के परे, उस अंधेरे में जो जंगल से तेज़ी से गुज़रते समय कार की हेडलाइट्स से क्षण भर के लिए रोशन हुआ था, माया ने एक भयावह दृश्य देखा था।

उस क्षणिक झलक में उसने देखा कि कार के चारों ओर फैले अंधेरे में सैकड़ों समान जीव मंडरा रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो कार उन जीवों से बने एक काले आवरण में लिपटी हुई हो।

'वे हमारे चारों ओर हैं!' अर्जुन चीख उठा, माया की तरह ही भयभीत। हेडलाइट्स की रोशनी से जगमगाते रास्ते पर नज़र डालते ही उसका चेहरा पीला पड़ गया। 'ये क्या हैं?' वह चिल्लाया।

'अर्जुन, खुद पर काबू रखो।' वीरेंद्र की आवाज सख्त थी। 'तुम क्षत्रिय हो, योद्धा हो। तुम इन निराकार प्राणियों से डर नहीं सकते। इनका कोई सार नहीं है। इनमें हमें हानि पहुंचाने की शक्ति नहीं है।'

'क्या?' अर्जुन का अविश्वास स्पष्ट था। 'क्या तुम्हें दिखाई नहीं दे रहा? शुक्र ने उन्हें मुझे मारने के लिए भेजा है!'

'कोई बात नहीं, अर्जुन। हम सब यहाँ हैं।' प्रमिला की दिलासा भरी आवाज़ यात्री सीट से आई। 'विश्वास रखो।'

अर्जुन ने घबराई हुई आँखों से एक खिड़की से दूसरी खिड़की की ओर देखा। वह जानता था कि उसकी माँ उससे झूठ नहीं बोलेगी। लेकिन वह उस डर पर कैसे काबू पाता जिसने उसे अंदर तक कंपा दिया था?

तिवारी ने कोमल स्वर में समझाया, 'ये प्रेत हैं। उन लोगों की आत्माएं जिनकी अचानक, अप्राकृतिक मृत्यु हुई है। इनका कोई भौतिक रूप नहीं होता।'

'तो फिर वे यहाँ क्यों हैं?' अर्जुन ने पूछा।

तिवारी ने स्वीकार किया, 'शायद शुक्र ने भेजा है। लेकिन वे हमें छू नहीं सकते।'

'क्या वे कार के अंदर नहीं जा सकते?' अर्जुन ने उम्मीद से पूछा।

'कार में इन जीवों को रोकने की कोई शक्ति नहीं है। इनका शरीर हमारे जैसा भौतिक नहीं है, इसलिए कोई भी भौतिक बाधा इन्हें रोक नहीं सकती। ये धातु के फ्रेम और कांच की खिड़कियों

से आसानी से गुजर कर कार में प्रवेश कर सकते हैं। इन्हें रोके हुए हमारे पहने हुए ताबीज हैं। इन ताबीजों में नरसिम्हा मंत्र नामक एक बहुत शक्तिशाली मंत्र है। जब तक हम ताबीज पहने रहेंगे, ये हमें छू नहीं सकते। चिंता मत करो, ये हमसे सुरक्षित दूरी बनाए रखेंगे।'

माया को यकीन नहीं हुआ। 'अगर हम इन...प्रेतों से सुरक्षित हैं,' उसने इन घिनौने जीवों के लिए इस शब्द का इस्तेमाल करते हुए सिहरन महसूस की, जिनसे वह पहले मिल चुकी थी, 'तो आप लोग इन्हें देखकर इतने परेशान क्यों हैं? हम नदी तक तो पहुँच ही सकते हैं, है ना?'

तिवारी ने आह भरी। इन बच्चों को अभी बहुत कुछ सीखना बाकी था। उन्होंने धैर्यपूर्वक उत्तर दिया, "हमें प्रेतों की चिंता नहीं है। न ही भूतों की—मृत आत्माओं की, जिन्हें अभी तक दूसरे शरीर में पुनर्जन्म नहीं मिला है—जो निःसंदेह अंधेरे में हमारे चारों ओर अदृश्य रूप से मंडरा रही हैं। शुक्र को लगता होगा कि हमारे पास उनसे बचाव का कोई उपाय है। हम जिस चीज से डरते हैं, वह कुछ और है।"

वीरेंद्र ने स्पष्टीकरण देना शुरू किया, उसकी निगाहें अभी भी सामने धूल भरे रास्ते पर टिकी हुई थीं, बाहर मौजूद आत्माओं के समूह को वह अनदेखा कर रहा था। "ये शुद्ध आत्माएं हैं, भौतिक शरीर से मुक्त। परिणामस्वरूप, वे पल भर में जहां चाहें वहां जा सकती हैं। कोई भी उनके रास्ते में नहीं आ सकता। यही कारण है कि वे जासूस के रूप में बहुत उपयोगी हैं। अब तक, वे शुक्र और उसके साथियों को बता चुके होंगे कि उन्होंने हमें ढूंढ लिया है और हमारी पहचान कर ली है।"

'वे हमें कैसे पहचानते?' अर्जुन ने बीच में ही टोकते हुए कहा।

तिवारी ने कहा, 'इसे समझाना मुश्किल है। वे बस... जान जाएंगे।'

'तुम्हारा मतलब है,' माया ने धीरे से कहा, 'कि शुक्र को अब पता चल गया है कि हम कहाँ हैं? क्या वह हमारा पीछा करेगा?' उसके मन में धीरे-धीरे लौट रहे डर को दबाने की कोशिश हो रही थी, क्योंकि शुक्र द्वारा उसके पिता को हवा में जकड़ लेने और घर से भागते समय उनकी दर्द भरी चीखें उसे याद आ रही थीं।

तेज रफ्तार एसयूवी के केबिन में सन्नाटा छा गया।

माया का खून जम गया। उसके सबसे बुरे डर सच होने वाले थे। उस राक्षस का दोबारा सामना करने का ख्याल ही उसे असहनीय लग रहा था। अनजाने में ही उसने अपने पिता की डायरी को इतनी कसकर पकड़ लिया कि उसके हाथों में दर्द होने लगा।

अंत में वीरेंद्र बोला, 'हमें गुरुकुल पहुंचना होगा। हमारे पास ज्यादा समय नहीं है।'

माया के बगल में बैठा अर्जुन सिसक रहा था। माया ने चिंता से अपने दोस्त की ओर देखा। आखिर शुक्रा तो अर्जुन के पीछे पड़ा था और उसे मारना चाहता था। अगर शुक्रा अब फिर से वही करने के इरादे से आ गया जो वह चौदह साल पहले इलाहाबाद में करने में नाकाम रहा था, तो अर्जुन की रक्षा कौन कर पाएगा?

अपनी तमाम आशंकाओं और नाराजगी के बावजूद, माया का दिल पिघल गया। उसका दिल अपने दोस्त के लिए तड़प उठा। उसने हाथ बढ़ाकर अर्जुन का हाथ थाम लिया। अर्जुन का हाथ कांप रहा था। लड़का बहुत डरा हुआ था। उसने कृतज्ञतापूर्वक माया का हाथ थाम लिया, उसे

हल्के से दबाया और उस सहारे को महसूस किया।

कार अंधेरे और उसके चारों ओर मंडरा रहे प्रेतों को चीरते हुए तेजी से आगे बढ़ी।

क्या वे गुरुकुल के पवित्र स्थान तक पहुँच पाएंगे?

पार्क के दूसरे हिस्से में

हरीश धीरे-धीरे, सावधानी से जंगल के रास्ते पर गाड़ी चला रहा था। जब तक उसने पार्क के गेट पर लगी चेन का ताला तोड़ा, तब तक दोनों कारें गायब हो चुकी थीं। जैसे-जैसे सूरज पश्चिम में डूबता गया, उसने दिल से उम्मीद की कि कारें इसी रास्ते पर रही होंगी और वह आगे कहीं उनसे मिल जाएगा। अगर वे सड़क छोड़कर जंगल में मुड़ गई थीं, तो वह अंधेरे में उनका पता कैसे लगाएगा? बिना खुद को उजागर किए वह हेडलाइट्स चालू भी नहीं कर सकता था।

वीरेंद्र और बाकी लोग पूरे दिन कहाँ गायब रहे, और सूर्यास्त के समय ही कहाँ लौटे, यह बात उसे अब तक समझ नहीं आई थी। वह बस उनके लौटने से खुश था। अब उसे शक होने लगा था कि क्या उनके लौटने और पार्क में आने का समय पहले से तय था। इस समय वहाँ उन्हें देखने वाला कोई नहीं था। और, हालाँकि उसे शक था कि उन्हें उसकी मौजूदगी का शक होगा, लेकिन बढ़ते अंधेरे के कारण उनके पीछे जाना लगभग नामुमकिन था।

जिससे यह सवाल उठा कि वे कहाँ जा रहे थे?

अचानक जब उसने देखा कि वह सड़क से हटकर जंगल की ओर जाने वाले एक रास्ते को पार कर चुका है, तो वह गुस्से से बड़बड़ा उठा। अब ध्यान भटकने का कोई चांस नहीं था। जिन सवालों के जवाब नहीं थे, उन पर ध्यान देने का कोई फायदा नहीं था। उसे अपने काम पर ध्यान केंद्रित करना था, जो था अपने लक्ष्य का पीछा करना और यह पता लगाना कि वे यहाँ क्यों आए हैं।

हरीश धीरे-धीरे पीछे हटता रहा जब तक कि वह जंगल के रास्ते और सड़क के जंक्शन पर नहीं पहुँच गया। उसने निराशा में अपना सिर हिलाया। अब काफी अंधेरा हो चुका था और हेडलाइट चालू किए बिना पटरियों को पहचानना असंभव था।

कोई रास्ता नहीं था। उसे यह करना ही था।

अपने पेट को कसते हुए, उसने कार को थोड़ा और पीछे किया और फिर कार की हेडलाइट्स की रोशनी में सड़क और कच्ची पगडंडी का निरीक्षण करने के लिए बाहर निकला।

यहां कुछ निशान दिखाई दे रहे थे। लेकिन केवल एक ही निशान, जो एक कार ने छोड़े थे, जो पक्की सड़क से उतरकर कच्ची सड़क पर चली गई थी। उसने ध्यान से उन निशानों को देखा और समझा कि वे उसी छोटी कार के थे जिसे उसने एसयूवी के साथ गेट पर देखा था। वही कार जिसमें एक अज्ञात व्यक्ति और एक युवती सवार थे।

क्या दोनों कारें अलग हो गईं? यदि हां, तो उसे किसका पीछा करना चाहिए?

हरीश ने तुरंत फैसला कर लिया। एसयूवी ही उसका मुख्य लक्ष्य था। वह छोटी कार की तलाश में समय बर्बाद नहीं करना चाहता था।

समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं था। जितना अधिक समय वह लेता, एसयूवी उतनी ही दूर चली जाती।

वह अपनी कार में वापस बैठा, लाइटें बंद कीं और धीरे-धीरे आगे बढ़ गया।

एक और कच्चा रास्ता दिखाई दिया, जो पक्की सड़क से निकलकर, उसके दाहिनी ओर, जंगल की ओर जा रहा था।

हरीश एक बार फिर गाड़ी से उतरा और सड़क का जायजा लिया।

ऐसा प्रतीत होता है कि एक कार तेज गति से सड़क से मुड़कर सड़क के रास्ते पर आ गई थी। टायरों के निशान स्पष्ट रूप से एसयूवी के थे।

वह सड़क पर आगे बढ़ा, रास्तों के चौराहे से आगे, और ज़मीन का ध्यान से मुआयना किया। पक्की डामर की वजह से कोई निशान पहचानना मुश्किल था। उसे लगा कि उसका अनुमान सही था। दोनों कारें अलग-अलग रास्तों पर चली गई थीं। वह कारण नहीं समझ पा रहा था, लेकिन यही एकमात्र संभावना थी जो उसके दिमाग में आ रही थी।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। उसे वह रास्ता मिल गया था जिस पर उसका शिकार गया था।

हरीश ने जंगल में उन पदचिह्नों का पीछा करने का फैसला किया।

जैसे ही वह पक्की सड़क से हटकर कच्ची सड़क पर गाड़ी चलाने लगा, उसने कार की हेडलाइट बंद कर दीं, और गाड़ी ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर उछलती-कूदती और डगमगाती हुई आगे बढ़ी।

तुरंत ही चारों ओर अंधेरा गहराता चला गया। वह दोनों ओर के पेड़ों की रूपरेखा मुश्किल से देख पा रहा था, जो आगे घने जंगल में जाकर एक काले, आकारहीन पत्तों के समूह में विलीन हो रही थी। वह धीरे-धीरे गाड़ी चलाते हुए आगे की ओर आँखें सिकोड़ रहा था। बाकी लोगों को हेडलाइट जलाकर गाड़ी चलानी पड़ी होगी। अंधेरे में जोखिम लेना नामुमकिन था, खासकर अगर वे तेज़ गति से गाड़ी चला रहे हों। उसे उम्मीद थी कि उसे रोशनी की एक छोटी सी किरण दिखाई देगी जिससे पता चलेगा कि वह ज्यादा पीछे नहीं छूटा है।

लेकिन आगे गहरे, घने अंधकार के सिवा कुछ नहीं था।

उसने हेडलाइट्स चालू कर दीं। जंगल अचानक जीवंत हो उठा। सड़क के किनारे लगे पेड़ दो किरणों की रोशनी में चमक उठे, जिससे उनके पीछे और दूर तक फैले जंगल में परछाइयाँ और गहरी हो गईं।

हरीश ने रफ्तार बढ़ा दी, जिससे कार जंगल में तेज़ी से दौड़ती हुई ऊबड़-खाबड़ सड़क पर झटके खा रही थी। उसे खुशी का एहसास होने लगा था। यह जंगल था। यहाँ जंगली जानवर थे, यहाँ तक कि बाघ भी। क्या वीरेंद्र इतना मूर्ख था कि जंगल में शरण लेकर अपने साथियों की जान जोखिम में डालता?

नहीं, हरीश को पूरा यकीन था कि देर-सवेर वह उन तीनों भगोड़ों को पकड़ ही लेगा जिनका पीछा करने का जिम्मा उसे सौंपा गया था। उसे बस तब तक अपना पीछा करते रहना था।

अध्याय छत्तीस

जंगल के बीच से उड़ान

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान
मध्य प्रदेश

वीरेंद्र ने कहा, 'हम समय पर नदी तक नहीं पहुंच पाएंगे।' उन्होंने अनिच्छा से कहा, 'हमें दूसरे रास्ते से जाना होगा।'

माया को आश्चर्य हुआ कि 'दूसरा प्रवेश द्वार' क्या था और वीरेंद्र गुरुकुल में प्रवेश करने के लिए उसका उपयोग करने से क्यों कतरा रहा था।

तिवारी वीरेंद्र की बातों पर विचार करते हुए दिखे। अंत में उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है तुम सही कह रही हो, कनक। मुझे भी यह विचार पसंद नहीं है, लेकिन...'

'करो!' प्रमिला ने तीखी आवाज में कहा। वह अब तक चुपचाप बैठी थी, मानो कार के बाहर मंडरा रही धुंधली आकृतियों से उसे कोई फर्क नहीं पड़ रहा था। 'हमें अर्जुन को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाना है। अभी बस यही मायने रखता है। मुझे और किसी चीज की परवाह नहीं है।'

उनकी दबंग आवाज़ सुनकर अर्जुन और माया दोनों चौंक गए। अर्जुन ने अपनी माँ को अपने मामा से इस तरह बात करते कभी नहीं सुना था। उनकी आवाज़ में . . . दबंगपन था। यह उनके स्वभाव के बिल्कुल विपरीत था।

वीरेंद्र ने एक्सीलरेटर से पैर हटाए बिना ही लैंड क्रूजर को एक मोड़ से घुमाते हुए एक और संकरे जंगल के रास्ते पर मोड़ दिया, जिससे गाड़ी एक बार फिर अपने सस्पेंशन पर डगमगा उठी।

वीरेंद्र ने दांत पीसते हुए कहा, 'हम लगभग पहुँच ही गए हैं। आप सब तैयार हो जाओ। गाड़ी रुकते ही हम दौड़ेंगे। सूटकेस भूल जाओ। बस जितनी तेज़ी से दौड़ सकते हो दौड़ो। साथ रहो और मेरे पीछे आओ। रतन, क्या तुम मेरे बैग से टॉर्च निकाल सकते हो?'

बिना कुछ कहे, तिवारी अपनी सीट पर घुटनों के बल बैठ गए और बैग को अपनी ओर खींचकर उसमें तब तक खोजते रहे जब तक उन्हें दो शक्तिशाली टॉर्च नहीं मिल गईं। उन्होंने माया और अर्जुन को एक-एक टॉर्च दी और फिर से बैठ गए, प्रतीक्षा करने लगे।

'ठीक है, टॉर्च जलाओ!' वीरेंद्र ने आदेश दिया। माया और अर्जुन ने अपनी टॉर्च जला लीं और लैंड क्रूज़र के केबिन में रोशनी भर गई।

एसयूवी अचानक ब्रेक लगाकर रुक गई। माया ने जल्दी से डायरी को अपनी जींस की कमर में रख लिया। वह उसे खोने का जोखिम नहीं उठाना चाहती थी।

'चलो!' वीरेंद्र ने आदेश दिया और वे सब कार से उतरकर कच्ची सड़क पर आ गए। कार की हेडलाइटें जल रही थीं, जिससे आगे का रास्ता रोशन हो रहा था। प्रेतों की डरावनी आकृतियाँ उनके चारों ओर हवा में तैरती हुई सी घूम रही थीं, जो अब कार की हेडलाइटों और टॉर्च की रोशनी में साफ़ दिखाई दे रही थीं। ठंडी हवा में एक दुर्गंध फैली हुई थी।

वीरेंद्र उन्हें पगडंडी से हटाकर जंगल में ले गया, और रास्ते के दाहिनी ओर घने पेड़ों के बीच से रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ा। प्रमिला ने अर्जुन को वीरेंद्र के पीछे और अपने आगे की ओर निर्देशित किया। माया उसके पीछे-पीछे चल रही थी, और लगातार अपनी टी-शर्ट के ऊपर से डायरी को

टटोल रही थी ताकि वह उसकी जींस की कमर से फिसल न जाए। तिवारी सबसे पीछे चल रहा था।

'रुको मत। चलते रहो। जल्दी करो!' वीरेंद्र ने आदेश दिया।

एक और रास्ता नजर आया; बेशक वह संकरा था और मुश्किल से दिखाई दे रहा था, लेकिन फिर भी एक रास्ता था, जिस पर केवल एक-एक करके ही चला जा सकता था।

समूह तेज़ी से रास्ते पर आगे बढ़ा, झाड़ियों में छिपी जड़ों से बचने की कोशिश कर रहा था, जो टॉर्च की रोशनी में दिखाई नहीं दे रही थीं, और अपने हाथों को नीचे उगने वाली शाखाओं पर झटक रहा था ताकि वे उनके चेहरे पर न लगें। माया और अर्जुन कई बार लड़खड़ाए, लेकिन प्रमिला या तिवारी ने उन्हें संभाल लिया।

किसी ने पीछे मुड़कर नहीं देखा, लेकिन उन्हें देखने की ज़रूरत भी नहीं थी। वे सभी जानते थे कि प्रेतों का एक रहस्यमय समूह उनका पीछा कर रहा है।

कुछ देर बाद, पेड़ कम होते गए और अंत में एक विशाल खुले मैदान में पहुँच गए जहाँ घास के सिवा कुछ नहीं था। खुले मैदान के दूसरे छोर पर, जंगल के अंत से लगभग पचास फीट की दूरी पर, उनके सामने एक पथरीली पहाड़ी खड़ी हो गई।

मैदान के किनारे लगभग अर्धवृत्ताकार आकार में लगे पेड़, मानो किसी अदृश्य सीमा के प्रति सचेत हों, जिसे वे पार नहीं कर सकते थे।

लेकिन जंगल की ओट से निकलकर खुले मैदान को पार करते हुए दौड़ने वाले उन पांच इंसानों के लिए ऐसी कोई सीमा मायने नहीं रखती थी।

और न ही इसका उन विकृत, कमजोर प्राणियों के समूह पर कोई प्रभाव पड़ा, जिन्होंने एक उग्र, काले बादल का रूप धारण कर लिया था, जो उन शरणार्थियों के ऊपर मंडरा रहा था जो ऐसे भाग रहे थे मानो उनकी जान उसी पर निर्भर हो।

वीरेंद्र चट्टान के किनारे तक पहुंचा और यह देखने के लिए मुड़ा कि बाकी समूह कैसा कर रहा है।

बाकी चारों उसके ठीक पीछे थे।

वहाँ लगभग।

लगभग पहुंच गए।

लगभग । । ।

'कनक!' तिवारी की आवाज़ में डर था, वह हांफते हुए धीरे-धीरे उस पहाड़ी तक पहुंचा जहां बाकी समूह खड़ा था। उसकी सांस फूल रही थी, वह कुछ और बोल नहीं पा रहा था।

वीरेंद्र ने चारों ओर अंधेरे आकाश की ओर, ऊपर मंडरा रहे आत्माओं के समूह की ओर देखा, और तिवारी की घबराहट के स्रोत की पहचान करने के लिए बेताब होकर प्रयास किया।

एक चीख सुनाई दी। लेकिन वह डर की चीख नहीं थी।

दर्द से कराहती एक व्यथित चीख।

सभी के आश्चर्य के बीच, माया सिर पकड़कर जमीन पर गिर पड़ी, इधर-उधर लुढ़कती रही और लगातार चीखती रही।

अध्याय सैंतीस

खुले मैदान में आतंक

खुले मैदान में
पन्ना राष्ट्रीय उद्यान
वीरेंद्र, प्रमिला और अर्जुन माया को घूरते रहे, यह सोचकर हैरान थे कि उसके साथ क्या हुआ है और उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें।

उस युवती के साथ क्या हुआ था, यह केवल तिवारी ही जानता था। 'कुछ होने वाला है,' वह हांफते हुए बोला और अपना सिर हिलाते हुए, ध्यान केंद्रित करने के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं।

प्रमिला माया के पास दौड़ी और उसे शांत करने की कोशिश की, लेकिन यह स्पष्ट था कि लड़की किसी गंभीर परेशानी से जूझ रही थी। उसकी आँखों से आंसू बह रहे थे, आँखें कसकर बंद थीं और उसने अपने हाथों की हथेलियों को अपने सिर पर कसकर दबा रखा था। ऐसा लग रहा था जैसे उसे दौरा पड़ रहा हो या वह किसी मानसिक आघात से गुज़र रही हो।

'माया को क्या हुआ?' अर्जुन परेशान था। उसकी जान को खतरा कुछ पल के लिए भुला दिया गया और उसकी जगह अपने दोस्त की भलाई के लिए गहरी चिंता ने ले ली। 'कुछ करो! उसकी मदद करो!'

प्रमिला ने अचंभित होकर वीरेंद्र की ओर देखा। वीरेंद्र ने अपना सिर हिलाया। उसके पास भी कोई जवाब नहीं था। इसके बजाय, वह तिवारी की चेतावनी को ध्यान में रखते हुए आकाश की ओर देखने लगा, तभी प्रमिला ने माया द्वारा गिराई गई मशाल उठा ली।

तिवारी एक तरफ खड़े थे, आंखें कसकर बंद किए हुए थे और धीमी आवाज़ में कुछ बुदबुदा रहे थे। वीरेंद्र ने अनुमान लगाया कि वह कोई मंत्र जप रहे थे।

लेकिन किसलिए?

फिर उसने उसे देखा। आश्चर्य से उसकी आँखें चौड़ी हो गईं।

क्या हो रहा था?

प्रमिला और अर्जुन विस्मय से देखते रहे।

अर्जुन का मुंह खुला रह गया। प्रमिला माया के पास घुटनों के बल बैठी हुई थी, जो एक तरफ लेटी हुई भ्रूण की मुद्रा में सिकुड़ी हुई थी। माया ने चीखना बंद कर दिया था। अब वह बेकाबू होकर रो रही थी और उसका शरीर स्पष्ट रूप से कांप रहा था। उसके साथ कुछ हो रहा था, लेकिन कोई नहीं जानता था कि क्या। उसने अब भी अपने दोनों हाथों से अपना सिर कसकर पकड़ रखा था।

टॉर्च की रोशनी में जब छोटा सा समूह देख रहा था, तब एक ऐसा दृश्य सामने आ रहा था जो जितना आश्चर्यजनक था उतना ही भयावह भी था।

प्रेतों का वह काला समूह, जो जंगल में उनका पीछा करता रहा और पेड़ों की आड़ से बाहर निकला, अब आंधी में काले, भूरे पेट वाले बादल की तरह सुरक्षित दूरी पर उनके ऊपर मंडरा रहा था, और फिर वह अलग हो गया जिससे एक खाई बन गई जिसके माध्यम से एक काला कोहरा

अब खुले मैदान में फैल गया।

जैसे-जैसे यह धुंध धीरे-धीरे आत्माओं के समूह के बीच से गुज़री, प्रेत आत्माएं इससे दूर हटती हुई प्रतीत हुईं, मानो यह इतनी विषैली हो कि मृतकों की आत्माओं को भी नुकसान पहुंचा सके।

कोहरा मानो स्वयं अंधकार से ही बना हो; नहीं, बल्कि उस अंधकार से जो रात के आवरण से भी कहीं अधिक गहरा था। जैसे ही प्रेतों का बादल छटा, कोहरा उस खुले स्थान से होकर बह निकला, आकाश में चमकते तारों को ढक लिया, और रात के घने कोहरे को दृष्टि से ओझल कर दिया।

तिवारी की आंखें अचानक खुल गईं। 'कनक!' उन्होंने तनाव भरी आवाज में कहा।

वीरेंद्र उसकी ओर तेजी से मुड़ा।

'वे यहाँ हैं।' तिवारी की आवाज़ में तनाव था। वही एकमात्र व्यक्ति थे जिन्हें समझ आ रहा था कि क्या हो रहा है। साथ ही, वे अपने ज्ञान से उत्पन्न भय को दबाने का भी अथक प्रयास कर रहे थे। 'कनक, मैं उनकी उपस्थिति महसूस कर सकता हूँ, लेकिन मुझे नहीं पता कि वे क्या हैं। मैंने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं देखा – मैं बस इतना ही निश्चित रूप से कह सकता हूँ। हम यह जाने बिना गुरुकुल में प्रवेश नहीं कर सकते कि हमारा सामना किससे होगा। यह बहुत बड़ा जोखिम है। तुम्हें यहाँ डटकर मुकाबला करना होगा। यहीं, इस खुले मैदान में।'

वीरेंद्र ने सिर हिलाया, हालांकि वह पूरी तरह समझ नहीं पाया था, लेकिन उसे अंदाज़ा हो गया था कि अब कुछ ऐसा होने वाला है जिसके लिए एक क्षत्रिय के रूप में उसके कौशल की आवश्यकता होगी। यह स्पष्ट था कि तिवारी को लगता था कि ऋषि की शक्तियां उस चुनौती का सामना करने के लिए पर्याप्त नहीं होंगी। एक योद्धा की विशेष शक्तियों की आवश्यकता थी।

'तलवारें।' वीरेंद्र का आदेश संक्षिप्त और अत्यंत महत्वपूर्ण था।

अर्जुन ने हैरानी भरी नज़र से उसे देखा। तलवारें? तलवारों वाला लकड़ी का बक्सा तो वे गाड़ी में ही छोड़ आए थे। अब वहाँ जाकर उसे लाना नामुमकिन था!

उसने अपनी माँ की ओर देखा और उसका मुँह खुला रह गया। उसके हाथ में एक लंबी, चमकदार तलवार थी, जो उसके दूसरे हाथ में पकड़ी मशाल की रोशनी में चमक रही थी। उसका सिर चकरा गया। उसकी माँ तलवार लेकर क्या कर रही थी? और उसे यह तलवार कहाँ से मिली?

अर्जुन ने वीरेंद्र की ओर मुड़ने के लिए ठीक समय पर देखा कि दो तलवारें, एक-एक हाथ में, मानो हवा से प्रकट हो उठीं।

यहां क्या हो रहा था? क्या वह सपना देख रहा था?

अगले ही क्षण, वीरेंद्र ने अर्जुन की ओर मुड़कर सिर हिलाया और एक तलवार उसकी ओर फेंक दी। अर्जुन ने फुर्ती से उसे पकड़ लिया और एक ही झटके में म्यान से निकाल लिया। उसने तुरंत अपने चाचा द्वारा सिखाई गई आक्रमणकारी मुद्रा धारण कर ली।

वीरेंद्र ने उसे प्रशंसा भरी नजरों से देखा, मानो कह रहा हो, 'शाबाश। बढ़िया मुद्रा। पहला कदम।' जैसा कि वह घर पर अभ्यास करते समय किया करता था।

जैसे ही अर्जुन ने खुद को संभाला और आगे देखा, उसके सामने जो दृश्य घटने लगा, उसे

देखकर वह सदमे और भय से भर गया।
पार्क के दूसरे हिस्से में
कोई चेतावनी नहीं दी गई थी। उसे तैयारी करने का समय नहीं मिला।

एक पल पहले, हरीश कच्ची सड़क पर तेजी से दौड़ रहा था, अपनी सीट पर झटके खा रहा था, उसके चारों ओर पेड़ों, कार द्वारा उड़ाई गई धूल के बादल और अंधेरे के अलावा कुछ भी नहीं था।

अगले ही पल, वह एक ऐसे दृश्य से घिर गया जो किसी बुरे सपने जैसा था।

भयानक जीव अचानक कहीं से प्रकट हुए और उसकी कार पर टूट पड़े। ऐसा लगा मानो उसके चारों ओर का अंधेरा अचानक जीवित हो उठा हो और अनेक भयानक रूपों में प्रकट हो गया हो। वे उसके चारों ओर चक्कर लगा रहे थे, सभी दुबले-पतले अंग, अधूरे शरीर, नुकीले दांत और पंजे लिए हुए थे।

एक ऐसा खौफ जो उसने पहले कभी महसूस नहीं किया था, उस पर हावी हो गया, और वह उन्हें रोकने के लिए कुछ भी करने में असमर्थ था। उसका दिमाग काम नहीं कर रहा था। एक भयानक भय उसके होश में छा गया, उसका खून जम गया।

खुली खिड़की से दुर्गंध हवा में फैल रही थी, जिससे सांस लेना मुश्किल हो रहा था। ऐसा लग रहा था मानो दुनिया के सारे खुले नाले इसी रास्ते पर आकर आकर मिल गए हों।

दुर्गंध ने उसे उस सम्मोहन से जगा दिया जिसने उसे जकड़ रखा था। भय और आतंक से ग्रस्त होकर उसने ब्रेक जोर से दबाए और कार को अचानक रोक दिया।

पसीने से तरबतर और अपनी पहले से ही तनावग्रस्त नसों को अपने होश के किनारों पर मंडरा रहे गहरे भय के आगे न झुकने देने की पूरी कोशिश करते हुए, उसने कार को दाईं ओर मोड़ा, फिर पूरी गति से पीछे की ओर चलाया, फिर से मोड़ा और फिर एक बार और पीछे की ओर चलाया, जब तक कि वह कार को उस दिशा में मोड़ने में सक्षम नहीं हो गया जहाँ से वह अभी आया था।

बड़ी मुश्किल से होश में रहते हुए उसने एक्सीलरेटर को पूरी तरह दबा दिया। कार अचानक आगे बढ़ी, फिर कच्ची सड़क पर वापस दौड़ पड़ी, मानो अपने पुराने रास्ते पर लौट रही हो।

पल अनंत काल की तरह खिंचते चले गए। उसे लगा कि अब उसके लिए कोई उम्मीद नहीं बची है। निश्चित रूप से, वह यहीं इन राक्षसों के हाथों मर जाएगा, या जो भी वे थे।

फिर, जितनी अचानक वे प्रकट हुए थे, उतनी ही अचानक उनके चारों ओर घूमती हुई आकृतियाँ हवा में गायब हो गईं। मानो वे वापस उसी अंधेरे में समा गए हों जहाँ से वे आए थे।

हरीश उबड़-खाबड़ रास्ते पर, पेड़ों और अंधेरे के बीच अकेला रह गया। वह अफरा-तफरी का बवंडर, जिसने उसे अपनी चपेट में ले लिया था, अब शांत हो चुका था। चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था।

लेकिन वह रुका नहीं। पसीने से तर हाथों से स्टीयरिंग व्हील को कसकर पकड़े हुए, उसके कपड़े उसके शरीर से चिपक रहे थे, पसीने की बूंदें उसके माथे से टपककर उसकी आंखों में गिर रही थीं, वह केवल एक ही चीज़ पर ध्यान केंद्रित कर सकता था।

उसे इस जगह से निकलना ही था।
अब।

अध्याय अड़तीस

कपूर की फाइलें

एसपी कपूर का कार्यालय
नई दिल्ली

फोन की घंटी बजते ही रमन कपूर ने तुरंत अपनी डेस्क से फोन उठा लिया। आज वे ऑफिस में देर तक बैठे थे और अपने द्वारा मंगाई गई कुछ फाइलों को देख रहे थे।

उन्हें उम्मीद थी कि हरीश को कम से कम कोई सुराग तो मिल ही गया होगा।

'जी हां, हरीश?'

कुछ क्षणों तक कोई जवाब नहीं आया। फोन पर सिर्फ भारी साँसों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। कपूर अचंभित रह गए।

'हरीश!' अब उनकी आवाज में तीखापन था।

'सर,' हरीश ने कांपती हुई धीमी आवाज में जवाब दिया। 'सर...'

'बोलते रहो, हरीश,' कपूर ने अधीरता से बीच में ही टोकते हुए कहा। 'मैं सुन रहा हूँ। मैं तुम्हें सुन सकता हूँ। क्या तुम पार्क के अंदर हो?'

'सर,' हरीश हकलाते हुए बोला, उसके मुंह से शब्द नहीं निकल रहे थे। 'सर, पार्क...'

एक बार फिर सन्नाटा छा गया।

'हे भगवान, हरीश, तुम्हें क्या हुआ है यार? इसे बाहर निकालो!'

अंततः शब्द तेज़ी से निकल पड़े। 'महोदय, पार्क में भूत-प्रेत का वास है। वहाँ ऐसे जीव हैं जिनका मैं वर्णन नहीं कर सकता। भयानक चीज़ें। उन्होंने मेरा पीछा किया।' उसकी आवाज़ काँप उठी।

कपूरी स्तब्ध होकर बैठ गए। हरीश किस बारे में बात कर रहे थे? यह तो उनके सबसे भरोसेमंद लोगों में से एक था। आखिर हुआ क्या था?

'भूतिया होने का क्या मतलब है? वीरेंद्र और बाकी लोग कहाँ हैं?' उसने पूछा।

'मुझे नहीं पता, सर।' हरीश ने आखिरकार खुद को संभाला और कपूर को अपना अनुभव सुनाया।

कपूर सन्न रह गया। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि वह क्या सुन रहा है।

'थोड़ा आराम कर लो, हरीश,' उसने आखिरकार कहा, अब उसकी आवाज़ थोड़ी नरम थी। 'मैं किसी से खाने और रात के लिए बिस्तर का इंतज़ाम करवा दूँगा। मैं ग्वालियर से एक टीम को कल पन्ना भेज दूँगा ताकि वे तुम्हारे साथ जंगल की जाँच कर सकें। हम पार्क रेंजरों से भी संपर्क करेंगे ताकि वे तुम्हें पार्क में घुमा सकें। देखते हैं कि आज रात तुमने जो देखा, उसका कोई तर्कसंगत कारण मिल पाता है या नहीं। तुम्हें आराम की ज़रूरत है। कल हमारे फरार लोगों के ठिकाने का पता लगाने के लिए सुराग ढूँढ़ना।'

कॉल खत्म होते ही कपूर पीछे हटकर बैठ गए और अभी-अभी हुई बातचीत पर सोचने लगे। यह अविश्वसनीय था। हरीश की बातों से ऐसा लग रहा था मानो उसे जंगल में अलौकिक प्राणियों का अनुभव हुआ हो। कपूर को फोन पर ही हरीश की घबराहट महसूस हो रही थी। फिर भी,

उनका दिमाग इस संभावना को मानने को तैयार नहीं था। आखिर ऐसी कौन सी बात हो सकती है जिसने उनके सबसे भरोसेमंद आदमी को लगभग मानसिक रूप से विक्षिप्त कर दिया हो? उन्हें पूरा यकीन था कि जांच से सुराग जरूर मिलेंगे। तब तक अटकलें लगाने का कोई फायदा नहीं।

उन्होंने अपना ध्यान डेस्क पर रखी फाइलों पर केंद्रित किया। इस मामले में कोई भी अनसुलझी बात न छोड़ने की चाहत में, और ठोस सुराग न मिलने की हताशा में, उन्होंने उन सभी अप्राकृतिक मौतों के मामलों की फाइलें मंगवाई थीं, जिनका कोई स्पष्टीकरण नहीं मिल पाया था। फाइलों का एक बड़ा ढेर उनके कार्यालय में आ चुका था और उन्होंने दिन का अधिकांश समय उन्हें खंगालने में बिताया था।

अधिकांश फाइलें उन हत्याओं से संबंधित थीं जो देखने में तो सामान्य थीं, लेकिन मकसद या संदिग्धों की कमी के कारण अनसुलझी रह गई थीं। इनमें से कुछ रहस्यमय आत्महत्याएं भी थीं।

कपूरी ने आह भरी और थकी हुई आँखों को मलते हुए कहा, उसे यह सब झेलना ही पड़ेगा।

तीन घंटे बाद, कपूर ने सभी फाइलों को देख लिया था। वह अपनी कुर्सी पर पीछे झुककर बैठ गया और फाइलों के ढेर में से चुनी गई दो फाइलों को घूरने लगा।

उन्हें संतोष हुआ। उनका अनुमान सही निकला। फाइलों की छानबीन करना व्यर्थ नहीं गया था। कागज़ात के अंबार में दो ऐसे मामले दबे हुए थे जिन्होंने जांचकर्ताओं को उलझन में डाल दिया था, लेकिन हत्याओं की पेचीदा प्रकृति के बावजूद उन पर ध्यान नहीं दिया गया था। उन्हें अनसुलझा मानकर धूल फांकने के लिए रख दिया गया था।

इस मामले के रहस्यों का कोई अंत नज़र नहीं आ रहा था। वह आराम से बैठ गया और मामले की बढ़ती चुनौती के रोमांच का आनंद लेने लगा। यह अनुभूति जानी-पहचानी थी। यह एक साधारण हत्या के रूप में शुरू हुई थी जिसे समझाना असंभव लग रहा था। शुरुआत में यह काफी दिलचस्प थी। अब, जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता गया, यह कुछ और जटिल रूप ले रही थी, मानो कोई बहु-सिर वाला राक्षस हो जिसे मारना असंभव हो; यह उसके पिछले कई मामलों से बहुत अलग नहीं थी।

फाइलों में नए सुराग मिलने की उनकी उम्मीदें धराशायी हो गईं। हाँ, उन्हें कुछ मिला तो था, लेकिन इन दो फाइलों में उन्होंने जो पढ़ा, उससे मामले को सुलझाने का कोई सुराग नहीं मिला।

इसके बजाय, इस मामले की प्रकृति के अनुरूप, इसने स्थिति को और भी जटिल बना दिया।

उसके द्वारा उठाए गए हर कदम के साथ रहस्य और भी गहराता चला गया।

कपूर आराम से बैठ गए और अपनी अगली कार्रवाई के बारे में सोचने लगे।

अध्याय उनतीस

शुक्र की सेना

खुले मैदान में

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान

अर्जुन ने तिरछी नजर से देखा कि वीरेंद्र ने तिवारी की ओर देखा, जिन्होंने सहमति में सिर हिलाया। दोनों व्यक्तियों के बीच एक मौन संकेत का आदान-प्रदान हो गया था।

तिवारी मुड़ा और पहाड़ी की ओर दौड़ पड़ा तथा गायब हो गया। ऐसा लगा मानो वह सीधे चट्टान से टकरा गया हो।

अर्जुन समझ गया कि यही वह 'प्रवेश द्वार' था जिसका जिक्र वीरेंद्र ने पहले किया था। उसे ज्यादा आश्चर्य नहीं हुआ। आज सुबह वे लगभग इसी तरह गंधर्व घाटी में दाखिल हुए थे।

ताक-झांक करने वालों से बचाव और गुरुकुल के प्रवेश द्वार को छिपाने के लिए बनाया गया एक उपकरण।

लेकिन उस खुले मैदान में कुछ और ही घटित हो रहा था।

अब काला कोहरा जमीन पर ऐसे समा रहा था मानो उसके पीछे के जंगल पर एक महीन काला पर्दा गिर रहा हो।

जैसे-जैसे अर्जुन बढ़ती हुई चिंता के साथ देखता रहा, काला कोहरा धीरे-धीरे काले, पतले, धुएं के बादलों में बदलने लगा, जो कोहरे से अलग होने लगे। जैसे ही धुएं के अलग-अलग गुच्छे जमीन को छूते, उसकी आँखों के सामने एक अद्भुत परिवर्तन हो रहा था।

काले बादलों की धुंधली आकृतियाँ सभी दिशाओं में फैलती और लंबी होती जा रही थीं, और धीरे-धीरे वे भौतिक आकृतियों में परिवर्तित हो रही थीं जो देखने में आश्चर्यजनक रूप से मानवाकार लग रही थीं। जैसे ही प्रत्येक आकृति ज़मीन पर पहुँची, उसका रूपांतरण पूरा हो गया।

लेकिन जब उन्होंने उनका और करीब से अवलोकन किया, तो पाया कि नवगठित शरीर वास्तव में सामान्य नहीं थे। वे दिखने में बहुत समान थे, फिर भी काफी भिन्न थे।

इसका समग्र आकार और रूप एक मनुष्य के समान था - धड़, दो पैर, दो हाथ और एक सिर।

लेकिन समानता यहीं समाप्त हो गई।

उसकी आँखों के सामने बन रहे इन जीवों का कोई चेहरा नहीं था। न मुँह, न नाक, न कान। बस खून जैसी लाल आँखें घूर रही थीं, मानो पहाड़ी की छाया में दुबके छोटे से समूह को जला रही हों।

धुंध से उत्पन्न हुए उन भयानक जीवों की त्वचा पीली थी, जिसमें गहरा लाल रंग झलक रहा था। इतनी दूरी से भी वह उनकी उंगलियों और पैर की उंगलियों के सिरों पर नुकीले पंजे देख सकता था।

वे क्या कर रहे थे?

अर्जुन के पेट में एक अजीब सी बेचैनी होने लगी। एक सवाल उसे लगातार परेशान कर रहा था।

क्या शुक्र यहाँ था?

जैसे-जैसे काले धुएं के बादल जमीन पर उतरते गए, वैसे-वैसे उन चेहरेविहीन प्राणियों की संख्या बढ़ती गई। अर्जुन स्तब्ध होकर देखता रहा। जो कुछ हो रहा था, वह उसकी समझ से परे था।

मैदान में सन्नाटा छा गया था। अचानक अर्जुन को एहसास हुआ कि माया का रोना बंद हो गया है। वह अब भी जमीन पर भ्रूण की मुद्रा में लेटी हुई थी, उसके हाथ उसके कानों पर थे। लेकिन उससे कोई आवाज नहीं आ रही थी।

क्या वह होश में थी? उसने उसकी ओर एक कदम बढ़ाया।

वीरेंद्र ने उसे घूरकर देखा। उसकी निगाहों में यही संदेश था, 'ध्यान केंद्रित करो!'

अर्जुन हिचकिचाया, फिर उसने मन बना लिया। वह अपने चाचा की बात नहीं मानना चाहता था। लेकिन किसी भी कीमत पर वह माया को कोई नुकसान नहीं होने देना चाहता था। वह उसकी बचपन की साथी थी, दुनिया में उसकी इकलौती सच्ची दोस्त। उसे माया की रक्षा करनी ही थी। यकीनन, वीरेंद्र को इससे कोई आपत्ति नहीं होगी! एक दृढ़ कदम बढ़ाते हुए अर्जुन माया की ओर बढ़ा और धीरे-धीरे उनकी ओर बढ़ रहे उन अजीब जीवों से उसकी रक्षा करने के लिए खड़ा हो गया।

उसे बस इतना पता था कि किसी न किसी समय उसे अपनी मां के साथ अपने चाचा के साथ मिलकर इन जीवों पर हमला करना होगा।

उसकी माँ।

उसने प्रमिला की ओर एक नज़र डाली। वह भी उन जीवों पर ध्यान केंद्रित किए खड़ी थी। वह हाथ में तलवार लिए, वीरेंद्र की ही तरह खड़ी थी। अर्जुन ने उसे पहले कभी तलवार के साथ नहीं देखा था, लेकिन यहाँ वह एक अनुभवी योद्धा की तरह व्यवहार कर रही थी।

और शायद वह उनमें से एक थी।

जब अर्जुन यह सोच रहा था कि वह अपनी मां के बारे में और क्या-क्या नहीं जानता, तभी अचानक हंगामा मच गया और मानो सब कुछ अस्त-व्यस्त हो गया हो।

उसके पीछे की पहाड़ी में विस्फोट हुआ और लोगों का एक बड़ा समूह दौड़कर खुले मैदान में आ गया। पुरुष और महिलाएं, लड़कियां और लड़के, कुछ सफेद सूती वस्त्रों में, अन्य रंगीन लेगिंग और कुर्ते पहने हुए चट्टान से बाहर निकले, जिनका नेतृत्व तिवारी कर रहे थे, जो तुरंत माया और अर्जुन की ओर बढ़े।

छोटे बच्चे पुराने जमाने की मशालें लिए हुए थे जिनकी लौ उनके चारों ओर के अंधेरे को चीर रही थी, जबकि चुस्त-दुरुस्त रंगीन वर्दी पहने पुरुष, महिलाएं और बड़े बच्चे धनुष और तलवारें लिए हुए थे जो मशालों की रोशनी में चमक रही थीं।

सफेद वस्त्र पहने हुए लोग पहाड़ी की चट्टानी ढलान से अचानक खुले मैदान में प्रवेश करते हुए एक मंत्र का जाप कर रहे थे।

‘The Kshatriyas,’ Virendra exclaimed in relief.

ये लोग कौन थे? अर्जुन ने सोचा।

लेकिन सोचने का समय नहीं था। वीरेंद्र एक भयानक दहाड़ के साथ शुक्र के प्राणियों की सेना

की ओर बढ़ रहा था।

प्रमिला ने तलवार लहराते हुए वीरेंद्र का पीछा किया।

अर्जुन, अपने विचारों से चौंककर, उनके पीछे दौड़ पड़ा और अपनी ज़ोरदार चीख से शोर को और बढ़ा दिया। उसे यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि अब तक जो डर उसे जकड़े हुए था, वह अचानक एड्रेनालाईन के प्रवाह में बदल गया था।

चीखते-चिल्लाते, चट्टान से निकले तलवारधारी लोग वीरेंद्र, प्रमिला और अर्जुन के साथ मिलकर शुक्र की सेना पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ़े।

दूसरी ओर, उन जीवों ने हमले की आशंका जताते हुए भयानक दहाड़ें मारीं और आगे बढ़ते हुए मनुष्यों से आधे रास्ते में ही मिल गए।

खुले मैदान में दोनों पक्षों के बीच झड़प के दौरान मंत्रों, गर्जनाओं और जयकारों की गूंज हवा में गूंज रही थी। वीरेंद्र और प्रमिला उन प्राणियों की पंक्तियों के बीच से आगे बढ़ते हुए, भयंकर प्रहारों से उन्हें काट रहे थे, उनकी तलवारें दर्जनों जलती हुई मशालों की रोशनी में चमक रही थीं, और वे अपने हथियारों को चारों दिशाओं में घुमा रहे थे।

शुक्र की सेना बलवान थी और उसने भयंकर जवाबी हमला किया। जैसे ही उन प्राणियों ने अपने कुछ हमलावरों को पराजित किया, दर्द भरी चीखें हवा में गूंज उठीं। उनकी त्वचा कवच की तरह सख्त और कठोर थी, और उनके नुकीले पंजे हथियारों का काम कर रहे थे जिनसे उन्होंने गुरुकुल के पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को नोंच डाला। लेकिन, गुरुकुल की क्षत्रिय सेना ने भयंकर रूप से लड़ते हुए - वार करते हुए और काटते हुए, उन प्राणियों की संख्या को कम करते हुए - ऊपर काला कोहरा लगातार मंडराता रहा, मानो दुश्मन सेना को फिर से भरने का एक असीमित स्रोत हो।

अर्जुन को पता था कि देर-सवेर क्षत्रिय पराजित हो जाएंगे।

तब क्या होगा?

अध्याय चालीस

गुरुकुल का युद्ध

खुले मैदान में

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान

माया की आंखें धीरे से खुलीं। उसके ऊपर एक धुंधली सी आकृति मंडरा रही थी। यह क्या था?

जैसे ही उसकी आँखें स्पष्ट हुईं, धुंधली आकृति तिवारी के चेहरे में तब्दील हो गई। वह उसके बगल में घुटनों के बल बैठा था और उसे ध्यान से देख रहा था, उसके चेहरे पर चिंता के भाव थे।

उसके चारों ओर एक भयानक शोरगुल मच गया; मंत्रोच्चार, चीखें, रोंगटे खड़े कर देने वाली दहाड़ें, दर्द भरी चीखें और लड़ाई की आवाज़ों का एक अजीब मिश्रण उसके कानों में गूंज रहा था।

क्या हो रहा था?

वह उठने की कोशिश करती रही, लेकिन केवल अपनी कोहनी के बल ही उठ खड़ी हो पाई। आखिर उसे क्या हुआ था? वह पूरी तरह से थक चुकी थी और उसे याद नहीं आ रहा था कि वह अब ज़मीन पर क्यों पड़ी है।

उसकी आखिरी याद यह थी कि वह खुले मैदान में खड़ी थी और सोच रही थी कि कहीं वे जंगल और पहाड़ी के बीच तो नहीं फंस गए हैं, और प्रेत उनके ऊपर खतरनाक ढंग से मंडरा रहे हैं। फिर अचानक उसका सिर आग की तरह जलने लगा। अगली ही पल, वह ज़मीन पर पड़ी थी और सोच रही थी कि उसके आसपास क्या हो रहा है।

'माया! शुक्र है तुम ठीक हो। मैं तुम्हारी मदद करता हूँ,' तिवारी ने दयालुता से कहा और माया को उठने में मदद करते हुए, चट्टानी पहाड़ी के सहारे लड़खड़ाते हुए खड़े होने में सहारा दिया। माया अपनी आँखों के सामने चल रहे युद्ध को देखती रही।

दृश्य को देखते ही उसके दिल में एक ठंडी दहशत सी छा गई। गुरुकुल के योद्धा घटनास्थल पर पहुँच चुके थे और अब वे अजीबोगरीब प्राणियों की सेना से लड़ रहे थे, जो रहस्यमय तरीके से एक काले कोहरे से प्रकट हो रहे थे।

वे जीव योद्धाओं के कौशल और हथियारों का मुकाबला नहीं कर सके, लेकिन हमले के बावजूद उनकी संख्या बढ़ती रही, क्योंकि योद्धा भयंकर प्रतिरोध का सामना करते हुए थकने लगे थे।

उसके चारों ओर, युद्ध की आवाज़ों के बीच रात के वातावरण में एक मधुर मंत्रोच्चार गूंज रहा था। माया ने गौर किया कि तिवारी भी कुछ जप रहे थे।

एक मंत्र।

माया ने शब्दों को समझने की पूरी कोशिश की।

॥ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखं

नरसिम्हम भीषणं भद्रं मृत्योऱ मृत्युं नमाम्यहम्

उग्रम विराम महा विष्णुम
ज्वलनतुम सर्वतो मुखम
नरसिंगम भीशनम भद्रम
मृत्युर् मृत्युम् नममि अहम

चौंककर उसने महसूस किया कि वह नरसिम्हा मंत्र का जाप कर रहा था। उसने कल रात ही डायरी में इसे पढ़ा था। उसका हाथ डायरी की ओर उठा, जो अभी भी उसकी टी-शर्ट के नीचे सुरक्षित थी। नींद में होने के बावजूद, उसे मंत्र का हर शब्द याद था।

माया अब तक असहाय महसूस कर रही थी। किसी चीज़ ने—उसे नहीं पता क्या—उसकी इंद्रियों को वश में कर लिया था। जो भी हो, वह अब भी उसके दुष्परिणामों को महसूस कर सकती थी। इसने उसे पूरी तरह से थका दिया था।

जब वह योद्धाओं को देख रही थी - जिनमें पुरुष, महिलाएं, बच्चे और उसकी बचपन की दोस्त भी शामिल थीं - जो उन प्राणियों के साथ एक हारी हुई लड़ाई लड़ रहे थे, जिनके बारे में उसे यकीन था कि शुक्र का उनसे कुछ न कुछ संबंध था, तो उसने अपने भीतर एक दृढ़ संकल्प की भावना महसूस की।

अब उसे एक अवसर दिखाई दिया। कुछ करने का मौका। वह अपनी क्षमता के अनुसार कुछ करने वाली थी।

माया ने स्थिति का जायज़ा लिया। इस लड़ाई को जीतने का एकमात्र तरीका उस कोहरे को नष्ट करना था जिससे जीव निकल रहे थे। क्या मंत्र ऐसा करने में सफल होगा? उसे कोई अंदाज़ा नहीं था। लेकिन उसे कोशिश करनी ही थी। कोई और रास्ता नज़र नहीं आ रहा था। उसने अपनी आँखें बंद कीं और ऊपर मंडराते काले कोहरे पर ध्यान केंद्रित किया, जो प्रेतों के बादल के केंद्र में था। यही उसकी एकमात्र आशा थी, भले ही अंत में इसका कोई अर्थ न हो।

माया ने मंत्र का जाप शुरू किया। तिवारी ने मंत्र का जाप करते हुए, आश्चर्य भरी नजरों से माया को देखा।

माया ने तिवारी और गुरुकुल के कुछ अन्य श्वेत वस्त्रधारी लोगों के साथ मंत्रोच्चार शुरू किया, जबकि अर्जुन ने उन पीले प्राणियों से युद्ध जारी रखा। अपनी माता और चाचा का अनुसरण करते हुए, वह उनकी सेना में घुस गया और अपनी तलवारबाजी के कौशल का प्रभावी ढंग से उपयोग करते हुए, आगे बढ़ते हुए उन प्राणियों को काट गिराया।

वह अपने चारों ओर गुरुकुल से क्षत्रियों की गर्जना और चीखें सुन सकता था, जो अपने सामने खड़ी अलौकिक सेना को चीरते हुए आगे बढ़ रहे थे। कुछ क्षत्रियों ने अपने धनुषों का इस्तेमाल विनाशकारी ढंग से किया, अपनी पीठ पर टंगे तरकश से तीर निकालकर, कमान की डोरी खींचकर, बिजली की गति से एक ही झटके में तीर चला दिया। वहीं, अन्य क्षत्रियों ने अर्जुन की

तरह तलवारें चलाईं, फुर्ती, निपुणता और असीम शक्ति का मिश्रण इस्तेमाल करते हुए राक्षसों को मार गिराया।

अर्जुन ने प्रशिक्षण देने और लगातार अभ्यास से थक जाने पर भी उसे प्रेरित करते रहने के लिए अपने चाचा को मन ही मन धन्यवाद दिया।

विभिन्न तकनीकों और चालों के अंतहीन अभ्यास सत्रों का ही अर्जुन को आज इतना लाभ मिल रहा था। वह फुर्तीला था, प्राणियों के अनाड़ी आक्रमणों से बड़ी तेज़ी से बचता था और उनकी सुरक्षा को भेदने और उन पर प्रहार करने के अवसरों को तुरंत पहचान लेता था।

अर्जुन ने उन प्राणियों की मुख्य कमजोरी को तुरंत भांप लिया था। यद्यपि वे अपने से लड़ने वाले मनुष्यों से आकार और बल में बड़े थे, क्षत्रिय युद्धकला में निपुण थे। दूसरी ओर, वे प्राणी, संभवतः नवगठित होने के कारण, अपने नवनिर्मित शरीर के अभ्यस्त नहीं थे। उनकी चाल-ढाल अटपटी और धीमी थी, मानो वे अभी भी अपने नवनिर्मित अंगों का उपयोग करना सीख रहे हों। अपनी शारीरिक श्रेष्ठता के बावजूद, वे अलौकिक प्राणी क्षत्रियों का मुकाबला नहीं कर सकते थे।

उन्हें देखकर अर्जुन को पुरानी हॉरर फिल्मों और स्टार ट्रेक के रबर के राक्षसों की याद आ गई, जिन्हें या तो रबर के सूट पहने हुए आदमी निभाते थे या फिर झटके से हिलने वाले यांत्रिक ढांचे। यह सोचकर वह अनजाने में मुस्कुराया, फिर जल्दी से एक तरफ हट गया ताकि उस विशालकाय जीव के नुकीले पंजों से बच सके जो उसके पास आकर उस पर हमला करने वाला था।

'ओह, धिक्कार है!' उसने मन ही मन बुदबुदाते हुए उस प्राणी की ओर मुड़कर कहा। 'बाल-बाल बच गया। अब रबर के राक्षसों के सपने देखना बंद करो, एजे।'

अर्जुन को थकान महसूस होने लगी थी। शुक्र की सेना को काले कोहरे से लगातार नई सेना मिल रही थी। यद्यपि क्षत्रियों को अभी तक कोई नुकसान नहीं हुआ था, लेकिन जल्द ही उनकी संख्या कम पड़ जाएगी।

उसने ऊपर मंडराते कोहरे पर चिंता भरी नज़र डाली और अपनी आँखें मल लीं। क्या वह सिर्फ़ कल्पना कर रहा था? या कोहरा सचमुच छंट रहा था?

अर्जुन का ध्यान भटकते देख, उनमें से एक प्राणी लड़खड़ाते हुए उसकी ओर आया और गुर्राते हुए उस पर हमला करने की तैयारी में अपना हाथ उठाया।

कोहरे को निहारने में इतना मग्न अर्जुन उस प्राणी को आते हुए देख ही नहीं पाया और खतरे का एहसास उसे तभी हुआ जब उसने उसकी गुर्राहट सुनी। उसने उस प्राणी के वार से बचने के लिए कूदने की कोशिश की, लेकिन समय रहते नहीं कर पाया। एक पीली, मांसल भुजा ने हथौड़े की तरह उसकी तलवार वाले हाथ पर प्रहार किया, जिससे तलवार उसके हाथ से छूटकर ज़मीन पर जा गिरी।

प्रहार से संतुलन बिगड़ने के कारण अर्जुन पीछे की ओर लुढ़क गया और एक अन्य प्राणी से टकरा गया, जिसकी पीठ उसकी ओर थी और वह एक क्षत्रिय बालक से लड़ने में व्यस्त था।

आश्चर्यचकित होकर उस प्राणी ने अपना सिर अर्जुन की ओर घुमाया और अपनी दृष्टि अपने प्रतिद्वंद्वी से हटा ली। लड़के ने अवसर का लाभ उठाया और अपनी तलवार के कुछ सटीक वारों से उस प्राणी को मार गिराया।

टक्कर के बाद अर्जुन जमीन पर गिर पड़ा था, उसकी निगाहें अपने प्रतिद्वंद्वी पर टिकी हुई थीं जो आगे बढ़ चुका था और अब अपने पंजों से उसे टुकड़े-टुकड़े करने की तैयारी कर रहा था।

पलक झपकते ही, जिस लड़के ने अर्जुन को अभी-अभी टक्कर मारी थी, वह राक्षस की ओर दौड़ा और उस पर हमला करते हुए उसका हाथ काट डाला। दर्द और क्रोध से दहाड़ते हुए, कोहनी से कटा हुआ उसका हाथ सीधे अर्जुन पर गिरा, जिससे उसकी सांसें थम गईं।

अर्जुन घृणा से अपने पेट पर पड़े कटे हुए हाथ को घूर रहा था, जिससे एक चिपचिपा हरा पदार्थ रिस रहा था जो उसकी टी-शर्ट से चिपका हुआ प्रतीत हो रहा था।

'मुझे लगा कि तुम्हें मदद की जरूरत है,' लड़के ने अर्जुन की ओर आँख मारी और मुस्कुराते हुए कहा, जैसे ही अर्जुन ने उस प्राणी को मार गिराया, उसके घुटनों पर हमला किया और फिर उसके सामने लड़खड़ाते हुए उसका सिर काट दिया।

लड़के ने हाथ बढ़ाकर अर्जुन को उठने में मदद की। अर्जुन ने कृतज्ञतापूर्वक कहा, 'धन्यवाद। आप...'

'इसे बचाकर रखो,' लड़के ने पास ही जमीन पर पड़ी अर्जुन की तलवार की ओर इशारा करते हुए कहा। 'दो और तलवारें तुम्हारी ओर आ रही हैं।'

अर्जुन ने अपनी तलवार पर छलांग लगाई और उसे धमकी भरे अंदाज में लहराया, अपने रक्षक को देखकर मुस्कुराते हुए वह अपनी ओर बढ़ते दो राक्षसों का सामना करने के लिए तैयार हो गया।

अचानक एक तेज आवाज सुनाई दी। 'धुंध! यह छंट रही है!'

उस चीख की गूंज मैदान में मौजूद अन्य लोगों तक भी पहुंची।

अर्जुन ने वीरेंद्र की आवाज सुनी। 'इन सबको काट डालो! किसी को भी खड़ा न रहने दो!'

गुरुकुल के बच्चों ने इस ज्ञान से उत्साहित होकर प्रतिशोध की भावना से हमला किया कि उन प्राणियों का स्रोत नष्ट हो चुका था।

इसके बाद बचे हुए जीवों को मार गिराने और खुले मैदान को सुरक्षित करने में ज्यादा समय नहीं लगा।

अध्याय इकतालीस

Gurukul

खुले मैदान में

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान

माया ने उस खुले मैदान का जायजा लिया, जो उन जीवों के शवों से भरा पड़ा था, जिनमें से कई के हाथ, पैर या यहां तक कि सिर भी गायब थे।

वह मंत्र का जाप कर रही थी, आँखें कसकर बंद किए, काली धुंध पर ध्यान केंद्रित किए हुए, तभी एक चीख ने उसे चौंका दिया। कोई चिल्ला रहा था कि धुंध गायब हो गई है। उसने ऊपर देखा, उसे उम्मीद थी कि काली धुंध के चारों ओर प्रेतों का बादल दिखाई देगा, लेकिन वहाँ कुछ भी नहीं था।

आत्माओं का पूरा समूह, काले कोहरे के साथ, गायब हो गया था। केवल रात का आकाश ही दिखाई दे रहा था, जो एक काले कागज की शीट जैसा लग रहा था जिसमें अनगिनत छोटे-छोटे छेद थे जिनसे प्रकाश चमक रहा था और आकाश में हजारों छोटे-छोटे हीरे जैसे दिख रहे थे।

गुरुकुल के निवासियों ने शुक्र की सेना के बचे हुए प्राणियों का तेजी से सफाया कर दिया, यहाँ तक कि एक भी राक्षस खड़ा नहीं रह सका।

जैसे ही लोग काम में जुट गए, मैदान में सन्नाटा छा गया। मैदान के एक किनारे पर जल्दी से एक गड्ढा खोदा गया और मृत प्राणियों तथा उनके कटे हुए अंगों को तुरंत दफना दिया गया। घायल योद्धाओं को पथरीली पहाड़ी से होते हुए गुरुकुल वापस ले जाया गया।

माया ने अर्जुन, वीरेंद्र और प्रमिला को ढूंढने के लिए मैदान का चारों ओर जायजा लिया, लेकिन मैदान में उमड़ी भीड़ के कारण वह उन्हें देख नहीं पाई।

एक बार फिर, उसने अपने पिता की डायरी की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए जाँच की और उसे अपने शरीर से सटाकर राहत महसूस की। ऊपर देखते ही उसे खुले मैदान की परिधि से परे पेड़ों में कुछ हलचल दिखाई दी। क्या यह कोई जानवर था, जो शोर और लड़ाई से विचलित हो गया था? यह निश्चित रूप से गुरुकुल का कोई व्यक्ति नहीं हो सकता था। उसने मशालों की रोशनी में धुंधली सी दिखाई दे रही आकृति को पहचानने के लिए अपनी आँखें गड़ा दीं।

उसके बगल में किसी की आवाज सुनकर वह चौंक गई।

'अब कैसा लग रहा है, माया?' यह तिवारी था, जो मुस्कुराते हुए उससे पूछ रहा था। 'माफ़ करना,' उसने कहा, यह महसूस करते हुए कि उसने उसे चौंका दिया है। 'तुम्हें डराने का मेरा कोई इरादा नहीं था।'

'कोई बात नहीं। मैं ठीक हूँ,' माया ने थोड़ी झिझकते हुए मुस्कुराते हुए जवाब दिया। उसे राहत मिली कि आखिरकार यह मुसीबत खत्म हो गई। 'मेरे साथ क्या हुआ था?'

आप बेहोश हो गए थे।

'मुझे नहीं पता मुझ पर क्या बीत गया था। लेकिन अब मैं ठीक हूँ।' उसने मैदान की ओर, उन जीवों के अवशेषों की ओर इशारा किया। 'ये शुक्र के जीव थे, है ना?'

तिवारी ने सिर हिलाया, अब उनका चेहरा गंभीर था।

माया ने आगे कहा, 'मैंने प्राचीन ग्रंथों में शुक्र के बारे में पढ़ा है, लेकिन मैंने इस तरह की किसी चीज के बारे में कभी नहीं पढ़ा।'

तिवारी ने उसकी ओर देखा। 'शुक्र के बारे में हमें बहुत कुछ जानना बाकी है, जिसका उल्लेख शास्त्रों में नहीं है। शास्त्र 5,000 वर्ष पूर्व के शुक्र की बात करते हैं। आज हम जिस शुक्र का सामना कर रहे हैं, वह अलग है। कहीं अधिक शक्तिशाली। और हमें इस बात का कोई अंदाजा नहीं है कि प्राचीन ग्रंथों से गायब होने के बाद से उसने कौन-कौन सी शक्तियां प्राप्त कर ली होंगी।'

'लेकिन काला कोहरा कैसे गायब हो गया?' माया को यह जानना ही था। 'कुछ तो हुआ। कोहरा और प्रेत दोनों गायब हो गए।'

तिवारी ने कहा, 'नरसिम्हा मंत्र की शक्ति असीम है। हम सब मिलकर जब इस मंत्र का जाप कर रहे हैं, तो शायद शुक्र द्वारा बनाए गए कोहरे को बनाए रखने की शक्ति कमज़ोर पड़ गई हो।' उन्होंने उस चट्टान की ओर इशारा किया जिसके पास वे खड़े थे। 'लेकिन चलिए अब गुरुकुल चलते हैं। बाद में बात करेंगे।'

माया तिवारी के स्पष्टीकरण से संतुष्ट नहीं थी। उसे लगा कि तिवारी कुछ छुपा रहा है, फिर भी उसने उसे पहाड़ी से होकर आगे ले जाने की अनुमति दे दी। चट्टान से होकर गुजरना माया के लिए एक नया अनुभव था, क्योंकि उसने पहले कभी गंधर्व घाटी में प्रवेश नहीं किया था। उसे एहसास हुआ कि चट्टान गुरुकुल के प्रवेश द्वार को छुपाने के लिए बनाई गई थी ताकि केवल वही लोग प्रवेश कर सकें जिन्हें प्रवेश का मार्ग पता हो।

जैसे ही वह चट्टान से बाहर निकली, एक अद्भुत दृश्य ने उसका स्वागत किया। उसकी उम्र के और उससे कुछ बड़े बच्चे, ध्यान मुद्रा में पालथी मारकर बैठे थे, जो उसके अनुमान से गुरुकुल की सीमा थी। वे सब मिलकर जिस मंत्र का जाप कर रहे थे, उसकी शक्ति उसके भीतर समा गई। उसने शब्दों को समझने की पूरी कोशिश की और आश्चर्य से, वह उन्हें स्पष्ट रूप से सुन पाई।

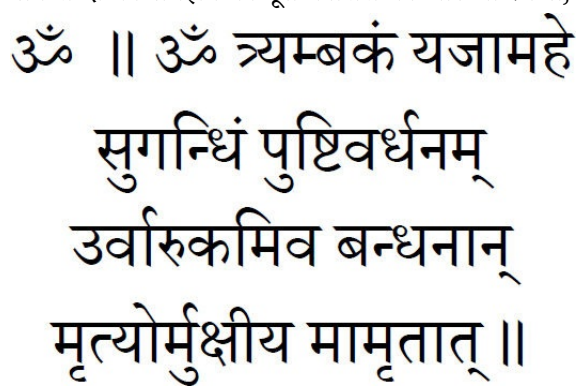

ॐ त्रियम्बकं यजामहे सुगंधिम पुष्टिवर्धनम्,
उर्वारुकमिव बंधनान् मृत्योर्मोक्षीय मामृतात्।

तिवारी ने उसे चुपचाप मंत्र जपते हुए देखा और मुस्कुराया। वह एक कदम पीछे हट गया और उसके कान में फुसफुसाया, 'यह मंत्र गुरुकुल की रक्षा करता है और बुराई को उससे दूर रखता है। इसका जाप चौबीसों घंटे, साल के हर दिन, बिना रुके किया जाता है।'

माया ने आश्चर्य से भर कर सिर हिलाया। उसने चारों ओर देखा और गुरुकुल की शांत सुंदरता और निर्मल वातावरण का आनंद लिया।

उसके सामने घना जंगल फैला हुआ था, जिसमें घास की मोटी चादर बिछी थी और कहीं-कहीं पेड़ थे। चट्टान के दूसरी ओर के जंगल के विपरीत, यहाँ पेड़ अच्छी तरह से फैले हुए थे; इतने पास-पास नहीं कि घने दिखें, लेकिन इतने पास-पास कि आश्रय और आराम प्रदान कर सकें। हल्की चमकती रोशनी के गोले नियमित अंतराल पर हवा में तैर रहे थे, जो आँखों को चुभने वाली रोशनी के बिना पर्याप्त प्रकाश प्रदान कर रहे थे।

उसके दोनों ओर झोपड़ियाँ एक सीधी रेखा में फैली हुई थीं, मानो पहाड़ी से शुरू होने वाला एक केंद्रीय मार्ग बना रही हों। प्रत्येक झोपड़ी की छत फूस की थी और उसमें छोटी-छोटी खिड़कियाँ थीं जिनसे रोशनी बाहर आ रही थी। उसे आश्चर्य हुआ कि ये रोशनी बिजली की लग रही थीं।

प्रियंका गुप्ता द्वारा बनाया गया चित्र

उसके ठीक सामने कुछ दूरी पर, फूस की छत वाली एक विशाल लकड़ी की इमारत खड़ी थी। अंधेरे में डूबी हुई वह एकमात्र इमारत थी। बीच का रास्ता झोपड़ियों की समानांतर कतारों के बीच से सीधा इस इमारत में जाने वाली सीढ़ियों तक जाता था।

माया ने चारों ओर देखा तो पाया कि घायलों को सड़क के किनारे बनी झोपड़ियों के पीछे बनी एक झोपड़ी में ले जाया जा रहा था, जो देखने में एक छोटा अस्पताल लग रहा था। तिवारी उसे मुख्य सड़क से हटकर एक पगडंडी से होते हुए दूसरी झोपड़ी की ओर ले गए। पता चला कि वह एक गेस्टहाउस था। माया ने पाया कि वह एक छोटी सी झोपड़ी थी जिसमें छह छोटे-छोटे शयनकक्ष और एक बड़ा कमरा था जिसका इस्तेमाल भोजन कक्ष और बैठक कक्ष दोनों के रूप में किया जाता था।

तिवारी ने माया से विनम्रतापूर्वक लेकिन दृढ़ता से कहा, “तुम्हें थोड़ा आराम कर लेना चाहिए। महामती परिषद तुमसे मिलना चाहेगी।”

माया ने सिर हिलाया। वह इतनी थकी हुई थी कि यह पूछने की हिम्मत ही नहीं हुई कि महामती परिषद कौन या क्या है। दिल्ली से पन्ना तक की लंबी यात्रा और फिर शाम की अप्रत्याशित घटनाओं ने उसे पूरी तरह थका दिया था। वह कहीं आराम करने और सोचने-विचारने के लिए जगह पाकर बेहद खुश थी। उसके मन में बहुत सारे विचार उमड़ रहे थे।

लेकिन इससे पहले कि वह ऐसा कर पाती, उसे तिवारी को गुरुकुल के बाहर खुले मैदान में जो कुछ उसने देखा था, उसके बारे में बताना था।

तिवारी ने ध्यान से उसकी बात सुनी। जब उसने अपनी बात खत्म कर ली, तो तिवारी ने उससे पूछा, 'क्या तुम्हें इस बात का पूरा यकीन है?'

माया संशय में दिखी। 'मैं पूरी तरह से आश्वस्त नहीं हो सकती। मशालों की रोशनी खुले मैदान के किनारे तक ठीक से नहीं पहुंची थी।'

तिवारी ने निर्णायक लहजे में कहा, 'फिलहाल तो कुछ नहीं किया जा सकता। जो भी था या जो भी था, अब तक जा चुका होगा। इसके बारे में ज्यादा मत सोचो और आराम करो।'

माया से थोड़ी छोटी दिखने वाली एक लड़की उसे गेस्टहाउस के एक कमरे में ले गई और चली गई। अपने कमरे में अकेली माया पिछले दो दिनों में घटी घटनाओं को समझने की कोशिश कर रही थी।

उसे अब भी यकीन नहीं हो रहा था कि इतने कम समय में उसने क्या-क्या अनुभव कर लिया था। कल ही तो वह अर्जुन के साथ स्कूल से खुशी-खुशी लौटी थी, उसे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि आगे क्या होने वाला है, जो उसकी जिंदगी को हमेशा के लिए बदल देगा।

अभी भी बहुत सी बातें थीं जो उसे समझ नहीं आ रही थीं। सबसे पहले तो, वह यहाँ क्या कर रही थी? यह जगह—गुरुकुल—क्या थी? उसने इसके बारे में कभी सुना भी नहीं था। यहाँ तक कि तिवारी ने भी उसे ठीक से नहीं बताया था कि वह उसे कहाँ ले जा रहा है।

फिर शाम का सबसे बड़ा आश्चर्य सामने आया: मंत्र। क्या वाकई इसने काम किया था? क्या

तिवारी और माया के साथ नरसिम्हा मंत्र का जाप करने वाले उन सभी श्वेत वस्त्रधारी लोगों की शक्ति ने ही अंततः शुक्र की सेना को पराजित किया था? उसका एक हिस्सा इस बात पर विश्वास नहीं करना चाहता था, वह अपने पुराने विश्वासों पर अड़ा रहना चाहता था कि मंत्र और ताबीज़ केवल प्रतीकात्मक होते हैं - उन लोगों के लिए कृत्रिम सहारे जो स्वयं कुछ नहीं कर सकते और जिन्हें किसी ऐसी शक्ति के सहारे की आवश्यकता होती है जो उनसे अधिक शक्तिशाली हो।

फिर भी, वह अपनी आँखों से देखी हुई बात को नकार नहीं सकती थी। मंत्रोच्चार के दौरान उसने सचमुच अपने भीतर एक अकथनीय शक्ति का तीव्र प्रवाह महसूस किया था। क्या जीवन भर मंत्रों को तुच्छ समझना उसकी गलती थी? उसे अब समझ नहीं आ रहा था कि क्या सोचे। वह बेसब्री से चाहती थी कि कोई उसे सब कुछ समझा दे। उसे और अधिक जानना था। एक बार फिर, अपने पिता की वो यादें जिन्हें उसने बड़ी मुश्किल से दबा रखा था, उभर आईं। माया ने उन्हें भुला दिया। उसे गुरुकुल में कुछ जवाब ढूंढने ही थे।

उसके मन के गहरे कोने में, कुछ उसे कचोट रहा था। कोई धुंधली सी याद? कोई भूला हुआ सपना? कोई पुराना दोस्त? ऐसा लग रहा था जैसे इन सबका मिश्रण हो।

फिर, वह गायब हो गया, जिससे माया अचंभित रह गई। क्या वह सिर्फ कल्पना कर रही थी?

उसके विचार अर्जुन की ओर मुड़ गए। गुरुकुल के अस्पताल में इलाज के लिए ले जाए जा रहे घायलों में उसने उसे नहीं देखा था। लेकिन उसके मन में उसके लिए एक चिंता, एक गहरी फिक्र उठ रही थी। वह जानती थी कि जब तक वह उसे अपनी आँखों से नहीं देख लेती और यह सुनिश्चित नहीं कर लेती कि वह ठीक है, तब तक वह इस भावना को शांत नहीं कर पाएगी।

माया हैरान थी। भले ही वे साथ पले-बढ़े थे, लगभग एक ही घर में रहते थे, उसने कभी इस बारे में नहीं सोचा था कि अर्जुन उसके लिए क्या मायने रखता है। अब जाकर उसे एहसास हुआ कि उसके और अर्जुन के बीच एक खास रिश्ता है, एक ऐसा बंधन जो सालों के साथ रहने, एक-दूसरे के राज़ साझा करने, एक-दूसरे का सहारा लेने, रोने-धोने से बना है। माया ने अपनी माँ को कभी नहीं देखा था और अर्जुन ने अपने पिता को कभी नहीं जाना था। लेकिन वे हमेशा एक-दूसरे के साथ थे।

उसने सोचा कि पार्क के द्वार के पास जब वे दोबारा मिले थे, तब वह उससे कितनी अलग-थलग रही थी। उसे देखते ही उसे गुस्सा और नाराजगी महसूस हुई थी, लेकिन अब उसे सिर्फ पछतावा हो रहा था। उसने सोचा कि इतने सालों के साथ को, उनके बीच के खास रिश्ते को, सिर्फ उस बात के लिए बर्बाद करना ठीक नहीं था, जिसमें अर्जुन का कोई हाथ नहीं था और न ही उसकी कोई गलती थी। अपराधबोध की एक लहर उस पर छा गई, जिससे युद्ध में उसके भाग्य को लेकर उसकी चिंताएँ और बढ़ गईं और उसे फिर से सुरक्षित देखने की उसकी उत्सुकता भी बढ़ गई।

उसे कैसे पता चलेगा कि अर्जुन युद्ध में बिना किसी चोट के बच पाया है या नहीं?

माया गहरी सोच में डूबी बैठी थी, तभी दरवाजे पर दस्तक हुई और वह चौंक गई।

अध्याय बयालीस

महामती परिषद

गुरुकुल के बाहर का खुला मैदान

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान

बचे हुए आखिरी जीवों को उस गड्ढे में फेंक दिया गया था जिसे युद्ध के बाद अपेक्षाकृत सुरक्षित बच निकले योद्धाओं के एक दल ने खोदा था। अर्जुन ने भी मदद की थी, और हर जगह फैली चिपचिपी, हरी कीचड़ को देखकर घृणा से उसका मुंह सिकुड़ गया था - यह कीचड़ जीवों के कटे हुए अंगों और क्षत-विक्षत धड़ों पर और खुले मैदान में बिछी घास पर फैली हुई थी।

उसने अपने हाथों को अपनी टी-शर्ट पर पोंछा और सिहर उठा। हालांकि इससे कोई खास फायदा नहीं हुआ, क्योंकि उसकी टी-शर्ट भी कीचड़ से पूरी तरह भीग चुकी थी।

युद्ध में अर्जुन की मदद करने वाला लड़का उसके पास आया, उसके चेहरे पर एक बड़ी सी मुस्कान थी।

‘वाह, बढ़िया काम किया!’ लड़के ने कहा, उसे अपनी वर्दी की हालत का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था—जो कई जगहों से फटी हुई थी—और रेशमी कपड़े पर चिपके चिपचिपे हरे रंग के तरल पदार्थ की भी परवाह नहीं थी। ‘उनके पास कोई मौका ही नहीं था। आत्माओं की दुनिया के मंदबुद्धि लोग नर्मदा के इस पार के सबसे श्रेष्ठ क्षत्रियों के सामने। वैसे, मेरा नाम वरुण है।’

‘अर्जुन।’

वरुण ने अर्जुन को गौर से देखा। 'तो तुम ययाति के वंशज हो, है ना?'

अर्जुन शर्म से लाल हो गया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। उसे यह भी नहीं पता था कि वरुण उसका मजाक उड़ा रहा है या नहीं।

'मुझे लगता है कि मैं हूँ,' उसने हिचकिचाते हुए जवाब दिया।

'क्या आपको यह अच्छा लगा?'

‘हं?’

‘लड़ाई, यार।’ वरुण ने झुंझलाहट भरे लहजे में कहा। ‘लड़ाई, हत्या।’

खैर, एक तरह से कहें तो। आप किसी ऐसी चीज को मार नहीं सकते जो पहले से ही मर चुकी हो, है ना?

अर्जुन को वरुण की बात बिल्कुल समझ नहीं आ रही थी। उसने वरुण से पूछा, 'ये जीव कौन थे?'

‘कौन नहीं, बल्कि क्या। तुम्हें अभी बहुत कुछ सीखना है, मेरे दोस्त। इससे पहले तुम किस गुरुकुल में थे?’

अर्जुन ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मैं इससे पहले कभी गुरुकुल नहीं गया।'

‘सच में?’ वरुण खिलखिलाकर हँसा। ‘मज़ाक कर रहे हो ना?’ उसने अर्जुन के चेहरे पर भाव देखकर अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। ‘तुम मज़ाक नहीं कर रहे हो। वाह! मतलब, तुमने पहली बार ऐसे जीव देखे हैं?’

अर्जुन कहना चाहता था कि उसे आज रात तक ऐसे जीवों के अस्तित्व के बारे में पता ही नहीं

था। लेकिन उसने अपनी अज्ञानता को अपने तक ही सीमित रखना ही उचित समझा। उसने बस अपना सिर हिला दिया।

'मुझे गोली मार दो।' वरुण का लहजा अचानक बदल गया। 'मैंने कभी सोचा भी नहीं था। तुमने तलवार ऐसे चलाई जैसे तुम लाखों बार युद्ध लड़ चुके हो।'

'मुझे इसमें मज़ा आया। ज़िंदगी में पहली बार, मैं सचमुच एक असली लड़ाई लड़ रहा था। यह कोई अभ्यास सत्र नहीं था। यह असली था। मुझे खतरे का आभास हो रहा था। और इससे मुझे एक अलग ही रोमांच महसूस हुआ,' अर्जुन ने स्वीकार किया। उसने वरुण की ओर देखा। 'क्या यह गलत है? किसी को मारने पर अच्छा महसूस करना?'

वरुण ने मुंह बनाया। 'यह पेचीदा है। पहली बात तो यह है कि वे "कोई" नहीं थे। ठीक है, मान लिया कि मुझे भी ठीक से नहीं पता कि वे क्या थे। मैंने उन्हें आज से पहले कभी नहीं देखा, लेकिन मुझे इतना पता है। वे भौतिक रूप में आत्माएं थीं। और आत्माएं मृत होती हैं। हम अपनी तलवारों और युद्ध कलाओं से आत्माओं का कुछ नहीं बिगाड़ सकते। हम केवल उनके भौतिक रूप पर ही आक्रमण कर सकते हैं। भौतिक वस्तुएं अभौतिक प्राणियों को छू नहीं सकतीं। इसीलिए ऋषि वहां होते हैं। वे आत्माओं के साथ ऐसा कर सकते हैं जिसके लिए भौतिक वस्तुओं की आवश्यकता नहीं होती। तो तुम वास्तव में उन्हें मार नहीं रहे थे, तुम्हें पता है।' वह मुस्कुराया। 'लेकिन अगर तुम्हें लड़ाई में मजा आया, तो ठीक है, तुम एक सच्चे क्षत्रिय हो। अगर तुम्हें उनसे लड़ने में या उनके खून के अपने कपड़ों पर लगने में या इस चीज़ से, क्योंकि आत्माओं में खून नहीं होता,' उसने अपनी वर्दी पर लगे हरे रंग के चिपचिपे पदार्थ की ओर इशारा करते हुए कहा, 'तो तुम गलत जगह पर हो।' उसने अर्जुन की पीठ थपथपाई। लेकिन वो तलवारबाजी...' उसने सिर हिलाया। 'वाह, क्या शानदार था! वाकई शानदार।'

'धन्यवाद।' अर्जुन को वरुण पसंद आया। 'मेरा ट्रेनर अच्छा था। मेरे चाचा।'

'सचमुच? आप बिना गुरुकुल में कदम रखे ही वहां प्रशिक्षण ले रहे हैं? क्या इसकी अनुमति भी है?'

'ठीक है सब लोग, गुरुकुल और अपने-अपने छात्रावासों में वापस जाओ!' वर्दीधारी वयस्क क्षत्रियों में से एक ने पुकारा और युवा क्षत्रियों का समूह, जो अभी भी खुले मैदान में थे, आज्ञाकारी रूप से चट्टान से होते हुए गुरुकुल की ओर चल पड़े।

गुरुकुल गेस्टहाउस

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान

वीरेंद्र, प्रमिला और तिवारी गेस्ट हाउस के बैठक कक्ष में अर्धवृत्ताकार मुद्रा में बैठे पांच व्यक्तियों के समूह के सामने बैठे थे।

तीनों पुरुष और दो महिलाएं स्पष्ट रूप से गुरुकुल से थे। दो पुरुष और एक महिला सफेद वस्त्र पहने हुए थे, जबकि अन्य दो क्षत्रियों के वस्त्र पहने हुए थे - रंगीन, अच्छी तरह से फिट होने वाले रेशमी कुर्ते और घुटने तक के बूटों के साथ लेगिंग।

वीरेंद्र और प्रमिला उन पाँचों को भली-भांति जानते थे। ये महामती परिषद के सदस्य थे। महामती वे पुरुष और महिलाएं थीं - महर्षि, ऋषि और क्षत्रिय - जो गुरुकुल में अध्ययनरत बच्चों

को शिक्षा प्रदान करते थे। परिषद में वे महामती शामिल थे जो सप्तऋषियों की ओर से गुरुकुल का संचालन करते थे और अन्य सभी महामतियों की देखरेख करते थे। गुरुकुल के प्रमुख महर्षि महेश थे, जो समूह के केंद्र में बैठे थे, उनके दोनों ओर दो अन्य महर्षि - जिग्नेश और उषा - बैठे थे। दो क्षत्रिय - अंबा और पार्थ - अर्धवृत्त के विपरीत छोरों पर बैठे थे।

वीरेंद्र, प्रमिला और तिवारी ने अभी-अभी परिषद को उन घटनाक्रमों के बारे में जानकारी दी थी जिनके कारण वे आज रात गुरुकुल में उपस्थित हुए हैं।

'विश्वराज!' वीरेंद्र की इस खबर पर जिग्नेश ने सबसे पहले प्रतिक्रिया दी कि धनंजय त्रिवेदी की मृत्यु से कुछ समय पहले उस युवक ने उनसे बदसलूकी की थी। उसने अविश्वास से अपना सिर हिलाया। 'क्या आपको यकीन है कि ध्रुव ने सही नाम सुना है?'

वीरेंद्र ने गंभीर स्वर में कहा, 'ध्रुव और मेरी भी वही प्रतिक्रिया थी जो आपकी है। मैं विश्वराज को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता, लेकिन ध्रुव ने इलाहाबाद में उस लड़के को शिक्षा दी थी। हम गण में उसकी प्रतिष्ठा, उसकी असाधारण योगिक शक्तियों और इस तथ्य से अवगत थे कि संघ उसे अर्जुन के क्षत्रिय प्रशिक्षण पूर्ण होने के बाद उसका ऋषि साथी बनाने की तैयारी कर रहा था। हमारे लिए यह विश्वास करना कठिन था कि विश्वराज धनंजय की हत्या में शामिल हो सकता है। खासकर तब जब हमें यह पता चल गया कि शुक्र का हाथ था।'

'हम यह कल्पना भी नहीं कर सकते कि विश्वराज शुक्र की सहायता करेंगे,' उषा ने बीच में कहा। 'मैं उस लड़के को जानती हूँ। वह न केवल सिद्धियों में निपुण है, बल्कि उसका मूल्य तंत्र भी असाधारण है। मुझे समझ नहीं आता कि ऐसी कौन सी बात होगी जो उसे अपने मूल्यों से विचलित होने के लिए विवश करेगी।'

फिर भी,' अंबा ने कहा, 'यदि वह वास्तव में संघ का गद्दार है, तो उसे ढूंढकर रोकना होगा। यह पूरी तरह संभव है कि विश्वराज को विकृतियों का नेतृत्व करने के लिए चुना गया हो। संघ में शामिल होने की कगार पर खड़ा एक युवा ऋषि शुक्र की योजनाओं के लिए बिल्कुल उपयुक्त होगा। यदि ऐसा है, तो उसे नष्ट करने के लिए संघ परिषद से अनुमति लेना आवश्यक हो सकता है।'

'हमें अभी इस बारे में पक्का पता नहीं है,' उषा ने विरोध जताते हुए कहा। 'मैं मानती हूँ कि हमें विश्वराज को ढूँढना चाहिए। लेकिन निष्पक्ष सुनवाई के बिना हम उस लड़के को मौत की सज़ा नहीं सुना सकते। वह अभी इतना शक्तिशाली नहीं है कि हम उसे काबू में न कर सकें और उस पर मुकदमा न चला सकें।'

वीरेंद्र ने कहा, 'मैं उषा से सहमत हूँ।' अंबा और पार्थ ने हैरानी से उसकी ओर देखा। 'विकृतियाँ हज़ारों वर्षों से अस्तित्व में हैं। इन सभी शताब्दियों में, उन्होंने संघ से ऋषियों को अपने साथ लाए बिना अपने नेताओं को चुनने का तरीका खोज लिया है। अब वे ऐसा क्यों करेंगे? यह समझ से परे है। हमें इस संभावना पर विचार करना चाहिए कि धनंजय से बात करने वाला विश्वराज वह बालक था ही नहीं। हो सकता है कि वह स्वयं शुक्र ही हो, माया के रूप में।'

इस संभावना पर विचार करते हुए सभी में सन्नाटा छा गया।

'ठीक है,' महेश ने अंत में कहा। 'चलिए उसे अंदर लाते हैं और संघ परिषद उस पर मुकदमा

चलाएगी। अगर वह हमारे आरोपों से निर्दोष साबित होता है, तो उसे साबित करने दीजिए। मुझे लगता है कि यह उचित है।' उसने चारों ओर देखा। 'कोई असहमति है?'

किसी ने असहमति नहीं जताई। अंबा और पार्थ ने भी इस फैसले को स्वीकार कर लिया था।

अब आज रात की बात करते हैं। जो कुछ हुआ, वो वाकई चिंताजनक है।' महेश ने गंभीर स्वर में सिर हिलाया। 'शुक्र की सेना हमारे दरवाजे पर... ये बिल्कुल अप्रत्याशित था। हम इसके लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं थे। ऐसा पहली बार नहीं होगा कि शुक्र की हरकतें उसे रोकने की हमारी योजनाओं के अनुरूप न हों। आज रात जो कुछ हुआ, उससे हमें क्या सबक लेना चाहिए, ये समझना बेहद जरूरी है।'

अध्याय तैंतालीस

परिषद की बहसें

अतिथिगृह

The Gurukul

पार्थ ने कहा, ‘उनकी शक्ति में निश्चित रूप से वृद्धि हुई है। इतने वर्षों से हम यह अनुमान लगाने की कोशिश कर रहे थे कि उन्होंने 5,000 वर्षों की ध्यान साधना से क्या हासिल किया होगा। आज रात हमने जो देखा, मुझे लगता है, वह उनकी शक्तियों की महज़ एक झलक थी।’

‘एक बात तो निश्चित है,’ उषा ने कहा, ‘उन्होंने निश्चित रूप से भगवान शिव से भूत गणों की आज्ञा का अनुरोध किया था, और उन्हें वह आज्ञा प्रदान की गई है। मृतकों की आत्माओं को वश में करने की उनकी क्षमता का यही एकमात्र स्पष्टीकरण है।’

महेश ने सिर हिलाया। ‘पहले उसके पास केवल मृतकों को जीवित करने की शक्ति थी। आज रात हमने उसे मृतकों की आत्माओं को भौतिक शरीरों में ढँकते देखा; ऐसे भौतिक रूप जो उसने स्वयं बनाए और डिज़ाइन किए हैं।’ उसने अंबा की ओर देखा। ‘तुम्हारा क्या विचार है? तुमने उन प्राणियों से लड़ाई की।’

‘वे बेहद मजबूत हैं,’ अंबा ने उत्तर दिया। ‘उनके शरीर पर एक प्राकृतिक कवच है जो उनकी रक्षा करता है। हमारी पवित्र तलवारों को भी उनके कवच को भेदने में कठिनाई हुई। यदि उनके स्रोत, काले कोहरे को समय रहते नियंत्रित नहीं किया जाता, तो आज रात गुरुकुल में चिताएं जल रही होतीं। हम निःसंदेह पराजित हो जाते।’

पार्थ ने आगे कहा, “उनके पंजे इतने शक्तिशाली हैं कि हमारी किसी भी तलवार का मुकाबला कर सकते हैं। हमारे पास युद्ध की तैयारी करने का समय नहीं था, इसलिए हममें से किसी ने भी कवच नहीं पहना था। हमें अपने सुरक्षात्मक मंत्रों से ही काम चलाना पड़ा। लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि हमारा कवच भी उन जीवों के लगातार हमले को झेल पाएगा। हम भाग्यशाली थे।”

‘किस्मत अच्छी है!’ जिग्नेश ने चिढ़कर कहा। ‘आज रात जो कुछ हुआ उसमें किस्मत का कोई हाथ नहीं था। यह मंत्र की शक्ति थी जिसने प्राणियों के निर्माण की प्रक्रिया को रोक दिया।’

‘नहीं, ऐसा नहीं है,’ उषा ने असहमति जताते हुए कहा। ‘मैं मानती हूँ कि हमारी संख्या ने नरसिम्हा मंत्र की शक्ति को मजबूत करने में मदद की और शुक्र की सेना के विस्तार को रोकने में यह निश्चित रूप से एक कारक रहा होगा। लेकिन मुझे लगता है कि आज रात हमारी जीत में कुछ और भी सहायक रहा।’

जिग्नेश ने उसकी ओर मुड़कर अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'और वह क्या था?'

उषा ने कंधे उचकाए। उसने स्वीकार किया, 'मुझे सच में नहीं पता।' 'लेकिन मुझे लगता है कि आज रात कुछ ऐसा हुआ है जिसे मैं समझा नहीं सकती। कुछ ऐसा जिसने काले कोहरे को उन जीवों को और अधिक बनाने से रोक दिया।' उसने महेश और जिग्नेश की ओर देखा। 'क्या आपको भी ऐसा महसूस नहीं हुआ?'

महेश ने सिर हिलाया।

“खैर,” जिग्नेश ने अनिच्छा से स्वीकार किया, “कोहरा छंटने से ठीक पहले एक पल ऐसा

आया था। मुझे कुछ महसूस हुआ था, लेकिन मैं वास्तव में यह नहीं बता सकता कि वह अनुभूति क्या थी या उसका कारण क्या था। मुझे लगा कि मैंने कल्पना की थी, लेकिन अगर हम तीनों ने इसे महसूस किया, तो यह कल्पना नहीं हो सकती थी।"

महेश ने कहा, 'हमें इस पर मनन करना चाहिए। इस संसार में ऐसी बहुत सी चीजें हैं जिन्हें हम नहीं समझते। कलियुग के आगमन से पहले, देवों और सप्तऋषियों ने अपने एकांतवास में हमें अनेक शक्तियाँ प्रदत्त की थीं। मनुष्य जाति के पास कभी वे शक्तियाँ नहीं थीं जो हम, चुने हुए लोगों के पास, अब हैं। यदि आज रात कुछ ऐसा घटित हुआ जिसे हम नहीं समझते, तो हमें उस पर चिंतन करना चाहिए और उसे समझने का प्रयास करना चाहिए। यदि इसने आज हमारी सहायता की है, तो कौन जानता है कि भविष्य में यह किस काम आ सकता है।'

तिवारी बोलने के लिए मुंह खोलने ही वाले थे कि हिचकिचाए और चुप हो गए। वे एक आंतरिक संघर्ष से जूझ रहे थे, अपने विचारों को समूह के साथ साझा करने और उन्हें अपने तक ही सीमित रखने के बीच उलझे हुए थे। शायद अभी बहुत जल्दी थी, उन्होंने सोचा।

जिग्नेश ने वीरेंद्र की ओर मुड़ते हुए कहा, "मैं यह जानना चाहता हूँ कि शुक्र की पिशाच सेना को कैसे पता चला कि तुम यहाँ हो। यकीनन वे दिल्ली से तुम्हारा पीछा करते हुए यहाँ तक तो नहीं आए होंगे!"

वीरेंद्र ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मुझे भी समझ नहीं आ रहा। मैं खुद भी इस बात से हैरान हूं। हमने किसी को नहीं बताया था कि हम यहां आ रहे हैं।'

'वो लड़की,' जिग्नेश ने जोर देकर पूछा। 'उसके बारे में क्या?'

'वह ध्रुव की बेटी है, भगवान के लिए!' वीरेंद्र भड़क उठा। 'वह शुक्र के हाथों अपने पिता की हत्या की गवाह थी। उसे तो आत्माओं के अस्तित्व का भी पता नहीं था। क्या आप यह कहना चाह रहे हैं कि जब शुक्र उसके पिता को मारने की कोशिश कर रहा था, तब उसने उसे हमारे ठिकाने के बारे में बताया था?'

'शांत हो जाओ, कनकप्रताप, शांत हो जाओ,' अंबा ने वीरेंद्र को शांत करने की कोशिश की। 'कोई किसी पर आरोप नहीं लगा रहा है। जिग्नेश की बात में दम है। तुम भी इस बात से हैरान थे कि शुक्र तुम्हारा पीछा करते हुए यहाँ तक कैसे आ गया। वह बस थोड़ा उलझन में है, बस इतना ही।'

वीरेंद्र ने जिग्नेश को उदास नज़र से देखा।

तिवारी ने बीच में कहा, 'उसे वैसे भी पता नहीं था कि हम कहाँ जा रहे हैं। मैं उसे यहाँ तक लेकर आया और पार्क के गेट तक पहुँचने तक मैंने उसे जगह के बारे में नहीं बताया।' तिवारी एक बार हिचकिचाए, फिर आगे बोलने का फैसला किया। उन्होंने कहा, 'उन्हें हमारी जगह का पता होने का कोई और कारण भी हो सकता है।'

'क्या?' जिग्नेश की निगाहें उसे भेदती हुई आगे बढ़ीं।

'आज रात यहां कोई और भी था।'

अध्याय चौवालीस

परिषद के लिए और भी प्रश्न

अतिथिगृह

The Gurukul

तिवारी ने आगे कहा, 'कोई ऐसा व्यक्ति जो गुरुकुल का हिस्सा नहीं है। एक युवक, जो खुले मैदान के किनारे से परे अंधेरे में छिपा हुआ था।'

‘वह कौन था?’ महेश ने हैरानी से पूछा। ‘क्या तुमने उसका चेहरा देखा?’

तिवारी ने सिर हिलाया। 'मैंने उसे नहीं देखा। माया ने देखा। उसने कहा कि वह उसका चेहरा नहीं देख पाई, लेकिन अगर देख भी लेती, तो यह बहुत ही असंभव है कि वह उसे पहचान पाती। लेकिन यह एक अद्भुत संयोग ही लगता है कि ठीक उसी समय कोई अंधेरे में घात लगाए बैठा था जब प्रेत प्रकट हुए और शुक्र की सेना हम पर टूट पड़ी।'

जिग्नेश ने हाथ ऊपर उठा लिए। ‘उसने उसका चेहरा नहीं देखा! हास्यास्पद। क्या अब हमें एक ऐसे नौजवान की बात माननी चाहिए जिसे हमारे बारे में कुछ भी पता नहीं है? मेरा मतलब है, चौदह लोकों में से कौन यहाँ घूम रहा होगा, दिल्ली से तुम्हारा पीछा कर रहा होगा और जिसका शुक्र से कोई संबंध हो?’

सभी के मन में एक ही विचार आने पर सन्नाटा छा गया।

अंबा ने उन सभी की ओर से यही बात कही। 'यह विश्वराज हो सकता था। इससे सब कुछ स्पष्ट हो जाता।'

‘ठीक है,’ जिग्नेश गुस्से से बोला। ‘हम उसे अंदर लाएंगे और हमेशा के लिए पता लगाएंगे कि इस सब में उसकी क्या भूमिका है।’

पार्थ ने सिर हिलाया। 'हम तुरंत सबको बता देंगे। अगर वह सचमुच शुक्र के साथ मिला हुआ है, तो हमें उसे ढूंढना पड़ेगा। मुझे यकीन है कि वह गण के साथ नहीं रुकेगा, जब तक कि उसे यह न लगे कि संघ में किसी को उस पर शक नहीं है। लेकिन अगर वह आज रात यहाँ है, तो उसे ढूंढने में ज्यादा समय नहीं लगेगा।'

‘ये लड़की यहाँ कर क्या रही है?’ माया की मौजूदगी से जिग्नेश कुछ खास खुश नहीं लग रहा था। ‘क्या उसके पास कोई शक्ति है?’

वीरेंद्र ने अपना सिर हिलाया, उसका चेहरा सख्त था। वह जानता था कि आगे क्या होने वाला है।

माया को यहाँ लाकर उसने नियमों का उल्लंघन किया था। 'नहीं। वह एक साध्वी है।'

‘तो फिर क्यों...?’ जिग्नेश अपना सवाल पूरा करने से पहले ही तिवारी के बीच में आ गया।

तिवारी ने हिचकिचाते हुए समूह की ओर देखते हुए कहा, 'उम, मुझे एक बात कहनी है। हम सब मानते हैं कि वह साध्वी हैं। लेकिन उन्हें नरसिम्हा मंत्र आता है।'

‘नरसिम्हा मंत्र तो बहुत से साधुओं को आता है!’ जिग्नेश ने चिढ़कर कहा। ‘इसमें ऐसी क्या खास बात है?’

'मेरा मतलब है... उसे यह सहज रूप से आता है,' तिवारी ने जवाब दिया। 'यहां आते समय मैंने

उससे पूछा कि क्या उसे कोई मंत्र आता है। उसने कहा कि ध्रुव ने उसे कोई मंत्र नहीं सिखाया है।'

'बकवास!' जिग्नेश ने कहा। 'वह मंत्र जानते हुए पैदा नहीं हो सकती थी!'

तिवारी ने सिर हिलाया। 'मुझे लगता है कि यहाँ आने से पहले उसे मंत्र का ज्ञान नहीं था। लेकिन उसने मुझे मंत्र जपते हुए सुना और तुरंत मेरे साथ शामिल हो गई। और उसका मंत्र उच्चारण एकदम सही था। हमारे किसी भी ऋषि के समान, यहाँ तक कि हमारे कुछ युवा महामति भी। मुझे विश्वास नहीं होता कि कोई भी केवल दो-चार बार सुनकर मंत्र को इतनी पूर्णता से सीख सकता है।' उसने सीधे जिग्नेश की ओर देखा। 'तुम्हें पता है कि इन बच्चों को अपने उच्चारण में निपुणता प्राप्त करने से पहले कितना प्रशिक्षण लेना पड़ता है।'

'तुम्हारा मतलब है कि उसके पास कुछ शक्तियां हो सकती हैं?' महेश सोच में पड़ गया। 'लेकिन इतने सालों तक ये शक्तियां किसी की नज़र में कैसे नहीं आईं? अगर ज़रा भी संकेत मिलता कि वह साध्वी नहीं है, तो अब तक उसे भर्ती कर लिया गया होता।'

तिवारी ने हाथ ऊपर उठाते हुए कहा, 'मेरे पास कोई जवाब नहीं है। मैं आपको सिर्फ वही बता सकता हूँ जो मैंने देखा है। अगर उसके पास कोई शक्तियाँ हैं, कोई भी शक्ति, तो हमें उसे दूर नहीं भगाना चाहिए। कम से कम हमें यह पता लगाने की कोशिश तो करनी ही चाहिए।'

'मैं सहमत हूँ,' उषा ने कहा। 'हो सकता है रतन गलत हो और वह सिर्फ एक साध्वी ही हो। लेकिन हमें जाँच-पड़ताल करके सच्चाई का पता लगाना चाहिए।'

'बहुत अच्छा,' महेश ने कहा, उनके लहजे से लग रहा था कि इस विषय पर यही आखिरी बात है। 'वह अभी यहीं रहेगी। हम उसे छह महीने के लिए दाखिला दिलाएंगे। लेकिन अगर हमें लगता है कि उसे आगे प्रशिक्षण के लिए यहाँ रखने का कोई औचित्य नहीं है,' उन्होंने वीरेंद्र से प्रमिला और फिर तिवारी की ओर देखा, 'तो वह वापस चली जाएगी।'

'शुक्र स्वयं क्यों नहीं आए?' प्रमिला अचानक बोल पड़ी, उसकी कोमल आवाज ने तुरंत सबका ध्यान अपनी ओर खींच लिया। 'उन्होंने स्वयं प्राणियों की सेना क्यों भेजी?'

वीरेंद्र ने उसकी ओर देखा। वह जानता था कि प्रमिला क्या सोच रही है। उसका चेहरा अब कठोर हो गया था, वह वास्तविकता को स्वीकार कर रही थी और आज रात जो कुछ हुआ था उस पर सवाल उठा रही थी।

प्रमिला ने आगे कहा, 'हम सब जानते हैं कि शुक्र मेरे बेटे को मारना चाहता है। उसने चौदह साल पहले उसे मारने की कोशिश की थी और लगभग सफल भी हो गया था। मैंने अपने पति को खो दिया, लेकिन ध्रुव की कृपा से मैं और मेरा बेटा बच गए। मैं बस यह जानना चाहती हूँ: वह अपने उस एकाग्र लक्ष्य से क्यों भटक गया है?'

'हम शुक्र के दिमाग की कार्यप्रणाली को नहीं समझ सकते,' महेश ने कहना शुरू किया, लेकिन उसे अपनी बात पूरी करने की अनुमति नहीं दी गई।

'मैं वो नहीं मांग रही।' प्रमिला की आवाज़ इतनी तीखी थी मानो लोहे को भी चीर सकती हो, और उसने महेश के जवाब को बीच में ही रोक दिया। 'यह सिर्फ अर्जुन के बारे में नहीं है। यह इससे कहीं बड़ा मामला है। क्या तुम समझ नहीं पा रहे?'

कमरा एकदम शांत हो गया।

प्रमिला ने आह भरी। 'देखो, हम सब जानते हैं कि अर्जुन के जन्म के समय शुक्र की तपस्या भंग हो गई थी। यही उनके लिए इतना बड़ा कारण था कि वे अपनी 5000 वर्षों की तपस्या के फल को त्यागकर मेरे पुत्र को जान से मारने के इरादे से उसका शिकार करने आ गए। हम यह भी जानते हैं कि शुक्र एक रहस्यवादी योगी हैं। उनके पास सिद्धियों की शक्ति है। वे अपनी इच्छा से कहीं भी जा सकते हैं। अर्जुन के यहाँ होने की जानकारी मिलते ही आज रात गुरुकुल पहुँचने से उन्हें कोई नहीं रोक सकता था। तो फिर वे क्यों नहीं आए?'

एक बार फिर सन्नाटा छा गया। ऐसा लग रहा था कि किसी के पास उसके सवालों का जवाब नहीं था।

'क्या ऐसा संभव नहीं है कि शुक्र के मन में कोई और योजना हो?' प्रमिला ने आगे कहा, क्योंकि उसने देखा कि बाकी लोगों ने उस संभावना पर विचार नहीं किया था जो उसके मन में आई थी। 'याद रखो, शुक्र भृगु का पुत्र है। वह अपनी बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता के लिए हमेशा से प्रसिद्ध रहा है। भगवान कृष्ण ने भी शुक्र के इन गुणों का समर्थन किया है। क्या ऐसा संभव नहीं है कि वह किसी बड़ी योजना में लगा हो?'

'तुम्हारा मतलब गुरुकुल से है?' उषा सोच में पड़ गईं। 'हो सकता है तुम सही कह रही हो। हजारों सालों से हमारे गुरुकुल छिपे हुए थे, सप्तऋषियों की वजह से भी और समय के साथ भू-लोक की स्थलाकृति में आए बदलावों की वजह से भी। अब उन्हें पता चल गया है कि यह गुरुकुल कहाँ है।'

प्रमिला ने सिर हिलाया, इस बात से संतुष्ट होकर कि आखिरकार परिषद का कम से कम एक सदस्य तो उसके विचारों को समझ रहा है। 'यह एक संभावना है। एक और संभावना देखिए। क्या आज रात की घटना उनकी सेना की कार्यक्षमता और उनसे लड़ने की हमारी क्षमताओं, दोनों की परीक्षा मात्र हो सकती थी?'

पार्थ की आंखें सच्चाई जानकर चौड़ी हो गईं। 'जिन जीवों से हमने लड़ाई की, वे अनाड़ी और सुस्त थे। निश्चित रूप से युद्ध का प्रशिक्षण नहीं लिया गया था। शुक्र शायद अपनी रचनाओं को असली युद्ध परिदृश्य में परख रहा था!'

'अगर यह अनुमान सही है, तो हम मुसीबत में हैं।' अंबा गंभीर दिख रही थी। 'शुक्र ने आज रात की मुठभेड़ से यह सीख लिया होगा कि उसके प्राणी भले ही सर्वश्रेष्ठ योद्धा न हों, लेकिन अगर उनकी संख्या पर्याप्त हो तो वे हमारी सेना को हरा सकते हैं। हमारे योद्धा मनुष्य हैं और वे थक जाते हैं। अधिक संख्या में होने पर, मुझे नहीं लगता कि हम उनका अधिक देर तक सामना कर पाएंगे।'

"तो फिर," महेश ने निर्णायक स्वर में कहा, "हमें तैयारी शुरू करनी होगी। मैं संघ परिषद को सूचित कर दूंगा। अन्य गुरुकुलों को भी इसकी जानकारी होनी चाहिए। शुक्र अगला हमला कब और कहाँ करेगा, यह कोई नहीं बता सकता।" उन्होंने अंबा और उषा की ओर देखा। "हमें शुक्र को रोकने के लिए चौदह वर्ष पहले बनाई गई अपनी योजना में बदलाव करना होगा। हमें इन प्राणियों को नष्ट करने का उपाय खोजना होगा। हथियारों को उन्नत करना होगा, अधिक

शक्तिशाली मंत्रों का प्रयोग करना होगा... जो भी करना पड़े, हम करेंगे। हम किसी भी चीज को भाग्य के भरोसे नहीं छोड़ सकते। हमारा भविष्य हमारी सफलता पर निर्भर करता है।"

अंबा और उषा ने सिर हिलाया। युद्ध शुरू हो चुका था।

'चलो बच्चों को अंदर ले चलते हैं,' जिग्नेश ने चर्चा के अंत का संकेत देते हुए कहा।

तिवारी ने स्वेच्छा से कहा, 'मैं उन्हें ले आऊंगा।'

वीरेंद्र ने झुककर तिवारी के कान में कुछ फुसफुसाया।

तिवारी ने सिर हिलाया, फिर उठे और कमरे से बाहर चले गए। जाते समय, विचारों में डूबे हुए, उन्हें परिषद से जानकारी छिपाने का बहुत पछतावा हो रहा था, लेकिन उनके पास कोई विकल्प नहीं था। अगर उन्होंने अपनी देखी हुई बात बता दी होती, तो माया बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ सकती थी। और उन्हें नहीं लगता था कि इसमें माया की कोई गलती थी। शायद उसे पता भी नहीं था। उन्होंने रहस्य की तह तक पहुँचने तक चुप रहने का फैसला किया था। वे एक संदेह के आधार पर माया की जान खतरे में नहीं डाल सकते थे। उन्हें नहीं पता था कि वे सही कर रहे हैं या नहीं। लेकिन बिना पक्का किए वे उसे शेरों के सामने नहीं फेंक सकते थे। वे बस यही उम्मीद कर सकते थे कि परिषद से जानकारी छिपाने का उनका फैसला उन्हें भारी कीमत न चुकाए।

यह बात समझ से परे थी। वह जानता था कि माया अपना सिर पकड़कर ज़मीन पर क्यों गिर पड़ी थी। यह घटना काले कोहरे के प्रकट होने से कुछ ही सेकंड पहले हुई थी। उसने भी कोहरे को आते हुए महसूस किया था। लेकिन वह महर्षि था, जिसने वर्षों तक योग साधना की थी और उसे अपने पिछले जन्मों से शक्तियाँ प्राप्त थीं।

माया अभी बच्ची ही थी। फिर भी, काले कोहरे के आने का आभास, उसके दिखाई देने से पहले ही, उस पर पड़ चुका था। क्या यह संभव था कि उसका और काले कोहरे का कोई संबंध हो?

इस विचार मात्र से ही वह अंदर तक कांप गया।

अध्याय पैंतालीस

विचारों का आदान-प्रदान

अतिथिगृह

The Gurukul

माया ने दरवाजा खोला तो देखा कि अर्जुन वहाँ खड़ा है, उसके चेहरे पर चौड़ी मुस्कान है। वह खुशी से चिल्लाई और उसे गले लगाने के लिए दौड़ पड़ी।

उसे आश्चर्य हुआ जब वह तेजी से पीछे हट गया और उसे रोकने के लिए अपने हाथ आगे बढ़ा दिए।

वह रुक गई और भौंहें चढ़ा लीं। 'क्या बात है?'

'यह।' अर्जुन कमरे में दाखिल हुआ, जहाँ रोशनी तेज़ थी और माया ने वह सब कुछ साफ़-साफ़ देख लिया जो वह उसे दिखा रहा था। उसके कपड़ों पर हरा, चिपचिपा पदार्थ चिपका हुआ था, जो जगह-जगह से फटे हुए थे, निस्संदेह उन राक्षसों के हाथों से फटे थे जिनका सामना उसने खुले मैदान में किया था।

'छी! क्या यह वही है जो मैं सोच रही हूँ?' माया ने घृणा से अपनी नाक सिकोड़ी।

'उन जीवों से,' अर्जुन मुस्कुराया, फिर आँखों में शरारत भरी चमक के साथ बोला, 'लो, ज़रा करीब से देखना चाहोगी?' उसने अपनी टी-शर्ट पर लगे चिपचिपे पदार्थ में उंगली डुबोई और माया की ओर बढ़ा दी, जो अनजाने में ही पीछे हट गई। उस चिपचिपे पदार्थ से दुर्गंध आ रही थी और उसे प्रेतों से मिलने से कुछ ही पल पहले अर्जुन के घर की बदबू याद आ गई।

'बस करो, एजे! छी! तुम बहुत गंदे हो। लड़के!' वह गुस्से में बिस्तर पर चढ़ गई और बाहें मोड़कर बैठ गई।

अर्जुन हँसा और अपने कपड़ों पर लगी हरी चिपचिपी चीज़ को पोंछा। वैसे भी कपड़े गंदे थे। 'माफ़ करना, खुद को रोक नहीं पाया। मुझे लगता है मुझसे बदबू आ रही है।'

'हाँ, बिल्कुल। लेकिन, सच में, तुम्हें देखकर मुझे बहुत खुशी हुई, एजे! मैं तुम्हारे बारे में बहुत चिंतित थी।'

अर्जुन ने दरवाजा बंद किया और कमरे में रखी इकलौती कुर्सी पर बैठ गया। 'अरे, मैं तो अपने बारे में बहुत चिंतित था। लेकिन अंत में सब ठीक हो गया, है ना?'

'हाँ, ऐसा ही हुआ।' माया का चेहरा गंभीर हो गया। 'लेकिन मैं अब भी चिंतित हूँ। मुझे समझ नहीं आ रहा कि शुक्र घटनास्थल से क्यों गायब था।'

'किसे परवाह है? हम जीत गए, है ना?'

'तुम्हें लगता है कि उसने तुम्हारा पीछा करना छोड़ दिया है?' माया की आवाज़ में थोड़ी सी कड़वाहट झलक रही थी। अर्जुन की जान खतरे में होने के बावजूद उसकी लापरवाही देखकर उसे गुस्सा आ रहा था।

अर्जुन अपनी कुर्सी पर सीधा बैठ गया और उसकी ओर देखने लगा। 'मुझे अब शुक्र की चिंता नहीं है। मैं उन लोगों के साथ हूँ जो मेरी रक्षा कर सकते हैं। मैं यहाँ सुरक्षित हूँ।'

माया ने सिर हिलाया। 'मुझे यकीन नहीं हो रहा, एजे। वे हमसे कुछ छिपा रहे हैं। तुम क्षत्रियों

के नेता हो। ययाति के सीधे वंशज। इसका क्या मतलब है? क्या तुमसे शुक्र के विरुद्ध पूरे समूह का नेतृत्व करने की अपेक्षा की जाती है? क्या तुम्हें ही उसे रोकना है?'

'बिल्कुल नहीं। मुझे नहीं लगता कि कोई एक व्यक्ति शुक्र का सामना कर सकता है। हम सभी को मिलकर इसका सामना करना होगा।'

'यही तो समस्या है, एजे। मुझे नहीं लगता कि किसी के पास शुक्र को हराने का साधन है।' उसकी आँखों में आँसू भर आए। 'यकीन मानो, मैंने देखा है कि वह क्या कर सकता है। तुम मेरे लिए परिवार के सबसे करीब हो। मैं नहीं चाहती कि तुम्हें कुछ भी हो।'

'अरे...' अर्जुन माया के लिए चिंतित था। 'सब ठीक है। मुझे कुछ नहीं होगा। मुझे यकीन है कि गुरुकुल चलाने वालों के पास कोई योजना होगी।'

'माफ़ करना।' माया ने अपने आँसू पोंछे। 'मुझे लगता है कि पिछले दो दिन मेरे लिए बहुत मुश्किल रहे हैं।'

'मैं समझ गया। लेकिन आप जानते हैं कि मुझे आत्मविश्वास किससे मिलता है?'

'क्या?'

'क्या आपने देखा कि कोहरा छंटने से ठीक पहले क्या हुआ?'

माया ने सिर हिलाया। 'मेरी आंखें बंद थीं। मैं मंत्र का जाप करने पर ध्यान केंद्रित कर रही थी।'

'सच में? तुम मंत्र का जाप कर रहे थे? ये तो बहुत बढ़िया है! तुमने ये कहाँ से सीखा?'

'मैंने इसे सीखा नहीं। यह इस डायरी में लिखा था।' माया ने अपने पिता की डायरी की ओर इशारा करते हुए कहा। 'मैंने इसे कल रात पन्ने पलटते हुए पढ़ा। फिर, जब मैंने इसे जपते हुए सुना, तो मुझे याद आ गया। इसलिए मैंने सोचा कि मैं भी दूसरों के साथ शामिल हो जाऊं क्योंकि मेरे पास और कोई चारा नहीं था। और वैसे भी, तब तक मैं किसी काम की नहीं थी।'

'वहाँ तुम्हारे साथ क्या हुआ?' अर्जुन ने थोड़ी शर्मिंदगी के साथ पूछा। वह माया को पूरी तरह से भूल गया था जो दर्द से कराहते हुए अपना सिर पकड़े जमीन पर लोट रही थी। 'मैं उन जीवों से लड़ने में व्यस्त हो गया था, और तुम्हारी मदद नहीं कर पाया।'

माया ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'रतन ने मुझे बताया कि मैं बेहोश हो गई थी। मुझे नहीं पता क्यों। लेकिन अब मैं ठीक हूँ।' वह मुस्कुराई। 'देखा? लेकिन तुम क्या कहना चाहती थी? कोहरा छंटने से ठीक पहले क्या हुआ था?'

जैसे ही अर्जुन जवाब देने के लिए मुंह खोलने ही वाला था, दरवाजे पर दस्तक हुई। 'अंदर आ जाओ!' माया चिल्लाई। दरवाजा खुला और तिवारी अंदर आया।

'मुझे लगा था कि तुम दोनों साथ ही मिलोगे,' वह मुस्कुराया। 'चलो, परिषद तुम दोनों से मिलना चाहती है। उन्हें इंतज़ार करवाना ठीक नहीं होगा।'

अध्याय छियालीस

गुरुकुल में आपका स्वागत है

अतिथिगृह

The Gurukul

अर्जुन और माया महामती परिषद के पांच सदस्यों के सामने बैठे थे। वीरेंद्र, प्रमिला और तिवारी एक तरफ बैठे थे।

अभिवादन और परिचय के बाद, दोनों समूहों ने एक-दूसरे को ध्यान से देखा, जिससे कुछ क्षणों के लिए मौन छा गया; अर्जुन और माया आशंका से और परिषद के पांच सदस्य रुचि और जिज्ञासा से देख रहे थे।

यह स्पष्ट था कि परिषद भविष्यवाणी के बारे में सोच रही थी। भविष्यवाणी में कहा गया था कि ययाति वंश में एक बालक का जन्म होगा, जो युद्ध का नेतृत्व करने के लिए चुना जाएगा। अर्जुन की जन्मतिथि भविष्यवाणी से मेल खाती थी। पिछले चौदह वर्षों में बड़ी मेहनत से बनाई और कार्यान्वित की गई उनकी आशाएँ और योजनाएँ, सब कुछ इस पंद्रह वर्षीय लड़के के नाजुक कंधों पर टिकी थीं।

अंत में महेश ने बोलना शुरू किया। 'गुरुकुल में आपका स्वागत है, अर्जुन और माया। पिछले कुछ घंटों में आप दोनों ने बहुत कुछ सहा है। लेकिन अब आपको चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है। आप दोनों यहां सुरक्षित हैं।'

अर्जुन और माया ने मौन भाव से सिर हिलाया।

जिग्नेश ने अर्जुन को सिर हिलाकर सहमति दी। 'आज युद्ध के मैदान में तुमने अच्छा प्रदर्शन किया।'

'बिल्कुल,' पार्थ ने बीच में कहा। 'मैंने कभी किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं देखा जिसने किसी गुरुकुल में प्रशिक्षण न लिया हो, और वह उस तरह से लड़ता हो जिस तरह से तुमने लड़ाई लड़ी।'

'धन्यवाद,' अर्जुन ने धीरे से कहा, उसे इतनी ज्यादा अटेंशन मिलने से थोड़ी असहजता हो रही थी।

'उषा, क्या आप उन्हें संक्षेप में बताना चाहेंगी?' महेश ने अपने दाहिनी ओर बैठे महर्षि की ओर देखा।

उषा ने अर्जुन और माया को देखकर सिर हिलाया और मुस्कुराई। 'कल से तुम दोनों का प्रशिक्षण शुरू हो जाएगा। तुम्हारी परिस्थितियाँ असामान्य हैं, इसलिए तुम्हारा प्रशिक्षण भी असामान्य होगा। जब तक हम यह तय नहीं कर लेते कि तुम किस स्तर पर हो, तब तक हम तुम्हें किसी समूह में शामिल नहीं करेंगे। इसके बजाय, तुम दोनों के अपने-अपने प्रशिक्षक होंगे।' उसने अर्जुन पर अपनी निगाहें टिकाईं और उससे कहा, 'कनक तुम्हें प्रशिक्षण देती रहेगी। और कनक की देखरेख में अंबा प्रशिक्षण सत्रों के दौरान तुम्हारी साथी होगी।'

वीरेंद्र ने बीच में टोकते हुए कहा, 'सिर्फ अंबा ही नहीं, मैं यह भी अनुरोध करूंगा कि पार्थ अर्जुन के लिए एक अभ्यास साथी बने।'

पार्थ ने वीरेंद्र को हैरानी भरी नजरों से देखा। 'क्या हम में से एक ही काफी नहीं है?'

'ऐसा तब नहीं होगा जब उसके प्रशिक्षण सत्रों में कई विरोधियों से लड़ना शामिल होगा। उसे अभ्यास की जरूरत होगी।'

अंबा ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, 'कनक, लड़के पर तुम्हारा भरोसा कमाल का है। यह देखना दिलचस्प होगा।' उसने पार्थ की ओर देखा। 'तुम्हारा क्या कहना है?'

'मुझे कोई आपत्ति नहीं है।' पार्थ ने कंधे उचकाए, लेकिन फिर भी संशय में दिख रहा था। 'गण में कोई भी क्षत्रिय ऐसा नहीं कर सकता।'

वीरेंद्र ने सहमति जताते हुए कहा, 'अभी नहीं। लेकिन हर किसी की शुरुआत तो होती ही है। याद रखिए, यह ययाति का वंशज है। इसकी रगों में महान राजाओं और विख्यात क्षत्रियों का रक्त बहता है।'

'बहुत खूब,' महेश ने समझौते पर मुहर लगा दी। 'यह हो जाएगा।'

उषा ने माया की ओर ध्यान दिया। 'तुम्हें जिग्नेश प्रशिक्षित करेगा, जिसने इस कार्य के लिए स्वेच्छा से आगे आया है। ध्रुव की पुत्री होने के नाते, हमें लगता है कि तुम्हारे भीतर कुछ छिपी हुई शक्तियां हो सकती हैं, जिन्हें विकसित करने की आवश्यकता है। ध्यान रहे, यह केवल ऋषि बनने का प्रशिक्षण नहीं होगा। यह साथ ही साथ तुम्हारी शक्तियों का मूल्यांकन भी होगा, यदि तुम्हारे पास कोई शक्तियां हैं तो।'

यह सुनकर माया का दिल खुशी से उछल पड़ा। अब तक उसे गुरुकुल में अपने भविष्य को लेकर अनिश्चितता थी। लेकिन अब उसे ऋषि बनने का अवसर मिलने वाला था! ठीक वैसे ही जैसे उसने खुले मैदान में सफेद वस्त्र पहने अन्य बच्चों को देखा था! उषा के अगले शब्दों से भी उसकी खुशी कम नहीं हुई।

'लेकिन एक बात है जिसे आपको तुरंत समझ लेना चाहिए,' उषा ने आगे कहा। 'अगर जिग्नेश के मूल्यांकन से यह निष्कर्ष निकलता है कि आपमें योगिक शक्तियां नहीं हैं या वे पर्याप्त रूप से विकसित नहीं हैं, तो आपको गुरुकुल छोड़ना पड़ेगा। क्या यह बात स्पष्ट है?'

माया ने सिर हिलाया, उसकी आँखें चमक रही थीं। अर्जुन ने हैरानी से उसकी ओर देखा, वह सोच रहा था कि क्या उसने वाकई उषा की बातें सुनी हैं।

'महेश आप दोनों को ध्यान की बुनियादी बातें सिखाएगा,' उषा ने आगे कहा। 'आप दोनों को अपने भीतर छिपी शक्तियों को जागृत करने के लिए इस क्षमता की आवश्यकता होगी। अभी के लिए बस इतना ही।'

चुप्पी का एक पल था।

'क्या यह वही डायरी है जिसका आपने जिक्र किया था?' वीरेंद्र ने माया के हाथ में मौजूद चमड़े की नोटबुक की ओर इशारा किया। उसने तिवारी को निर्देश दिया था कि वह माया से कहे कि वह इसे परिषद की बैठक में अपने साथ लाए।

माया ने सिर हिलाया। 'पापा ने मुझे स्टडी रूम से इसे उठाकर लाने को कहा था।' उसने नोटबुक को ऊपर उठाया और उसे उदास निगाहों से देखा।

'क्या मैं इसे देख सकता हूँ?' महेश ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और माया ने उसे किताब सौंप

दी।

वह डायरी के पन्ने पलटने लगा, उसके चेहरे पर गहरी दिलचस्पी का भाव था। धीरे-धीरे, उसका भाव आश्चर्य में बदल गया। वह पन्ने तेज़ी से पलटने लगा, फिर माया की ओर देखा। 'क्या तुम्हारे पिता ने तुम्हें इस डायरी के बारे में पहले कभी बताया था?'

माया ने सिर हिलाया। 'कभी नहीं।'

महेश ने वीरेंद्र की तरफ देखा। 'क्या ध्रुव ने तुमसे इस डायरी के बारे में बात की? क्या उसने कुछ कहा? कुछ भी?' उसकी आवाज़ में हताशा झलक रही थी।

'क्यों? डायरी में क्या है?' वीरेंद्र ने पलटकर पूछा। 'मुझे इसके बारे में पहली बार तब पता चला जब माया ने इसका ज़िक्र किया।' उसे इस बात का गुस्सा था कि मौका मिलने पर भी उसने डायरी क्यों नहीं देखी। वह अपने विचारों और ज़रूरी कामों में इतना मशगूल था कि डायरी का ख्याल ही उसके दिमाग से निकल गया था।

महेश ने नोटबुक को झटके से बंद कर दिया। 'ध्रुव को कुछ महत्वपूर्ण सुराग मिल गया था। हम जानते हैं कि इलाहाबाद में शुक्र के पुन: प्रकट होने के बाद उसने कई साल शुक्र की योजनाओं को विफल करने वाले हथियारों की खोज में बिताए थे। इस नोटबुक में लिखी बातों से लगता है कि उसे कुछ महत्वपूर्ण मिला था। यह हथियारों से संबंधित था या नहीं, मैं कह नहीं सकता। लेकिन यह महत्वपूर्ण जरूर था।'

जिग्नेश ने किताब लेने के लिए हाथ बढ़ाया और उसके पन्ने पलटने लगा।

पार्थ ने कहा, 'मुझे समझ नहीं आ रहा। अगर आपको पता है कि यह महत्वपूर्ण है, तो आप यह क्यों नहीं बता सकते कि इसका संबंध हथियारों से है या नहीं?'

'क्योंकि डायरी का अधिकांश भाग ब्रह्मभाषा में है,' जिग्नेश ने धीरे से कहा। 'ध्रुव ने इसका स्पष्ट उल्लेख किया है। उसे निश्चित रूप से कुछ ऐसा मिला होगा जो प्रतिलिपि बनाने और लिखने के लिए पर्याप्त महत्वपूर्ण था। मुझे नहीं पता कि उसे ब्रह्मभाषा में लिखा कोई पाठ कहाँ से मिला होगा, लेकिन यह यहाँ है। और मुझे नहीं पता कि उसने इन नकल किए गए श्लोकों का अनुवाद कैसे करने की योजना बनाई होगी, लेकिन ध्रुव को जानते हुए, उसने कोई न कोई योजना जरूर बनाई होगी।'

'ज़रूर कोई न कोई इसका अनुवाद कर देगा।' वीरेंद्र ने किताब की ओर हाथ बढ़ाया।

महेश ने उदास स्वर में कहा, 'कोई मनुष्य नहीं समझ सकता। यह देवताओं की भाषा है, संस्कृत की जननी। सत्ययुग जितनी प्राचीन भाषा, मनुष्यों के सीखने के लिए नहीं बनी है। हमें इन शब्दों का अर्थ जानने का कोई तरीका नहीं है।'

'धत् तेरे की!' वीरेंद्र ने किताब के पन्ने पलटते हुए कहा। 'ध्रुव ने मुझे इसके बारे में क्यों नहीं बताया? और किताब के बाकी हिस्से किस बारे में हैं? वो हिस्से जिन्हें पढ़ा जा सकता है?' उसकी झुंझलाहट अब आक्रोश में बदल गई थी कि ध्रुव ने इतनी महत्वपूर्ण बात उससे साझा करने की जहमत क्यों नहीं उठाई।

'मंत्र,' जिग्नेश ने उत्तर दिया। 'हर तरह के मंत्र। लगता है ध्रुव इन सबको एक जगह इकट्ठा कर रहा था। यह मंत्रों की एक विस्तृत पुस्तिका जैसी है।'

‘गंधर्वों का क्या? क्या वे ब्रह्मभाषा के अंशों को समझने में मदद नहीं कर सकते?’ माया ने ये बात कही और तुरंत ही उसे पछतावा हुआ। जिग्नेश की घूरती हुई नज़र से साफ पता चल रहा था कि ये मामला सिर्फ परिषद में ही सुलझाया जाना चाहिए और उसे इसमें दखल नहीं देना चाहिए। वह मन ही मन कांप उठी और उसने अपने विचार मन में ही रखने का फैसला किया।

महेश ने विनम्रता से उत्तर दिया, ‘गंधर्व मदद नहीं करेंगे। केवल देवता ही कर सकते थे। और अब हम उनसे संपर्क नहीं कर सकते। ध्रुव ने जो कुछ भी खोजा, जो कुछ भी करने की कोशिश कर रहा था, वह उसके बिना व्यर्थ हो गया है। हम इस डायरी का कुछ नहीं कर सकते। यह हमारे लिए बेकार है।’

‘तो क्या मैं इसे वापस ले सकती हूँ?’ माया ने विनती की। महेश की बात उसे पसंद नहीं आई थी। उसके पिता ने इस पर काफी मेहनत की थी। किसी अनजान भाषा में श्लोकों की नकल करना, और साथ ही गलतियों से बचना, वाकई मुश्किल काम था। उसे यह बात बिल्कुल पसंद नहीं आई कि इसे बेकार समझकर नज़रअंदाज़ कर दिया जाए। अगर वे इसकी कदर नहीं करते, तो वह इसे वापस चाहती थी।

वीरेंद्र ने किताब माया की ओर बढ़ाते हुए कहा, ‘ये लो। इसे संभाल कर रखना। अभी शायद यह ज्यादा काम की न हो, लेकिन कौन जाने कब...’

दोनों बच्चों के चले जाने के बाद, जिग्नेश ने महामती परिषद के अन्य सदस्यों की ओर देखा। उनके चेहरे पर चिंता के भाव थे, ‘हमारे पास ज्यादा समय नहीं है। अभी जब हम बात कर रहे हैं, शुक्र अपनी सेना जुटा रहा होगा और एक नए हमले की तैयारी कर रहा होगा। कनक, तुमने कहा था कि लड़के को ज्यादा प्रशिक्षण की जरूरत नहीं है। वह लगभग तैयार है। मुझे उम्मीद है कि तुम सही हो।’

वीरेंद्र ने गंभीर स्वर में कहा, ‘मैं जानता हूँ कि मैं हूँ। तुम स्वयं देख लोगे। मैंने पिछले चौदह वर्ष व्यर्थ नहीं बिताए हैं। मैंने लड़के को तैयार करने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी है। वह शुक्र का सामना करने के लिए तैयार होगा! यह मेरा तुमसे वादा है। लेकिन उसके हथियार कहाँ हैं—वे हथियार जिनका ज़िक्र भविष्यवाणी में किया गया है? हमने चौदह वर्ष उन्हें खोजने में बिताए और हमें इसका क्या परिणाम मिला?’

‘5000 साल पहले लुप्त हो चुके हथियारों को खोजना कोई आसान काम नहीं है,’ अंबा ने वीरेंद्र को हल्के से डांटते हुए कहा। ‘और यह तब और भी मुश्किल हो जाता है जब हमें पता ही न हो कि हम क्या खोज रहे हैं। इन चौदह वर्षों में हम केवल कुछ लाख प्राचीन ग्रंथों का ही अध्ययन कर पाए हैं। लाखों ग्रंथ अभी बाकी हैं। हमारे पास खोज करने के लिए पर्याप्त लोग नहीं हैं। यह भूसे के ढेर में सुई खोजने जैसा है, बस फर्क इतना है कि हमें यह भी नहीं पता कि हम सुई खोज रहे हैं या नहीं। ध्रुव ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति लगता है जिसने अपनी नोटबुक के आधार पर कुछ प्रगति की थी। और अब तो वह भी किसी काम की नहीं रही।’

‘कनक सच कह रही है,’ महेश ने अंबा का खंडन करते हुए गंभीर स्वर में कहा। ‘भविष्यवाणी का जो अंश हमारे पास है, उससे यह पता नहीं चलता कि जब बालक शुक्र का सामना करेगा तो क्या होगा। हमें उसे पूरी तरह से तैयार करना होगा ताकि समय आने पर वह निखर सके। चाहे

वह योद्धा के रूप में कितना भी कुशल क्यों न हो, सही हथियारों के बिना वह शुक्र की शक्तियों के सामने बेअसर साबित होगा। बालक को ऐसे हथियार चाहिए जो शुक्र को नष्ट करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली हों। यदि हम उन्हें नहीं ढूंढ पाते हैं, तो दुनिया भयानक खतरे में पड़ जाएगी। और जो निश्चित रूप से आने वाला है, उसे रोकने के लिए हम कुछ खास नहीं कर पाएंगे।'

अध्याय सैंतालीस

माया प्रतिबिंबित करती है

माया का कमरा

अतिथिगृह

माया बिस्तर पर जागती हुई लेटी थी और अंधेरे में छत को घूर रही थी।

परिषद की बैठक से निकलने के बाद, उन्होंने और अर्जुन ने चुपचाप भोजन किया और फिर अलग हो गए। महामति के साथ हुई चर्चा के बाद दोनों ही बोझिल और चिंतित थे।

माया समझ गई थी कि अर्जुन के मन में क्या चल रहा है। भारतीय इतिहास के सबसे सम्मानित क्षत्रिय वंशों में से एक का उत्तराधिकारी होने की बात तो बहुत आसान थी, लेकिन उसे जीना बिलकुल अलग बात थी। उसे एहसास हुआ कि अर्जुन को अब जाकर इस जिम्मेदारी और बोझ का एहसास होने लगा था। यह एक डरावना विचार था। वह तो बस पंद्रह साल का लड़का था। माया को उस पर तरस आ रहा था।

उसे भी अपने कुछ अंतर्मनों का सामना करना था। ऋषि बनने की संभावनाओं को लेकर वह बेहद उत्साहित थी, लेकिन परिषद के साथ बैठक के दौरान उसने उषा के शब्दों का महत्व नहीं समझा था। गुरुकुल में प्रवेश की आशा में वह इतनी मग्न थी कि उसे और कुछ मायने ही नहीं रखता था। अब जब उसने शांत मन से विचार किया, तो उसे सच्चाई का एहसास हुआ।

इस धरती पर अपने पंद्रह वर्षों में उसने कभी यह संकेत नहीं दिया था कि उसमें ऋषि बनने की क्षमता है। क्या होगा यदि उसके पास ऋषि बनने के लिए आवश्यक योगिक शक्तियां न हों? यह स्पष्ट था कि यदि वह स्वयं को सिद्ध नहीं करती तो गुरुकुल में उसके लिए कोई स्थान नहीं था। असफल होने पर वह कहाँ जाएगी? वह क्या करेगी? उस समय उसे इनमें से किसी भी बात का ख्याल नहीं आया था। अब उसे यह बात समझ में आई। उसका भविष्य पहले की तरह ही अनिश्चित था।

उसके मन में यह भी ख्याल आया कि शायद परिषद ने उस पर दया करके उसे अपने साथ ले लिया हो। एक अनाथ, जिसने हाल ही में अपने पिता को खोया था। संघ के एक महत्वपूर्ण सदस्य की बेटी। वे उसे मौका दे रहे थे, इसलिए नहीं कि उन्हें उसमें कोई खास बात दिखती थी, बल्कि इसलिए कि उसके पिता कौन थे।

और उसे इस बात से नाराजगी थी।

उसे दया नहीं चाहिए थी। उसे सहानुभूति की ज़रूरत नहीं थी। वह वास्तव में खुद को साबित करना चाहती थी। लेकिन अनिश्चितता, असफलता का डर उसे सताता रहता था।

इसके अलावा, उसकी नज़र में उसके पिता की डायरी के साथ किया गया निर्दयतापूर्ण व्यवहार भी एक मुद्दा था। उसे बेकार समझकर त्याग दिया गया था। माया को यह याद आते ही बहुत गुस्सा आया।

लेकिन उसे यह स्वीकार करना पड़ा कि वह चर्चा पूरी तरह व्यर्थ नहीं गई थी। उसने कुछ नया सीखा था। एक ऐसी भाषा का अस्तित्व जो मनुष्यों के लिए सुलभ नहीं है। यह संभावना कि ऐसा ज्ञान भी मौजूद है जिसके बारे में संघ, अपनी मानवीय सीमाओं के कारण, भी नहीं जानता।

रात को सोने से पहले उसने डायरी पढ़ने में दो घंटे बिताए थे। पहली बार उसने इसे गंभीरता से पढ़ा था, पन्नों पर समय बिताया था, यह समझने की कोशिश की थी कि यह उसे क्या बताना चाहती है। पिछली बार जब उसने तिवारी के घर में इसे देखा था, तो उसने बस जिज्ञासावश पन्ने पलटे थे। आज रात उसने इसका गहन अध्ययन किया था। वह इसके अंदर लिखी बातों के बारे में और जानना चाहती थी, कम से कम उन हिस्सों के बारे में जिन्हें वह समझ सकती थी। रेखाचित्रों और रेखाचित्रों वाले पन्नों पर वह कुछ देर रुकी रही, उन्हें समझने की कोशिश करती रही, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।

उसने संस्कृत के हर श्लोक का अध्ययन किया था। हर मंत्र का।

उसके पिता ने उससे डायरी अपने साथ ले जाने के लिए विशेष रूप से कहा था। वह इतना ज़ोर क्यों दे रहे थे? कोई न कोई कारण तो होगा ही। उसने उनके शब्दों को याद करने की कोशिश की। उनके आखिरी शब्द। उन्होंने डायरी के साथ क्या करने को कहा था?

लाख कोशिश करने के बावजूद, उसे याद नहीं आ रहा था कि उसके पिता ने उसे डायरी वीरेंद्र या किसी और को देने के लिए कहा था। उन्होंने बस इतना कहा था कि डायरी लेकर भाग जाओ। हाँ, उन्होंने उसे वीरेंद्र को फोन करने के लिए ज़रूर कहा था। 'वीरेंद्र को फोन करो। उसे बताओ।' उसके पिता ने यही कहा था। उस समय, उसने यही समझा था कि उनके पिता का मतलब था कि उसे डायरी के बारे में वीरेंद्र को बताना है।

और उसने ऐसा किया भी था। वीरेंद्र से बात करने का मौका मिलते ही उसने सबसे पहले यही बात कही थी।

अब उसे एहसास हुआ कि शायद उससे गलती हो गई थी। जब डायरी का ज़िक्र हुआ तो वीरेंद्र ने उसे पहचाना तक नहीं। उसने फ़ोन पर भी इसका ज़िक्र नहीं किया था। आज रात भी उसने माना कि उसे डायरी में लिखी बातों के बारे में कुछ नहीं पता। अब यह साफ़ था कि उसके पिता ने उसे कभी डायरी के बारे में बताया ही नहीं था। उनका इरादा तो बिल्कुल भी नहीं था कि वह डायरी उसे दे दे।

तो फिर वह क्या चाहता था?

क्या उसके पिता को उससे यह उम्मीद थी कि वह खुद ही समझ पाएगी कि उस नोटबुक में क्या लिखा है और उसका क्या महत्व है? यह विचार उसे बेतुका लगा। आज रात तक उसे यह भी नहीं पता था कि ब्रह्मभाषा नाम की कोई भाषा भी होती है। और अब जब उसे इसके बारे में पता चल गया है, तब भी डायरी के उन हिस्सों का अनुवाद करना उसके लिए नामुमकिन था जो उस भाषा में लिखे गए थे।

क्या यह संभव था कि उसके पिता ने इस डायरी के बारे में किसी को न बताया हो? यह बात समझ से परे थी। भला वह अपनी मेहनत को यूं ही क्यों भुला देना चाहेंगे? अगर उन्होंने इन लेखों को संकलित करने में इतनी मेहनत की थी, तो इसके पीछे कोई कारण जरूर होगा। और कोई न कोई तो ऐसा होगा जिससे उन्होंने ये लेख साझा किए होंगे, जो इन्हें समझ सकता होगा।

लेकिन वो कौन हो सकता है? और माया को कैसे पता चलेगा?

या डायरी की सामग्री का अनुवाद करने का कोई और तरीका था?

उसके मन में विचारों का बवंडर चल रहा था, जिससे उसे नींद नहीं आ रही थी। वह अंधेरे में बैठी, बिना देखे, सोचती रही, अपने दिमाग में चल रही उलझनों को सुलझाने की कोशिश करती रही। और आखिरकार वह एक निष्कर्ष पर पहुँची। उसे बस इतना नहीं पता था कि वह इसे अमल में कैसे लाएगी। लेकिन उसे पता था कि वह कोई न कोई रास्ता ज़रूर निकाल लेगी। उसे बस कोशिश करते रहना होगा।

अब जब वह सोने की कोशिश कर रही थी, तो एक और विचार उसे परेशान कर रहा था। एक ऐसा विचार जो लाख कोशिश करने पर भी उसके मन से नहीं निकल रहा था। उसे नहीं पता था कि यह विचार उसे इतना क्यों सता रहा था, लेकिन यह उसके दिमाग से चिपक गया था और पीछा नहीं छोड़ रहा था।

शुक्र आज रात प्रकट क्यों नहीं हुआ? यह उसके उद्देश्य को प्राप्त करने का सुनहरा अवसर था। उसने अपने पिता के विरुद्ध शुक्र की शक्ति का प्रदर्शन देखा था, जो अब वह जानती थी कि एक शक्तिशाली महर्षि थे। शुक्र के लिए आज रात अर्जुन को हराना बच्चों का खेल होता, खासकर जब उसके पास राक्षसों की सेना का समर्थन हो।

तो जब उसका शिकार कमजोर और उसकी पहुँच में था, तब वह उससे दूर क्यों रहा?

क्या यह संभव था कि अर्जुन को मारने की उसकी तीव्र इच्छा के बारे में सभी लोग गलतफहमी में थे?

क्या कोई ऐसी चीज थी जो सभी से छूट रही थी?

अध्याय अड़तालीस

Gurukul Day 1

पांचवा दिन

The Gurukul

जिग्नेश ने कहा, 'आपको यह समझना होगा कि यह मेरे लिए एक काफी असामान्य शिक्षण कार्य है।'

माया ने उसकी ओर देखा और सहमति में सिर हिलाया। वह समझ गई थी कि उसका क्या मतलब है। अर्जुन और वह गुरुकुल के एकमात्र ऐसे छात्र थे जो उन कक्षाओं में नहीं बैठे थे जहाँ बाकी सभी छात्र शिक्षा प्राप्त करते थे। कम से कम निकट भविष्य में तो यह असामान्य स्थिति बनी रहेगी।

सुबह तड़के 5:30 बजे एक ननद साध्वी ने उसे जगाया और उसे सभा भवन तक ले गई, जहाँ महेश अर्जुन और माया को ध्यान विद्या सिखाने के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे। सभा भवन वही विशाल, रहस्यमयी लकड़ी की इमारत थी जो पिछली रात अंधेरे में डूबी हुई थी। इमारत में एक बड़ा भूमिगत कक्ष था, जहाँ गुरुकुल के सभी सदस्य प्रतिदिन सुबह प्रार्थना, ध्यान और मंत्रों का जाप करने के लिए एकत्रित होते थे ताकि दिन भर सकारात्मक मन बना रहे। इमारत के भूतल पर एक छोटा कक्ष भी था।

सुबह की सभा के बाद, छात्र अपनी-अपनी कक्षाओं में चले गए थे, जबकि अर्जुन और माया भूतल पर स्थित हॉल में सीढ़ियाँ चढ़ गए थे, जहाँ महेश ने उनकी ध्यान कक्षाएं शुरू कीं।

उन दोनों को विशेष वस्त्र प्रदान किए गए थे - माया को ऋषियों के सफेद वस्त्र और अर्जुन को क्षत्रियों की रेशमी वर्दी।

‘कल रात किसी ने मेरी कार से सारा सामान निकाल लिया,’ अर्जुन ने माया से फुसफुसाते हुए कहा, जैसे ही उन्हें बात करने का पहला मौका मिला। ‘पता नहीं उन्होंने लैंड क्रूज़र का क्या किया होगा। मुझे यकीन है कि उन्होंने उसे वहाँ नहीं छोड़ा होगा ताकि सुबह पार्क रेंजर उसे ढूंढ लें!’

महेश के साथ सत्र के बाद, अर्जुन गुरुकुल में वीरेंद्र के पहले प्रशिक्षण सत्र में शामिल होने के लिए निकल गया, जबकि माया को एक कक्षा में ले जाया गया जहाँ जिग्नेश उसका इंतजार कर रहा था।

मंत्रों की कक्षा समाप्त करने के बाद कक्षा से बाहर निकलते हुए जिग्नेश ने सुझाव दिया, 'चलिए गुरुकुल में घूमते हैं। क्या आपको आस-पास देखने का मौका मिला?'

माया सतर्क थी। जिग्नेश कल रात के कठोर और सख्त रवैये के विपरीत आज काफी मिलनसार और दोस्ताना लग रहा था, फिर भी माया को उस पर पूरा भरोसा नहीं था। कल रात जिग्नेश के लहजे से माया को लगा था कि वह माया के गुरुकुल में दाखिला लेने के विचार से सहमत नहीं है। उसने इतनी दुश्मनी क्यों दिखाई, यह उसकी समझ से परे था, लेकिन उसे पूरा यकीन था कि उसके बारे में उसकी आशंका सही थी। उसने सावधान रहने और जिग्नेश को नाराज़ न करने का फैसला किया। वह ऐसा व्यक्ति लग रहा था जो मन में बैर रख सकता है।

‘बस थोड़ा सा,’ उसने जवाब दिया। कैंपस का असली आकार उसे दिन के उजाले में ही समझ आया था। पिछली रात माया को सिर्फ़ वे झोपड़ियाँ दिखाई दे रही थीं जो केंद्रीय मार्ग के किनारे बनी थीं और असेंबली हॉल पर आकर खत्म होती थीं। आज उसे पता चला कि ईंट और फूस से बनी ये अनोखी गोल आकार की झोपड़ियाँ छात्रों के छात्रावास हैं।

छात्रावासों के पीछे और उससे आगे शिक्षकों के लिए आवासीय कॉटेज, सामुदायिक भोजन कक्ष जहाँ सभी छात्र भोजन करते थे, बीमारों के लिए कमरा और अतिथिगृह था, जहाँ दिल्ली से आए समूह को ठहराया गया था।

सभी इमारतें इस पहाड़ी के इस तरफ फैले जंगल के ताने-बाने में बड़ी चतुराई से समाई हुई थीं। पेड़ों से रहित केंद्रीय मार्ग को छोड़कर, पूरा गुरुकुल घने पत्तों से आच्छादित था। एक और बात जो इस बात का प्रमाण थी कि वे जंगल के बीचोंबीच हैं - हालांकि कृत्रिम रोशनी और पिछली रात देखी गई भीड़भाड़ के कारण यह धारणा आसानी से दूर हो गई थी - वह थी सांभर, चीतल और नीलगाय की उपस्थिति, जो यहाँ रहने वाले मनुष्यों से बेखौफ होकर घूम रही थीं। यह एक अद्भुत दृश्य था।

जिग्नेश से मिलने जाते समय माया को असेंबली हॉल के आगे फैले परिसर की बस एक झलक मिली थी। पिछली रात ऐसा लग रहा था कि परिसर असेंबली हॉल पर ही खत्म हो जाता है। सुबह की रोशनी में वह यह देखकर हैरान रह गई कि यह हॉल से आगे कितना फैला हुआ है, हालांकि दूसरी केंद्रीय सड़क के किनारे बनी कक्षाओं वाली झोपड़ियों के कारण उसका नज़ारा थोड़ा सीमित था; ये झोपड़ियां असेंबली हॉल के दूसरी तरफ की संरचना का हूबहू प्रतिबिंब थीं।

‘ठीक है, तो हम बस टहलते हुए बातें करेंगे,’ जिग्नेश ने जवाब दिया।

तो, वे यहाँ थे, केंद्रीय मार्ग पर चल रहे थे, जिसके दोनों ओर कक्षाएँ थीं। बंद कांच की खिड़कियों से माया छात्रों को अंदर ध्यान से अपने शिक्षकों की बातें सुनते हुए देख सकती थी।

‘कॉटेज में एयर कंडीशनर लगे हैं,’ माया ने हैरानी से कहा। पिछली रात जब वह एयर कंडीशनर वाले कमरे में सोई थी, तब उसे इस बात का ख्याल भी नहीं आया था। जंगल के बीचोंबीच, यहाँ ऐसी सुविधा की उसने कभी उम्मीद नहीं की थी।

जिग्नेश मुस्कुराते हुए बोले, ‘हम 21वीं सदी में जी रहे हैं, वैदिक युग में नहीं। जैसा कि आप जल्द ही देखेंगे, परिसर का एक हिस्सा सौर पैनलों की श्रृंखला के लिए समर्पित है, जो गुरुकुल की अधिकांश बिजली आवश्यकताओं को पूरा करता है। और, अगर आपने ध्यान नहीं दिया है, तो हर कॉटेज में अपना सौर ऊर्जा जनरेटर लगा हुआ है।’

वे मुख्य मार्ग के अंत तक पहुँच गए। सामने का नज़ारा देखकर माया दंग रह गई। यह बेहद खूबसूरत था। गुरुकुल का केंद्र यहीं स्थित था।

एक तरफ, केन नदी परिसर के किनारे बहती थी, जो घने पेड़ों की कतार से उसकी नज़रों से छिपी हुई थी। ये पेड़ आपस में सटे हुए थे और एक प्राकृतिक अवरोध बनाते हुए सभा भवन के पीछे की पहाड़ी से लेकर उस बिंदु तक फैले हुए थे जहाँ नदी गुरुकुल से दूर मुड़ती थी। पेड़ों की कतार नदी में नाव से आने-जाने वालों से कॉटेज को छिपा देती थी, हालाँकि वह पेड़ों के बीच से नदी को देख सकती थी, जिस पर सूरज की रोशनी तेज़ी से बहते पानी पर चमक रही थी।

माया को एहसास हुआ कि यही वह प्रवेश द्वार था जिसकी ओर वीरेंद्र का झुकाव था, लेकिन आत्माओं के प्रकट होने से उसे अपनी योजना बदलनी पड़ी।

नदी के किनारे फैले जंगल की छाया में एक विशाल खुला मैदान था, जो क्षत्रियों के शारीरिक व्यायाम के लिए प्रशिक्षण स्थल के रूप में कार्य करता था। इस समय मैदान में केवल दो ही आकृतियाँ थीं - माया ने अनुमान लगाया कि वे अर्जुन और वीरेंद्र थे, जो अपने प्रशिक्षण सत्र में लीन थे।

दूसरी ओर, पेड़ों से रहित एक विशाल खुला मैदान था।

'यहीं पर ऋषि अपनी शक्तियों के प्रयोग का अभ्यास करते हैं,' जिग्नेश ने माया से कहा। माया को आश्चर्य हुआ कि खुले में किस प्रकार के अभ्यास किए जाते होंगे, लेकिन उसने पूछा नहीं।

ऋषियों के साधना क्षेत्र से परे, एक और विशाल, घना जंगल था जो क्षितिज तक फैला हुआ प्रतीत होता था, जिसके पेड़ एक दूसरे से घने रूप से सटे हुए थे, जिससे जंगल दिन के समय भी अंधेरे की चादर में लिपटा हुआ प्रतीत होता था।

'और यह दंडक वन है,' जिग्नेश ने इशारा करते हुए कहा। 'या फिर उसका जो भी हिस्सा बचा है।'

माया ने नाम पहचान लिया। यह वही वन था जिसका ज़िक्र महाभारत में मिलता है और रामायण में विस्तार से किया गया है। इसी वन में भगवान राम, सीता और लक्ष्मण के साथ अपने वनवास के अधिकांश वर्ष व्यतीत किए थे। इसी वन से रावण सीता का अपहरण करके ले गया था। और इसी वन में भगवान राम ने राक्षसों का वध किया था। उसे याद आया कि उसने कहीं पढ़ा था कि यह एक विशाल वन था जो मध्य और दक्षिण भारत के अधिकांश भाग में फैला हुआ था। जिग्नेश की बातों से उसने निष्कर्ष निकाला कि सदियों से यह वन सिकुड़ता चला गया और इतना कम हो गया कि अब इसका केवल यही हिस्सा बचा है।

जिग्नेश ने सख्ती से बताते हुए कहा, 'गुरुकुल के छात्रों के लिए जंगल में जाना मना है। कोई भी वहां नहीं जा सकता। लेकिन अगर कोई छात्र जंगल में घुसने की कोशिश भी करता है, तो हमें तुरंत पता चल जाएगा। और इसके गंभीर परिणाम होंगे।'

माया सोच रही थी कि वह इतनी सख्ती से चेतावनी क्यों दे रहा है। क्या इससे पहले भी छात्रों ने कोई नियम तोड़ा था? या जिग्नेश को शक था कि माया जंगल में घुसने की कोशिश करेगी? जहाँ तक उसकी बात है, जंगल में जाने की उसकी कोई इच्छा नहीं थी, जो उसे बिल्कुल भी आकर्षक नहीं लग रहा था।

तभी उसे दंडक वन के बारे में एक और बात याद आई। उसने इसके बारे में किसी प्राचीन ग्रंथ में पढ़ा था। यह सोचकर वह सिहर उठी।

इसका निर्माण शुक्राचार्य ने किया था।

अध्याय उनतालीस

संघ के बारे में

The Gurukul

जिग्नेश ने कहा, 'अब जब आप गुरुकुल में आ गए हैं, तो चलिए मैं आपको संघ और गण के बारे में बताकर शुरुआत करता हूँ।'

वे कक्षाओं के बीच स्थित केंद्रीय मार्ग से चलकर क्षत्रिय प्रशिक्षण मैदान से गुजरे, जहां वीरेंद्र अर्जुन को प्रशिक्षण दे रहा था, और अब नदी के किनारे लगे पेड़ों की छाया में टहल रहे थे।

माया को याद आया कि पन्ना जाते समय तिवारी ने गण का ज़िक्र किया था। उन्होंने यह भी बताया था कि उसके पिता संघ के सदस्य थे, लेकिन इसके बारे में विस्तार से नहीं बताया था। इलाहाबाद में जो कुछ हुआ था, वह उसके विचारों में पूरी तरह से समा गया था और उसके बाद वह किसी और बात पर चर्चा नहीं करना चाहती थी। अब वह जिग्नेश की बातें ध्यान से सुन रही थी।

'आप शुक्र और सप्तऋषियों के बारे में तो जानते ही होंगे,' जिग्नेश ने बात शुरू की।

'मैं शुक्राचार्य के बारे में जानती हूँ,' माया ने उत्तर दिया। 'रतन ने मुझे बताया था। और मैंने महाभारत और अन्य प्राचीन ग्रंथों में सप्तऋषियों के बारे में पढ़ा है।'

'बहुत अच्छा। चलिए मैं आपको बताता हूँ कि कलियुग के प्रारंभ में, 5000 वर्ष पूर्व क्या हुआ था। आप जानते हैं कि निम्न लोकों या अधोलोकों के सात स्तर हैं। आपने शास्त्रों में इनके बारे में पढ़ा होगा।'

माया ने सिर हिलाया। अताला, विताला, सुताला, तलताला, महाताला, रसाताला और पाताला। ये सात स्तर थे पाताल लोक के, जिनमें से प्रत्येक में अलग-अलग प्रकार के जीव निवास करते थे।

'अच्छा। अगर तुम यह जानती हो, तो यह भी जानती हो कि सात लोकों में से वितल लोक में भगवान शिव हठकेश्वर के रूप में निवास करते हैं, और सुतल लोक में वीरोकण के पुत्र बलि निवास करते हैं, जिन्हें भगवान विष्णु के वामन अवतार ने पाताल लोक में धकेल दिया था। बलि सदा से ही धर्मपरायण और भगवान विष्णु के भक्त थे। उन्हें सुतल लोक में इसलिए भेजा गया था क्योंकि इंद्र को डर था कि देवों पर उनका राज्य खतरे में है। अन्य पाँच लोकों में दैत्य, दानव और नाग निवास करते हैं। कलियुग के प्रारंभ में, देव और सप्तऋषि इस लोक से विदा हो गए। तब शुक्राचार्य ने युग परिवर्तन का लाभ उठाकर पाताल लोक के पाँचों लोकों के द्वार खोलने का निर्णय लिया, जहाँ असुर और नाग निवास करते हैं। उनकी योजना उन्हें हमारे भूलोक में छोड़ने की थी, जहाँ वे पाताल लोक के साथ-साथ शासन करेंगे।' जिग्नेश ने माया की ओर देखा कि क्या वह अब तक की कहानी समझ पा रही है।

जब उसे यकीन हो गया कि उसका पूरा ध्यान उसी पर केंद्रित है, तो उसने आगे कहा, "तभी सप्तऋषियों ने शुक्र को अपनी योजनाओं पर अमल न करने की चेतावनी दी। उनकी सामूहिक शक्ति के सामने शुक्र को हार माननी पड़ी। वह 5,000 वर्षों के लिए गायब हो गया। चौदह वर्ष पहले वह इलाहाबाद में फिर से प्रकट हुआ। आप जानते हैं कि आगे क्या हुआ।"

माया ने सिर हिलाया, तिवारी द्वारा इलाहाबाद में घटी अप्रिय घटनाओं का वर्णन उसके मन में फिर से उभर आया। उसने बड़ी मुश्किल से उन यादों को अपने मन से दूर किया।

'क्या संघ की स्थापना उसी समय हुई थी?' उसने पूछा। 'जब शुक्र 5000 साल पहले गायब हो गया था? ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि शुक्र अपनी योजनाओं पर कभी अमल न कर सके?'

'जी हां, संघ की स्थापना उसी समय हुई थी,' जिग्नेश ने सहमति जताते हुए कहा, 'लेकिन केवल शुक्र को नियंत्रण में रखने के लिए नहीं। सप्तऋषि यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि कलियुग में भी संसार सुरक्षित रहे, जब बुराई के सबसे बुरे रूप प्रकट होंगे। कलियुग के प्रारंभ में, उन्होंने कुछ पुरुषों और महिलाओं को अपना प्रतिनिधि चुना और मानवता को बुराई से बचाने का दायित्व उन्हें सौंप दिया। इन चुने हुए लोगों में से कुछ के पास योगिक शक्तियां थीं और कुछ क्षत्रिय थे। महर्षियों और क्षत्रियों ने तब से संघ के सदस्यों के रूप में मिलकर मानवता के चारों ओर एक सुरक्षा कवच बनाया है। कल रात जिन आत्माओं से आपका सामना हुआ,' जिग्नेश ने उस पहाड़ी की ओर इशारा करते हुए कहा जिसके पार खुला मैदान था, 'वे अचानक प्रकट नहीं हुईं। वे हर समय हमारे आसपास रहती हैं, अधिकतर अदृश्य, कभी तबाही मचाती हैं, कभी दयालु। लेकिन वे मौजूद तो हैं ही। आपको क्या लगता है कि मानवता को उन्हें देखने से कौन रोकता है?'

'संघ,' माया ने धीमी आवाज़ में कहा। हजारों साल पुराने, अदृश्य और गुप्त संगठन का अस्तित्व, जो किसी को भी अपने अस्तित्व के बारे में बताए बिना मानवता की रक्षा कर रहा था, एक अद्भुत रहस्योद्घाटन था।

जिग्नेश ने आगे कहा, 'संघ के महर्षियों और क्षत्रियों के तीन दायित्व हैं। पहला दायित्व है मानवता को बुरी आत्माओं और राक्षसों से बचाना। संघ के कई सदस्य देश भर के स्कूलों और विश्वविद्यालयों में शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं और इस दायित्व को उन युवाओं की सहायता से निभाते हैं जो इस तरह के गुरुकुलों से स्नातक होकर गण के सदस्य बनते हैं। संघ और गण मिलकर मानवता को एक सुरक्षा कवच प्रदान करते हैं और बुराई को दूर रखते हैं। आपके पिता, आपके दिवंगत इतिहास शिक्षक धनंजय और रतन, ये सभी संघ के उन सदस्यों के उदाहरण हैं जो इस कार्य में लगे हुए हैं।'

'आपका मतलब है कि हमारे स्कूल के कुछ शिक्षक — मतलब हैं — वास्तव में संघ के सदस्य थे?' माया अचंभित रह गई। उसे इस बात पर कभी विश्वास नहीं होता।

सही। संघ का दूसरा दायित्व संघ सदस्यों के पुत्र-पुत्रियों को प्रशिक्षित करना है, जो ऋषि या क्षत्रिय बनने के लिए आवश्यक योग्यताओं और शक्तियों के साथ जन्म लेते हैं; जो गण के भावी सदस्य होते हैं। हममें से कई लोग भारत भर में फैले गुरुकुलों में इन युवाओं को प्रशिक्षण देते हैं। और, तीसरा दायित्व साध परिवारों में जन्मे उन बच्चों की सक्रिय रूप से खोज करना है, जिनमें भावी ऋषि या क्षत्रिय बनने की क्षमता हो। इस प्रकार चुने गए बच्चों को गुरुकुलों में से किसी एक में भेजा जाता है, जहाँ उनके माता-पिता से अनुमति और इस वचन के बाद कि वे संघ और गण के अस्तित्व को कभी प्रकट नहीं करेंगे, उन्हें प्रशिक्षण दिया जाता है।

‘साध परिवार कौन हैं?’ माया जानना चाहती थी।

जिग्नेश ने उत्तर दिया, ‘सामान्य मनुष्य, जिनके पास ऋषियों या क्षत्रियों जैसी शक्तियां नहीं होतीं। मैं आपको साधों के बारे में बाद में और बताऊंगा।’

‘लेकिन संघ के अस्तित्व को गुप्त क्यों रखा जाए?’ माया उत्सुक थी।

जिग्नेश ने समझाया, ‘अज्ञात रहना महत्वपूर्ण है। हमारी शक्तियों और संख्या के कारण साध जगत में हमारा स्वागत नहीं होगा। कलियुग में तो बिलकुल नहीं, जहाँ हर कोई उन चीजों पर संदेह करता है जिन्हें वे नहीं समझते। कुछ साध हमारी श्रेष्ठ शक्तियों और क्षमताओं के कारण हमें देवता मान लेंगे और सच्चे परम चेतना का ध्यान करने के बजाय हमारी पूजा करेंगे। वहीं कुछ ऐसे भी होंगे जो हमसे डरेंगे, हम पर संदेह करेंगे और चिंतित होंगे कि हम मानवता के लिए खतरा हैं। अज्ञात और गुमनाम रहकर ही मानवता की सेवा करना और अपने भाग्य की पूर्ति करना बेहतर है। सप्तऋषियों ने 5000 वर्ष पूर्व संघ की स्थापना करते समय इसे मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में स्थापित किया था। संघ के नियम हैं और हम सभी उनका पालन करते हैं।’

माया चुपचाप संघ के विशाल आकार पर विचार कर रही थी। देश भर के स्कूलों में कितने युवा मानवता की रक्षा कर रहे हैं? उसका दिमाग चकरा गया।

इस संस्था का हिस्सा बनने का अवसर पाकर वह खुद को सम्मानित महसूस कर रही थी। उसके भीतर दृढ़ संकल्प जागा। उन्होंने कहा था कि उन्हें यकीन नहीं था कि वह सफल हो पाएगी।

हाँ, वह तैयार थी। चाहे कुछ भी करना पड़े।

अध्याय पचास

प्रथम पाठ

The Gurukul

माया और जिग्नेश बातें कर रहे थे कि तभी उन्हें मोटरबोट की आवाज़ सुनाई दी। सूरज आसमान में काफी ऊपर चढ़ चुका था और पर्यटक पार्क में प्रवेश कर चुके थे, जंगल के रास्तों पर सफारी के लिए जीप किराए पर ले रहे थे या नदी में मोटरबोट की सवारी कर रहे थे। माया कल्पना कर सकती थी कि नदी में मोटरबोट चलाते हुए, उसकी शांत सतह पर कभी-कभार मछलियों को उछलते देखना और मगरमच्छों की तलाश करना कितना अद्भुत अनुभव होगा।

मीरा, जिसने आज सुबह उसे जगाया था, ने उसे नदी में तैरने से मना किया था क्योंकि उसमें मगरमच्छ थे। शहर की भागदौड़ भरी जिंदगी से दूर सुकून पाने के लिए यह कितनी शानदार जगह है!

'पर्यटक।' जिग्नेश ने नाक सिकोड़ी।

वे एक छात्रा के पास से गुज़रे जो पालथी मारकर बैठी थी, उसकी आँखें बंद थीं और वह वही मंत्र जप रही थी जो माया ने कल रात गुरुकुल में प्रवेश करते समय सुना था। तिवारी ने उसे बताया था कि यह मंत्र लगातार जपा जाता है।

'क्या पर्यटक कभी गुरुकुल में जाने की हिम्मत करते हैं?' माया यह जानना चाहती थी।

'बिल्कुल नहीं।' जिग्नेश बेहद नाराज़ लग रहा था। 'नदी किनारे पर अभेद्यता का भ्रम पैदा करने के लिए एक शक्तिशाली मंत्र का प्रयोग किया गया है। इससे यह सुनिश्चित हो गया है कि कोई भी उस जंगल को पार करने की हिम्मत नहीं करेगा जो नदी के किनारे तक जाता है।' उसने पेड़ों के उस किनारे की ओर इशारा किया जिस पर वे चल रहे थे। 'गुरुकुल पूरी तरह से मानव जाति से अलग-थलग है, हमारे अदृश्यता के सिद्धांत के अनुसार। और, जैसा कि आपने देखा है, गुरुकुल की सीमा के साथ-साथ, बारी-बारी से विद्यार्थी तैनात हैं, जिनका एकमात्र दायित्व एक दूसरा सुरक्षा कवच बनाना है जो यह सुनिश्चित करता है कि गैर-मानव घुसपैठियों को भी बाहर रखा जाए। वे जिस मंत्र का जाप करते हैं, वह इसी उद्देश्य के लिए है।'

माया को अब समझ आ गया था कि वीरेंद्र अर्जुन को यहाँ क्यों लाया था। यह धरती पर सबसे सुरक्षित जगह थी।

क्या यह संभव था कि शुक्र कल रात इसलिए प्रकट नहीं हुआ क्योंकि उसे यह बात पता थी? या इसके पीछे कोई और कारण था?

माया ने अपने विचारों को किनारे रख दिया। जिग्नेश फिर से बोलने लगा था।

'तुम्हारे पहले पाठ का समय आ गया है,' वह कह रहा था। 'योगिक शक्तियों – सिद्धियों – के बारे में तुम्हारी क्या समझ है?'

माया इस अप्रत्याशित प्रश्न से स्तब्ध रह गई। पहले तो वह कहना चाहती थी कि उसे कुछ पता नहीं। भला उसे योगिक शक्तियों के बारे में कैसे पता चलेगा? फिर उसे याद आया कि उसने प्राचीन ऋषियों के बारे में बहुत कुछ पढ़ा था, जिन्होंने विशेष शक्तियां प्राप्त करने के लिए अक्सर सैकड़ों वर्षों तक ध्यान किया था। उसने अपने विचार जिग्नेश को बताए।

‘बिल्कुल सही,’ जिग्नेश प्रभावित होकर बोला। ‘यह बीते युगों में संभव था, जब मनुष्यों की आयु वर्तमान आयु से कई गुना अधिक थी। कलियुग में शुद्ध तपस्या से सिद्धियाँ प्राप्त करना असंभव है। तो फिर आपको क्या लगता है कि आप जैसे युवाओं ने ऐसी शक्तियाँ कैसे प्राप्त कर लीं, जिन्हें प्राचीन काल में योगियों को ध्यान के माध्यम से प्राप्त करने में सैकड़ों, बल्कि हजारों वर्ष लग जाते थे?’

एक बार फिर, माया के पास कोई जवाब नहीं था। लेकिन उसने एक अनुमान लगाया। 'जीन?' उसने सुझाव दिया। 'जैसा कि आपने कुछ मिनट पहले कहा था, संघ के सदस्यों के बेटे और बेटियाँ भी गण के सदस्य होते हैं। उन्हें अपनी शक्तियाँ अपने माता-पिता और पूर्वजों से विरासत में मिली होंगी, जिनमें वे लोग भी शामिल हैं जो हजारों साल पहले रहते थे।'

जिग्नेश ने सिर हिलाया। ‘यही तार्किक उत्तर है। तार्किक और वैज्ञानिक। और साधकों के लिए पर्याप्त है। लेकिन हमारे लिए नहीं। जीन महत्वपूर्ण हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है। क्योंकि हममें से प्रत्येक जिस वंश से आता है, उसके पीछे एक कारण होता है। और यदि आप ऋषि बनना चाहते हैं, तो आपको सत्य जानना होगा।’ उसने उसे गौर से देखा। ‘लगता है आप प्राचीन ग्रंथों से काफी परिचित हैं।’

माया ने अनिच्छा से स्वीकार किया, “पिताजी मुझे उन्हें पढ़ने के लिए मजबूर करते थे। उन्होंने मुझे संस्कृत सिखाई और फिर यह सुनिश्चित किया कि मैं उनके द्वारा दी गई सभी पुस्तकें पढ़ूँ। महाभारत, रामायण, पुराण और वेद। सभी मूल संस्कृत ग्रंथ।”

जिग्नेश ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'तुम्हें यह बहुत बुरा लगा होगा,' उसने उससे सहानुभूति जताते हुए कहा।

माया अचंभित रह गई। यह पहली बार था जब जिग्नेश ने उसके बारे में कुछ समझा था।

‘हाँ, मैंने पढ़ा था,’ उसने सहमति जताते हुए कहा। ‘मैं जो पढ़ रही थी, उसका आधा भी मुझे समझ नहीं आ रहा था। मुझे कभी पता नहीं चला कि पिताजी ने इस पर इतना ज़ोर क्यों दिया। यह एकमात्र ऐसी चीज़ है जो मुझे याद है कि उन्होंने मुझ पर थोपी थी।’

‘तो फिर,’ जिग्नेश ने बात जारी रखते हुए कहा, ‘मैं आपको जो कुछ बताने जा रहा हूँ, उसमें से बहुत कुछ आपको परिचित लग सकता है, क्योंकि यह सीधे उन्हीं ग्रंथों से लिया गया है जिनका आपने उल्लेख किया है। यदि आपको पहले जो पढ़ा वह समझ में नहीं आया, तो अब आ जाएगा, क्योंकि मैं आपको समझाऊंगा।’

माया ने संदेह भरी निगाहों से उसे देखा। यह कुछ अशुभ सा लगने लगा था। उसके पिता ने उसे ग्रंथों को समझने में मदद करने का वादा भी किया था। उन्होंने उससे कहा था, 'पहले इन्हें पढ़ो, कहानियों और श्लोकों से परिचित हो जाओ। मैं सही समय पर सब कुछ समझा दूंगा।'

ऐसा कभी हुआ ही नहीं था। शायद अगर वह जीवित होता तो अपना वादा पूरा कर देता...

लेकिन अब उसकी चिंता यह थी कि कहीं यह पाठ उतना ही उबाऊ न हो जितना पहली बार पाठ्यपुस्तक पढ़ते समय हुआ था। यह सुमित्रा की कक्षाओं में वापस जाने जैसा था, जहाँ वह पाठ्यपुस्तक से केवल अंश पढ़कर सुनाती थी। यह किसी भी किशोर को नींद दिला सकता था। फर्क सिर्फ इतना था कि वहाँ वह तीस छात्रों की कक्षा में अकेली थी। यहाँ वह जिग्नेश के साथ

अकेली थी।

उसने दिलचस्पी दिखाने और ध्यान से सुनने का नाटक किया।

'सबसे पहले,' माया की आशंकाओं से बेखबर जिग्नेश ने आगे कहा, 'आपको यह समझना होगा कि हम साधकों को नीचा नहीं समझते। सच तो यह है कि उनमें और हममें कोई वास्तविक अंतर नहीं है। हम उनसे किसी भी तरह से श्रेष्ठ नहीं हैं, सिर्फ इसलिए कि हमारे पास ऐसी शक्तियां हैं जो उनके पास नहीं हैं। हम भी उन्हीं की तरह इंसान हैं। और पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य में सिद्धियों को प्राप्त करने की क्षमता है। बात सिर्फ इतनी है कि अधिकतर लोग इस भौतिक संसार में इतने उलझे हुए हैं, अपनी छोटी-छोटी आसक्तियों और अनगिनत भटकावों में इतने व्यस्त हैं कि सिद्धियों को प्राप्त करने के साधनों पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते। प्राचीन काल में इसके लिए तपस्या, पूर्ण एकाग्रता और समर्पण की आवश्यकता होती थी। आज के इस अल्पकालिक युग में, कितने लोगों में अभौतिक चीजों पर ध्यान केंद्रित करने की क्षमता है? इसीलिए हमारे पास गुरुकुल हैं।' हम ऐसे युवाओं को चुनते हैं जिनमें आगे बढ़ने की क्षमता हो, जिन्हें हम सिखा सकते हैं और जो स्वेच्छा से सत्य पर ध्यान केंद्रित करना सीखेंगे, बिना किसी विकर्षण या मोह के अपने ध्यान को भटकने दिए। और, दुख की बात है कि हमने पाया है कि जिन लोगों में ये क्षमताएँ नहीं होतीं, वे लगभग हमेशा वही होते हैं जो इन्हें प्राप्त करने का प्रयास करने में रुचि नहीं रखते। हम उन्हें साध कहते हैं, ताकि उन्हें गुरुकुल में प्रवेश करने वालों से अलग किया जा सके।

जिग्नेश ने माया की ओर देखा कि कहीं यह बात उसके लिए बहुत भारी तो नहीं हो रही है।

उसके चेहरे के भावों से तो यही लग रहा था।

उन्होंने विषय बदलते हुए जल्दी से कहा, 'कलियुग में योगिक शक्तियों की प्राप्ति में एक और कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो साधों को संघ और गण सदस्यों से अलग करता है, लेकिन हम उस पर किसी और समय चर्चा करेंगे। चलिए मंत्रों की ओर बढ़ते हैं।'

माया के चेहरे पर रुचि की झलक दिखाई दी। जिग्नेश को हौसला मिला।

उन्होंने पूछा, 'क्या आपके पिता ने आपको कोई मंत्र सिखाए थे?'

माया ने सिर हिलाया। 'कभी नहीं।'

'तो फिर आपको कल रात नरसिम्हा मंत्र का ज्ञान कैसे हुआ?'

'मैंने इसे उस डायरी में पढ़ा था जो मैंने परिषद को दिखाई थी। वही डायरी जो मैंने पिताजी की अध्ययन मेज से उठाई थी।'

'मेरा मतलब सिर्फ शब्दों से नहीं था। आप संस्कृत जानते हैं, इसलिए शब्द और उनके अर्थ आपको स्पष्ट होंगे। मेरा मतलब उच्चारण, अक्षरों का स्पष्ट उच्चारण, सही उच्चारण से था। आपको यह कैसे पता चला?'

मैंने रतन को मंत्र का जाप करते सुना और बस उनके निर्देशों का अनुसरण किया।

जिग्नेश ने गहरी सांस ली। वह समझ गया था कि माया को उसकी बात समझ नहीं आ रही है। उसने कहा, 'मैं समझाता हूँ। क्या तुम्हें वृत्रासुर की उत्पत्ति की कहानी याद है?'

माया ने अपना ज्ञान प्रदर्शित करने की उत्सुकता से सिर हिलाया। 'जब इंद्र ने अपने पिता

विश्वरूप का वध किया, तो त्वष्ट ने इंद्र को मारने के लिए एक राक्षस बनाने का निर्णय लिया। लेकिन उसने वृत्रासुर को बना दिया, जिसका वध इंद्र के हाथों होना तय था।' अचानक उसे बात समझ में आ गई। 'ओह, अब मैं समझ गई। त्वष्ट द्वारा "इंद्र" नाम का गलत उच्चारण ही इस गलती का कारण बना।'

'बहुत बढ़िया।' जिग्नेश प्रभावित हुआ। लड़की बहुत बुद्धिमान थी। उसने निष्कर्ष निकाला, 'तो देखा आपने, किसी भी मंत्र की सफलता की कुंजी हर शब्द का सही उच्चारण है।'

उन्होंने उसे अपने साथ लाई एक किताब दिखाई। "संघ और गण के सदस्य जिन मंत्रों का प्रयोग करते हैं, उनकी छह श्रेणियाँ हैं।" उन्होंने उंगलियों पर गिनकर बताया। "चिंता दूर करने और शांति प्रदान करने वाले मंत्र, सुरक्षा के लिए रक्षात्मक मंत्र, बुराई को नष्ट करने या भगाने के लिए आक्रामक मंत्र, माया उत्पन्न करने वाले मंत्र, पदार्थ को नियंत्रित करने वाले मंत्र और अंत में, सिद्धियों को सक्रिय करने वाले मंत्र। मन की शांति के मंत्र सबसे सरल हैं और उनमें सबसे कम योगिक शक्ति की आवश्यकता होती है। सिद्धियों को सक्रिय करने वाले मंत्र सबसे शक्तिशाली हैं और उनमें उच्चतम स्तर की योगिक शक्ति की आवश्यकता होती है।" उन्होंने वह किताब उसे सौंप दी।

उन्होंने कहा, 'अब आइए कुछ मंत्रों का अभ्यास करें ताकि चिंता दूर हो और मन को शांति मिले।'

अध्याय इक्यावन

कपूर की जांच

डॉ. गुप्ता का मानसिक स्वास्थ्य संस्थान और
व्यवहार विज्ञान
नई दिल्ली

रमन कपूर मनोरोग अस्पताल की लॉबी में दाखिल हुए और रिसेप्शन की ओर चल पड़े।

काउंटर के पीछे खड़ी युवती ने ऊपर देखा, उसके चेहरे पर भय का भाव था क्योंकि उसने उसकी वर्दी देखी थी।

कपूरी ने दोस्ताना अंदाज़ में मुस्कुराते हुए रिसेप्शनिस्ट से कहा, 'मैं आपके एक मरीज़ से मिलना चाहता था। राकेश सैनी नाम के एक व्यक्ति से। उन्हें दो हफ्ते पहले इलाज के लिए यहां लाया गया था।'

‘जी सर,’ रिसेप्शनिस्ट हकलाते हुए बोली। ‘मुझे पहले डॉ. गुप्ता को फोन करके उनकी अनुमति लेनी होगी।’

कपूरी ने सिर हिलाया। 'ज़रूर। मुझे डॉ. गुप्ता से व्यक्तिगत रूप से मिलकर उनसे बात करने में खुशी होगी।'

कपूरी जब लॉबी में लगे नकली चमड़े के सिंगल सीटर पर आराम से बैठ गए, तभी लड़की ने झटपट एक फोन किया। रिसेप्शनिस्ट ने फोन रखते हुए कपूर से कहा, 'डॉ. गुप्ता अभी आपसे मिलेंगे।'

सफेद वर्दी पहने एक परिचारिका कपूर के पास आई और उन्हें अपने पीछे आने का इशारा किया। कपूर उठे और उसके साथ लिफ्ट तक गए, जो उन्हें दूसरी मंजिल पर ले गई। परिचारिका उन्हें एक गलियारे से होते हुए अंत में एक कमरे तक ले गई और दरवाजा खटखटाया।

'अंदर आ जाओ,' कमरे के अंदर से एक दबी हुई आवाज सुनाई दी।

कर्मचारी ने दरवाजा धक्का देकर खोला और कपूर को अंदर आने का इशारा किया।

‘एसपी रमन कपूर?’ कपूर के कमरे में आते ही डॉ. गुप्ता ने अपनी डेस्क से नज़रें ऊपर उठाईं। अटेंडेंट दरवाज़ा बंद करते हुए गायब हो गई।

गुप्ता मध्यम कद के व्यक्ति थे, जिनका पेट थोड़ा निकला हुआ था और बाल सफेद और कम होते जा रहे थे। कपूर का अनुमान था कि उनकी उम्र पचास के आसपास होगी, शायद साठ के करीब। मनोचिकित्सक के रूप में शहर में उनकी अच्छी प्रतिष्ठा थी और अवसाद तथा अन्य मानसिक समस्याओं से पीड़ित लोगों की मदद करने के लिए वे जाने जाते थे। उनका अस्पताल न केवल मशहूर हस्तियों और अमीरों का इलाज करता था, बल्कि आर्थिक रूप से असमर्थ लोगों को भी उपचार प्रदान करता था।

‘मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?’ प्रारंभिक अभिवादन के बाद गुप्ता ने सीधे मुद्दे पर बात की।

जब दोनों आदमी बैठ गए, तो कपूर ने उनसे कहा, 'मैं आपके एक मरीज को देखना चाहता था। राकेश सैनी। उन्हें दो हफ्ते पहले यहां भर्ती कराया गया था।'

‘सैनी।’ गुप्ता के माथे पर शिकन आ गई। ‘ओह, जी हाँ, बिल्कुल। वह भ्रम से पीड़ित था।’

‘पुलिस रिपोर्ट में यही लिखा था,’ कपूर ने सहमति जताते हुए कहा। ‘क्या यह आम बात है, डॉक्टर साहब? मेरा मतलब है, क्या आपके पास इस तरह के बहुत सारे मामले आते हैं?’

“ज़्यादा लोग नहीं। लेकिन इसका कोई मतलब नहीं है। अवसाद अपने आप में भारत में एक बहुत बड़ी समस्या है। अनुमान है कि हर पाँच में से एक भारतीय इससे पीड़ित है। फिर भी, इससे प्रभावित बहुत कम लोग इलाज के लिए मनोचिकित्सक के पास जाते हैं। यह एक ऐसी स्थिति है जिसे नियंत्रित किया जा सकता है, लेकिन मानसिक उपचार कराने से जुड़े सामाजिक कलंक के कारण कई युवा पेशेवर मदद लेने से हिचकते हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण है।”

‘जी हां, ऐसा ही है। तो, ये सैनी,’ कपूर ने बातचीत को अपने आने के मूल कारण पर वापस लाने की कोशिश की। ‘क्या मैं उनसे मिल सकता हूँ?’

‘मुझे इस मामले के प्रभारी मनोचिकित्सक से बात करनी होगी।’ गुप्ता ने सोफे के बगल में रखी एक छोटी सी मेज पर पड़े इंटरकॉम रिसीवर को उठाया और दो अंकों का नंबर डायल किया। ‘डॉ. कुमार, क्या आप कृपया मेरे कार्यालय आ सकते हैं? यह बहुत जरूरी है। यह एक पुलिस मामला है।’

उसने रिसीवर नीचे रखा और कपूर की ओर देखा। 'क्या इस मामले में कोई प्रगति हुई है? मेरा मतलब है, क्या हत्यारे की पहचान के बारे में कोई सुराग मिला है?'

‘मैं इसीलिए यहां आया हूं। मैं जानना चाहता हूं कि वास्तव में क्या हुआ था। मुझे उम्मीद है कि सैनी हमें कुछ सुराग दे सकते हैं। जांच अधिकारी ने मुझे बताया है कि इस मामले में उन्हें कोई खास प्रगति नहीं मिली है।’

गुप्ता ने सहानुभूतिपूर्वक सिर हिलाया। 'हम देखेंगे कि सैनी आपको जानकारी देने की स्थिति में है या नहीं।'

दरवाजे पर दस्तक हुई। 'अंदर आओ!' गुप्ता ने पुकारा।

दरवाजा खुला और सफेद लैब कोट पहने एक युवक अंदर आया।

‘एसपी कपूर, डॉ. कुमार से मिलिए,’ गुप्ता ने दोनों व्यक्तियों का परिचय कराया। ‘एसपी कपूर राकेश सैनी से मिलना चाहते हैं,’ उन्होंने कुमार से कहा, ‘और मैंने सोचा कि मैं आपसे पूछ लूं कि क्या यह संभव होगा।’

कुमार ने सिर हिलाया। ‘मुझे खेद है कि ऐसा नहीं है। हमारे इलाज के बावजूद श्री सैनी की हालत में कोई बदलाव नहीं आया है।’ उन्होंने माथे पर शिकन डालते हुए कहा, ‘यह वाकई एक असामान्य मामला है। भ्रम इतना प्रबल है कि ऐसा लगता है जैसे इसने उनके दिमाग पर असाधारण ढंग से कब्जा कर लिया है, जैसा मैंने पहले कभी नहीं देखा।’ उन्होंने कपूर की ओर देखा। ‘मुझे खेद है, लेकिन मैं उन्हें आपसे मिलने की अनुमति नहीं दे सकता। एक पुलिस अधिकारी को देखकर वे उत्तेजित हो सकते हैं और संभवतः उनकी हालत और बिगड़ सकती है।’

‘आपका मतलब है,’ कपूर ने कहा, ‘कि उस दिन उसने जो देखा उसके बारे में उसकी धारणा नहीं बदली है? वह अब भी मानता है कि उसका भ्रम ही वास्तविकता है?’

कुमार ने सिर हिलाया। 'सही कहा। मुझे बस यही उम्मीद है कि उसके दिमाग में कोई स्थायी

बदलाव नहीं हुआ है जिससे यह भ्रम उसके जीवन भर एक वास्तविक स्मृति के रूप में बना रहे।'

'मैं समझता हूँ,' कपूर ने अपनी निराशा छुपाने की कोशिश करते हुए कहा। 'ऐसे में मुझे नहीं लगता कि वह पुलिस रिपोर्ट में जो कुछ भी है, उसमें कुछ और जोड़ पाएगा। आप दोनों के समय के लिए धन्यवाद।'

जब कपूर गुप्ता के दफ्तर से निकलकर सीढ़ियों से नीचे लॉबी की ओर जा रहे थे, तो उनके मन में यह ख्याल आया कि शायद जल्द ही उन्हें डॉ. गुप्ता की सेवाओं की ज़रूरत पड़ सकती है। इस मामले की जो प्रगति हो रही थी—या यूँ कहें कि बिल्कुल भी प्रगति नहीं हो रही थी—उससे उनके भीतर निराशा और चिंता की भावना बढ़ती जा रही थी। वे काफी समय से उस सुराग की तलाश में थे जो इस मामले को सुलझाने में उनकी मदद कर सके। लेकिन अब यह रास्ता भी बंद हो चुका था। यहाँ के विशेषज्ञ सैनी की उस ज़िद के आगे बेबस नज़र आ रहे थे, जो एक ऐसे विश्वास पर अड़ी हुई थी जो सैनी के अलावा किसी और को बेतुका लगता था।

इस मामले की पुलिस रिपोर्ट उन दो रिपोर्टों में से एक थी जो उसे पिछली रात दस्तावेजों के ढेर में से संयोगवश मिली थीं, जिन्हें वह बड़ी लगन से खंगाल रहा था। दोनों रिपोर्टें रहस्यमय हत्याओं से संबंधित थीं जो लगभग एक जैसी थीं, और एक तीसरी हत्या का भी जिक्र था।

धनंजय त्रिवेदी का निधन.

तीनों हत्याओं में स्कूल या कॉलेज के शिक्षकों की मौत हुई थी। तीनों मामलों में, पीड़ित के आंतरिक अंगों को पांचवीं डिग्री के जलने के निशान थे, जबकि उनकी त्वचा और कपड़े आग से अछूते रहे थे।

कपूरी की उम्मीद तब बढ़ गई जब उन्होंने पढ़ा कि हत्याओं में से एक का चश्मदीद गवाह है। राकेश सैनी। वह भी एक शिक्षक और पीड़ित का करीबी दोस्त था। पीड़ित की मृत्यु के समय दोनों साथ थे।

सैनी की गवाही ने प्रारंभिक पोस्टमार्टम रिपोर्ट में वर्णित मृत्यु के कारण का समर्थन किया था। लेकिन यह उससे कहीं आगे तक गई थी।

सैनी ने दावा किया था कि उसने अपने दोस्त को अचानक आग की लपटों में घिरते देखा था। एक पल पहले दोनों बात कर रहे थे; अगले ही पल पीड़ित आग की चपेट में आ गया। सैनी ने दावा किया था कि उसने न केवल आग देखी थी बल्कि उसकी गर्मी भी महसूस की थी। उसने यह भी कहा था कि आश्चर्यजनक रूप से आग से कोई धुआं नहीं निकल रहा था।

लेकिन उनकी गवाही का अंतिम बयान हास्यास्पद की हद तक पहुंच गया। यह स्पष्ट रूप से एक भ्रम था।

सैनी को यह विश्वास ही नहीं हो रहा था कि उसके दोस्त का शरीर आग की लपटों से अछूता रहा होगा। उसका कहना था कि आग इतनी तेज़ थी कि उसके दोस्त का शरीर राख के ढेर में बदल गया था। यहां तक कि जब पीड़ित के शव को हत्या स्थल से हटाया जा रहा था, तब भी सैनी को केवल राख को ले जाते हुए ही दिखाई दे रहा था।

कपूरी ने आह भरी। उन्हें उम्मीद थी कि सैनी से मुलाकात से मामले पर कुछ रोशनी पड़ेगी और शायद पुलिस को दिए गए उनके अजीबोगरीब बयान का भी कुछ स्पष्टीकरण मिल जाएगा।

अफसोस, उन्हें ऐसा कुछ भी नहीं मिला जिससे सैनी के उस दावे को बदला जा सके जो उन्होंने अपनी आंखों से देखा था।

अध्याय बावन

ट्रैक और ट्रिक्स

दिन 6

एसपी कपूर का कार्यालय

नई दिल्ली

पन्ना से मिली रिपोर्ट सुनकर रमन कपूर का चेहरा उतर गया। ग्वालियर से पुलिस टीम कल राष्ट्रीय उद्यान में विधिवत पहुँच गई थी और पार्क रेंजरों के सहयोग से उन्होंने दो पूरे दिन उस क्षेत्र की छानबीन की थी जहाँ हरीश को कथित तौर पर अलौकिक अनुभव हुए थे।

ज़ाहिर है, कपूर ने तलाशी दल को हरीश की रिपोर्ट की सही जानकारी नहीं दी थी; और हरीश के पास भी अपने साथ हुए भयानक अनुभव के बारे में खुलकर बताने का कोई कारण नहीं था। दरअसल, अब उसे थोड़ी शर्मिंदगी महसूस होने लगी थी, दिन के उजाले में दूसरे लोगों के साथ जंगल में चलते हुए उसे खुद पर शक होने लगा था। क्या वह कुछ गलत देख रहा था? क्या उसे मतिभ्रम हो रहा था?

दिल्ली से लंबी और थका देने वाली यात्रा के बाद, वह लगातार चिंता में डूबा हुआ था, उसे पता नहीं था कि अगला भोजन कब मिलेगा या शौचालय जाने का समय कब मिलेगा। एक पुलिसकर्मी का काम कभी आसान नहीं होता और यह विशेष कार्य तो और भी कठिन था। क्या यह संभव था कि यात्रा की थकान और तनाव के कारण उसके दिमाग में ऐसी चीजें दिखाई दे रही थीं जो वास्तव में मौजूद नहीं थीं? आखिरकार, उसके साथ कुछ भी नहीं हुआ था। वह सुरक्षित था, हालांकि इस पूरे अनुभव से थोड़ा आघात जरूर लगा था।

इस बीच, तलाशी दल को कुछ पता ही नहीं था। उन्हें वास्तव में यह भी नहीं पता था कि वे क्या खोज रहे हैं। उन्हें बस इतना बताया गया था कि दिल्ली से भागे तीन अपराधी आधी रात को पार्क में घुस गए थे और वापस नहीं लौटे। हरीश ने सचमुच इस बात की कसम खाई थी। उसने पूरी रात पार्क के बाहर अपनी जिप्सी में कांपते हुए और डरे हुए बिताई। वह पार्क के अंदर कदम नहीं रखना चाहता था, लेकिन अपनी जगह भी नहीं छोड़ना चाहता था।

उलझन में डूबी खोज टीम को कुछ भी खास नहीं मिला। वे उसी रास्ते पर गए थे जहाँ हरीश का सामना आत्माओं से हुआ था और फिर पार्क से भागने के लिए वापस लौट आए थे। पटरियों का पीछा करना मुश्किल था क्योंकि जब तक ग्वालियर की टीम पन्ना पहुँची, अनगिनत पर्यटक किराए की जीपों में जंगल के रास्ते से नीचे आ चुके थे, वन्यजीवों, खासकर पन्ना के प्रसिद्ध बाघों को देखने की चाह में। अब एक पटरी को दूसरी से अलग पहचानना नामुमकिन था।

फिर भी, दल जंगल में चारों ओर फैल गया था, दोनों दिन अंधेरा होने से पहले जितना संभव हो उतना क्षेत्र कवर करने की कोशिश कर रहा था। खासकर हरीश सूर्यास्त से पहले पार्क से निकलना चाहता था। चाहे जो भी हुआ हो, वह उस रात जैसी घटना दोबारा नहीं चाहता था।

कपूरी ने फोन नीचे रख दिया और कुछ देर तक खाली जगह को घूरते हुए बैठे रहे। उनका दिमाग विचारों और कल्पनाओं से भरा हुआ था, वे आगे क्या करना है, इस बारे में सोच रहे थे। हालांकि, उन्हें फैसला लेने में ज्यादा समय नहीं लगा।

वह अपनी डेस्क से उठा, अपनी टोपी उठाई और सिर पर ठीक से पहन ली। उसने एक कांस्टेबल से कहा, 'मेरी गाड़ी तैयार रखो। और सुरेश को फोन करो। जी हां, वही फॉरेंसिक वाला। मैं चाहता हूं कि वह आधे घंटे में उपाध्याय के घर पर मुझसे मिले। उसे समय पर पहुंचने के लिए कह देना।'

ठीक तीस मिनट बाद कपूर माया के घर पहुंचे। सूरज डूब चुका था और सुनसान सड़क पर स्ट्रीट लैंप की हल्की रोशनी फैली हुई थी। सुरेश का अभी तक कोई अता-पता नहीं था।

कपूरी ने सिर हिलाया। ये फॉरेंसिक टीम तो कभी समय पर आती ही नहीं।

'चाबियाँ।'

कपूर के साथ आए कांस्टेबल ने उन्हें घर की चाबियां सौंप दीं। कपूर सामने के दरवाजे तक गए और उसे खोला।

दरवाजा हल्की चरमराहट के साथ खुला। बैठक कक्ष अँधेरे की गुफा जैसा था।

कपूर निडर होकर घर में दाखिल हो गया। उसे पता था कि लाइट के स्विच कहाँ हैं।

उपाध्याय की मृत्यु के बाद से घर में कोई बदलाव नहीं हुआ था। जैसे ही बत्तियाँ जलीं, सबसे पहले उनकी नज़र दीवारों, सोफे और कालीन पर लगे खून के धब्बों पर पड़ी।

वह जल्दी से बैठक कक्ष से आगे बढ़ गया। वह यहाँ आने के लिए नहीं आया था। वह अध्ययन कक्ष में दाखिल हुआ। वहाँ हर जगह धूल ही धूल थी। किताबों पर, मेज पर, और मेज पर रखी किताबों पर भी।

कपूर मुस्कुराया। यह दिल्ली थी। दुनिया की धूल की राजधानी। गर्मी और धूल। कुछ ही दिनों में धूल साफ किए बिना, शेल्फ से गायब हुई तीन किताबों की जगह भी धूल की एक पतली परत जम गई थी। कुछ हफ्तों में कोई यह अंदाजा भी नहीं लगा पाएगा कि हाल ही में तीन किताबें शेल्फ से हटाई गई थीं। ऐसा लगेगा मानो वे कभी वहां थीं ही नहीं।

भ्रम। वे चीजों को इतनी नाटकीय रूप से बदल सकते हैं। सबूतों को बदल सकते हैं। सुराग मिटा सकते हैं। मन को इस तरह भटका सकते हैं कि ऐसा लगे कि जादू हो गया है।

कपूरी जादू में विश्वास नहीं करते थे। वे यहाँ यह देखने आए थे कि पिछली यात्रा में उनसे कुछ छूट तो नहीं गया। उस समय, इतने सारे लोगों की भीड़भाड़ के कारण, संभव है कि उनका ध्यान भटक गया हो। ठीक वैसे ही जैसे किसी जादू के शो में होता है। हो सकता है कि वे असली जादू देखने से चूक गए हों। वे यही पता लगाने आए थे।

वह कौन सी चाल थी?

अध्याय तिरपन

कपूर की खोज

उपाध्याय हाउस

नई दिल्ली

कपूर अविश्वास से घूर रहा था। वह यहाँ इस बात को पूरी तरह स्वीकार करने के लिए आया था कि अपनी पिछली और एकमात्र यात्रा में उससे कुछ चूक हो गई होगी। अब वह खुद पर गुस्सा था। जाहिर तौर पर, वह अपनी गलती मानने के लिए पूरी तरह तैयार नहीं था।

उससे कुछ चूक हो गई थी।

और उनकी टीम के बाकी सदस्य भी ऐसा ही कर रहे थे।

इससे उसे ज़्यादा फ़र्क नहीं पड़ा। वे उतने सक्षम नहीं थे और उनसे कुछ चूक हो जाने पर उसे आश्चर्य नहीं हुआ। अगर उन्होंने सच में वह चीज़ ढूंढ ली होती तो उसे ज़्यादा आश्चर्य होता। लेकिन उसे अपनी दूरदर्शिता और अवलोकन क्षमता पर गर्व था। उसके लिए यह स्वीकार करना मुश्किल था कि उसने वास्तव में एक महत्वपूर्ण सुराग को नज़रअंदाज़ कर दिया था।

क्योंकि वह वहीं था, नजरों से ओझल होते हुए भी सबके सामने।

अध्ययन कक्ष में रखी मेज पुराने जमाने की थी। इसे प्राचीन शैली में डिजाइन किया गया था, जिसमें डेस्क के नीचे खुली जगह के दोनों ओर दराजों के दो सेट थे, और डेस्क दोनों तरफ से खुली थी, जिस पर लंबाई और चौड़ाई में नक्काशी की गई थी।

अध्ययन कक्ष के कालीन पर, डेस्क के बाईं ओर दराजों के नीचे की तंग जगह में, कागज का एक टुकड़ा पड़ा था। कपूर को अभी पता नहीं था कि यह महत्वपूर्ण है या नहीं, लेकिन इससे यह तथ्य नहीं बदलता था कि अध्ययन कक्ष की पहले से अच्छी तरह से जांच न करना उनकी लापरवाही थी। यह स्पष्ट था कि हत्या से पहले यह वहां मौजूद था।

क्या यह महत्वपूर्ण हो सकता है?

कपूरी घुटनों के बल बैठ गए। धीरे-धीरे, सावधानी से उन्होंने कागज का पन्ना उठाया।

'मालिक?'

कपूर उछल पड़े और सहज प्रतिक्रिया के रूप में चारों ओर घूम गए।

सुरेश, धिक्कार है! ये फॉरेंसिक जांच तो कतई नहीं।

‘आपने मुझे बुलाया था?’ सुरेश कपूर की प्रतिक्रिया से अनभिज्ञ था।

‘मैंने किया। तुम्हें दस मिनट पहले यहाँ होना चाहिए था, धिक्कार है!’

‘माफ़ कीजिए बॉस। एक नए केस में व्यस्त हो गया था।’ सुरेश ने अपने विषय पर बात शुरू की। ‘बिना सिर का शव। शरीर...’

'चुप रहो। यह मेरा मामला नहीं है।'

'बॉस क्षमा करना।'

‘बस बैठक कक्ष में इंतजार कीजिए, ठीक है?’

‘जी हां, बॉस।’ सुरेश मुड़कर बैठक कक्ष में लौट आया, उसे अब इस बात का गहरा एहसास हो गया था कि कपूर उससे नाराज हैं।

सुरेश के चले जाने के बाद, कपूर कागज का पन्ना ढूंढने के काम में वापस जुट गया। उसने उसे उठाया और ध्यान से पढ़ा।

सबसे पहले उसकी नज़र एक रेखाचित्र पर पड़ी। किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा बनाया गया एक मोटा-मोटा चित्र जो कलात्मक रूप से बहुत कुशल नहीं था। लेकिन रेखाचित्र बनाने की कुशलता की कमी के बावजूद, रेखाचित्र में दर्शाई गई वस्तु काफी स्पष्ट थी।

वह एक तलवार थी।

लेकिन यह कोई साधारण तलवार नहीं थी।

तलवार का आकार तो बिल्कुल स्पष्ट था। लेकिन किसी कारणवश, तलवार को आग की लपटों में घिरी हुई दर्शाया गया था।

यह एक जलती हुई तलवार थी।

अध्याय चौवन

अभिलेखागार

उपाध्याय हाउस

नई दिल्ली

कपूरी अविश्वास से अपने हाथों में पकड़े कागज के पन्ने को घूर रहा था। क्या यह किसी बच्चे की चित्रकारी थी? अब तो यह हास्यास्पद होता जा रहा था। उसने सोचा था कि उसे हत्याओं का एक अहम सुराग मिल गया है और उसके हाथों में बस एक जलती हुई तलवार का चित्र था।

अगर रेखाचित्र के नीचे लिखे शिलालेख न होते, जिन्हें कपूर समझ न सके, तो वह उस भद्दे रेखाचित्र को खारिज कर देते। लिपि देवनागरी थी, लेकिन भाषा स्पष्ट रूप से हिंदी नहीं थी।

रहस्य को सुलझाने के करीब पहुंचने के बजाय, मामला और भी गहरा गया था।

उसे इस पर बाद में विचार करना होगा। सुरेश यहाँ था। अब बाकी कामों को निपटाने का समय है।

उसने तलवार का चित्र बना हुआ कागज़ मोड़कर अपनी जेब में रख लिया। बैठक कक्ष से दूर रहने की अपनी सहज इच्छा को दबाते हुए, वह धीरे-धीरे उसमें चला गया।

सुरेश वहीं खड़ा रहा और जिज्ञासा भरी निगाहों से उसे देखता रहा।

कपूरी ने गहरी सांस ली। 'मैं चाहता हूं कि आप यहां जो कुछ हुआ, उसका पुनर्निर्माण करें।'

यह वह आखिरी चीज थी जो वह चाहता था। वह जानता था कि सुरेश को इन भयावह विवरणों में आनंद आएगा। उसके लिए यह किसी यातना के समान था।

लेकिन उसे इसकी ज़रूरत थी। उसे जानना ज़रूरी था।

सुरेश के चेहरे पर मुस्कान आ गई। उसे इस तरह की बातें अच्छी लगती थीं। 'जी हां, बॉस। मैंने हत्या वाले दिन ही आपको बताने की कोशिश की थी, लेकिन आपको कोई दिलचस्पी नहीं थी,' उसने शरारती मुस्कान के साथ कहा।

‘मुझे पता है, मुझे पता है।’ कपूर ने इस काम को स्वीकार कर लिया था। उन्होंने खुद को उस स्थिति के लिए तैयार कर लिया था जो उन्हें पता था कि निश्चित रूप से होने वाली है।

The Gurukul

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान

‘अरे एजे! थोड़ी बात करने का समय है?’ जिग्नेश द्वारा दिए गए होमवर्क के ढेर से थोड़ा ब्रेक लेकर माया अर्जुन को ढूंढ रही थी। लेकिन वह उसे कहीं नहीं पा सकी। आखिरकार उसने उसे गेस्टहाउस लौटते हुए देखा और फिर गायब होने से पहले उसे घेरने का फैसला किया।

अर्जुन ने थकी हुई निगाहों से माया की ओर देखा। 'मुझे नहीं पता, माया। मुझे नहाना है, कपड़े बदलने हैं और फिर अपने छात्रावास जाना है।'

‘क्या आपको छात्रावास आवंटित किया गया है?’

'हाँ।'

‘ऐसा क्यों है कि मैंने ऐसा नहीं किया?’

अर्जुन हैरान होकर बोला, 'तुमने नहीं देखा?' उसने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मुझे इन लोगों की

सोच का कोई अंदाजा नहीं है।'

'मैं महामति जिग्नेश से पूछूंगी,' माया ने मुंह बनाते हुए कहा। 'तुम थके हुए लग रहे हो, एजे।'

'मैं बहुत थक गया हूँ,' अर्जुन ने आह भरी। 'घर पर तो मुझे कभी एक दिन में एक घंटे से ज़्यादा अभ्यास नहीं करना पड़ता था।' उसने अपना सिर हिलाया, वह अभी भी अपने दिन की थकान से उबर नहीं पाया था। 'कल और आज मैंने सिर्फ़ तलवारबाज़ी का अभ्यास किया और जिम में कसरत की। अगर मंत्र सीखने में बिताया गया समय न गिना जाए तो। और मुझे संस्कृत भी नहीं आती, इसलिए यह दिन का सबसे आसान हिस्सा नहीं था। और अभी होमवर्क भी करना बाकी है।'

'मैं समझ गया तुम क्या कहना चाहते हो। मैंने भी पूरा दिन मंत्रों का जाप करते हुए बिताया है और अभी बहुत कुछ करना बाकी है। चलो, फिर तो तुम जाओ। तुम्हें अपना सामान पैक करके छात्रावास ले जाना है।'

अर्जुन ने सिर हिलाया और जल्दी से चला गया, जबकि माया गुरुकुल के अभिलेखागार की ओर चल पड़ी, जो छात्रावासों के पीछे बने एक छोटे से कमरे में स्थित था। उसने इस बात पर नाराज़गी न जताने की कोशिश की कि उसे अभी तक छात्रावास नहीं मिला था। दरअसल, वह इसका कारण समझ सकती थी। अर्जुन के विपरीत, जिसने गुरुकुल में प्रवेश के लिए अपनी योग्यता साबित कर दी थी, माया का मूल्यांकन अभी भी चल रहा था। शायद उसे तब तक गेस्ट हाउस में रहना पड़ेगा जब तक जिग्नेश गुरुकुल में उसके प्रवेश को मंजूरी नहीं दे देते। तभी उसे छात्रावास आवंटित किया जाएगा। कोई बात नहीं, उसने सोचा। वह इंतज़ार करेगी। लेकिन वह वहाँ पहुँच जाएगी।

आज दोपहर जब माया पहली बार अभिलेखागार वाले कॉटेज में दाखिल हुई तो वह दंग रह गई। जिग्नेश ने उसे मंत्रों पर कुछ होमवर्क दिया था, जिसके लिए उसे जिग्नेश द्वारा सुझाई गई कुछ पुस्तकों का सहारा लेना था। कॉटेज के अंदर मौजूद अद्भुत संग्रह को देखकर वह अवाक रह गई। अभिलेखागार पांडुलिपियों का खजाना था, जिनमें से कुछ स्पष्ट रूप से प्राचीन थीं, जो सदियों पहले चर्मपत्र पर लिखी गई थीं और कांच के बक्सों में सावधानीपूर्वक संरक्षित थीं। सबसे नाजुक ग्रंथों तक पहुंच संभव नहीं थी, लेकिन उनकी प्रतियां छात्रों के पढ़ने के लिए उपलब्ध थीं।

उसने अपना होमवर्क पूरा किया और फिर रीडिंग रूम में रखे लैपटॉप में से एक पर बैठ गई, जिसमें शीर्षक, विषय और लेखक के अनुसार सभी दस्तावेजों की सूची दी गई थी। आज सुबह पांडुलिपियों का संग्रह देखने के बाद उसके मन में एक विचार आया, जिसे वह अब अमल में लाना चाहती थी। उसने डेटाबेस में कुछ त्वरित खोजें कीं और जल्द ही उसे वह मिल गया जिसकी उसे तलाश थी।

जिस किताब की उसे तलाश थी, वह झोपड़ी की दूसरी मंजिल पर, सबसे अंधेरे कोनों में से एक में थी। ज़ाहिर है, यह कोई बहुत ज़्यादा खोजी जाने वाली किताब नहीं थी। किताब मिलने पर, वह भूतल पर स्थित पठन कक्ष में लौट आई और उसे पढ़ना शुरू कर दिया, साथ ही अपनी छात्र किट के हिस्से के रूप में मिली एक छोटी नोटबुक में नोट्स बनाने लगी।

'हम पांच मिनट में बंद कर रहे हैं,' अभिलेखागार के रक्षक, गुरुमूर्ति नामक एक बुजुर्ग महर्षि

माया के पास आए और धीरे से बोले।

उसने माया की पढ़ी जा रही किताब पर एक नज़र डाली। 'प्राचीन भाषाओं में रुचि रखते हो, है ना?' उसके चेहरे पर एक दोस्ताना मुस्कान आ गई।

'जी', माया ने ऊपर उसकी ओर देखा, जब वह उस मेज के ऊपर खड़ा था जहाँ वह बैठी थी, और मन ही मन एक विचार पर चिंतन करते हुए हिचकिचाई। 'दरअसल,' उसने हिम्मत जुटाते हुए कहा, 'मैं ब्रह्मभाषा के संदर्भों की तलाश कर रही हूँ।'

गुरुमूर्ति ने सोच-विचार करते हुए अपने होंठ सिकोड़े। उन्होंने माया की पढ़ी जा रही किताब पर हाथ फेरा। 'यह किताब शायद यहाँ मौजूद सबसे अच्छी किताब है।' उन्होंने माया की ओर ज्ञान भरी नज़रों से देखा। 'लेकिन तुम्हें पता है, हर किताब से बहुत कुछ नहीं मिलेगा। ब्रह्मभाषा संस्कृत की जननी थी। देवताओं की भाषा। इसका व्याकरण स्वयं इंद्र, सोम और महेश ने तय किया था, ऐसा कहा जाता है। यह हम मनुष्यों के लिए नहीं थी। हमें संस्कृत – देवभाषा – मिली, जो ब्रह्मभाषा की एक उप-बोली है। उस समय भी इसके बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं थी। मुझे डर है कि हज़ारों साल पहले जो ज्ञान बहुत कम था, वह आज हमारी किताबों में शायद ही बचा है।'

माया बेहद निराश थी। वह जिस किताब का अध्ययन कर रही थी, उससे नोट्स बना रही थी, अन्य किताबों के संदर्भों को भी नोट कर रही थी, इस उम्मीद में कि उसे कहीं न कहीं कुछ ऐसा मिल जाएगा जिससे उसे अपने पिता की डायरी को समझने में मदद मिलेगी।

उसने निराश होकर किताब बंद कर दी।

उसके चेहरे पर निराशा देखकर गुरुमूर्ति ने नरमी से कहा, 'इसे वापस रखने की चिंता मत करो। मैं तुम्हारे लिए रख दूंगा।'

'धन्यवाद।' माया ने अपनी निराशा को छुपाते हुए मुस्कुराने की कोशिश की और दरवाजे की ओर चल पड़ी।

'अरे, एक मिनट रुको।'

माया ने मुड़कर देखा तो गुरुमूर्ति सोच में डूबे हुए थे। 'एक संभावना ऐसी है जिसके बारे में मैंने सोचा ही नहीं था। यह अभी-अभी मेरे दिमाग में आई है।'

'ब्रह्मभाषा का अनुवाद करने की कोई संभावना है?'

'नहीं, नहीं।' गुरुमूर्ति ने अपने हाथ फैला दिए। 'आज के ज़माने में धरती पर कोई भी ऐसा नहीं कर सकता। लेकिन अगर आप उस प्राचीन भाषा के बारे में और जानना चाहते हैं, तो भारत में केवल एक ही व्यक्ति जीवित है जो आपकी मदद कर सकता है।' वे रुके। 'खैर, उम्मीद है कि वे अभी भी जीवित होंगे। दशकों से उनसे कोई संपर्क नहीं हो पाया है।'

माया, गुरुमूर्ति के पास पहुंची, उसके चेहरे पर आशा भरी नज़र थी। 'वह कौन है?'

'उनका नाम सत्यवचन है। एक महर्षि। संभवतः आज जीवित सबसे शक्तिशाली महर्षि। शायद कलियुग के प्रारंभ से लेकर अब तक के सबसे शक्तिशाली महर्षि भी।'

माया की उम्मीदें आसमान छू गईं। यह काफी आशाजनक लग रहा था। 'और मैं उसे कहाँ ढूंढ सकती हूँ?'

गुरुमूर्ति परेशान दिख रहे थे। उन्हें एहसास हुआ कि उन्होंने माया की उम्मीदें बढ़ा दी थीं। और अब वे उसे निराश करने वाले थे।

उन्होंने कहा, 'मुझे नहीं पता। किसी को भी नहीं पता।'

अध्याय पचपन

माया ने फिर से सपने देखे

अतिथिगृह

The Gurukul

उस रात माया देर तक जागती रही, अपने पिता की नोटबुक का अध्ययन करती रही और श्लोकों और मंत्रों को बार-बार दोहराती रही। उसे उनमें से कुछ श्लोक तो पहले से ही याद थे और वह उन्हें आंखें बंद करके भी सुना सकती थी। उसने रेखाचित्रों और चित्रों का बार-बार अध्ययन किया, उन्हें समझने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।

अंततः उसने डायरी एक तरफ रख दी। नोटबुक में लिखी हुई पंक्तियों को समझने का कोई न कोई तरीका तो होना ही चाहिए।

यह तर्कसंगत था।

अब तक उसने जो कुछ भी सुना था, उससे यही लगता था कि कोई भी ब्रह्मभाषा को पढ़ या समझ नहीं सकता।

अभिलेखपाल के अनुसार, गुरुमूर्ति ने जिस रहस्यमय सत्यवचन के बारे में उसे बताया था, वह भी उसे भाषा के बारे में केवल और अधिक जानकारी ही दे सका। और यह तर्कसंगत भी था। यदि ब्रह्मभाषा देवताओं द्वारा बोली जाने वाली भाषा होती, तो किसी भी मनुष्य को यह भाषा नहीं सिखाई जाती।

तो उसके पिता को ये श्लोक कहाँ से मिले थे? यदि ब्रह्मभाषा एक ऐसी भाषा थी जिसे कोई मनुष्य नहीं जानता था, तो उसके पिता को यह भाषा कैसे प्राप्त हुई और उन्होंने इसे अपनी डायरी में कैसे लिखा?

उसके पास कोई न कोई स्रोत जरूर रहा होगा।

माया को महाभारत पढ़ने की याद आई। आदि पर्व के रहस्यमय श्लोक उसके मन में कौंध गए।

षष्टिं शतसहस्राणि चकारान्यां स संहिताम्
त्रिंशच्छतसहस्रं च देवलोके प्रतिष्ठितम्।
पित्र्ये पञ्चदश प्रोक्तं गन्धर्वेषु चतुर्दशः
एकं शतसहस्रं तु मानुषेषु प्रतिष्ठितम्।

इसके बाद उन्होंने साठ सौ रचनाओं का एक और संकलन पूरा किया।
हजार श्लोक। इनमें से तीस लाख श्लोक ज्ञात हैं।
देवों का लोक। पितरों के लोक में पंद्रह लाख, चौदह
गंधर्वों के लोक में एक लाख और एक लाख
मानव जगत में।

क्या यह संभव था कि महाभारत अपने गूढ़ तरीके से ब्रह्मभाषा के उन श्लोकों का उल्लेख कर रही हो, जो मनुष्यों के लिए सुलभ नहीं थे? क्या इन श्लोकों में वर्णित 'तीस लाख' श्लोक ब्रह्मभाषा में रचे गए थे? क्या यही कारण था कि केवल एक लाख श्लोक ही मनुष्यों के साथ साझा किए गए? और यदि यह सच था, तो कौन जानता था कि मानव संस्करण से गायब उन श्लोकों में क्या था? महाभारत में अभी भी कई रहस्य थे; कई श्लोक ऐसे थे जिन्हें समझा नहीं जा सकता था या जिनका कोई अर्थ नहीं था। क्या यह संभव है कि इन गायब श्लोकों में भी कोई रहस्य छिपा हो?

क्या यह संभव था कि उनके पिता को इन लुप्त श्लोकों का स्रोत मिल गया हो? या ब्रह्मभाषा में लिखे गए ऐसे ही श्लोक?

इसका पता लगाने का केवल एक ही तरीका था। उसे सत्यवचना से मिलना ही था। उसे नहीं पता था कि कैसे, लेकिन वह उसे ढूंढने के लिए दृढ़ संकल्पित थी।

माया ने बत्ती बंद कर दी। दिन बहुत लंबा था और वह थक चुकी थी।

उसने आज सीखे मंत्रों में से एक मंत्र का जाप करने का फैसला किया। मन की शांति और विश्राम का मंत्र। खुद को शांत करने का मंत्र। उसे इसकी बहुत ज़रूरत थी, क्योंकि वह लगातार सोच रही थी; उसके दिमाग में अनगिनत विचार अभी भी घूम रहे थे।

मंत्र का जाप करने के बाद उसे जल्दी ही नींद आ गई।

उसने सपना देखा।

चार रातों में दूसरी बार, उसने सपना देखा कि वह अपने शरीर से मुक्त है, हवा में तैर रही है, एक अदृश्य, अगोचर सी हवा उसे कमरे से बाहर ले जा रही है, इस बार कुटिया की दीवार के पार और गुरुकुल को छाया देने वाले पेड़ों की छांव के नीचे खुली हवा में।

फिर, वह और ऊपर, पेड़ों की चोटियों से भी ऊपर उड़ गई। रात का आकाश अनगिनत सफेद रोशनी से जगमगा उठा, मानो किसी अनसुने संगीत की धुन पर टिमटिमा रहा हो। यह अब तक का सबसे खूबसूरत नजारा था जो उसने कभी देखा था।

उसके नीचे, केन नदी शांतिपूर्वक बह रही थी, लाखों तारों की रोशनी उसके पानी से टकराकर टुकड़ों और रेशों में बिखर रही थी, जिससे ऐसा लग रहा था मानो नदी किसी अदृश्य स्रोत से प्रकाशित हो रही हो।

वह एक असामान्य शांति की अनुभूति से भर गई थी।

एक नाम उसके मन में उभरा। किसी दूर की स्मृति से निकला हुआ, वह नाम कुछ देर तक अस्पष्ट रूप से उसके आसपास मंडराता रहा, क्योंकि उसने उसे अनसुना कर दिया था। शांति और शाश्वत सुकून का वह अहसास वह खोना नहीं चाहती थी।

नाम दिखाई देने लगा।

अचानक ही, वह पलक झपकते ही एक दूसरे जंगल में पहुंच गई।

माया ने अचंभित और खोई हुई नज़रों से चारों ओर देखा। एक तरफ, एक नदी टेढ़े-मेढ़े घुमावों में बह रही थी, जिसके किनारे एक जंगल फैला हुआ था जो क्षितिज तक फैली नीची पहाड़ियों से होकर गुजरता था।

वह पहाड़ियों के ऊपर मंडरा रही थी, तभी उसे पेड़ों के बीच से गुजरता हुआ एक रास्ता दिखाई दिया। वह उस रास्ते पर चलने लगी, अपने ही सपने पर हैरान थी। बस एक विचार की ज़रूरत थी और वह पंख की तरह भारहीन होकर उस रास्ते पर चलने लगी। थोड़ी देर बाद, वह रास्ता पेड़ों के बीच गायब हो गया और पेड़ों की चोटियों के बीच से उसे एक इमारत की छत दिखाई दी।

क्या यह कोई झोपड़ी थी? तारों की रोशनी में इसे पहचानना मुश्किल था।

यह कौन सी जगह थी? यह पन्ना नहीं था। यह गुरुकुल भी नहीं था। उसने यह जगह पहले कभी नहीं देखी थी।

गुरुकुल और पन्ना के ख्याल आते ही, उसके नीचे का परिदृश्य गायब हो गया और उसने खुद को एक काले, सीमाहीन शून्य में विलीन होते हुए पाया...

माया अचानक झटके से बिस्तर पर उठ बैठी, वह पूरी तरह से जाग चुकी थी।

वह कहाँ थी?

उसके हाथों के नीचे चादर की सरसराहट और कमरे में एयर कंडीशनर की हल्की आवाज़ ने उसे होश में ला दिया। वह गेस्टहाउस में अपने कमरे में थी। पता नहीं क्यों, मौसम काफी ठंडा होने के बावजूद उसे पसीना आ रहा था।

यह सिर्फ एक सपना था। वह कहीं नहीं गई थी।

सिर्फ एक सपना । । ।

अध्याय छप्पन

माया अपनी परेशानियाँ साझा करती है

सातवां दिन

अतिथिगृह

The Gurukul

तिवारी माया के बोलने का इंतज़ार करते हुए उसे गौर से देख रहे थे। लड़की परेशान और दुविधा में लग रही थी। यह उसके चेहरे के भावों से साफ था और तिवारी उसकी झिझक और... क्या यह डर था? शायद। लेकिन किस बात का डर?

वह उस पर दबाव नहीं डालना चाहता था। माया सुबह उससे एकांत मुलाकात के लिए आई थी।

'मुझे... मुझसे कुछ ऐसी बात करनी है जो मैं किसी और के साथ साझा नहीं कर सकती,' उसने उससे कहा था। 'कुछ ऐसा जो गोपनीय है।'

उसने गेस्ट हाउस के बैठक कक्ष में शाम को उससे मिलने के लिए सहमति जताई थी, और यह सुनिश्चित किया था कि कमरे का दरवाजा बंद रहे, ताकि उन्हें निजता मिल सके।

माया को अपने विचारों से जूझते हुए, वह क्या करना चाहती है और उसके अनुसार सही क्या है, यह देखकर तिवारी चिंतित हो गए।

शायद यही उसके डर की जड़ थी, उसने सोचा।

इसलिए, उसने इंतज़ार किया। माया ने अर्जुन, वीरेंद्र या प्रमिला—जिन लोगों को वह अच्छी तरह जानती थी—के बजाय उससे बात करना चुना था। यह स्पष्ट था कि लड़की उस पर भरोसा करती थी। वह उसे निराश नहीं करना चाहता था। और सबसे बढ़कर, वह उसकी मदद करना चाहता था।

'रतन,' माया ने सावधानी से कहना शुरू किया, 'मुझसे वादा करो कि जो मैं तुम्हें बताने जा रही हूं, वह तुम किसी और को नहीं बताओगे।'

अगर आप नहीं चाहते कि मैं किसी को बताऊं, तो मैं नहीं बताऊंगा। मैं वादा करता हूं।

माया ने सिर हिलाया लेकिन और कुछ नहीं कहा।

उसे इतनी परेशानी किस बात से हो रही थी? तिवारी सोच रहा था कि क्या इसका संबंध उस रात की आशंकाओं से था जब शुक्र की राक्षसों की सेना गुरुकुल में प्रकट हुई थी।

कुछ देर बाद माया ने आखिरकार अपनी झिझक और आशंकाओं पर काबू पाते हुए कहा, 'मैं डरी हुई हूँ। मुझे समझ नहीं आ रहा और मैं डरी हुई हूँ। मुझे किसी और से इस बारे में बात करने में डर लग रहा है। जिस पर मैं भरोसा कर सकती हूँ, वो सिर्फ आप हैं।' उसने गिड़गिड़ाते हुए उसकी ओर देखा। 'कृपया मेरी मदद कीजिए।'

तिवारी ने नरमी से और आश्वस्त करने वाले लहजे में कहा, 'मुझे बताओ क्या बात है।'

'मुझे... मुझे नहीं पता कि मेरे साथ कुछ गलत हो रहा है... मेरा दिमाग... मुझे नहीं पता। मैं डरी हुई हूँ,' माया ने दोहराया।

'तुम्हें किस बात से डर लग रहा है?'

‘मुझे ये सपने आ रहे हैं,’ माया के शब्द जल्दबाजी में निकले, मानो उसे डर हो कि अगर उसने जल्दी से अपनी बात नहीं कही तो कहीं वो अपना मन न बदल ले और कुछ छुपा न ले। ‘अजीब सपने। कभी-कभी डरावने सपने।’ उसने अपनी आवाज़ धीमी कर ली, मानो उसे डर हो कि कोई सुन न ले। ‘पहला सपना आपके घर में था। उस रात जब आपने मुझे मेट्रो स्टेशन पर बचाया था।’

अब तिवारी की बारी थी हिचकिचाने की। वह पूछने से लगभग डर रहा था। 'तुमने क्या सपना देखा था?' उसने आखिरकार पूछा।

'यही बात मुझे डराती है। मैंने ऐसी जगहों के सपने देखे हैं जहाँ मैं कभी नहीं गया। ऐसी चीजें जो मैंने कभी नहीं देखीं। मुझे नहीं पता क्यों और कैसे।'

‘मुझे बताओ तुमने अपने सपनों में क्या देखा,’ उसने उसे धीरे से उकसाते हुए कहा।

माया ने उसे सब कुछ बताया। तिवारी के अतिथि कक्ष में सोते हुए उसने अपने सपने में जो कुछ देखा था, सब कुछ उसे सुनाया। उसके घर का खून से सना दृश्य, वह सुनसान, घुमावदार, संकरी सड़क जिस पर उसने लैंड क्रूज़र को जाते देखा था, शुक्र और उसके रंग-बिरंगे राक्षसों से भरा भयानक सपना। उसने पिछली रात के अपने दूसरे सपने का वर्णन किया, भारहीनता की अनुभूति जो उसने अपने पहले सपने में महसूस नहीं की थी, दृश्यों का क्षणिक परिवर्तन और पहाड़ियों पर स्थित जंगल जो उसने देखा था।

जब उसने अपनी बात खत्म की तो तिवारी चुप रहा। अब उसे अपनी खुद की समस्याओं से निपटना था।

माया ने उसकी चुप्पी को और विस्तार से समझाने के लिए प्रोत्साहन समझ लिया। वह बेखबर होकर अपनी बात पर अड़ी रही।

‘मुझे सपने नहीं डराते। मुझे डर इस बात से लगता है कि जो मैं देख रही हूँ वो बिल्कुल असली लग रहा है।’ उसकी आवाज़ में जोश आ गया। ‘तुम्हें याद है जब हम पन्ना जा रहे थे और तुमने मुझसे पूछा था कि क्या मैं कुछ ढूंढ रही हूँ? दरअसल, मैं बेचैनी से इधर-उधर देख रही थी क्योंकि मैंने सपने में तुम्हारे घर के पास वही सड़क देखी थी। सपने में लैंड क्रूज़र उसी सड़क पर चल रही थी। जब हम उस सड़क पर गए तो मुझे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ क्योंकि वो बिल्कुल वैसी ही थी जैसी मैंने सपने में देखी थी! तब तो मुझे समझ नहीं आया। लेकिन बाद में मुझे एहसास हुआ कि उसी सपने में मैंने उन राक्षसों को भी देखा था जिनसे हमने गुरुकुल के बाहर खुले मैदान में लड़ाई की थी। वे उन जीवों में से थे जिनसे शुक्र बात कर रहा था। मुझे याद नहीं कि वह उनसे क्या कह रहा था, लेकिन मुझे वे जीव साफ-साफ याद हैं। सपने में तो मैं उन्हें लगभग महसूस कर सकती थी, वो इतना असली लग रहा था।’

माया ने बोलना बंद कर दिया और तिवारी की ओर देखने लगी, उसके हाथ उसकी गोद में थे। ‘मेरे साथ क्या हो रहा है, रतन? मुझे ऐसे सपने क्यों आ रहे हैं? मुझे डर लग रहा है। क्या मैं सपने में ऐसी चीजें देख रही हूँ जो किसी तरह सच हो जाती हैं?’

तिवारी ने गहरी सांस ली। 'क्या आप अपनी कही हर बात को लेकर पूरी तरह आश्वस्त हैं?'

माया ने सिर हिलाया।

‘आपने इस बारे में किसी और को न बताकर सही किया।’ तिवारी हिचकिचाए। ‘लोग गलत

समझ सकते हैं।'

'गलतफहमी?' माया असमंजस में थी।

जी हाँ। देखिए, आपने अपने पूरे जीवन में कभी भी योगिक शक्ति का कोई संकेत नहीं दिखाया। किसी ने भी आपमें ऋषि बनने की कोई क्षमता नहीं देखी। इसीलिए आपको कभी भी किसी गुरुकुल में भर्ती के लिए संपर्क नहीं किया गया। लेकिन अगर आपके सपने संकेत देते हैं, तो लोग यह सोचने को मजबूर हो सकते हैं कि कुछ गड़बड़ है।

'जैसे क्या?' माया को समझ नहीं आया।

तिवारी ने गंभीर स्वर में कहा, 'जैसे तुम शुक्र के एजेंट हो।'

अध्याय सत्तावन

तिवारी बताते हैं

अतिथिगृह

The Gurukul

माया भयभीत हो गई। 'शुक्र का दूत! कोई ऐसा क्यों सोचेगा?'

'इसे समझाने का कोई और तरीका नहीं है।' तिवारी थोड़ी देर रुके। 'चलिए, आत्मा की अवधारणा से शुरू करते हैं। आप जानते ही हैं ना कि यह क्या है?'

'आत्मा। प्राण। यह शाश्वत है और शरीर से परे भी जीवित रहता है।'

सही। वास्तव में, एक तरह से कहें तो हमारे तीन शरीर हैं। प्याज की परतों की तरह, प्रत्येक शरीर दूसरे में लिपटा हुआ है। सबसे भीतरी शरीर आत्मा है, जिसे आप हमारा आध्यात्मिक शरीर कह सकते हैं। आत्मा सूक्ष्म शरीर से घिरी हुई है, जो मन, बुद्धि और अहंकार से मिलकर बना है। सबसे बाहरी परत हमारा भौतिक शरीर है, स्थूल शरीर, जो हमारे शारीरिक स्वरूप और बनावट को निर्धारित करता है।

माया आँखें फाड़कर सुन रही थी, और थोड़ी उलझन में भी थी। इसका उसके सपनों से क्या लेना-देना था? और इससे किसी को यह कैसे लग सकता था कि वह शुक्र की एजेंट है?

तिवारी ने उसके चेहरे पर संदेह का भाव देखकर उसे आश्वस्त करते हुए कहा, 'हम इस पर बात करेंगे। लेकिन पहले आपको आत्मा की अवधारणा को समझना होगा। देखिए, जब हम मरते हैं, तो आत्मा स्थूल शरीर को छोड़कर सूक्ष्म शरीर को अपने साथ ले जाती है। स्थूल शरीर तो नष्ट हो जाता है, लेकिन आत्मा और सूक्ष्म शरीर तब तक जीवित रहते हैं, जब तक हम अंततः भौतिक संसार को छोड़कर आध्यात्मिक जगत में वापस नहीं लौट जाते, सूक्ष्म शरीर को पीछे छोड़ते हुए। क्या आप मेरी बात समझ पा रही हैं?'

माया ने सिर हिलाया।

तिवारी ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "अब, बात ये है कि अत्यधिक विकसित योगिक शक्तियों के साथ, आत्मा जीवित रहते हुए भी भौतिक शरीर को छोड़ सकती है। भौतिक शरीर मरता नहीं है, बस जब तक आत्मा शरीर से बाहर रहती है, तब तक वो उससे वंचित रहती है।" उन्होंने कुछ देर रुककर इस विचार को मन में उतरने का समय दिया।

माया ने इस पर विचार किया।

'आपका मतलब है,' उसने धीरे से कहा, 'कि मेरे सपने सचमुच सपने नहीं थे। वे वास्तविक थे। मैं सपना नहीं देख रही थी कि मैं ग्रामीण इलाकों में उड़ रही हूँ और चीजें देख रही हूँ। मैं सचमुच ऐसा कर रही थी। या कम से कम, मेरी आत्मा ऐसा कर रही थी।' उसने पुष्टि के लिए तिवारी की ओर देखा। 'क्या मैं सही हूँ?'

'जी हां, माया। आत्मा में विचार की गति से चलने की क्षमता होती है। क्योंकि इस पर कोई भौतिक बंधन नहीं होता, यह केवल एक विचार के मार्गदर्शन में कहीं भी जा सकती है। क्या सपने देखते समय आप किसी विशेष स्थान या व्यक्ति के बारे में सोच रही थीं?'

माया की आँखें चौड़ी हो गईं। 'हाँ, मैं थी।' उसने तिवारी के घर में उस पहली रात के अपने

सपने को याद किया। 'जब मैंने अर्जुन के बारे में सोचा, तो मुझे पन्ना जाने वाली सड़क पर लैंड क्रूज़र चलती हुई दिखाई दी। फिर, किसी तरह, शुक्र का ख्याल मेरे मन में आया और मैंने उसे अपने राक्षसों की सेना के साथ देखा। और मैं पापा के बारे में सोचते-सोचते सो गई। इसीलिए...'

उसकी आवाज कांप उठी। 'क्या इसका मतलब यह है कि दीवार पर खून के धब्बे, बैठक के कालीन पर लगा खून वास्तव में मेरे पिता का था? क्या यही बात है...?' उसने अपनी आंख से एक आंसू पोंछा।

तिवारी चुप रहीं, जिससे उन्हें खुद को संभालने का समय मिल गया।

'तो मैं योगिक शक्तियों के बिना यह कैसे कर पाई?' माया ने अंततः अपने भावों पर काबू पाते हुए पूछा। 'आपने कहा था कि इसके लिए उच्च कोटि की योगिक शक्तियों की आवश्यकता होती है। मेरे पास योगिक शक्तियां नहीं हैं।'

तिवारी ने धीमी आवाज़ में कहा, 'यही तो समस्या है। अगर तुम्हारे पास योगिक शक्तियां नहीं हैं, तो फिर कोई तुम्हारे अनुभव और तुम्हारे कार्यों की व्याख्या कैसे कर सकता है? संघ में ऐसे महर्षि भी हैं जो अपनी तमाम शक्तियों के बावजूद यह कारनामा करने में असमर्थ हैं। फिर भी तुमने, पंद्रह साल की एक लड़की ने, यह कर दिखाया है।'

लेकिन इससे शुक्र से मेरा कोई संबंध नहीं जुड़ता!

तिवारी ने स्वीकार किया, 'सीधे तौर पर नहीं। लेकिन एक और अजीब घटना घटी है, जिसकी आसानी से व्याख्या नहीं की जा सकती।'

माया ने तिरछी नज़रों से उसकी ओर देखा। और क्या हो सकता था?

'तुम्हें याद है कि उस रात तुम खुले मैदान में बेहोश हो गए थे?'

उसने सिर हिलाया, उसे याद आया कि वह अचानक जाग उठी और खुद को एक युद्ध के बीच में पाया, जहाँ उसके चारों ओर लोग नरसिम्हा मंत्र का जाप कर रहे थे।

"खैर, आप सचमुच बेहोश नहीं हुए थे। मैंने आपको इसके बारे में पहले इसलिए नहीं बताया क्योंकि मुझे यकीन नहीं था कि मेरा अनुमान सही था। लेकिन आपने अभी जो बताया है, वह सही लगता है।"

'मेरे साथ क्या हुआ था?' माया ने रोते हुए पूछा। वह पहले से भी ज्यादा डरी हुई थी।

तिवारी को उस पर तरस आया। वह इस स्पष्टीकरण को आगे बढ़ाना नहीं चाहता था, लेकिन यही सबसे अच्छा तरीका था। उसे यह जानना ही था।

उन्होंने समझाया, "जब काला कोहरा दिखाई दिया, दरअसल, उसके प्रकट होने से पहले ही—शायद उसके प्रकट होने से कुछ सेकंड पहले—तुम सिर पकड़कर ज़मीन पर गिर पड़े, दर्द से चीख रहे थे और शायद बेहोशी की हालत में थे। तुम सिसक रहे थे। फिर, जितनी अचानक तुमने चीखना शुरू किया था, उतनी ही अचानक तुमने चीखना बंद कर दिया और एकदम शांत हो गए। तभी उस कोहरे ने राक्षसों को पैदा करना शुरू किया।"

माया को अपनी बात पर यकीन नहीं हो रहा था। 'क्या तुम मुझसे कह रहे हो कि जो मैंने महसूस किया, कोहरे और उन जीवों के प्रकट होने के बीच कोई संबंध था? रतन, तुम ऐसा कैसे मान सकते हो?'

तिवारी ने सिर हिलाया। 'मुझे इस पर यकीन नहीं होता, माया। लेकिन ये संयोग कुछ ज़्यादा ही बड़ा है, तुम्हें नहीं लगता? कोई अनजान व्यक्ति शायद ये बात उठा दे...' वो हिचकिचाया। ये मुश्किल होने वाला था। लेकिन वो चाहता था कि लड़की को पता चले कि अगर किसी को उसके अनुभवों के बारे में पता चल गया तो उसे किन मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। '...कि जब शुक्र ने तुम्हारे पिता की हत्या की थी, तब तुम भी वहाँ मौजूद थी। शुक्र से जुड़ी हर घटना में तुम मौजूद रही हो। जंगल में प्रेत इसका एक और उदाहरण हैं।'

'इसका कोई मतलब नहीं है!' माया ने रोते हुए कहा, उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे। 'मैं अपने पिता से प्यार करती थी। मैं अब भी उनसे प्यार करती हूँ! और शुक्र से मेरा कोई लेना-देना नहीं है! मैं उससे नफरत करती हूँ! मैं...' उसके मुँह से शब्द नहीं निकल रहे थे।

'मुझे पता है, माया। और मैं तुम्हारी बात पर यकीन करता हूँ। लेकिन इसीलिए तुम्हें मुझसे कही हर बात पर चुप रहना चाहिए। मैंने जंगल में जो कुछ देखा, उसके बारे में मैंने किसी को नहीं बताया। तुम्हें भी यह सुनिश्चित करना होगा कि तुम कभी भी, किसी को भी इसके बारे में न बताओ। अर्जुन को भी नहीं।'

माया ने रोते हुए सिर हिलाया।

'एक और बात है,' उसने अपने चेहरे से आंसू पोंछते हुए कहा। 'मुझे नहीं पता कि इसका मेरे सपनों से कोई संबंध है या नहीं... रात में मेरी आत्मा का शरीर छोड़ देना, लेकिन यह एक सामान्य कारक है।'

तिवारी ने ध्यान से सुना।

'कल रात, यह सब होने से पहले,' उसने अस्पष्ट रूप से इशारा करते हुए कहा, वह उन शब्दों को दोबारा नहीं कहना चाहती थी, 'मैंने एक मंत्र का जाप किया था। क्या इसका मेरे शरीर से बाहर निकलने के अनुभव से कुछ संबंध हो सकता है?'

वह कौन सा मंत्र था?

माया ने पाठ करना शुरू किया।

'शान्ता-कारं भुजग-शयनं पद्म-नाभं सुरेशम्
विश्व-धरं गगन-सदृशं मेघ-वरणं शुभांगम।
लक्ष्मी-कांतम कमल-नयनं योगी-भि-ध्यान-अगम्यम्
'वन्दे विष्णुम् भव-भय-हरम् सर्व-लोकैक-नाथम्'

तिवारी मुग्ध हो गए। माया का उच्चारण एकदम सटीक था और उन्हें मंत्र की शक्ति अपने शरीर में प्रवाहित होती महसूस हो रही थी। स्वरों और व्यंजनों की गूंज एक ऐसी धारा में विलीन हो रही थी जो उनकी मांसपेशियों, रक्त और मस्तिष्क में दौड़कर उन्हें सुकून और आराम दे रही थी। पल भर में उन्हें शांति और सुकून का अहसास हुआ और वे कुछ क्षणों के लिए मंत्र के प्रभाव में डूबे रहे, उस स्फूर्तिदायक शांति का आनंद लेते रहे।

अंततः, लगभग अनिच्छा से, वह बोला, 'यह दिलचस्प है। आप शायद सही कह रहे हैं। यह बिल्कुल वही मंत्र है जो मैंने आपके सोने से ठीक पहले अपने घर में आपके लिए पढ़ा था। आप थके हुए थे, डरे हुए थे, और आपका मन तरह-तरह के अप्रिय विचारों से भरा हुआ था, इसलिए

मैंने आपको आराम दिलाने के लिए यह मंत्र - शांताकारम मंत्र - पढ़ा था।'

'यह शुक्र नहीं है,' माया ने अनमने ढंग से जोर देकर कहा।

'मुझे पता है। अब, मुझे एक बात बताओ। कल रात जब तुम्हें शरीर से बाहर निकलने का अनुभव हुआ, तब तुम क्या सोच रहे थे?'

अध्याय अट्ठावन

माया की योजना

अतिथिगृह

The Gurukul

माया अपने कमरे से लगी बालकनी में खड़ी होकर ताज़ी रात की हवा का आनंद ले रही थी। शहर की भागदौड़ से यह कितना सुखद बदलाव था! चारों ओर फैले जंगल की खामोशी, दिन के समय गुरुकुल को छाया देने वाले पेड़ों की पत्तियों की सरसराहट, कृत्रिम बत्तियाँ बुझते ही झोपड़ियों पर छा जाने वाला पारदर्शी अंधेरा और आसमान में दूर तक फैले तारों का समूह—लाखों मील दूर चमकते गोले, अपनी रोशनी बिखेरते हुए; यह एक ऐसी दुनिया थी जो बड़े शहर की ज़िंदगी से बिलकुल अलग थी, जहाँ धूल, प्रदूषण, शोर और तेज़ रोशनी प्रकृति की शांत सुंदरता को ढक लेती थी और उस पर हावी हो जाती थी।

उसने मन ही मन सोचा कि यह सच था कि मनुष्य ने पृथ्वी पर विजय प्राप्त करने के अपने प्रयास में केवल खुद को इससे दूर ही कर लिया था।

उसे अब समझ आने लगा था कि गुरुकुल के लिए यह स्थान क्यों चुना गया था। उसे यकीन था कि बाकी गुरुकुल भी इसी तरह के स्थानों पर स्थित थे। यह उसके जैसे और गुरुकुल के अन्य बच्चों के लिए एकांत में स्वयं को खोजने और साथ ही अन्य मनुष्यों से जुड़े रहने के लिए एकदम सही जगह थी। अगर उन्हें अपनी आंतरिक शक्ति को खोजना था, जैसा कि जिग्नेश उसे लगातार प्रोत्साहित करता था, तो इससे बेहतर कोई जगह नहीं थी - बिना किसी तरह के व्यवधान या प्रलोभन के।

लेकिन माया का ध्यान कहीं और था। वह जानती थी और उसे यह भी पता था कि जिग्नेश भी इससे अनजान नहीं था। महेश के साथ ध्यान की कक्षाएं मददगार साबित हो रही थीं—उनसे उसे आत्मसंतुष्टि मिलती थी और वह अपनी आंतरिक ऊर्जाओं पर ध्यान केंद्रित कर पाती थी। कुछ दिन पहले हुए सदमे से उबरने में भी उन्हें मदद मिली थी। लेकिन ध्यान भी उसके भीतर की एक अजीब बेचैनी को शांत करने के लिए पर्याप्त नहीं था। उसे नहीं पता था कि यह बेचैनी कहां से आ रही है या क्यों है, लेकिन यह उसे लगातार परेशान कर रही थी, जैसे कोई हल्का, चुभने वाला सिरदर्द; फर्क सिर्फ इतना था कि इसमें कोई दर्द नहीं था, बस कुछ करने की तीव्र इच्छा थी।

लेकिन वह कार्रवाई क्या थी, यह उसे नहीं पता था।

उसे अपनी बेचैनी के कारण पर संदेह था। माया को लगा कि डायरी का इससे कुछ संबंध हो सकता है। ध्यान लगाने से पिता के निधन का दर्द कुछ हद तक कम हो गया था, लेकिन डायरी का रहस्य अभी तक सुलझा नहीं था। पिता के अंतिम शब्द बार-बार उसके कानों में गूंज रहे थे। वह उससे कुछ करवाना चाहते थे, लेकिन वह उसे यह नहीं बता पाए थे कि उसे क्या करना चाहिए।

और इस बात ने उसे परेशान कर दिया। उसे किसी न किसी तरह से अपने पिता द्वारा शुरू किए गए लेकिन अधूरे रह गए काम को पूरा करने की ज़िम्मेदारी महसूस हुई। वह इस मामले को खत्म करना चाहती थी; वह चाहती थी कि उसके पिता को भी इस मामले में शांति मिले।

आज रात रतन से हुई बातचीत से उसे एक विचार आया; इस काम को पूरा करने का एक संभावित तरीका। परिषद की बातों के बावजूद, उसे अब भी विश्वास था कि गंधर्वों के पास उसके पिता की डायरी के उन पन्नों का अनुवाद करने की कुंजी हो सकती है जिन्हें समझा नहीं जा सकता। हालांकि, उसके पास उन तक पहुँचने का कोई रास्ता नहीं था। कम से कम, कोई पारंपरिक तरीका तो नहीं। लेकिन, अगर तिवारी सही थे, तो उसके पास गंधर्वों तक पहुँचने का एक रास्ता ज़रूर था।

और उसने आज रात इसे आजमाने की योजना बनाई थी।

उदासी भरे स्वर में उसने जंगल की हवा में एक लंबी गहरी सांस ली और अपने कमरे में प्रवेश कर गई, और अपने पीछे बालकनी का दरवाजा बंद करके कुंडी लगा दी।

यह समय था।

उसने लाइट बंद कर दी, और ठान लिया कि वह इसे ठीक से करेगी। यह काम करना ही था और वह कोई जोखिम नहीं लेना चाहती थी।

ध्यान मुद्रा में बिस्तर पर लेटकर, उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और शांतकारम मंत्र का जाप करने लगी। मंत्र का जाप करने पर उसे जो तात्कालिक शांति का अनुभव होता था, वह उसके पूरे शरीर में समा गया और मन-शरीर के शांत होने से उसकी साँसें धीमी हो गईं।

मंत्र पूरा होने पर वह लेट गई, सोने की तैयारी में।

आज रात, उसे पता था कि वह कहाँ जा रही है।

कुछ ही पलों में वह सो गई।

माया को सपने आने लगे। उसे आश्चर्य हुआ कि इस बार वह जानती थी कि यह सपना नहीं है। जब वह अपने शरीर से बाहर निकली और अपने कमरे की छत से नीचे अपने शरीर को देखा, तो उसे पूरी तरह से एहसास हुआ कि यह सब सच है। यह सचमुच घट रहा था।

उस शाम तिवारी के साथ हुई बातचीत को याद करते हुए, उन्होंने बड़ी मुश्किल से अपने विचारों को गंधर्वों की ओर मोड़ा। यह वैसा सहज नहीं हुआ जैसा उन्होंने सोचा था।

गंधर्व घाटी।

ध्यान केंद्रित करना मुश्किल था। सत्यवचन, दिल्ली में उसका घर, उसका स्कूल, बाहर का जंगल, केन नदी और अनगिनत अन्य विचार गंधर्वों के विचार के साथ आपस में टकरा रहे थे। माया ने अपनी एकाग्रता बनाए रखने के लिए संघर्ष किया।

लेकिन कुछ न हुआ।

वह अपने बिस्तर के ऊपर लटकी रही, गहरी नींद में डूबी हुई अपने शरीर को नीचे देखती रही।

या फिर क्या वह मर चुकी थी? वह अंतर नहीं समझ पा रही थी। आखिर, अगर उसकी आत्मा उसके अस्तित्व का सार थी और अब वह उसके शरीर से बाहर निकल चुकी थी, तो क्या इसका मतलब यह नहीं था कि उसका भौतिक शरीर मर चुका था?

एक और विचार जिससे जूझना पड़ा। उसने उसे एक तरफ रख दिया।

गंधर्व घाटी।

फिर भी कुछ नहीं हुआ।

माया ने बार-बार कोशिश की, पर कोई फायदा नहीं हुआ। वह इसे समझ नहीं पा रही थी। रतन ने कहा था कि आत्मा विचारों की गति से यात्रा कर सकती है, विचारों द्वारा निर्देशित होकर। और पहले भी कई बार उसका यही अनुभव रहा था। किसी व्यक्ति या स्थान के मात्र विचार मात्र से वह कहीं और पहुँच जाती थी।

आज रात ऐसा क्यों नहीं हो रहा था?

अंततः, जो कुछ हो रहा था उसे समझने में असमर्थ और ऊर्जाहीनता की अनुभूति से अभिभूत होकर, उसने हार मान ली और अपने शरीर में लौट आई। किसी कारणवश, आज रात वह झटके से नहीं जागी।

माया चैन से सो रही थी।

अध्याय उनसठ

उत्तरों की तलाश में

आठवां दिन

The Gurukul

माया ने कल रात अच्छी नींद ली थी, फिर भी उसका पूरा दिन बेचैनी में बीता। उसका ध्यान भटक रहा था और वह इस पहेली को सुलझाने में असमर्थ थी कि वह अपने विचारों से अपनी आत्मा को निर्देशित करने में असफल क्यों रही। जब उसे पता नहीं था कि वह क्या कर रही है, तब तो वह आसानी से कर लेती थी, तो अचानक यह मुश्किल क्यों हो गया? यह संभव नहीं था कि रतन गलत हो या उसने उसे किसी भी तरह से गुमराह किया हो।

उसे स्पष्ट रूप से पता था कि उसमें कुछ ऐसी महत्वपूर्ण कमी थी जो उसके लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक थी। किसी तरह, वह इसे अचेतन रूप से कर पा रही थी—हालांकि ऐसा क्यों हो रहा था, यह उसके लिए एक रहस्य था—लेकिन पूरी तरह सचेत होने पर नहीं। यह बात समझ में नहीं आती थी कि उसे अपने गंतव्य के बारे में अचेतन रहना पड़े तभी वह विचारों की गति से यात्रा कर पाएगी। यह तो बिल्कुल व्यर्थ होगा। और रतन ने उसे समझाते हुए संकेत दिया था कि विचार आत्मा को दिशा दे सकते हैं।

तो फिर कल रात ऐसा क्यों नहीं हुआ?

दिनभर ध्यान भटकने के कारण उसे डांट पड़ती रही। सबसे पहले तो ध्यान की कक्षा के दौरान। कल ही तो महेश ने उसकी एकाग्रता की तारीफ की थी।

उन्होंने उससे कहा था, 'गुरुकुल में अभी-अभी प्रवेश करने वाली किसी व्यक्ति के लिए, तुममें अद्भुत एकाग्रता है। अभ्यास से तुम अपनी अंतर्मन की चेतना तक पहुँच पाओगी। ऐसा कर पाने वाले लोग बहुत कम होते हैं।'

महेश की तारीफ सुनकर अर्जुन ने आंखें घुमा लीं, लेकिन माया बेहद खुश थी। आखिरकार, अर्जुन के विपरीत, वह अभी भी एक बाहरी थी। उसकी शक्तियों और यहां उसकी मौजूदगी पर लगातार सवाल उठते रहते थे। इस तरह की तारीफ मिलना उसके लिए सौभाग्य की बात थी और उसने इसका भरपूर आनंद उठाया।

लेकिन आज का दिन बिलकुल अलग था। पिछली रात आत्म यात्रा के असफल प्रयास की वजह से उसकी एकाग्रता और ध्यान भंग हो गया था।

और महेश ने यह बात नोटिस कर ली थी।

उन्होंने माया को फटकार लगाते हुए कहा, 'यदि तुम अपने मन से सभी अनावश्यक विचारों, सभी आसक्तियों और उसमें प्रवाहित होने वाले सभी विचारों को दूर नहीं करोगी, तो तुम पूर्ण एकाग्रता कैसे प्राप्त करोगी? तुम पर्याप्त प्रयास नहीं कर रही हो, माया!'

माया रूठ गई थी, हालांकि वह अपने दिल में जानती थी कि महेश सही था।

'तुम ठीक हो?' अर्जुन ने चिंतित भाव से पूछा, फिर वीरेंद्र के साथ अपने प्रशिक्षण सत्रों के लिए रवाना हो गया।

माया ने बस सिर हिलाया, पिछली रात की असफलता के लिए खुद पर गुस्सा थी क्योंकि

उसने ध्यान भटकने दिया था। उसके मन में एक अनसुलझा संदेह घर कर गया था।

क्या परिषद को उसके बारे में जो संदेह थे, वे सही थे?

दिनभर उसकी निराशा और आत्मसंदेह बना रहा, जिसके चलते जिग्नेश ने उसे और भी फटकार लगाई। जिग्नेश की तीखी टिप्पणियों से भी उसका मूड बेहतर नहीं हुआ।

शाम तक माया का मिजाज बेहद खराब हो गया था। स्थिति और भी बदतर हो गई क्योंकि रात के खाने के समय उसे अर्जुन गुरुकुल के भोजनालय में नहीं मिला। यही दिन का एकमात्र समय था जब वे मिलते थे और वह रात के खाने के दौरान होने वाली उनकी संक्षिप्त बातचीत का बेसब्री से इंतजार करती थी, जिसमें वे गुरुकुल की कठिनाइयों के बारे में बातें करते थे और एक-दूसरे से अपने अनुभव साझा करते थे।

जब माया अकेले ही रात का खाना खाने बैठी, तो उससे थोड़ी कम उम्र की एक नौसिखिया लड़की उसकी मेज के पास आई।

नौसिखिए ने शर्माते हुए पूछा, 'क्या मैं आपके साथ बैठ सकता हूँ?'

माया ने उसे उस लड़की के रूप में पहचान लिया जिसने गुरुकुल पहुंचने वाली रात को उसे गेस्टहाउस में उसके कमरे तक पहुंचाया था। उसने अपने उदास मन को दबाकर उस लड़की के लिए मुस्कुरा दी।

'हाँ हाँ, क्यों नहीं?'

‘मेरा नाम अमीरा है। मैं तुम्हारा नाम जानती हूँ।’

माया ने अमीरा की ओर मुस्कुराते हुए पूछा, 'तो आप ऋषि हैं?' उसका यह सवाल कुछ निरर्थक सा लग रहा था। अमीरा ने सफेद वस्त्र पहने हुए थे; स्पष्ट था कि वह एक ऋषि थीं। लेकिन माया को उससे कहने के लिए और कुछ सूझा ही नहीं।

‘हां,’ अमीरा खिलखिलाकर हंस पड़ी। उसने चारों ओर चुपके से देखा और अपनी आवाज धीमी करते हुए फुसफुसाया। ‘फिर भी अभी नौसिखिया ही हूं। और मुझमें एक खास हुनर है।’

‘और वो क्या है?’ माया अब सचमुच उत्सुक थी।

'मैं एक मानसिक शक्ति वाली व्यक्ति हूं,' फुसफुसाते हुए जवाब आया।

‘ओह, क्या आप भविष्य देख सकते हैं?’

नहीं, मैं उस तरह की भविष्यवक्ता नहीं हूँ। मैं भविष्य नहीं देख सकती। लेकिन मैं अतीत देख सकती हूँ।

माया असमंजस में थी। 'यह उपहार कैसे हो सकता है?'

अमीरा ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मुझे नहीं पता। दाखिला लेते समय मुझे बताया गया था कि यह एक वरदान है।'

'एक मिनट रुकिए, क्या आपका मतलब यह है कि आप अतीत को तब भी देख सकते हैं जब आप वहां मौजूद नहीं थे?'

‘हां, बिल्कुल।’ माया को पहली बार में बात समझ न आने पर अमीरा को हैरानी हुई। ‘हालांकि मैं अतीत में एक निश्चित सीमा तक ही देख सकती हूं। मुझे अभी तक यह पता नहीं चला है कि मैं अतीत में कितनी दूर तक देख सकती हूं।’

‘हम्म।’ माया को समझ नहीं आ रहा था कि यह बात कितनी उपयोगी हो सकती है, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। ज़ाहिर है, अमीरा को अपने हुनर पर गर्व था और माया उसका उत्साह कम नहीं करना चाहती थी।

‘क्या तुम भी नौसिखिया हो?’ अमीरा उत्सुक थी।

‘मुझे पक्का नहीं पता।’ माया ने अपनी आवाज़ में तनाव छिपाने की कोशिश की। अमीरा ने उसकी दुखती रग पर हाथ रख दिया था, जिससे उसका पहले से ही उदास मन और भी बढ़ गया था। ‘उन्होंने मुझे बताया ही नहीं है।’

मुझे आश्चर्य हो रहा था कि आप अभी भी गेस्ट हाउस में क्यों हैं। वहां केवल मेहमान ही ठहरते हैं। छात्रों को पहले दिन ही छात्रावास आवंटित कर दिया जाता है। क्या आप जल्द ही हमें छोड़कर जा रहे हैं?

‘मुझे उम्मीद है ऐसा नहीं होगा। अब, अगर आप मुझे अनुमति दें, तो मुझे कुछ काम करना है।’ माया जवाब का इंतजार किए बिना उठी और आंसू रोकते हुए और अपने भीतर उमड़ रहे गुस्से और दुख की भावनाओं को दबाते हुए, आत्म-संदेह से और भी तीव्र हो गई, भोजन कक्ष से बाहर चली गई।

वह अभिलेखागार की ओर बढ़ी। गुरुमूर्ति हमेशा की तरह मुस्कुराते हुए वहीं थे। माया ने उन्हें अभिवादन में सिर हिलाया और जल्दी से आगे बढ़ गई ताकि वह उसकी बेमन से की गई मुस्कान को न देख सकें। डेटाबेस लैपटॉप की ओर बढ़ते हुए, वह एक लैपटॉप पर बैठ गई और खोज शुरू कर दी। कुछ ही देर में, उसे कुछ ऐसी पुस्तकों का पता चल गया जो उसे लगा कि उसके काम आएंगी।

किताबें लेकर वह गुरुमूर्ति के पास लौटी। ‘मुझे पता है देर हो गई है, लेकिन मुझे आज रात इन्हें पढ़ना है,’ उसने आँखों में विनती भरी नज़र से कहा। ‘क्या मैं इन्हें सिर्फ आज रात के लिए उधार ले सकती हूँ? मैं वादा करती हूँ कि कल लौटा दूँगी।’

गुरुमूर्ति ने उसे ज्ञान भरी निगाहों से देखा, फिर उससे किताबें लेकर पढ़ने लगे। ‘हम्म,’ उन्होंने सोच-विचार करते हुए कहा। ‘तुम्हारे लिए ये कुछ ज़्यादा ही मुश्किल है, ऐसा नहीं लगता?’ उन्होंने उसकी ओर देखा। ‘मेरी प्यारी, तुम जो भी योजना बना रही हो, सावधान रहना।’

उनकी आंखें ज्ञानवान और बुद्धिमान थीं, और उनकी गहराई में माया को अनेक प्रश्न दिखाई दिए।

माया ने उसकी चेतावनी से सबक लेते हुए बेसुध होकर सिर हिलाया। गुरुमूर्ति ने बिना कुछ कहे किताबों पर मुहर लगाई और उन्हें वापस माया को सौंप दिया।

'शुभ रात्रि।'

‘शुभ रात्रि,’ माया ने धीरे से जवाब दिया और अभिलेखागार वाले कॉटेज से लड़खड़ाते हुए बाहर निकल गई।

अपने कमरे में वापस आकर, माया ने कांपते हाथों से किताबें खोलीं और पढ़ना शुरू कर दिया।

किताबों में डूबी बैठी वह समय को तेजी से बीतने का इंतजार कर रही थी। सीखने के लिए

बहुत कुछ था, बहुत कुछ ऐसा था जो उसे पता नहीं था। बहुत कुछ ऐसा था जो गुरुकुल के बाहर की दुनिया को भी नहीं पता था। गुरुमूर्ति की चेतावनी उसे समझ में आ गई। अगर वह सावधान नहीं रही तो वह खुद को गंभीर नुकसान पहुंचा सकती थी।

लेकिन, उसने सोचा, उसका इरादा कुछ भी जटिल करने का नहीं था। वह तो बस जवाब ढूंढ रही थी।

कुछ घंटों की निरंतर खोज के बाद, उसे वह मिल गया जिसकी वह तलाश कर रही थी।

जब उसने आखिरकार किताबें बंद कीं, तो उसकी आंखें चमक रही थीं।

उसे पता था कि पिछली रात वह अपने विचारों के माध्यम से अपनी आत्मा को गंधर्व घाटी तक ले जाने में क्यों असफल रही थी।

अध्याय साठ

अर्जुन चिंतन करता है

दसवां दिन

The Gurukul

अर्जुन के लिए पिछले कुछ दिन बहुत भागदौड़ भरे रहे थे। वीरेंद्र ने उसे हर दिन कई घंटों के अभ्यास और जिम में कड़ी कसरत करवाकर खूब मेहनत करवाई थी।

'युद्धक्षेत्र में टिके रहने की ताकत और सहनशक्ति न हो तो तकनीक में महारत हासिल करने का कोई फायदा नहीं,' अर्जुन के चाचा ने उससे कहा था। वीरेंद्र की शारीरिक बनावट और सहनशक्ति, उनकी उम्र के हिसाब से, इस बात का प्रमाण थी कि वे अपनी कही बात को सच साबित करते थे। उनके शरीर पर जरा भी चर्बी नहीं थी। वे पूरी तरह से गठीले मांसपेशियों से भरे हुए थे। कई बार अर्जुन को खुशी होती थी कि वीरेंद्र उसके चाचा हैं। वह युद्ध में उनका सामना करने से डरता था। यहाँ तक कि सड़क पर होने वाली लड़ाई में भी।

अर्जुन बिना शिकायत किए लगातार मेहनत करता रहा, हालांकि हर शाम जब वे गुरुकुल के भोजनालय में भोजन के लिए मिलते थे, तो वह माया से अपनी मेहनत के बारे में थोड़ी-बहुत शिकायत जरूर करता था। इन दिनों यही एक समय था जब वह माया से मिल पाता था। और माया भी भोजनालय पहुँचते-पहुँचते थक चुकी होती थी। अर्जुन ने माया से जिग्नेश द्वारा माया को कराए जा रहे कठिन मानसिक अभ्यासों के बारे में सुना था, जिनका उद्देश्य उसकी योगिक शक्तियों को विकसित करना और यह समझना था कि वास्तव में माया में कितनी योगिक शक्तियाँ हैं। चाहे वे कितने भी थके हुए हों, अर्जुन और माया दोनों को ही रात के भोजन पर होने वाली बातचीत का बेसब्री से इंतजार रहता था - ऐसा लगता था मानो यही एक चीज़ थी जो अब उन्हें जोड़े रखती थी।

उनकी जिंदगी पूरी तरह बदल गई थी। सीबीएसई बोर्ड की बदौलत बोर्ड परीक्षाओं की चिंता किए बिना बेफिक्र नौवीं कक्षा के छात्रों से लेकर संघर्ष भरी इस कठिन जिंदगी तक। अर्जुन पर एक और बोझ था कि उसे एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी के लिए तैयार किया जा रहा था। उसके पिता, जिन्हें उसने कभी नहीं देखा था, क्षत्रियों के नेता थे और अब यह जिम्मेदारी उसके कंधों पर आ गई थी।

समस्या यह थी कि उसे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि इसका क्या मतलब है। या उसे क्या करना चाहिए था।

कई बार उसे स्कूल की बहुत याद आती थी। उसे सुमित्रा की नीरस कक्षाओं की भी याद आ जाती थी। एक रात खाने के समय उसने और माया ने सुमित्रा के बारे में कुछ चुटकुले सुनाकर खूब हँसी-मजाक किया था।

माया ने दृढ़ निश्चय से कहा था, 'मैं एक ऐसा मंत्र ढूंढूंगी जिससे सुमित्रा गायब हो जाएगी।'

सुमित्रा को धुएं के एक झटके में गायब होते हुए कल्पना करके वह मुस्कुरा उठी।

'स्कूल आपका शुक्रिया अदा करेगा,' अर्जुन हँसते हुए बोला। 'वे आपकी मूर्ति लगाएंगे और वार्षिक दिवस पर साल में एक बार आपके गले में माला चढ़ाएंगे। हा हा!'

ठीक है। और बाकी साल भर कबूतर मेरे सिर पर अपना काम करते रहेंगे—मेरा मतलब है, मेरी मूर्ति के सिर पर। बहुत-बहुत धन्यवाद, एजे!

हालांकि, ऐसे खुशनुमा पल बहुत कम ही आते थे। ज्यादातर समय वह इतना थका हुआ होता था कि सोचने की भी फुर्सत नहीं होती थी।

मन ही मन उसे शक था कि उसके चाचा के उसे इतना सख्त बनाने के पीछे कोई ठोस वजह होगी। वह पहले कभी इतने सख्त नहीं हुए थे। कभी नहीं। कभी-कभी वह सोचता था कि उसके चाचा के मन में क्या चल रहा है। और कभी-कभी वह जानना ही नहीं चाहता था। उसे एक बुरा एहसास हो रहा था कि यह एक ऐसा झटका होगा जो वह नहीं चाहता।

अर्जुन को यह अजीब लगा कि एक हफ्ते में उसकी और माया की जिंदगी इतनी बदल गई थी। फिर भी, कई मायनों में कुछ भी नहीं बदला था। माहौल बदल गया था, नियम बनाने वाले लोग अलग थे और परिस्थितियाँ भी पहले जैसी नहीं थीं।

लेकिन, जमीनी हकीकत में, उन्हें - और माया को भी, जैसा कि उन्होंने सोचा - अपने जीवन पर उतनी ही आजादी थी जितनी दिल्ली में स्कूल के दिनों में थी।

दिल्ली में वे स्कूल के नियमों से बंधे थे। यहाँ गुरुकुल के नियम थे। दिल्ली में उनके चाचा और माताजी ही सारे फैसले लेते थे। यह बात नहीं बदली थी। बल्कि, अब वे और भी सख्त हो गए थे। कुछ दिन ऐसे भी थे जब अभ्यास न करने के कारण उन्हें अपने चाचा के गुस्से का सामना करना पड़ा था।

'मुझे व्यायाम करने का बिल्कुल मन नहीं कर रहा,' अर्जुन ने शिकायत की थी। 'मेरा मूड नहीं है।'

'क्या तुम्हें लगता है कि महाभारत के अर्जुन को ये कहने की छूट थी?' उसके चाचा ने क्रोध से लाल चेहरा किए गरजते हुए कहा। 'शायद उसके भी कभी-कभार बुरे दिन आते होंगे; हम सबके आते हैं। लेकिन, जब तुम क्षत्रिय होते हो, तो तुम्हारा धर्म सर्वोपरि होता है। तुम्हारी एक ज़िम्मेदारी होती है। बाकी कुछ मायने नहीं रखता।'

'मैं अर्जुन नहीं हूँ,' अर्जुन ने पलटवार किया। 'मतलब, मैं अर्जुन तो हूँ, लेकिन महाभारत वाला अर्जुन नहीं। वह इंद्र का पुत्र था। मैं नहीं हूँ।' उसके इस पलटवार ने उसके चाचा को और भी ज़्यादा क्रोधित कर दिया।

लेकिन वीरेंद्र से मिली फटकार ने उसे और भी अन्यायपूर्ण लगने लगा। किसी ने उससे पूछा ही नहीं था कि वह यह ज़िम्मेदारी लेना चाहता है या नहीं। यह उस पर थोपी गई थी, चाहे उसे पसंद हो या न हो। और कई बार ऐसा हुआ जब उसे यह ज़िम्मेदारी बिल्कुल पसंद नहीं आई। वह क्षत्रियों का नेता नहीं बनना चाहता था। वह तो बस नदी किनारे पेड़ों की छाँव में बैठकर किताब पढ़ना चाहता था।

खैर, ऐसा आज तो होने वाला नहीं था। और न ही निकट भविष्य में कभी होने वाला था।

अध्याय इकसठ

अर्जुन को झटका लगा

क्षत्रिय अभ्यास क्षेत्र

The Gurukul

अर्जुन अविश्वास से देखता रह गया। अपने चाचा के निर्देशों का पालन करते हुए, वह अभ्यास मैदान में अकेले ही आ गया था। दोपहर के भोजन से पहले की पूरी सुबह उसने उन दो तकनीकों का अभ्यास करने में बिताई थी जो उसके चाचा ने उसे गुरुकुल में पहले दिन सिखाई थीं और जिनका वह तब से लगातार अभ्यास कर रहा था।

दोनों ही जटिल दांव-पेच थे, और अर्जुन समझ सकता था कि इन्हें केवल उन्नत तलवारबाजों को ही क्यों सिखाया जाता है। जिम में बिताया गया समय उसे तकनीकों से परिचित होने और जटिल दांव-पेचों से जल्दी न थकने में सहायक रहा।

लेकिन उन्हें लगा कि इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी।

जब वे दोपहर के भोजन के लिए रुके, तो उसके चाचा ने उसे दिन के दूसरे भाग में होने वाली घटनाओं के बारे में पहले ही बता दिया था।

वीरेंद्र ने अर्जुन को पुकारते हुए कहा, 'आज लाइव युद्ध अभ्यास है, तैयार रहना।'

अर्जुन ने सिर हिलाया। वह जानता था कि इसका क्या मतलब है।

उसे लाइव कॉम्बैट सेशन के दौरान अंबा और पार्थ का सामना करना होगा। उसके चाचा ने उसे सीखने, प्रशिक्षण लेने और अभ्यास करने के लिए पाँच दिन का समय दिया था। आज उसका पहला लाइव कॉम्बैट सेशन होगा।

अर्जुन घबराया हुआ था, लेकिन फिर भी आत्मविश्वास से भरा हुआ था। उसने अच्छी ट्रेनिंग की थी और जिम में बिताए लंबे घंटों का उसे बहुत फायदा हुआ था। वह खुद को मजबूत महसूस कर रहा था। उसे इस बात में कोई शक नहीं था कि अंबा और पार्थ उसे आसानी से हरा नहीं पाएंगे, लेकिन उसे लगता था कि वह भी मुकाबला कर लेगा। कम से कम कुछ देर के लिए तो ज़रूर।

लेकिन उसने अपने चाचा की योजना का अंदाजा नहीं लगाया था।

वीरेंद्र, अंबा और पार्थ क्षत्रिय क्षेत्र में प्रवेश कर रहे थे, और तीनों के हाथों में एक बड़ा, चपटा, काला आयताकार धातु का बक्सा था। उनके पीछे अर्जुन ने वरुण और तनवीर को भी मैदान में प्रवेश करते देखा। वे भी उसी तरह के चपटे, आयताकार बक्से लिए हुए थे।

ये लड़के यहाँ क्या कर रहे थे?

वरुण और तनवीर दो क्षत्रिय थे जो अर्जुन और ऋषि अगस्त्य के साथ एक ही शयनकक्ष में रहते थे। शुक्र की सेना के साथ युद्ध के दौरान अर्जुन की मुलाकात वरुण से हुई थी, और संयोगवश - हालांकि वरुण का कहना था कि यह नियति थी - अर्जुन को भी वरुण के साथ उसी शयनकक्ष में ठहराया गया था।

अर्जुन को पता था कि उसके साथ छात्रावास में रहने वाले तीनों लड़के बहुत सम्मानित थे। वरुण और तनवीर संभवतः गुरुकुल के सबसे सिद्ध क्षत्रिय थे - और शायद पूरे गण में भी - और

अगस्त्य को पहले से ही परिसर के सबसे शक्तिशाली ऋषियों में से एक माना जाता था।

वरुण ने अगस्त्य का अर्जुन से परिचय कराते हुए कहा था, 'वह ऐसे कारनामे कर सकता है जिन्हें देखकर आपकी आंखें फटी रह जाएंगी।'

इसलिए अर्जुन को अत्यंत प्रसन्नता हुई जब उसे पता चला कि महामती परिषद ने उसे वरुण, अगस्त्य और तनवीर के समान योग्य समझा है। गुरुकुल में यह नियम था कि छात्रावास केवल उन्हीं विद्यार्थियों द्वारा साझा किए जाते थे जो योग्यता के समान स्तर पर हों। गुरुकुल में नए प्रवेश लेने वाले नौसिखियों के लिए एक अलग कुटिया थी।

पहले दिन से ही चारों लड़कों की आपस में बहुत अच्छी दोस्ती हो गई थी और अर्जुन के उनके साथ रहने के कुछ ही दिनों में वे पक्के दोस्त बन गए थे।

वीरेंद्र ने अर्जुन को एक शरारती मुस्कान दी, और लड़के के आश्चर्य और भ्रम का आनंद लिया।

‘तैयार हो, मेरे बेटे?’ उसने पूछा।

‘किस बात के लिए तैयार?’ अर्जुन ने वरुण और तनवीर की ओर इशारा करते हुए कहा। ‘ये यहाँ क्या कर रहे हैं?’

‘लड़ाई का अभ्यास,’ रहस्यमय जवाब आया। वीरेंद्र ने अपने चारों साथियों की ओर देखा। ‘चलो तैयारी करते हैं और अभ्यास शुरू करते हैं।’

'अरे, ए.जे.' वरुण और तनवीर के चेहरे पर हल्की मुस्कान थी।

अर्जुन ने भौंहें चढ़ाईं। फिर उसे अचानक समझ आया। यह बात इतनी स्पष्ट थी कि उसने इस संभावना पर विचार करना भी जरूरी नहीं समझा था।

‘बिल्कुल नहीं!’ वह चलकर वीरेंद्र के पास गया, जो अपनी तलवार का म्यान खोल रहा था। ‘यह तो सरासर आत्महत्या है, चाचा जी। मैं ऐसा नहीं करूँगा।’

‘तुम्हारा क्या मतलब है?’ वीरेंद्र कमर पर हाथ रखकर खड़ा हो गया और अर्जुन को घूरते हुए बोला, ‘मैंने तुम्हें इतने सालों तक सिर्फ इसलिए प्रशिक्षित नहीं किया है कि तुम मुश्किल समय में लड़ाई से पीछे हट जाओ। तुम उन चारों से डटकर लड़ोगे।’

'एक ही समय पर नहीं।'

‘एक ही समय पर। और कोई बहस नहीं।’

‘वे मुझे मार डालेंगे। मैं मरने के लिए बहुत छोटा हूँ। मेरी अभी तक कोई गर्लफ्रेंड भी नहीं बनी है।’

‘युवक, मैं मजाक के मूड में नहीं हूँ। तुम क्षत्रिय हो। तुम्हारा धर्म लड़ना है। और तुम लड़ोगे ही।’

‘और अगर मैं मना कर दूं तो क्या होगा?’ अर्जुन जानता था कि वह जोखिम उठा रहा है, लेकिन दूसरा विकल्प गुरुकुल के चार सबसे सक्षम योद्धाओं का सामना करना था।

‘तो फिर तुम्हें हम चार से नहीं, बल्कि पाँच से लड़ना होगा। मैं भी उनके साथ शामिल हो जाऊँगा। क्या तुम यही चाहते हो?’

अर्जुन को अपनी हार का एहसास हो गया था। वह जानता था कि वीरेंद्र संभवतः उसके चारों विरोधियों के बराबर का योद्धा है। और वीरेंद्र अपने वचन का पक्का भी होगा। अर्जुन आठ सर्वोच्च

योद्धाओं के बराबर की लड़ाई नहीं लड़ना चाहता था। उसके चेहरे पर उदासी छा गई।

वीरेंद्र ने धातु का बक्सा खोलते हुए कहा, 'लो, तुम सब कवच पहनोगे। और तलवारें कुंद होंगी। तुम मरोगे नहीं। ज़्यादा से ज़्यादा बस कुछ ज़ख्मी हो जाओगे।' वह शरारती मुस्कान के साथ बोला, 'एक दिन तो तुम्हें सीखना ही पड़ेगा।'

अर्जुन ने अपनी आँखें घुमाईं।

वीरेंद्र ने तीखे स्वर में कहा, 'युवक, मेरी ओर आंखें मत घुमाओ।'

वरुण और तनवीर ने अपनी चौड़ी मुस्कान छुपाई, जिससे अर्जुन की झुंझलाहट और बढ़ गई।

वीरेंद्र का चेहरा गंभीर हो गया। 'अर्जुन, मुझे समझाने दो। तुमने अभी तक असली खतरा नहीं देखा है। पिछली रात जिन जीवों से तुमने लड़ाई की थी, वे तो हमारे सामने आने वाले खतरों के मुकाबले कुछ भी नहीं थे। जिस दिन तुम्हारा सामना विकृतियों से होगा, तब तुम्हें पता चलेगा। वे बेहद घातक हैं और उनमें कोई दया नहीं है। लड़ाई के दौरान उनके लिए कोई नैतिकता या सिद्धांत मायने नहीं रखते। सब कुछ जायज है। मैं तुम्हें उनके बारे में और भी बातें कभी बताऊंगा। अभी के लिए, तुम्हें बस इतना जानना है कि तुम्हें उनके लिए तैयार रहना होगा। और तुम्हारी तैयारी आज से शुरू होती है। और यह मत भूलना कि शुक्र ने हमारे लिए क्या सोच रखा है, यह हमें नहीं पता। हमें सबसे बुरे हालात के लिए तैयार रहना होगा।'

अर्जुन को वीरेंद्र की बातों का कोई अंदाजा नहीं था। उसे बस इतना पता था कि उसके पास कोई विकल्प नहीं है। वह आत्मघाती कदम उठा रहा था और वह कुछ नहीं कर सकता था।

उसने सूटकेस में पैक किए गए कवच के टुकड़ों को पहनना शुरू कर दिया।

अध्याय बासठ

युद्ध अभ्यास

क्षत्रिय अभ्यास क्षेत्र

The Gurukul

अर्जुन ने अपनी तलवार उठाई और अपने कवच को ठीक करने के लिए अंगड़ाई ली और थोड़ा हिल-डुल कर उसे समायोजित किया। यह बहुत आरामदायक नहीं था, लेकिन वीरेंद्र ने उससे कहा था कि कुछ अभ्यास सत्रों के बाद उसे इसकी आदत हो जाएगी।

वीरेंद्र ने अर्जुन को आश्वस्त करते हुए कहा, 'हर कोई ऐसा करता है। और यह कवच मजबूत होने के साथ-साथ हल्का और लचीला भी है। इसे इस तरह से बनाया गया है कि जरूरत पड़ने पर वृद्ध क्षत्रिय भी इससे लड़ सकें।'

कम से कम वीरेंद्र कवच के वजन के बारे में तो सही था। अर्जुन उसकी हल्कीपन पर आश्चर्यचकित था; ऐसा प्रतीत नहीं हो रहा था कि इससे उसकी गति धीमी हो रही है और, उसके डर के बावजूद, इससे उसकी गतिविधियों पर कोई रोक नहीं लग रही थी।

मुकाबले के लिए उसके चारों प्रतिद्वंद्वी उसके चारों ओर चार अलग-अलग स्थानों पर बेतरतीब ढंग से तैनात थे। लेकिन अर्जुन जानता था कि मुकाबला शुरू होते ही वे अपनी जगह से हिलने लगेंगे।

आश्चर्य की बात यह थी कि वे सभी निहत्थे थे। तनवीर का धनुष और तरकश गायब थे, और बाकी तीनों की तलवारें भी। अर्जुन को आश्चर्य हुआ कि उनके हथियार कहाँ गए। वे सभी युद्धक्षेत्र में केवल कवच के बक्सों को लेकर ही आए थे।

क्या वे उससे निहत्थे हथियारों से लड़ने वाले थे?

उसने भौंहें चढ़ाईं। यह ठीक नहीं लग रहा था।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। उसे इस स्थिति का फायदा उठाना ही था।

उसने पहला कदम उठाने का फैसला किया। अपने विरोधियों का जल्दी से आकलन करते हुए, उसने तय किया कि उसे सबसे पहले अंबा को ही निशाना बनाना चाहिए। वह चारों में सबसे फुर्तीली और तेज थी, और परिसर के अधिकांश पुरुष क्षत्रियों को युद्ध में मात देने के लिए उसकी खौफनाक प्रतिष्ठा थी, वह पार्थ और वरुण की शारीरिक शक्ति की भरपाई गति और तकनीक से करती थी।

वह पार्थ पर अगला निशाना साधेगा, फिर वरुण पर, और तनवीर को अंत में छोड़ देगा। हालांकि धनुष हाथ में लेकर तनवीर खतरनाक था, लेकिन फिलहाल वह उसके लिए कोई खतरा नहीं था, क्योंकि उसके पास कोई हथियार नहीं था।

अर्जुन ने अपनी तलवार लहराते हुए अंबा की ओर आक्रमण किया। उन्हें अत्यंत आश्चर्य हुआ जब अंबा ने उनका डटकर सामना किया और ऐसी फुर्ती और गति से उनकी ओर दौड़ीं जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी।

लेकिन अर्जुन के लिए यही एकमात्र आश्चर्य नहीं था।

जब दोनों एक-दूसरे से मुश्किल से पांच फीट की दूरी पर थे, तब अंबा ने खाली जगह में हाथ

बढ़ाया और जादुई रूप से उसके हाथ में एक तलवार प्रकट हो गई।

अर्जुन अचंभित रह गया। वह तलवार कहाँ से आई? वह तो अचानक प्रकट हो गई!

चारों ओर सरसरी नजर डालते ही उसने देखा कि उसके बाकी तीन प्रतिद्वंद्वी भी उसकी ओर बढ़ रहे थे और वे भी अब हथियारों से लैस थे।

क्या हुआ था? उनके हथियार कहाँ से आए थे? अर्जुन का दिमाग चकरा गया, उसने अपना ध्यान केंद्रित रखने की पूरी कोशिश की।

इससे पहले कि वह कुछ समझ पाता, अंबा उस पर टूट पड़ी और तलवारबाजी के ऐसे कौशल से हमला कर दिया, जिसके बारे में वीरेंद्र ने अभ्यास सत्रों के दौरान ही उसे बताया था। वह बिजली की तरह फुर्तीली थी और वह बस उसे रोकने की कोशिश कर रहा था। हमला करना तो नामुमकिन था।

अर्जुन को अपनी गलती का एहसास हो गया। उसने अपने विरोधियों को कम आंका था। उसे लगा कि वह पूरी तरह से तैयार नहीं था।

अब, अपने धनुष और बाणों से लैस तनवीर चारों में सबसे खतरनाक था - उसे अर्जुन पर प्रहार करने के लिए उसके करीब जाने की भी जरूरत नहीं थी।

अर्जुन ने अंबा के वारों को रोकते हुए तुरंत सोच-विचार किया। वह फुर्तीली थी और उसकी तकनीक अर्जुन से कहीं बेहतर थी, लेकिन उसके तलवार के वार - हालांकि घातक थे - ताकत के बजाय चपलता और कौशल पर निर्भर थे।

उसने तुरंत एक नई रणनीति तय की। अब करो या मरो। अगर उसने और देरी की तो तनवीर हमला कर देगा और सत्र समाप्त हो जाएगा।

अर्जुन ने अंबा के दाहिनी ओर इस तरह निशाना साधा कि तनवीर उसकी नज़र के कोने से दिखाई देने लगा। धनुर्धारी अपने धनुष पर तीर चढ़ा रहा था। अर्जुन के पास अपनी योजना को अंजाम देने के लिए बस कुछ ही सेकंड बचे थे, और वरुण भी अब खतरनाक रूप से करीब आ चुका था। पार्थ कहाँ था? कोई बात नहीं। वह इस समस्या से निपटते-निपटते ही इसका समाधान कर लेगा।

उसे इसका सही समय पर प्रयोग करना था।

तनवीर द्वारा तीर चलाने पर उसे धनुष की डोरी की झनझनाहट सुनाई दी।

तीर के धनुष से निकलने के बाद कुछ मिलीसेकंड में कई चीजें घटित हुईं।

वीरेंद्र के साथ वर्षों के प्रशिक्षण का फल मिल गया। ऐसा लग रहा था मानो अर्जुन स्वतः ही अंबा से अपना बचाव कर रहा हो, तलवारबाजी की उन तकनीकों का इस्तेमाल करते हुए जो वर्षों से उसके अवचेतन मन का हिस्सा बन चुकी थीं। उसने पीछे से छोड़े गए तीर पर ध्यान केंद्रित किया। वह तीर पल भर में उसे लग जाएगा।

'उदनयते!' उन्होंने धीरे से कहा और साथ ही उछलकर हवा में कलाबाजी भी की। मंत्र की शक्ति ने उनकी मांसपेशियों की क्रिया को बल दिया, जिससे वे अपने आप से जितनी ऊँचाई तक उछल सकते थे, उससे भी अधिक ऊँचाई तक उठ गए, यहाँ तक कि वे अंबा के सिर के ऊपर हवा में घूम रहे थे, ठीक उसी समय तीर उनके नीचे से गुजरा और अंबा की छाती में जा लगा।

तीर के तेज प्रहार से अंबा अपने पैरों से उछल गई और पीछे की ओर लुढ़कते हुए ज़मीन पर ज़ोर से गिर पड़ी। वह वहीं पीठ के बल पड़ी रही। तीरों की नोक कुंद थी और कवच ने उसे चोट से बचा लिया होता, लेकिन फिलहाल वह लड़ाई से बाहर हो चुकी थी।

एक प्रतिद्वंद्वी पराजित।

जैसे ही अर्जुन के पैर जमीन पर पड़े, वह तनवीर की ओर दौड़ पड़ा। उसे दोबारा तीर चलाने से पहले ही धनुर्धारी को मार गिराना था।

तनवीर अपने धनुष पर दूसरा तीर लगा रहा था।

वरुण दो फीट की दूरी पर था।

पार्थ कहाँ था?

'वेगीता वृद्धि!' मंत्र का उच्चारण करते ही अर्जुन की मांसपेशियों को अचानक एक शक्तिशाली, अदृश्य शक्ति से अतिरिक्त बल प्राप्त हुआ, जिससे तनवीर की ओर दौड़ते हुए उसकी गति में अभूतपूर्व वृद्धि हुई।

अर्जुन तनवीर के पास ठीक उसी समय पहुंचा जब धनुर्धारी ने अपना दूसरा तीर चलाया।

अब बाण से बचना असंभव था। मंत्र का प्रयोग करने के बजाय, अर्जुन ने अपनी गति का लाभ उठाते हुए, तेज़ी से बाईं ओर झुककर, फिसलते हुए बाण से बचने की कोशिश की, न कि उस पर कूदने की, जैसा कि उसने पहली बार किया था।

वह सफल नहीं हुआ। गिरते समय, संतुलन बिगड़ने के बावजूद, तीर उसके दाहिने कंधे पर लगा और कवच से टकराकर बिना किसी नुकसान के वापस उछल गया।

अर्जुन ने मुंह बनाया। उसे चोट तो नहीं लगी थी। लेकिन तीर के लगने से दर्दनाक निशान जरूर रह जाएगा।

और नुकसान हो चुका था। अर्जुन ज़मीन पर बुरी तरह गिरा, और तनवीर से टकरा गया, जो भी गिर पड़ा।

अर्जुन सबसे पहले संभला, उछलकर खड़ा हुआ और उसने अपनी तलवार तनवीर के कवच पर गाड़ दी।

दो आउट।

लेकिन गिरने से उसका समय बर्बाद हो गया। उसे अपनी पीठ पर एक जोरदार चोट महसूस हुई।

वरुण ने भी उसी गति के मंत्र का प्रयोग करते हुए उसकी बराबरी कर ली थी और अब उस पर हमला कर रहा था।

अर्जुन तेज़ी से मुड़ा और अपना बचाव किया। दोनों योद्धा कुछ क्षणों तक एक-दूसरे से भिड़ते रहे, वार करते और बचाव करते हुए एक-दूसरे के कवच पर ज़ोरदार प्रहार करते रहे। अगर असली युद्ध में तलवारें कुंद न होतीं, तो दोनों घायल हो जाते या इससे भी बुरी हालत हो जाती। अब भी, ये वार दर्दनाक होते और निशान छोड़ जाते।

वरुण बलवान था, उसके प्रहार शक्तिशाली और सटीक निशाने पर थे, और अर्जुन को उस पर हावी होने के लिए संघर्ष करना पड़ा।

अचानक, उसके बगल में हलचल हुई और अर्जुन ने पार्थ को जमीन पर उतरते देखा।

क्या वह हवा में था? कैसे...?

अब अर्जुन को दो योद्धाओं से लड़ना था, दोनों ही तलवारबाजी में माहिर थे। लेकिन उसके पास केवल एक ही तलवार थी।

तलवारों के टकराने की आवाज हवा में गूंज रही थी क्योंकि तीनों क्षत्रिय भयंकर युद्ध कर रहे थे, अर्जुन पार्थ से वरुण और फिर वापस पार्थ पर अपना ध्यान केंद्रित करने की पूरी कोशिश कर रहा था, यह सुनिश्चित करते हुए कि वह कोई ऐसी गलती न करे जिससे वे उस पर विजय प्राप्त कर सकें।

अचानक, पार्थ फिर से गायब हो गया।

अर्जुन अचंभित था। आखिर हो क्या रहा था?

उसने नए जोश के साथ वरुण पर हमला किया और अपने वारों की भयंकरता से अपने छात्रावास के साथी को पीछे धकेल दिया।

बिना किसी चेतावनी के, अर्जुन को पीछे से अपने हेलमेट पर एक जोरदार प्रहार महसूस हुआ, जिससे उसके दिमाग में गहरा झटका लगा, हालांकि सुरक्षात्मक कवच ने कुंद तलवार के प्रहार के झटके को अवशोषित कर लिया था।

वह कराह उठा। पार्थ!

यह इस बात का संकेत था कि युद्ध समाप्त हो गया था। अर्जुन युद्ध में 'मारे' जा चुके थे। सिर पर लगी चोट जानलेवा थी।

अर्जुन ने पीछे मुड़कर देखा तो पार्थ उसके पीछे खड़ा था, हाथ में हेलमेट लिए मुस्कुरा रहा था।

वीरेंद्र ताली बजाते हुए उनके पास पहुंचा, और अंबा और तनवीर अपनी लेटी हुई स्थिति से उठकर दूसरों के साथ शामिल हो गए।

'शाबाश, अर्जुन,' अंबा ने स्नेहपूर्वक कहा। 'तुम्हारे मूव्स बहुत अच्छे थे। और तुमने मंत्रों का अच्छा उपयोग किया, यह देखते हुए कि तुम्हें अभ्यास करने के लिए एक सप्ताह से भी कम समय मिला था।'

'हाँ, बहुत बढ़िया खेला,' पार्थ ने सहमति जताते हुए कहा। 'यह आपका पहला मल्टी-प्लेयर मुकाबला था, और इस लिहाज से आपने बहुत ही शानदार प्रदर्शन किया।'

अर्जुन ने सहमति में सिर झुकाया और वीरेंद्र की टिप्पणियों की प्रतीक्षा करने लगा।

वीरेंद्र ने कहा, 'तुम बहुत अच्छे थे। सालों की ट्रेनिंग आज तुम्हारे खेल में साफ झलक रही थी।'

'लेकिन अंत में मेरी ही मौत हो गई,' अर्जुन ने निराश होकर कहा।

वीरेंद्र ने उससे कहा, 'इस बारे में ज़्यादा चिंता मत करो। एक हफ्ते के अभ्यास से तुम परिपूर्ण नहीं हो सकते। याद रखो कि गण में अभी तक कोई भी क्षत्रिय ऐसा नहीं है जिसने बहु-खिलाड़ी युद्ध में महारत हासिल की हो। तुम्हें उन क्षेत्रों पर काम करने की ज़रूरत है जहाँ तुमने रणनीतिक और सामरिक दोनों तरह की गलतियाँ की हैं। हम उन पर साथ मिलकर काम करेंगे। पर्याप्त अभ्यास से एक दिन ऐसा आएगा जब तुम उन्हीं चार विरोधियों को हरा दोगे जिन्होंने आज तुम्हें हराया है। मुझे पता है ऐसा होगा।'

अध्याय तिरसठ

और भी रहस्य

क्षत्रिय अभ्यास क्षेत्र

The Gurukul

वीरेंद्र ने निष्कर्ष निकालते हुए कहा, 'तो देखा आपने, आपकी रणनीति में दो अहम कमियाँ थीं: अप्रत्याशित परिस्थितियों का सामना करने की आपकी अक्षमता। आपने युद्ध की अनिश्चितताओं को ध्यान में नहीं रखा। अगर आपने यह न माना होता कि आपके विरोधी निहत्थे हैं, तो आप युद्ध का रुख अलग तरह से अपनाते। और अगर आप पार्थ पर नज़र रख पाते, तो अंत में उसके हमले का बेहतर ढंग से जवाब दे पाते। आपने अपने विरोधियों को कम आँका; जिसके परिणामस्वरूप आपका प्रदर्शन और आपके सामने आने वाली चुनौतियों का उचित जवाब देने की आपकी क्षमता कमज़ोर पड़ गई। आज के लिए यही सबसे बड़ा सबक है।'

पिछले एक घंटे से वीरेंद्र अर्जुन की रणनीति और दांव-पेच में कमियां बता रहे थे और समझा रहे थे कि वह कैसे बेहतर प्रदर्शन कर सकते थे। युद्ध सत्र समाप्त होते ही दोनों महामति वरुण और तनवीर के साथ मैदान छोड़कर चले गए।

अर्जुन ने ध्यान से सुना और पहली बार इस प्रशिक्षण के महत्व को समझा। उसकी स्थिति के परिणाम अब उसे समझ आने लगे थे। ये अब सिर्फ़ खेल-कूद नहीं रह गए थे—सिर्फ़ अच्छी कसरत और मज़ेदार अभ्यास नहीं। घर पर, अपने चाचा के साथ हर अभ्यास सत्र के बाद, वह बस अच्छी तरह नहाकर पसीना साफ़ कर लेता था। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता था कि उसने अच्छा प्रदर्शन किया या नहीं, मुकाबला जीता या हारा। सत्र समाप्त होने के बाद अर्जुन उन चीज़ों की ओर बढ़ जाता था जो उसके लिए मायने रखती थीं—उसकी पढ़ाई, परीक्षाएँ और दोस्त।

हालात बदल चुके थे। आज उसे आखिरकार समझ आ गया था कि उसके चाचा ने पिछले छह साल व्यर्थ के खेलों में नहीं बिताए थे। अर्जुन को पता नहीं था कि वीरेंद्र उसे इस दिन के लिए तैयार कर रहा था; जब वह अपने पिता की विरासत को आगे बढ़ाएगा। क्षत्रियों के नेता ययाति का वंशज। ये महज़ शब्द नहीं थे। ये शब्द अब से उसके जीवन को परिभाषित करने वाले थे।

और युद्ध अभ्यास सत्र ने उसे यह एहसास दिला दिया था कि वह अभी इस भूमिका के लिए तैयार नहीं है। अगर आज का युद्ध सचमुच का होता, तो वह मर चुका होता। अगर शुक्र की तरफ से ऐसे योद्धा होते जो आज उसके सामने आए चार क्षत्रियों के दसवें हिस्से जितने भी कुशल होते, तो भी काफी होता। अगर उसे अपने पिता की तरह नेता बनना था, तो वह जानता था कि उसे इस भूमिका, इस पदवी के योग्य साबित होना होगा।

उनके वंश का।

और वह अपनी काबिलियत साबित करने के लिए दृढ़ संकल्पित था। इसलिए उसने ध्यान से सुना, जहाँ आवश्यक था वहाँ नोट्स बनाए, अपने ऊपर आई नियति को साकार करने की उसकी प्रबल इच्छा ने उसके ध्यान को इतना केंद्रित कर दिया था कि कोई भी व्यवधान उसे प्रभावित न कर सके।

लेकिन उसे अपने सवालों के जवाब चाहिए थे। अभ्यास सत्र के लिए उसकी पूरी रणनीति उन

दो रहस्यों पर टिकी थी जिन्होंने उसे उलझन में डाल दिया था और उसे चौंका दिया था। अर्जुन जानता था कि युद्ध के दौरान जिस स्थिति में वह खुद को पाया था, वह संयोगवश नहीं थी। और वह यह भी जानता था कि उसके चाचा के पास उसके सवालों के जवाब हैं।

'अब चलिए उन दो बड़े सवालों का जवाब देते हैं जो आपके मन में उठ रहे हैं,' वीरेंद्र ने मुस्कुराते हुए उससे कहा, जब वे नदी के समानांतर बने क्षत्रिय अभ्यास मैदान की सीमा पर लगे पेड़ों की छाया में बैठे थे। 'आपका पहला सवाल आपके विरोधियों के हथियारों के बारे में है, है ना?'

'हाँ। अगर मुझे पहले से पता होता कि उनके पास हथियार हैं, तो मेरी रणनीति अलग होती। मैं पहले तनवीर पर हमला करता, अंबा पर नहीं। वहाँ क्या हुआ? उन्हें अचानक हथियार कैसे मिल गए?' अर्जुन रुका, उसे अचानक कुछ याद आया जो पिछले हफ्ते की भागदौड़ में उसके दिमाग से निकल गया था। उसने शुक्र के राक्षसों से युद्ध की रात ठीक ऐसा ही होते देखा था। जब उसकी माँ और वीरेंद्र एसयूवी से निकले थे, तब दोनों निहत्थे थे, लेकिन जब घना कोहरा छाया, तो उनके हथियार भी अचानक प्रकट हो गए। दरअसल, वीरेंद्र के पास दो तलवारें थीं, जिनमें से एक उसने उस रात अर्जुन को दे दी थी।

वीरेंद्र ने उससे कहा, 'इस सवाल का सीधा सा जवाब है। और अब समय आ गया है कि मैं तुम्हें हथियार रखने के बारे में सिखाऊं। या यूं कहें कि हथियार न रखने के बारे में। मैं क्षत्रिय मंत्रों के बुनियादी सिद्धांतों को दोहराकर शुरुआत करूंगा, जिन्हें तुम पहले से जानते हो, लेकिन फिर भी दोहराना जरूरी है। और आंखें मत घुमाओ।'

'मैं आंखें नहीं घुमा रहा हूं,' अर्जुन ने विरोध जताया।

वीरेंद्र ने एक पल के लिए अपने भतीजे को गौर से देखा। उन्हें पूरी उम्मीद थी कि अर्जुन हमेशा की तरह आह भरेगा और शिकायत करेगा, क्योंकि वीरेंद्र अक्सर एक ही बात को बार-बार दोहराता था, जो अर्जुन को पसंद नहीं आता था। लेकिन वीरेंद्र ने अर्जुन के चेहरे पर कुछ ऐसा देखा जो उसने पहले कभी नहीं देखा था। वह ठीक से बता तो नहीं सकता था, लेकिन उस क्षणिक पल में ही अर्जुन ने वीरेंद्र को अपने भाई रुद्रप्रताप की याद दिला दी।

वीरेंद्र के भीतर कुछ हलचल हुई। क्या भविष्यवाणी आखिरकार सच होने वाली थी? जब उन्होंने महामती परिषद से कहा था कि अर्जुन बहुत जल्द तैयार हो जाएगा, तब उन्हें उतना भरोसा नहीं था जितना उनके शब्दों में झलक रहा था। वीरेंद्र महामतियों की उम्मीदों को तोड़ना नहीं चाहते थे; खासकर तब जब इतना कुछ दांव पर लगा था। बेशक, उन्हें अर्जुन की क्षमता पर भरोसा था, लेकिन ययाति के सच्चे उत्तराधिकारी के रूप में मिलने वाली जिम्मेदारियों को निभाने की उनकी तत्परता पर नहीं।

लेकिन अब, जब उसने अपने भतीजे को देखा, तो उसे उम्मीद की किरण दिखाई दी। शायद लड़का उम्मीद से कहीं जल्दी तैयार हो जाएगा।

यह अच्छी बात थी। इससे योजना को और मजबूती मिलेगी।

'माफ़ कीजिए।' वीरेंद्र के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आई। 'बात बस इतनी है कि जब मैं बुनियादी सिद्धांतों को दोहराता हूँ जिन्हें आप पहले से जानते हैं, तो आप लोग विरोध करते हैं,

इसकी मुझे आदत हो गई है।' उनका चेहरा गंभीर हो गया और उन्होंने अपनी व्याख्या फिर से शुरू की। 'जैसा कि आपने गुरुकुल में अपने पहले पाठ में सीखा था, मंत्रों का प्रयोग केवल ऋषि ही नहीं करते। गुरुकुल में प्रवेश पाने वाले प्रत्येक क्षत्रिय को भी मंत्रों का प्रयोग करने की शक्ति प्राप्त होती है, हालाँकि हमारे द्वारा प्रयोग किए जाने वाले मंत्र उनके मंत्रों से बहुत भिन्न होते हैं। अब बताइए, मैंने आपको जिन तीन मुख्य प्रकार के क्षत्रिय मंत्रों के बारे में सिखाया है, वे कौन-कौन से हैं?'

अर्जुन के चेहरे पर गंभीरता के भाव थे जब उसने जवाब दिया, उसे गुरुकुल में वीरेंद्र के साथ अपने पहले पाठ की शुरुआत में हुई सैद्धांतिक कक्षा याद आ रही थी। "पहली श्रेणी में वे मंत्र शामिल हैं जिनका उपयोग शस्त्रों को सक्रिय करने के लिए किया जाता है। ये आज उपयोग में नहीं हैं, लेकिन प्राचीन काल में इनका सक्रिय रूप से उपयोग किया जाता था, विशेष रूप से दिव्य शस्त्रों - देवताओं के शस्त्रों - को तैनात करते समय। ये शस्त्र मंत्रों की ध्वनि से संचालित होते थे।"

'बहुत बढ़िया। दूसरी श्रेणी?'

'युद्ध में गति, शक्ति, सहनशक्ति और अन्य शारीरिक क्रियाओं को बढ़ाने में सहायक मंत्र, जो हमारे शारीरिक गुणों को सुदृढ़ कर सकते हैं।'

'बिल्कुल सही। जैसा कि आप पाँचों ने आज किया। मंत्रों के अभ्यास के लिए आपके पास केवल कुछ ही दिन थे, फिर भी आपका प्रदर्शन विशेष रूप से शानदार था। हालाँकि मैंने यह भी देखा कि अंबा ने ऐसे किसी मंत्र का प्रयोग नहीं किया जिससे उसके प्रहारों का प्रभाव बढ़ सकता था। मुझे लगता है कि आज वह आप पर थोड़ी नरमी बरत रही थी। उसके साथ आने वाले सत्रों में और अधिक परेशानी की उम्मीद रखें। और तीसरी श्रेणी?'

'वे मंत्र जिनका उपयोग हमारे हथियारों को पवित्र करने के लिए किया जाता है ताकि उनकी शक्ति, सटीकता और प्रभावशीलता को बढ़ाया जा सके।'

'शानदार। और आज आपने सिद्धांत को व्यवहार में लागू होते देखा।'

अर्जुन ने सिर हिलाया। आज उसे पता चला कि वीरेंद्र पिछले एक सप्ताह से उसे जो सिद्धांत सिखा रहा था, वह केवल किताबी नहीं था। हर बात के वास्तविक, व्यावहारिक उपयोग थे और वास्तविक युद्ध की स्थिति में यह जीवन और मृत्यु के बीच का अंतर साबित हो सकता था।

'एक चौथी श्रेणी भी है जिसके बारे में मैंने आपको पहले नहीं बताया था, क्योंकि इसका संबंध हथियारों के प्रयोग या युद्ध में सहायता प्रदान करने से नहीं है। यह हमारे हथियारों के भंडारण से संबंधित है। प्रत्येक क्षत्रिय जो उन तीन श्रेणियों के मंत्रों का उपयोग करने में सक्षम है जिनके बारे में आप पहले ही जान चुके हैं, वह अपने हथियारों के लिए अपना निजी भंडारण स्थान बनाने में भी सक्षम है। इसके लिए एक मंत्र है जो मैं आपको सिखाऊंगा। हमारे पास मौजूद प्रत्येक हथियार का एक मंत्र होता है जिससे उसे भंडारण स्थान से वापस बुलाया जा सकता है; उसे सचमुच अपनी पकड़ में लाया जा सकता है। यह ठीक वैसे ही है जैसे आपके पास अपने हथियार वाले लॉकर को खोलने के लिए अपना खुद का कोड या पासवर्ड हो।'

अर्जुन को अचानक बात समझ आ गई। उन्हें महाभारत की वह कहानी याद आ गई जो डीजे

सर ने उन्हें सुनाई थी। यह कहानी महाकाव्य के उनके ही नाम वाले, सर्वोच्च धनुर्धर अर्जुन से संबंधित थी, जिन्हें भगवान कृष्ण के भूलोक से चले जाने के बाद वृष्णि कन्याओं की स्त्रियों और बच्चों की रक्षा का दायित्व सौंपा गया था। जिस समूह की रक्षा का दायित्व उन्हें सौंपा गया था, उस पर डाकुओं ने हमला कर दिया था। लेकिन सबसे नाजुक समय पर, एक पुराने श्राप के कारण अर्जुन अपने शस्त्रों को बुलाने वाले मंत्रों को भूल गए।

अर्जुन हमेशा से यह सोचता रहता था कि इसका क्या मतलब है। आखिर अर्जुन मंत्र का प्रयोग करके हथियार कैसे बुला सकता है? डीजे सर ने कभी समझाया नहीं था। लेकिन अब उसे समझ आ गया कि महाभारत में किस बात का जिक्र था। अर्जुन अपने हथियार इसलिए नहीं बुला पा रहा था क्योंकि वह उस 'लॉकर' को खोलने के मंत्र भूल गया था, जैसा कि वीरेंद्र ने बताया था, जिसमें हथियार रखे जाते थे।

वीरेंद्र ने आगे कहा, 'और आपका दूसरा सवाल पार्थ और लड़ाई के दौरान उसके लापता होने के बारे में है।'

अर्जुन ने सिर हिलाया, वीरेंद्र अब जो कहने वाला था उस पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करते हुए, हालांकि हथियारों को बुलाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले मंत्रों के बारे में रहस्योद्घाटन अभी भी उसके विचारों में व्याप्त था।

वीरेंद्र ने समझाया, 'यह बहुत आसान है। मैं आपको दिखाता हूं।'

अध्याय चौंसठ

गुप्त योजनाएँ

उस रात

The Gurukul

अर्जुन ने अपने शयनकक्ष का दरवाजा खोला और सावधानीपूर्वक चारों ओर देखा।

ग्यारह बज चुके थे और गुरुकुल में सन्नाटा छाया हुआ था। कुछ भी हलचल नहीं थी। यहाँ तक कि केंद्रीय मार्ग और सार्वजनिक क्षेत्रों को रोशन करने वाले प्रकाश के चमकदार गोले भी बुझ चुके थे।

वह कुछ क्षणों के लिए वहीं खड़ा रहा, यह सुनिश्चित करने के लिए कि आसपास कोई नहीं है, फिर पीछे मुड़कर वरुण, अगस्त्य और तनवीर को सिर हिलाकर अभिवादन किया, जो उसके पीछे खड़े इंतजार कर रहे थे।

'चलो चलते हैं,' अर्जुन ने फुसफुसाते हुए उनसे कहा और तीनों लड़के चुपचाप दरवाजा बंद करके बाहर निकल गए और बीच वाली सड़क से होते हुए सड़क के दूसरी तरफ एक और झोपड़ी की ओर चल दिए।

वे उसके सामने रुक गए।

अर्जुन ने frowning करते हुए कहा, 'यह अच्छा विचार नहीं है।'

'तो तुम उसे खुद बता दो।' वरुण ने हल्के से दरवाजे पर दस्तक दी। दरवाजा तुरंत खुल गया और एक लड़की बाहर आई। वह वरुण की जुड़वां बहन थी और हालांकि वे हूबहू जुड़वां नहीं थीं, लेकिन समानता स्पष्ट थी।

उसने झोपड़ी का दरवाजा बंद करते हुए तीनों लड़कों को देखकर मुस्कुराया। 'यह कितना रोमांचक है!' उसने फुसफुसाते हुए कहा।

'ठीक है,' वरुण ने अर्जुन की ओर देखकर मुस्कुराते हुए कहा। 'उसे बता दो।'

'मुझे बताओ क्या?' लड़की ने अर्जुन की ओर जिज्ञासा भरी नजरों से देखा।

अर्जुन ने झुंझलाहट में अपना सिर हिलाया। 'कुछ नहीं, आदिरा। बस मुझे लगा कि मुझे आज रात आपको हमारे साथ शामिल होने के लिए कहने का अधिकार नहीं है।'

'ओह, बढ़िया!' वरुण हंसते हुए बोला।

अदिरा ने अपने हाथों को कमर पर रखा। 'मैं समझ गई। आप मुझे अपने साथ नहीं आने देना चाहते। क्योंकि यह बहुत खतरनाक है? क्योंकि मैं एक लड़की हूँ?'

वरुण फिर से खिलखिलाकर हंस पड़ा, जाहिर तौर पर उसे यह बातचीत बहुत अच्छी लगी थी।

'चुप रहो!' अर्जुन ने उससे कहा, फिर अदिरा की ओर मुड़ा। 'देखो, तुम गुरुकुल के सर्वश्रेष्ठ योद्धाओं में से एक हो। मुझे पूरा यकीन है कि तुम वरुण को किसी भी दिन हरा सकते हो।'

'अरे!' वरुण गुस्से से बोला।

अर्जुन ने उसकी बात अनसुनी कर दी और आगे बढ़ता रहा। 'तो मुझे तुम्हारी सुरक्षा या ऐसी किसी बात की चिंता नहीं है। बल्कि, तुम्हारा साथ आना बहुत अच्छा है। मैं ज़्यादा सुरक्षित महसूस करूँगा। सच में। लेकिन यह भी सच है कि मुझे तुम्हें आज रात हमारे साथ आने के लिए

कहने का कोई हक नहीं है। यह मेरा मिशन है, तुम्हारा नहीं। मुझे तुम्हें इसमें बिल्कुल भी शामिल नहीं करना चाहिए।'

'और इन नीच लोगों का क्या?' अदिरा ने अर्जुन के तीन छात्रावास साथियों की ओर इशारा करते हुए कहा। 'तुम उन्हें इसमें शामिल कर सकते हो और मुझे नहीं, ऐसा कैसे हो सकता है?'

तनवीर ने धीमी आवाज़ में कुछ बुदबुदाया, लेकिन अदिरा ने उसे अनसुना कर दिया।

'मेरे पास कोई विकल्प नहीं था,' अर्जुन मुस्कुराया। 'आप जानते ही हैं कि वे कैसे होते हैं। टूट पड़ते हैं।'

खैर, अगर इससे आपके मन को शांति मिलती है, तो सच में आपने मुझे साथ आने के लिए नहीं कहा था। जब वरुण ने मुझे बताया कि आप लोग आज रात क्या करने वाले हैं, तो मैंने उससे कहा कि मैं इसमें शामिल हो जाऊँगा। मैंने नहीं पूछा था।

'यह सच है,' वरुण ने सहमति जताते हुए कहा। 'उसने मुझे लगभग जबरदस्ती शामिल करवाया। वह चाहती थी...'

'चुप रहो, वरुण।' अदिरा ने उसे ऐसी निगाह से देखा कि अंधेरे में भी उसका चेहरा बिगड़ गया।

'ठीक है, बहुत बातें हो गईं,' अर्जुन ने कहा। 'माया हमारा इंतजार कर रही होगी। चलो चलते हैं।'

पांचों युवक केंद्रीय मार्ग से होते हुए उस चट्टान की ओर बढ़े जो गुरुकुल के अंदर और बाहर जाने का रास्ता रोकती थी।

माया सचमुच वहीं खड़ी इंतजार कर रही थी। जब उसने देखा कि अर्जुन अकेला नहीं है, तो वह आश्चर्यचकित रह गई।

'मुझे वरुण, अगस्त्य और तनवीर को अपनी योजना के बारे में बताना ही था,' अर्जुन ने माया से कबूल किया। 'वे मेरे हॉस्टल के साथी हैं। उन्हें जानना ही था।'

वरुण ने बीच में कहा, 'और हमने फैसला किया कि यह इतना बड़ा साहसिक कार्य था कि आप दोनों को अकेले इसे जारी रखने देना ठीक नहीं था।'

'और जब वरुण ने मुझे इसके बारे में बताया, तो मैं भी साथ आना चाहती थी,' अदिरा ने आगे कहा।

अर्जुन ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'ठीक है, बात ये है। वैसे, वरुण और अगस्त्य उन कुछ लोगों में से हैं जिन्हें वो मंत्र पता है जिसकी मदद से हम इस चट्टान को पार कर सकते हैं।'

माया संशय में दिखी। 'एजे, मैं यह सब छुपकर कर रही हूँ और इसमें ज्यादा लोगों को शामिल नहीं करना चाहती, इसके पीछे एक वजह है। मुझे नहीं पता कि मैं सही हूँ या गलत। मैं बस अपने अंतर्ज्ञान पर भरोसा कर रही हूँ। हम सब मुसीबत में पड़ सकते हैं।'

अर्जुन ने बाकी लोगों की तरफ देखा। 'अभी वापस जाने का समय है। वरुण, तुम हमें बाहर निकलने में मदद कर सकते हो और फिर वापस आ सकते हो।'

'मैं वापस नहीं जा रहा।' वरुण दृढ़ स्वर में बोला। 'और अगर मैं चला भी गया, तो तुम्हें वापस अंदर कौन आने देगा?'

तनवीर ने बीच में कहा, 'मैं भी नहीं जा रहा हूं।'

'जंगली घोड़े इत्यादि,' अदिरा ने कहा, जाहिर तौर पर वह इस नाटक से ऊब चुकी थी।

अगस्त्य ने शरारती मुस्कान के साथ कहा, 'तुम्हें एक ऋषि की आवश्यकता होगी। भूतगण से सामना होने पर तुम केवल क्षत्रियों के भरोसे नहीं रह सकते।'

वरुण ने जवाब में नाक सिकोड़ी।

'ठीक है, तो' अर्जुन ने माया की ओर देखा। 'बात पक्की हो गई। चलो चलते हैं।'

'विकुरुते व्यापनिया!' वरुण ने स्वर में कहा, फिर अर्जुन को आगे चलने का इशारा किया।

वे पहाड़ी से होते हुए उस खुले मैदान में पहुँचे जहाँ कुछ ही दिन पहले उन्होंने शुक्र के राक्षसों से लड़ाई की थी।

उनके ऊपर पूर्णिमा का चांद आसमान में जगमगा रहा था और उसकी चांदी जैसी रोशनी से खुला मैदान एक कोमल चमक से नहा रहा था, जिसे उसके बगल में आकाश में टिमटिमाते लाखों तारों की कोमल रोशनी ने और भी बढ़ा दिया था।

अर्जुन के नेतृत्व में, वे खुले मैदान को पार करके जंगल में प्रवेश कर गए, जो पहाड़ी के इस तरफ घोर अंधकार से घिरा हुआ था। जिस जंगल में गुरुकुल बना था, उसके विपरीत, यहाँ पेड़ घनी आबादी वाले थे, जिससे प्रकाश का कोई प्रवाह नहीं हो पा रहा था।

'हम अंधेरे में जंगल में अपना रास्ता कैसे खोजेंगे?' माया ने घबराहट से पूछा।

'जैसा मैंने कहा। मेरे बिना तुम क्या करोगे?' अगस्त्य हँसे। 'विद्युतते,' उन्होंने बड़े ही प्रभावशाली ढंग से कहा। उनके सामने एक हल्की चमकती हुई प्रकाश की गेंद प्रकट हुई, जो हवा में मंडरा रही थी, उनके चलते समय उनके सामने तैरती हुई उनके मार्ग और उनके सामने जंगल के कुछ हिस्से को रोशन कर रही थी।

'यह क्या था?' माया उत्सुक थी। यह किसी मंत्र की तरह तो नहीं लग रहा था।

अगस्त्य ने जवाब दिया, "लघु मंत्र। तुमने इन्हें अभी तक नहीं सीखा होगा। ये तुम्हें काफी उन्नत स्तर पर सिखाए जाते हैं। और इस तरह का मंत्र उच्च मंत्रों में से एक है। यह कोई जादू नहीं है, तुम्हें पता है। वास्तव में यह पदार्थ का एक प्रकार का हेरफेर है, ठीक उसी तरह जैसे वह मंत्र जो हमें चट्टान के आर-पार जाने की शक्ति देता है। फर्क सिर्फ इतना है कि इस मामले में, मंत्र पदार्थ को ऊर्जा प्रदान करता है और मंत्र के ध्वनि द्वारा स्पर्श किए गए पदार्थ के कणों की उत्तेजना से ही वह प्रकाश उत्पन्न होता है जो तुम देखते हो।" अगस्त्य ने अपने संक्षिप्त व्याख्यान का आनंद लेते हुए बात समाप्त की।

माया को याद आ गया कि पिछले कुछ दिनों में जिग्नेश ने उसे पाठों में क्या बताया था।

'जादू जैसी कोई चीज नहीं होती,' उसने उसे आश्वस्त किया था। 'कोई भी शून्य से कुछ नहीं बना सकता। देवता भी नहीं। हमेशा कुछ तत्व होते हैं जिनका उपयोग होता है, एक प्रक्रिया होती है जिसमें वे तत्व किसी न किसी रूप में उपयोग होते हैं, और एक परिणाम होता है, जो उस प्रक्रिया का भौतिक रूप होता है। मंत्र उस प्रक्रिया को शुरू करने का माध्यम होते हैं। आप कह सकते हैं कि वे वह स्विच हैं जिसे प्रक्रिया शुरू करने के लिए दबाना पड़ता है। मंत्र जादू नहीं हैं। प्रत्येक मंत्र की एक प्रक्रिया होती है जिसके द्वारा वह अपना उद्देश्य पूरा करता है। कोई भी मंत्रों

का उपयोग कर सकता है। लेकिन, एक शक्तिशाली योगी के हाथों में, उनका उपयोग कुछ भी हासिल करने के लिए किया जा सकता है।'

माया समझ गई। 'तुम्हारा मतलब है कि लघु मंत्र वास्तव में पूर्ण मंत्रों के संक्षिप्त रूप हैं?'

अगस्त्य ने सिर हिलाया। 'जैसे स्पीड डायल पर मंत्रों की तरह।'

'मैं इन्हें आजमाना चाहूंगी,' माया ने कहा।

अगस्त्य ने संदेह भरे स्वर में कहा, 'अगर जिग्नेश ने तुम्हें अभी तक लघु मंत्र नहीं सिखाए हैं, तो तुम इसके लिए तैयार नहीं हो। आखिर तुम यहाँ कुछ ही दिन से हो।'

'फिर भी,' माया ने जोर देकर कहा। 'मैं इसे आजमाना चाहती हूँ। मुझे मंत्र फिर से बताओ।'

अगस्त्य ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'ज़रूर। विद्युतते।'

माया चलना बंद कर दिया। वह एकाग्र होना चाहती थी। जिग्नेश के साथ अपने दूसरे सत्र में, उन्होंने उसे बताया था कि मंत्रों की शक्ति का उपयोग करने की कुंजी एकाग्रता ही है।

आपने मंत्रों के सही उच्चारण और ध्वनि के महत्व को समझ लिया है। यही एक प्रभावी मंत्र जाप का आधार है। लेकिन मंत्र को कारगर बनाने की कुंजी है जाप करते समय मन को एकाग्र रखना। यही कारण है कि कुछ लोग मंत्रों का अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग करते हैं। आपके विचार पूरी तरह से उस उद्देश्य पर केंद्रित होने चाहिए जिसे मंत्र प्राप्त करना चाहता है। इसके बिना मंत्र पूरी तरह से प्रभावी नहीं होगा। और यही कारण है कि साधक भी मंत्रों का जाप कर उनसे कुछ लाभ प्राप्त कर सकते हैं - मन की शांति, स्थिरता, बुरी आत्माओं से बचाव। लेकिन केवल योगी ही अन्य पांच प्रकार के मंत्रों का प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकते हैं।

बाकी लोग रुककर माया को देखते रहे, जब उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और ध्यान कक्षाओं में सीखी हुई विधि के अनुसार अपने मन से अनावश्यक विचारों को निकालने की कोशिश की। उसने उस प्रकाश पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास किया जो वह मंत्र से उत्पन्न करना चाहती थी। अगस्त्य ने कहा था कि पदार्थ के कणों की उत्तेजना से प्रकाश उत्पन्न होता है। उसे इसी पर ध्यान केंद्रित करना था। मंत्र की ध्वनि से पदार्थ में ऊर्जा का संचार होना। लेकिन यह कठिन था। यह किसी फिसलन भरी रबर की गेंद को पकड़ने जैसा था।

'विद्युतते!' उसने स्वर में कहा, यह सुनिश्चित करते हुए कि उसका उच्चारण अगस्त्य के उच्चारण से मेल खाता हो।

उसने अपनी आँखें खोलीं। अगस्त्य द्वारा बनाया गया प्रकाश का गोला अभी भी उनके आसपास के जंगल को रोशन कर रहा था। एक दूसरा प्रकाश का गोला भी होना चाहिए था। लेकिन वह वहाँ नहीं था।

'क्या हुआ?' उसने पूछा। 'क्या कुछ हुआ भी?'

वरुण ने उससे कहा, 'एक पल के लिए रोशनी की एक झलक दिखी। लेकिन बस एक क्षण के लिए।'

'माया, बहुत बढ़िया!' अगस्त्य प्रभावित लग रहे थे। 'मंत्र का उच्चारण एकदम सही था। लेकिन पदार्थ को नियंत्रित करना आसान नहीं है। तुम्हें अभ्यास की ज़रूरत है। फिर से कोशिश करो।'

माया ने अपनी आँखें बंद कीं और कुछ और बार कोशिश की, लेकिन हर बार नतीजा वही रहा। बाकी लोगों ने एक पल के लिए हल्की रोशनी देखी जो मुश्किल से एक सेकंड तक ही रही और फिर बुझ गई।

अंतिम प्रयास में ही उसे कुछ सफलता मिली। जब उसने अपनी आँखें खोलीं, तो एक क्षणिक रोशनी का गोला उसकी आँखों के सामने मंडराता रहा, फिर गायब हो गया।

'मैंने कर दिखाया!' माया बेहद खुश थी।

'हां, तुमने किया,' वरुण ने सहमति जताते हुए कहा। 'देखो, मुझे तुम्हारे द्वारा उन चमकती हुई चीज़ों को बनाते हुए देखना बहुत अच्छा लगेगा, लेकिन हमारे पास पूरी रात नहीं है, तुम्हें पता है। हमें किसी के पता चलने से पहले वापस आना होगा, नहीं तो हम मुसीबत में पड़ जाएंगे। और भले ही एजीएस मंत्रों को कारगर बनाने में माहिर हो, अगर ऐसा हुआ तो तीनों लोकों में ऐसा कोई मंत्र नहीं है जो हमें बचा सके।'

'ओह हाँ, ज़रूर, माफ़ कीजिए,' माया अपनी आवाज़ में खुशी छिपा नहीं सकी। एक बात अब उसके लिए स्पष्ट थी। वह गुरुकुल नहीं छोड़ेगी। हालाँकि, एक सवाल उसे परेशान कर रहा था।

'अगर आप लोग प्रकाश उत्पन्न कर सकते हैं, तो शुक्र के राक्षसों से लड़ते समय जलती हुई मशालें क्यों ले जा रहे थे? क्या इस तरह की रोशनी हर जगह लगाना आसान नहीं होता—वे अधिक चमकदार होतीं और एक बड़े क्षेत्र को रोशन करतीं।'

अगस्त्य मुस्कुराए। "आप जानते हैं, यह एक अच्छा प्रश्न है। इसका उत्तर बहुत सरल है। जब महर्षि रतन ने हमें उस खुले मैदान में हो रही घटनाओं के बारे में बताया, तो हम सब नरसिंह मंत्र का जाप करते हुए दौड़ पड़े। उस समय हमारे लिए कोई और मंत्र जपना संभव नहीं था, और हमारी प्राथमिकता गुरुकुल की रक्षा करना थी। फिर भी, हमें यह देखने के लिए प्रकाश की आवश्यकता थी कि हम किससे मुकाबला कर रहे हैं। इसलिए नौसिखियों को मशालें ले जाने के लिए कहा गया, जबकि उन्नत ऋषियों ने नरसिंह मंत्र का जाप किया।"

माया ने सिर हिलाया और समूह आगे बढ़ गया। उनके सामने लटके हुए चमकते गोले की रोशनी में, अर्जुन ने माया के चेहरे के भावों को समझने की कोशिश की। उसके चेहरे पर आशा, भय और आशंका के भाव मिले-जुले थे। वह जानता था कि माया क्या करना चाहती है। उसे उसके इरादे समझ नहीं आ रहे थे, और जब वह उस दिन रात के खाने के बाद उसके पास आई और उसे अपनी योजना बताई, तो उसने पहले तो उसे रोकने की कोशिश की थी। जब वह अपनी बात पर अड़ी रही, तो उसने उसके साथ चलने का फैसला किया। वह किसी भी हालत में उसे अपनी इस पागलपन भरी योजना को अकेले अंजाम देने नहीं देने वाला था। अब, जब वे सब साथ चल रहे थे, तो वह अपने दोस्तों के साथ होने के लिए आभारी था। उसे एहसास हुआ कि माया ने गुरुकुल में कोई दोस्त नहीं बनाए थे। वह किसी भी कक्षा में नहीं जाती थी, अपने पूरे प्रशिक्षण के दौरान जिग्नेश के साथ ही रहती थी। उसका खाली समय होमवर्क और तैयारी में बीतता था, इसलिए उसे कभी दूसरे छात्रों के साथ घुलने-मिलने का मौका नहीं मिला। अर्जुन ने सोचा कि दूसरों के साथ समय बिताना उसके लिए अच्छा होगा, भले ही यह इस तरह के जोखिम भरे मिशन पर ही क्यों न हो।

‘ठीक है,’ माया ने गहरी सांस ली, जब वे उस वन पथ पर पहुँचे जहाँ वीरेंद्र ने कुछ रात पहले लैंड क्रूज़र खड़ी की थी; जहाँ से वे खुले मैदान और गुरुकुल की ओर दौड़े थे। ‘चलो चलते हैं। देखते हैं आगे क्या होता है।’

वे छह लोग जंगल के रास्ते से होते हुए लंबी पैदल यात्रा पर निकल पड़े।

अध्याय पैंसठ

गंधर्व घाटी की ओर वापसी

पांडवों का पतन

मध्य प्रदेश

अर्जुन ने माया को जिज्ञासा भरी नजरों से देखा। 'तुमने कहा था कि तुम्हें अंदर जाने का तरीका पता है।'

वे गुरुकुल से राष्ट्रीय उद्यान होते हुए पैदल ही आए थे, उद्यान के बंद द्वार को फांदकर अंदर आए और फिर संकरी सड़क पर चलते हुए, सोए हुए गाँव से गुज़रते हुए, पांडव जलप्रपात तक पहुँचे। अब वे उस धूसर चट्टान के सामने थे जहाँ अर्जुन अपनी माँ और चाचा के साथ ठीक एक सप्ताह पहले खड़े थे, ठीक उसी स्थान पर जहाँ से उन्होंने गंधर्वों की घाटी में प्रवेश किया था।

‘हाँ,’ माया ने साहसपूर्वक कहा, उसकी आवाज़ में जितना आत्मविश्वास झलक रहा था, उससे कहीं अधिक था। ‘मुझे वो मंत्र पता है जो कमाल कर देगा।’

अगस्त्य उसकी बातें सुनकर चौंक गया। उसने तुरंत अपना सिर हिलाया। 'यह काम नहीं करेगा।'

‘ऐसा होगा।’ माया ने अपने दिल में दहलीज पर उम्मीद की कि ऐसा ही हो। यह उसके पिता की डायरी में लिखे मंत्रों में से एक था। ‘वैसे भी तुम इतने संशय में क्यों हो?’ उसने अगस्त्य पर झल्लाते हुए कहा।

अगस्त्य ने हाथ ऊपर उठा लिए और उसके सवाल को अनसुना करते हुए अर्जुन को इल्ज़ाम भरी नज़रों से देखा। ‘तुमने हमें यह नहीं बताया कि यह योजना का हिस्सा था। मुझे लगा था कि तुम्हारे पास अंदर जाने का कोई रास्ता है। अगर मुझे पहले पता होता कि तुम गंधर्वलोक मंत्र का इस्तेमाल करने वाली एक नौसिखिया पर भरोसा कर रहे हो, तो मैं हम सबको इस मुसीबत से बचा लेता। मतलब, अगर वह मंत्र वाकई गंधर्वों के लोक का द्वार खोल सकता है। लेकिन मंत्र जानना ही काफी नहीं है; हममें से किसी को भी इसका इस्तेमाल करना नहीं सिखाया गया है। तुम इससे काम करने की उम्मीद कैसे करते हो?’

‘ठीक है, तुम वापस जा सकते हो,’ माया ने तीखे स्वर में कहा। ‘मैंने तुममें से किसी को भी साथ आने के लिए नहीं कहा था।’

‘ठीक है, ठीक है,’ अर्जुन ने बीच में कहा। ‘चलिए सब शांत रहें और कोशिश करें, ठीक है? माया, आप शुरू क्यों नहीं करतीं?’

अगस्त्य ने उदासीनता से कंधे उचका दिए।

‘Gandharva krpaya vishto!’ Maya intoned in a low voice.

जैसे ही उसने ये शब्द कहे, बाकी पाँचों को अंधेरे में कुछ हलचल महसूस हुई और उनके हाथों पर रोंगटे खड़े हो गए। कुछ तो हो रहा था। पर क्या था?

माया ने अपना काम खत्म किया और चट्टान की ओर देखा। कुछ भी बदला हुआ नहीं लग रहा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कुछ हुआ ही न हो।

वह निराश थी। क्या वह मंत्र आखिरकार कारगर नहीं हुआ?

अगस्त्य ने गुस्से से कहा, 'मैं तुमसे कह रहा हूँ...' तभी अर्जुन ने चट्टान की ओर हाथ बढ़ाया और उसे चट्टान के अंदर धकेल दिया, जिससे उसकी बात अधूरी रह गई।

'यह कारगर साबित हुआ!' अगस्त्य द्वारा निर्मित प्रकाश के गोले से निकलने वाली रोशनी में अर्जुन का चेहरा चमक उठा।

माया को परमानंद का अनुभव हुआ। यह इस बात का और पुख्ता सबूत था कि उसके पिता की डायरी में जो कुछ भी लिखा था, वह महत्वपूर्ण था। अब तक, गंधर्वों से मिलने की अपनी योजना को लेकर वह बहुत आश्वस्त नहीं थी, खासकर तब से जब महामती परिषद ने उनसे मदद मांगने की संभावना पर विचार करने से ही इनकार कर दिया था। लेकिन अब, उसे यकीन हो गया था कि उसकी अंतरात्मा की आवाज सही थी। निश्चित रूप से गंधर्वों को कुछ न कुछ पता होगा।

'मुझे विश्वास नहीं हो रहा।' अगस्त्य के चेहरे पर हैरानी साफ झलक रही थी। 'यह मुमकिन नहीं है। तुम तो नौसिखिए हो। तुम तो प्रकाश का गोला भी नहीं बना सकते! आखिर तुमने यह कैसे किया...?' उसके मुंह से शब्द नहीं निकल रहे थे और उसने अविश्वास में अपना सिर फिर से हिलाया।

'शाबाश, माया!' अर्जुन ने माया की ओर मुस्कुराते हुए कहा। फिर वह अगस्त्य की ओर मुड़ा। 'अगस्त्य, क्या तुम्हारा दीपक चट्टान के पार हमारे साथ चलेगा?'

नहीं। गंधर्व घाटी एक अलग ही स्तर पर है। हम एक ऐसे द्वार से गुजर रहे हैं जो हमें भू-लोक से निकालकर गंधर्व-लोक में ले जाएगा।

'कोई बात नहीं,' माया ने अचानक कहा। 'चट्टान के दूसरी तरफ रात नहीं हुई है।'

'तुम्हें कैसे पता?' अदिरा ने आश्चर्य से पूछा।

'मुझे पक्का तो नहीं पता, लेकिन मैं... मुझे बस इतना पता है।' माया अपने ही शब्दों पर दूसरों की तरह हैरान थी। वह इसे समझा नहीं सकती थी, लेकिन उसे ऐसा लग रहा था मानो गंधर्व घाटी की गर्म धूप उसकी त्वचा पर पड़ रही हो।

अर्जुन ने बाकी लोगों को इशारा किया। 'मेरे पीछे आओ। चलो पता लगाते हैं।'

माया ने अर्जुन को चट्टान पर चलते हुए देखा, उसके पीछे आदिरा, तनवीर और वरुण भी थे। जब अगस्त्य उसके पास से गुजरा, तो उसने उसकी आँखों में आश्चर्य और उलझन देखी। वह उसकी हैरानी समझ गई। गुरुकुल का तरीका सरल था। वहाँ पढ़ने आने वाले बच्चों के पास कोई न कोई शक्ति तो होती थी, लेकिन उन्हें प्रभावी ढंग से इस्तेमाल करने की क्षमता नहीं होती थी। गुरुकुल में महामति की देखरेख में सावधानीपूर्वक प्रशिक्षण के माध्यम से ही प्रत्येक छात्र अपनी शक्तियों को पहचानता था, अपनी ताकत को समझता था और अपनी शक्तियों का अधिकतम उपयोग करने की क्षमता विकसित करता था। इस प्रक्रिया में वर्षों लग जाते थे। माया जानती थी कि अर्जुन ने भी पिछले छह वर्षों से वीरेंद्र के साथ प्रशिक्षण लिया था, हालाँकि उस समय उसे यह पता नहीं था कि उसे किस चीज़ के लिए तैयार किया जा रहा है।

इसलिए अगस्त्य का यह मानना स्वाभाविक था कि माया, जिसे गुरुकुल में नौसिखिए के रूप में भी आधिकारिक रूप से स्वीकार नहीं किया गया था, मंत्रों का प्रयोग नहीं कर पाएगी, विशेषकर इतने शक्तिशाली मंत्रों का। पदार्थ को नियंत्रित करने के लिए मंत्रों का प्रयोग करके

प्रकाश का गोला बनाने जैसी सरल क्रिया में भी उसकी अनुभवहीनता स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हो गई थी। दूसरे लोक का द्वार खोलना एक अत्यंत भिन्न और उच्च स्तर का कार्य था।

जैसे ही अगस्त्य चट्टान के भीतर गायब हो गया, माया ने उसका पीछा किया, उसे अपने शरीर के चारों ओर बहती हुई तरल चट्टान की अनुभूति पूरी तरह से अच्छी नहीं लग रही थी, जो उसे स्पर्श तो कर रही थी लेकिन स्पर्श का अहसास नहीं करा रही थी।

वह चट्टान से निकलकर चकाचौंध कर देने वाली धूप और एक चमकीले, नीले आकाश में आ गई, ठीक वैसे ही जैसे उसने द्वार के दूसरी तरफ रहते हुए भविष्यवाणी की थी।

और वह अपनी जगह पर ही जम गई।

चारों युवा क्षत्रिय अगस्त्य के साथ, हाथों में हथियार लिए, रक्षात्मक मुद्रा में खड़े थे। उनके चारों ओर तीन तरफ से गंधर्व हथियारबंद होकर अपने शस्त्र लहरा रहे थे।

ऐसा प्रतीत हुआ कि वे छह युवक घुसपैठ कर रहे थे और गंधर्व इससे खुश नहीं थे।

अध्याय छियासठ

विश्ववासु के साथ मुलाकात

गंधर्व घाटी

विश्ववासु ने अपने सामने खड़े चार लड़कों और दो लड़कियों को घूरकर देखा। उसका चेहरा गंभीर था।

जब गंधर्व रक्षकों ने गुरुकुल से आए समूह को रोका, तो अर्जुन ने विश्ववासु से मिलने की मांग की। चाहे यह उनकी मांग के जवाब में हो या औपचारिकता के कारण, उन्हें घाटी से कैदी बनाकर रक्षकों के हाथों में सौंपकर तुरंत विश्ववासु के समक्ष लाया गया।

अब वे उस विशाल हॉल में खड़े थे जहाँ अर्जुन की पहली मुलाकात गंधर्व राजा से हुई थी।

'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई!' विश्ववासु गरज उठा। 'हमारे लोक में प्रवेश केवल हमारी अनुमति से ही संभव है।' उसने अर्जुन की ओर देखा। 'जब तुम पहले यहाँ आए थे, तुम्हारे चाचा ने हमें संदेश भेजा था कि वे हमसे मिलना और सलाह-मशविरा करना चाहते हैं। हमने सहमति दे दी क्योंकि कनक हमारी पुरानी मित्र है। तुम्हारे पिता रुद्र भी हमारे प्रिय मित्र थे। लेकिन वे भी हमारी अनुमति के बिना हमारे लोक में प्रवेश नहीं करते थे। लेकिन तुमने आज जो किया है...' वह रुक गया और अपने सामने खड़े समूह को तीखी निगाहों से घूरने लगा।

'आपने पोर्टल को कैसे सक्रिय किया?' उसने पूछा। 'आपको मंत्र किसने सिखाया? गुरुकुल में इस घुसपैठ के लिए कौन जिम्मेदार है?'

'हमें किसी ने मंत्र नहीं सिखाया,' अर्जुन ने चुनौती भरे लहजे में कहा। वह स्वभाव से विद्रोही था और विश्ववासु द्वारा बताए गए नियमों, जिन्हें तोड़ा नहीं जा सकता था, ने उसके स्वाभाविक विद्रोही स्वभाव को और भड़का दिया था। 'गुरुकुल में तो किसी को पता भी नहीं कि हम यहाँ हैं।'

विश्ववासु ने उसे घूरकर देखा। 'यह संभव नहीं है। गंधर्व मंत्र से इस द्वार की रक्षा होती है। मंत्र के बिना कोई भी मनुष्य इस मंत्र को तोड़ नहीं सकता। विशेषकर बच्चे तो बिल्कुल नहीं। गुरुकुल के महर्षियों में से केवल एक ही ऐसा कर सकता है।'

'लेकिन मैं तुम्हें सच बता रहा हूँ,' अर्जुन ने धीमी लेकिन दृढ़ आवाज में कहा। 'हम अपनी मर्जी से आए हैं। और हमने गुरुकुल के किसी भी शिक्षक के सिखाए बिना ही मंत्र का जाप किया है। मैं ययाति का वंशज हूँ। मैं इस बारे में झूठ नहीं बोलूँगा। हम अपने खुद के उद्देश्य से आए हैं।'

गंधर्व राजा के चेहरे पर विचारमग्न भाव आ गया। उन्होंने समूह का जायजा लिया और अपने सामने उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति के चेहरे को ध्यानपूर्वक देखा।

अगस्त्य का चेहरा भय से पीला पड़ गया था। वरुण और तनवीर स्पष्ट रूप से घबराए हुए थे, अपने कांपते हाथों को पीठ के पीछे छुपाने की कोशिश कर रहे थे। आदिरा बेचैन थी और माया के चेहरे पर घबराहट साफ झलक रही थी—आखिरकार, वही तो उन्हें यहाँ लाई थी। केवल अर्जुन ही शांत लग रहे थे—वे पहले भी गंधर्वों के समक्ष रह चुके थे और जब विश्ववासु की निगाहें उन पर टिकीं तो उन्होंने उन्हें थाम लिया। बाकी पाँचों देवता उन प्राणियों की उपस्थिति में भयभीत लग रहे थे जिनके बारे में उन्होंने केवल सुना या पढ़ा था। गंधर्वों के बारे में उन्हें जो कुछ भी पता था,

उससे यही संकेत मिलता था कि ये देवता आम तौर पर मित्रवत होते हैं, लेकिन भयंकर शत्रु बनाते हैं और नाराज होने पर निर्दयी हो जाते हैं। यहाँ तक कि पांडवों को भी कई बार उनके प्रकोप से नहीं बख्शा गया था।

अंत में विश्ववासु ने कहा, 'अगर मुझे आपकी बात पर विश्वास करना है, तो मुझे यह जानना होगा कि आपको यह मंत्र कहाँ से मिला। यह कोई ऐसी चीज नहीं है जो आसानी से साझा की जाती हो। केवल कुछ चुनिंदा लोगों को ही यह प्राप्त है। किसी ने तो इसे आपको दिया ही होगा। वह कौन था?'

अर्जुन चुप रहा। वह माया को बेनकाब नहीं करना चाहता था। यह कहना मुश्किल था कि गंधर्व राजा इस दखलंदाजी के लिए उस पर क्या प्रतिशोध लेगा।

विश्ववासु ने उसकी चुप्पी को इस बात का संकेत समझा कि वह उनके आने के पीछे के व्यक्ति के बारे में सच्चाई बताने से हिचकिचा रहा है। उसका चेहरा गंभीर हो गया।

'मुझे तुम्हारे वंश से कोई लेना-देना नहीं है, बालक,' उसने अर्जुन पर गरजते हुए कहा। 'यदि तुम यह नहीं बताओगे कि इस अपराध के पीछे कौन है...'

'यह मैंने किया था,' एक व्याकुल आवाज सुनाई दी। माया अब और बर्दाश्त नहीं कर सकी। वह आगे बढ़ी, उसका चेहरा पीला पड़ गया था, आवाज कांप रही थी। 'आपकी घाटी की हमारी यात्रा की योजना मैंने बनाई थी। यह मेरा विचार था। मैं ही यहाँ आना चाहती थी। वे केवल मेरी सुरक्षा को लेकर चिंतित थे, इसलिए मेरे साथ आए। अगर आपको किसी को जिम्मेदार ठहराना है, तो वह मैं हूँ।'

विश्ववासु स्पष्ट रूप से अचंभित रह गए। उनके चेहरे पर आश्चर्य साफ झलक रहा था। फिर उन्होंने भौंहें चढ़ा लीं। 'अब ये कैसी चाल है? सच बताओ, मेरे पास इन सब बातों के लिए समय नहीं है। तुम सिर्फ मेरी सहनशीलता की परीक्षा ले रहे हो!'

माया की आवाज़ भावनाओं और भय से कांप रही थी जब उसने जवाब दिया। उसने पहले कभी किसी राजा से बात नहीं की थी, गंधर्व राजा से तो बिल्कुल भी नहीं। 'मेरा नाम माया है। मैं... की पुत्री हूँ।' वह एक पल के लिए हिचकिचाई। अगर उसके पिता सचमुच एक महान महर्षि थे, जैसा कि सबने उसे बताया था, तो गंधर्व राजा ने उनके बारे में सुना होगा। लेकिन अगर उन्होंने नहीं सुना होता तो?

'मैं महर्षि ध्रुव की पुत्री हूँ,' माया ने अपना परिचय समाप्त किया।

विश्ववासु के चेहरे पर पहचान के भाव देखकर उसने जल्दी-जल्दी बोलना जारी रखा, ताकि राजा के दोबारा चले जाने से पहले वह अपनी बात पूरी कर सके। "एक सप्ताह पहले शुक्राचार्य ने मेरे पिता की हत्या कर दी थी, और शुक्र से बचकर निकलने के बाद मुझे गुरुकुल लाया गया। भागने से पहले मेरे पिता ने मुझसे अपनी डायरी साथ ले जाने को कहा था। उसमें उनके नोट्स थे। मैंने इसी डायरी से आपकी घाटी में प्रवेश करने का मंत्र सीखा।"

उसके बोलने के बाद सन्नाटा छा गया। विश्ववासु ने उसके चेहरे को गौर से देखा और उसकी बात पर विचार किया। वरुण, आदिरा, तनवीर और अगस्त्य ने एक-दूसरे को हैरानी से देखा। उन्हें माया के बारे में कुछ भी पता नहीं था और न ही यह कि वह गुरुकुल क्यों आई थी। उन्हें और

गुरुकुल के अन्य छात्रों को बस इतना ही बताया गया था कि माया अर्जुन की दोस्त है और दिल्ली से भागते समय वह उसके साथ आई थी।

अंत में विश्ववासु ने कहा, 'तो तुम ध्रुव की पुत्री हो।'

माया ने जोर देने का तरीका तो समझ लिया, लेकिन उसका मतलब नहीं समझ पाई।

विश्ववासु ने आगे कहा, 'मान लीजिए कि मैं आपकी कहानी पर विश्वास करता हूँ। फिर भी कुछ अनुत्तरित प्रश्न हैं। चलिए इसी से शुरू करते हैं। आप मंत्र का सही उच्चारण करके हमारी घाटी के प्रवेश द्वार तक कैसे पहुँच पाए?'

'मुझे नहीं पता,' माया ने ईमानदारी से स्वीकार किया।

'क्या आपको पता है कि पोर्टल खोलने के लिए उच्च स्तर की योगिक शक्ति की आवश्यकता होती है?' गंधर्व राजा की आँखों में अब जिज्ञासा झलक रही थी।

'जी-जी,' माया हकलाते हुए बोली। 'मुझे सच में नहीं पता कि मैंने यह कैसे किया, लेकिन मुझे बस यह आभास था कि मैं ऐसा कर पाऊंगी।'

'हम्म।' विश्ववासु ने उसके जवाब पर विचार किया। 'और अगर मैं तुम्हारी बात पर विश्वास करूं, तो तुम्हें इतना यकीन कैसे था कि तुम बिना प्रशिक्षण प्राप्त किए मंत्र का इस्तेमाल करके हमारी दुनिया में प्रवेश कर सकती हो?'

'मुझे...मुझे नहीं पता,' माया की आवाज़ में थोड़ी दृढ़ता आई जब उसे एहसास हुआ कि राजा उसकी बात से कुछ हद तक सहमत हो गए हैं। 'मुझे लगता है कि मैंने बस यही सोचा था कि यह एक आसान सा मंत्र है। अब तक तो मेरी पढ़ाई अच्छी चल रही है। महामति जिग्नेश ने भी मंत्रों को सीखने और उन्हें अच्छे से सुनाने की मेरी क्षमता की तारीफ की है।'

विश्ववासु की निगाहें माया के चेहरे पर टिकी रहीं। बोलते हुए वह उसे लगातार निहारते रहे। 'और तुम यहाँ क्यों आना चाहती थी? तुम यहाँ क्या हासिल करना चाहती थी?'

माया की उम्मीदें बढ़ गईं। आखिरकार, उसे वह सवाल पूछने का मौका मिलने वाला था जिसका जवाब वह यहां आने के बाद से ही जानना चाहती थी।

अध्याय सड़सठ

More on Brahmabhasha

गंधर्व घाटी

विश्ववासु को अविश्वास हुआ। 'क्या आपको ब्रह्मभाषा पढ़ने में मदद चाहिए?'

'जी हां,' माया ने पुष्टि की। 'मेरे पिता की डायरी में एक अपरिचित भाषा में कई प्रविष्टियाँ हैं। महामति मानते हैं कि यह ब्रह्मभाषा है। मुझे लगा था कि गंधर्व इसके बारे में हमसे ज़्यादा जानते होंगे।'

'यह डायरी कहाँ है?'

माया ने अपने सफेद वस्त्रों की तहों में हाथ डालकर डायरी निकाली और उसे विश्ववासु के बढ़े हुए हाथ में रख दिया।

गंधर्व राजा जब नोटबुक के पन्ने पलट रहे थे तो चारों ओर सन्नाटा छा गया।

अंततः उसने ऊपर देखा।

'मेरे साथ आओ।' विश्ववासु ने माया को अपने पीछे आने का इशारा किया, फिर दूसरों से कहा, 'यहीं हमारा इंतजार करो।'

विश्ववासु माया को उस कक्ष में ले गए जहाँ उन्होंने एक सप्ताह पहले अर्जुन और उनके परिवार से मुलाकात की थी। गंधर्व राजा कमरे के मध्य में स्थित लंबी लकड़ी की मेज के शीर्ष पर स्थित सोने की कुर्सी पर बैठ गए और माया को अपने दाहिनी ओर की कुर्सी पर बैठने का इशारा किया।

माया बैठ गई और सोचने लगी कि आगे क्या होने वाला है।

कुछ क्षणों के लिए राजा चुप रहे, बल्कि दूर तक देखते रहे और अपने विचारों को एकत्रित करते रहे।

माया प्रतीक्षा करती रही। उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे समूह से अलग क्यों किया गया है। विश्ववासु को यह स्पष्ट होना चाहिए था कि अर्जुन उनका नेता था। और ययाति के उत्तराधिकारी के रूप में शुक्र के विरुद्ध युद्ध का नेतृत्व करने के लिए भी उसे पूर्वनियोजित किया गया था।

गंधर्व राजा ने अंत में कहा, "अगर तुम इतनी आसानी से हमारे लोक में प्रवेश न कर पातीं और ब्रह्मभाषा का ज़िक्र न करतीं, तो मैं विश्वास ही नहीं करता। और तुम ध्रुव की पुत्री हो—एक महर्षि की—तुम्हारी शक्तियाँ ऐसी हैं जिन्हें मैं भी नहीं समझ सकता। जब मैंने पहली बार सुना कि तुम्हें गुरुकुल लाया जा रहा है, तो मैं आश्चर्यचकित रह गया। साधकों को गुरुकुल में प्रवेश की अनुमति नहीं है। और ध्रुव को जानने वाला हर कोई जानता था कि तुम एक साध्वी हो, वरना तुम्हें कई साल पहले ही गुरुकुल में दाखिला मिल गया होता। लेकिन अगर तुम बिना किसी प्रशिक्षण के, हमारे लोक के द्वारों की रक्षा करने वाले इतने शक्तिशाली मंत्र का उच्चारण कर सकती हो, तो मुझे मानना पड़ेगा कि तुम्हारे बारे में हमारी सोच गलत थी। फिर भी, सबने इतनी बड़ी गलती कैसे कर दी? तुम्हारी जैसी शक्ति को नज़रअंदाज़ कैसे कर दिया?"

'सचमुच मुझमें इतनी शक्ति नहीं है,' माया ने धीरे से, थोड़ा शर्मिंदा होकर कहा। विश्ववासु

उसकी क्षमताओं को बढ़ा-चढ़ाकर आंक रहे थे। 'सच कहूँ तो, मुझे बिल्कुल भी पता नहीं है कि मंत्र ने कैसे और क्यों काम किया, जबकि मैं तो सबसे सरल मंत्रों के अलावा किसी और मंत्र का प्रयोग भी मुश्किल से कर पाती हूँ,' उसने जंगल में अगस्त्य द्वारा सिखाए गए मंत्र और प्रकाश का एक छोटा सा गोला भी न बना पाने की अपनी असफलता के बारे में सोचते हुए कहा। 'शायद यह संयोग था,' उसने निष्कर्ष निकाला।

विश्ववासु ने सिर हिलाया। 'इस संसार में कुछ भी संयोग से नहीं होता। भाग्य जैसी कोई चीज नहीं है। केवल कर्म ही सब कुछ है। आप अपने कर्मों से ही अपना भाग्य बनाते हैं, चाहे इस जीवन में हो या पिछले जन्म में। लेकिन मेरा इरादा आपको कर्म पर उपदेश देने का नहीं है।' उन्होंने उसकी ओर देखा। 'क्या आपने भविष्यवाणी के बारे में सुना है?'

माया ने अपना सिर हिलाया।

'तो उन्होंने तुम्हें नहीं बताया।' विश्ववासु सोच में डूबे हुए थे। कुछ क्षण बाद उन्होंने आगे कहा, 'अच्छा, मैं बताता हूँ। जब सप्तऋषियों ने 5000 वर्ष पूर्व शुक्र को पाताल लोक के द्वार खोलने की योजना से विमुख होने का आदेश दिया था, तब उन्होंने एक भविष्यवाणी भी रची थी। कम से कम कुछ लोग मानते हैं कि यह एक भविष्यवाणी थी। अन्य मानते हैं कि यह उन निर्देशों का एक समूह था कि यदि शुक्र कभी सप्तऋषियों की अवहेलना करे और पाताल लोक के निवासियों को भू-लोक पर छोड़ने का पुनः प्रयास करे तो उसे कैसे रोका जाए। इसे तीन भागों में बाँटा गया था और अलग-अलग स्थानों पर छिपा दिया गया था। ऐसा माना जाता है कि भविष्यवाणी का एक भाग भू-लोक—तुम्हारे लोक—में रखा गया था; दूसरा भाग देवलोक में छिपाया गया था; और तीसरा भाग गंधर्वलोक में छिपाया गया था।'

'इसे तीन भागों में बांटकर क्यों छिपाया गया था?' माया ने सोचा।

क्योंकि सप्तऋषि यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि शुक्र कभी भी उस पर कब्ज़ा न कर पाए। उन्हें उस पर पूरा भरोसा नहीं था। उनका मानना था कि वह फिर से ऐसा करने का जोखिम उठा सकता है, खासकर कलियुग में जब देव और सप्तऋषि उसे रोकने के लिए मौजूद नहीं होंगे। यदि शुक्र को भविष्यवाणी का सार पता चल जाता, तो वह यह सुनिश्चित कर देता कि भविष्यवाणी जिन मान्यताओं पर आधारित थी, वे कभी भी वास्तविकता न बन पाएं।

माया की आंखें चौड़ी हो गईं। 'और भविष्यवाणी में अर्जुन का ज़िक्र है। क्या इसीलिए सब मानते हैं कि शुक्र उसे मारना चाहता है?'

विश्ववासु ने सिर हिलाया। 'भविष्यवाणी का पहला भाग संघ द्वारा सुरक्षित रखा गया था। किसी तरह—और आज तक कोई नहीं जान पाया है कि कैसे—शुक्र को इसके बारे में पता चल गया। भविष्यवाणी में अर्जुन का नाम तो नहीं है, लेकिन इसमें दो बहुत ही विशिष्ट बातें बताई गई हैं जो स्पष्ट रूप से अर्जुन को शुक्र को पराजित करने वाले व्यक्ति के रूप में इंगित करती हैं। पहली बात, भविष्यवाणी कहती है कि ययाति का उत्तराधिकारी ही वह व्यक्ति है। दूसरी बात, ययाति के उत्तराधिकारी के जन्म की परिस्थितियाँ अर्जुन के जन्म की परिस्थितियों से बिल्कुल मेल खाती हैं। यह मानना मुश्किल नहीं है कि शुक्र जैसे शक्तिशाली ऋषि ने भी इन बातों को समझकर अर्जुन को ही वह व्यक्ति मान लिया होगा।'

वह रुका, फिर बोला, ‘लेकिन आज मैं आपको भविष्यवाणी के उस हिस्से के बारे में नहीं बताना चाहता था। मैं उस हिस्से के बारे में बताना चाहता हूँ जो हमारी दुनिया में छिपा हुआ है—भविष्यवाणी का दूसरा भाग। सौभाग्य से, वह शुक्र से छिपा रहा और उसे पता नहीं चला, लेकिन मैंने सुना है कि उसमें कुछ ऐसे तत्व हैं जिन्हें मैं हमेशा असंभव मानता था। सच कहूँ तो, मैंने कभी भी भविष्यवाणी पर विश्वास नहीं किया। आज तक।’

माया उसके विचारों में आए बदलाव के कारण का पता लगाने का इंतज़ार कर रही थी। वह अनुमान लगा सकती थी कि इसी उद्देश्य से वह उसे इस कक्ष में लाया था, हालाँकि इससे यह स्पष्ट नहीं हो रहा था कि उसने उसे ही क्यों चुना था।

‘देखो,’ विश्ववासु आगे झुककर उसकी आँखों में देखते हुए बोला, ‘भविष्यवाणी में शुक्र के विरुद्ध प्रयोग किए जाने वाले कुछ हथियारों का उल्लेख है। और इसमें एक प्राचीन भाषा के पुनः जागृत होने और रहस्यों को उजागर करने की भी बात कही गई है।’

माया समझ गई। ‘ब्रह्मभाषा!’

‘बिल्कुल सही। मैं हमेशा से ब्रह्मभाषा के लौटने की बात पर यकीन नहीं करता था। जब देवता अपनी ही दुनिया में कैद हैं, तो यह मुमकिन ही नहीं लगता था। फिर भी, आज आप यहाँ हैं, एक नोटबुक लिए हुए जिस पर उस प्राचीन भाषा में लिखावट है।’

‘आपका मतलब यह है कि डायरी में जो श्लोक मुझे समझ नहीं आ रहे हैं, वे वास्तव में ब्रह्मभाषा में हैं?’

'जी हां। हम गंधर्व लोग इस भाषा को पढ़ नहीं सकते, लेकिन हम शब्दों को पहचानते हैं।'

माया हताश हो गई। 'यदि भविष्यवाणी कहती है कि ब्रह्मभाषा रहस्य प्रकट करेगी, तो शिलालेखों को समझने का कोई न कोई तरीका तो अवश्य होगा!'

‘निःसंदेह,’ विश्ववासु ने सहमति जताते हुए कहा। ‘लेकिन मैं इसमें आपकी मदद नहीं कर सकता। हालांकि, मैं आपको यह बता सकता हूं कि शुक्र को रोकने के लिए आपको भविष्यवाणी के बाकी दो हिस्से ढूंढने होंगे। इन हिस्सों के बिना आप अंधेरे में तीर चला रहे होंगे, यह समझने की कोशिश कर रहे होंगे कि क्या काम करेगा और क्या नहीं। अगर भविष्यवाणी अब तक सटीक रही है, तो शायद यह सिर्फ अनुमानों पर आधारित घटनाओं की भविष्यवाणी से कहीं अधिक है। हो सकता है कि जो लोग इसे निर्देशों का समूह कहते हैं, वे सही हों। अगर ऐसा है, तो आपको उन निर्देशों की आवश्यकता होगी।’

लेकिन हम भविष्यवाणी के उन हिस्सों को कैसे खोजेंगे जो आपकी दुनिया और देवलोक में छिपे हुए हैं? यह तो असंभव सा काम लगता है!

विश्ववासु ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'आपको कोई न कोई रास्ता तो ढूंढना ही होगा।'

और हम डायरी में लिखे छंदों का अर्थ कैसे निकालेंगे?

‘इस मामले में आपकी मदद करने वाला केवल एक ही व्यक्ति है।’

और वो कौन है?

‘Satyavachana.’

अध्याय अड़सठ

गर्म पानी

दिन 11

अतिथिगृह

The Gurukul

अतिथिगृह के बैठक कक्ष में छह बच्चे उदास चेहरों के साथ एकत्रित हुए। विश्ववासु के साथ माया की निजी मुलाकात के बाद, गंधर्व राजा ने गंधर्व घाटी में उनकी उपस्थिति के बारे में गुरुकुल को सूचना भेजने की व्यवस्था की थी।

वीरेंद्र, प्रमिला और तिवारी लैंड क्रूज़र में गंधर्व घाटी पहुँच गए थे और पांडव जलप्रपात से बच्चों को ले आए थे। गुरुकुल तक की वापसी की यात्रा सन्नाटे में गुज़री। न तो बच्चे बोले और न ही बड़े। समूह को भलीभांति पता था कि वे मुसीबत में हैं और संभवतः बड़े गुरुकुल पहुँचने के बाद ही इस स्थिति से निपटेंगे।

माया बहुत परेशान थी। इस पूरे अभियान का विचार उसी का था। और गंधर्वों से मिलने की यात्रा भी व्यर्थ साबित हुई। वे भी ब्रह्मभाषा के बारे में बाकी लोगों की तरह ही अनभिज्ञ थे। अब उसकी वजह से बाकी पांच लोग भी मुसीबत में फंस गए थे।

गुरुकुल तक का सफर शांतिपूर्ण रहा। वहाँ पहुँचते ही तिवारी एसयूवी लेकर गायब हो गए और उसे वहीं पार्क कर दिया जहाँ वह इतने दिनों से छिपी हुई थी, जबकि वीरेंद्र और प्रमिला बच्चों को गेस्ट हाउस में छोड़कर बिना कुछ कहे चले गए।

दोनों के जाने के बाद माया ने सबसे पहले कहा, 'दोस्तों, मुझे माफ कर दो।'

'किसलिए?' अदिरा ने हैरानी से पूछा। 'मैं तो बस बड़ों के जाने का इंतज़ार कर रही थी ताकि इस अनुभव के लिए आपका शुक्रिया अदा कर सकूँ। मुझे नहीं लगता कि अगर आपने ये योजना न बनाई होती तो मैं कभी गंधर्वों से मिल पाती।'

अगस्त्य को छोड़कर बाकी सबने सिर हिलाया। अगस्त्य ने चिड़चिड़े चेहरे से कहा, "गंधर्वों को लेकर उत्साहित होना तो ठीक है, लेकिन महामति इसे आसानी से स्वीकार नहीं करेंगे। भगवान ही जाने हमें क्या सजा मिलने वाली है। मुझे नहीं पता आप लोगों का क्या हाल है, लेकिन अगर इस मूर्खतापूर्ण गलती का असर हमारे अंतिम मूल्यांकन पर पड़ा, तो मैं सचमुच..."

वरुण ने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'हमेशा की तरह निराशावादी!' उसने अगस्त्य की ओर देखा। 'क्या तुम कभी-कभार खुशियों के बारे में नहीं सोच सकते?'

अगस्त्य ने उसे घूरते हुए कहा, 'मैं तो बस वास्तविकता की बात कर रहा हूँ। हमें महामति के बिना गुरुकुल से बाहर नहीं जाना चाहिए। यही नियम है। हम सब नियम जानते हैं और हम सबने इसे तोड़ा है। अब हमें इसके परिणाम भुगतने होंगे। यही कर्म का नियम है।'

'हाँ,' अदिरा ने उससे सहमति जताते हुए कहा। 'यह तो कर्म का फल है। लेकिन माया के साथ जाने के लिए हमें किसी ने मजबूर नहीं किया। खासकर माया ने खुद तो बिल्कुल नहीं। हममें से हर कोई अपने कर्मों और निर्णयों के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार है। हम सबने स्वेच्छा से यह फैसला लिया। हमने अपनी मर्जी से यह चुनाव किया। परिणाम चाहे जो भी हो, हमें उसका

सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए।'

'कर्म के नियम को छोड़ो,' तनवीर ने बीच में ही टोकते हुए कहा। 'मैं जानना चाहता हूँ कि तुम गंधर्व राजा से क्या बात कर रही थीं, माया। वह तुमसे अकेले में बात क्यों करना चाहता था?'

माया ने विश्ववासु के साथ हुई अपनी बातचीत दूसरों को सुनाई।

जब उसने बोलना समाप्त किया तो वरुण ने टिप्पणी की, 'वाह! तो वाकई में एक भविष्यवाणी है!'

'तुम्हारा मतलब है कि तुम्हें पक्का पता नहीं था?' माया को बात समझ नहीं आई।

'हमने इस भविष्यवाणी के बारे में हमेशा सुना है,' अदिरा ने समझाया, 'लेकिन हमें कभी पता नहीं चला कि इसमें क्या लिखा है। संघ इसे इतनी गुप्त रखता है कि केवल महामति ही जानते हैं कि भविष्यवाणी में क्या है। और मुझे लगता है कि उनमें भी कुछ ही लोग वास्तव में जानते हैं। हम छात्रों के लिए, यह हमेशा एक काल्पनिक कहानी रही है। शुक्र के पुनरागमन की तरह।'

'यह कोई किंवदंती नहीं है,' माया ने उसे आश्वस्त किया। 'शुक्र सचमुच मौजूद है। उसने मेरे पिता की हत्या की थी। और अब जब सप्तऋषि और देव उसे रोकने के लिए मौजूद नहीं हैं, तो वह अपनी योजनाओं को पूरा करने के लिए किसी भी हद तक जा सकता है।'

अगस्त्य ने कहा, 'संघ के पास कोई योजना होनी चाहिए। वे हाथ पर हाथ धरकर नहीं बैठेंगे और देखते रहेंगे जबकि शुक्र पाताल के द्वार खोल रहा है।'

'हाँ, ऐसा ही है,' अर्जुन ने सहमति जताते हुए माया की ओर देखा। 'तुम्हारे पिताजी भी इसमें शामिल थे। तुम्हें याद नहीं? जिस रात हम पहली बार महामति से मिले थे? जब उन्होंने पहली बार डायरी देखी, तो उन्होंने तुम्हारे पिताजी के बारे में कुछ कहा था कि वे शुक्र को हराने के लिए कई वर्षों से हथियार खोज रहे थे? उन्होंने यह भी कहा था कि डायरी में ब्रह्मभाषा में लिखे शिलालेखों का संबंध शायद उनकी खोज से हो सकता है। शायद इसीलिए तुम्हारे पिताजी अक्सर यात्रा करते थे। हो सकता है कि वे किसी चीज़ की खोज में निकले हों?'

माया ने गहरी सोच में पड़कर माथे पर शिकन डाली। 'पापा अक्सर यात्रा करते थे,' उसने धीरे से कहा। 'शायद एक स्कूल टीचर के लिए बहुत ज्यादा। मैंने तब इस बारे में कभी सोचा ही नहीं। यह ज़रूरी नहीं लगा। और चूंकि वह हमेशा मुझे आपके घर पर छोड़ जाते थे, इसलिए मुझे कभी किसी की कमी नहीं हुई। आप सही हो सकते हैं, अर्जुन।'

'लेकिन अगर कोई भविष्यवाणी है,' आदिरा ने अर्जुन को संबोधित करते हुए बीच में ही कहा, 'और वह स्पष्ट रूप से आपको शुक्र के विरुद्ध संघ और गण का नेतृत्व करने वाले के रूप में पहचानती है, तो शायद आपको ही उन हथियारों की तलाश करनी चाहिए, चाहे वे कुछ भी हों।'

अर्जुन ने हैरानी से उसकी तरफ देखा। 'तुम मज़ाक कर रही हो, है ना? मतलब, मैं हथियार कैसे ढूंढूंगा? मुझे तो पता भी नहीं कि वे क्या हैं!'

'अदिरा की बात सही हो सकती है, एजे,' माया ने जवाब दिया। 'भविष्यवाणी के तीन भाग हैं। पहले भाग का सार केवल संघ और शुक्र ही जानते हैं, बाकी दो भागों में क्या छिपा है, यह कोई नहीं जानता। विश्ववासु ने मुझे बताया कि गंधर्व भी नहीं जानते। वह केवल इतना ही बता सके कि गंधर्व भविष्यवाणी में शस्त्रों का ज़िक्र है। इससे हमें पता चल सकता है कि हमें क्या खोजना

चाहिए! कौन जाने इसमें और क्या छिपा है? और देवलोक भविष्यवाणी में और क्या छिपा हो सकता है?'

वरुण समझ गया कि माया क्या कहना चाह रही है। 'तुम कह रही हो कि अर्जुन को भविष्यवाणी के बाकी दो हिस्सों की तलाश करनी चाहिए।'

'क्या तुम पागल हो?' अर्जुन भड़क उठा। 'गंधर्वलोक की छोटी सी यात्रा के लिए हम पहले से ही मुसीबत में हैं। और तुम मुझे सुझाव दे रहे हो कि मैं गंधर्वों के लोक में भविष्यवाणी की खोज में भटकूँ, जबकि मुझे यह भी नहीं पता कि शुरुआत कहाँ से करनी है। इसके अलावा, भविष्यवाणी का तीसरा भाग तो हमारे लिए पूरी तरह से वर्जित है, क्योंकि वह देवलोक में छिपा हुआ है, जहाँ मुझे अनुमति मिलने पर भी प्रवेश करने की अनुमति नहीं है!'

'मैं नहीं,' माया ने मुस्कुराते हुए उससे कहा। 'हम। मैं तुम्हारी मदद करूंगी।'

'अरे,' वरुण ने विरोध करते हुए कहा। 'मुझे मत छोड़ो। मैं भी मदद करूंगा।'

'मैं भी,' अदिरा ने उत्साह से कहा।

तनवीर मुस्कुराते हुए बोला, 'जब तुम लोग मजे कर रहे हो तो मैं पीछे नहीं रुकने वाला। मुझे भी शामिल कर लो।'

वे सभी अगस्त्य की ओर देखने लगे, जो वहाँ उदास और चुपचाप बैठा था।

'चलो, अग्स,' अदिरा ने उसे फुसलाते हुए कहा। 'हमें अपने साथ एक शक्तिशाली ऋषि की ज़रूरत है। क्या तुमने ही नहीं कहा था कि हम क्षत्रिय अकेले मुसीबत का सामना नहीं कर सकते?'

'ठीक है,' चिड़चिड़ेपन से जवाब आया। 'मैं चलूँगा। लेकिन मैं अभी से आपको चेतावनी दे रहा हूँ। आप लोग व्यर्थ की खोज में लगे हैं। और जब महामति को पता चलेगा, तो आपको इसका भारी खामियाजा भुगतना पड़ेगा।'

अर्जुन ने माया की ओर देखा। 'वह सही कह रहा है। हमें महामति से अनुमति लेनी चाहिए।'

और अगर वे मना कर दें तो क्या होगा?

अगस्त्य थोड़ा उत्साहित होते हुए बोले, 'ऐसी नौबत नहीं आएगी। महामति हमें अनुमति दें या न दें, यह बात गौण है। जैसा कि अर्जुन ने अभी कहा, हमें तो यह भी नहीं पता कि शुरुआत कहाँ से करें।'

वे सभी इस दुविधा पर विचार करने लगे।

अंत में माया ने कहा, 'मेरे पास एक विचार है। लेकिन आपको वादा करना होगा कि आप किसी को नहीं बताएंगे।'

अध्याय उनसठ

परिषद की बहसें

सभा भवन

Gurukul

महेश ने महामती परिषद के सामने खड़े छह बच्चों को तीखी निगाहों से देखा। परिषद के अन्य चार सदस्य - पार्थ, जिग्नेश, उषा और अंबा - उनके दोनों ओर बैठे थे। वीरेंद्र, प्रमिला और तिवारी एक तरफ चुपचाप बैठे दर्शक बने रहे।

महेश ने एक चिंतित चेहरे से दूसरे चेहरे की ओर देखते हुए कहना शुरू किया, “हमने आपस में काफी विचार-विमर्श किया, लेकिन हम किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पाए। एक बात हमारे लिए स्पष्ट है और आपके लिए भी स्पष्ट होनी चाहिए: आपने नियम तोड़ा है। गुरुकुल का एक मूलभूत नियम तोड़ा गया है। संघ के किसी सदस्य की उपस्थिति के बिना गण का कोई भी सदस्य गुरुकुल के बाहर नहीं जा सकता। फिर भी, यहाँ मामला यह है कि आप छह लोग, जो गण के पूर्ण सदस्य भी नहीं हैं, अकेले ही गुरुकुल से बाहर निकल गए।” उन्होंने अपने शब्दों के अर्थ को समझने के लिए कुछ देर रुककर देखा।

माया को आश्चर्य हुआ कि महामती किसी निष्कर्ष पर क्यों नहीं पहुंच पाए। निश्चित रूप से उनका अपराध स्पष्ट और गंभीर था?

महेश से कार्यभार संभालते हुए जिग्नेश की आवाज़ कठोर और ठंडी थी। 'हम तय नहीं कर पा रहे थे कि तुम सरासर मूर्खता कर रहे थे या अपनी क्षमताओं पर ज़रूरत से ज़्यादा आत्मविश्वास दिखा रहे थे।' उसने धीमी आवाज़ में कहा, लेकिन उसकी आवाज़ में असहमति का भाव स्पष्ट था।

‘तुम,’ उन्होंने अगस्त्य से कहा। ‘क्या अब तुम इतने शक्तिशाली हो गए हो कि गुरुकुल के बाहर संसार में भटकने वाले पिशाचों और आत्माओं के विरुद्ध अपनी जीत की कामना करने लगे हो? मुझे पता है कि तुमने ऐसे प्रोजेक्ट्स पर काम किया है जहाँ तुमने इन जैसे प्राणियों के विरुद्ध अपनी शक्तियों का प्रभावशाली प्रदर्शन किया है। तो अब तुम्हें लगता है कि तुम इनसे अकेले ही निपट सकते हो?’

उन्होंने वरुण और तनवीर की ओर मुड़कर उन दोनों को संबोधित करते हुए कहा, ‘और तुम दोनों। महान योद्धा, तुमने हर मिशन में पिशाचों के साथ हुई झड़पों में शानदार प्रदर्शन किया है। लेकिन क्या तुम भूल गए कि तुम तीनों के साथ हमेशा एक महामति रहे हैं, जो तुम्हारी सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं? अगर तुम बाहरी दुनिया के लिए तैयार होते, तो हम तुम्हें गण में शामिल होने के लिए भेज देते।’ वे रुके। ‘तुम सब क्या सोच रहे थे?’

माया अब और बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। उसके साथियों ने उसे जो कुछ भी कहा था, उसके बावजूद वह अब भी मानती थी कि इस पूरी घटना के लिए वही जिम्मेदार थी।

‘यह मेरी गलती थी,’ उसने धीमी आवाज़ में कहा। ‘गंधर्व घाटी जाने का विचार मेरा ही था। मुझे लगा था कि गंधर्व मेरे पिता की डायरी में लिखे शिलालेखों को समझने में हमारी मदद कर सकते हैं। मैंने ही अर्जुन से संपर्क किया था और उनसे मेरे साथ चलने का अनुरोध किया था।’

महेश ने उसकी ओर मुड़कर देखा। ‘इससे कोई फर्क नहीं पड़ता,’ उसने माया से कहा। ‘वे तुम्हारे साथ गए थे। और इसके लिए वे जिम्मेदार हैं, तुम नहीं। तुम छहों ने एक ही नियम तोड़ा है।’

जिग्नेश ने माया को उत्सुकता से देखा। उसने पूछा, 'क्या यह सच है कि तुमने गंधर्वों की घाटी में प्रवेश करने के लिए मंत्र का जाप किया था?'

माया ने सिर हिलाया। उसे पता था कि क्या होने वाला है।

‘और आपको यह मंत्र अपने पिता की डायरी से मिला?’

जी हां, महामति।

“लेकिन आपको इस मंत्र का जाप करना किसी ने नहीं सिखाया। कम से कम गुरुकुल में तो किसी ने नहीं।” जिग्नेश रुका। “क्या आप हमसे कुछ छिपा रहे हैं?”

माया ने हैरानी से उसकी ओर देखा। 'छिपना? महामति, मुझे आपकी बात समझ नहीं आ रही।'

‘तुमने अभी तक केवल दो प्रकार के सबसे सरल मंत्रों में ही महारत हासिल की है। मैंने तुममें ऐसी कोई असाधारण शक्ति नहीं देखी जिससे तुम मंत्रों के उच्च स्तरों में महारत हासिल कर सको—जैसे माया उत्पन्न करना या पदार्थ को नियंत्रित करना—दूसरे लोक का द्वार खोलने वाले मंत्र का जाप करना तो दूर की बात है।’ उसकी निगाहें माया पर गड़ी रहीं। ‘तुम्हें यह सब करना किसने सिखाया?’

माया ने हैरानी से उसकी ओर देखा, उसकी आँखें चौड़ी और असमंजस से भरी थीं। कुछ दिन पहले तिवारी की कही बातें उसे याद आ गईं। वह भी इस बात पर अचंभित थी कि अचानक, रहस्यमयी रूप से, उसे वह मंत्र कैसे आ गया जिससे वे चट्टान के पार जाकर गंधर्वों के लोक में पहुँच गए, जबकि वह गुरुकुल में प्रवेश दिलाने वाला मंत्र भी नहीं बोल पा रही थी। तिवारी ने संयोगों की बात की थी। क्या यह संभव था कि वे संयोग न हों? क्या शुक्र और उसके बीच कोई ऐसा संबंध था जिसके बारे में उसे जानकारी नहीं थी? और जिसे वह समझा नहीं पा रही थी?

इस संभावना के परिणामों के बारे में सोचते ही उसकी आंखों में आंसू आ गए, और उसने अप्रिय विचार को दबाने की कोशिश करते हुए पलकें झपकाकर उन्हें रोक लिया।

अर्जुन समझ गया कि माया क्या सोच रही है; यही विचार उसके मन में भी तब आया था जब माया ने उसे अपने सपनों और तिवारी द्वारा रात में उसकी आत्मा के भटकने के बारे में बताया था। उसने अपना हाथ माया के हाथ में डाला और उसे धीरे से दबाया। माया को यह स्नेहपूर्ण भाव बहुत अच्छा लगा।

जिग्नेश ने और कुछ कहने के लिए अपना मुंह खोला, लेकिन माया की परेशानी को देखते हुए महेश ने धीरे से उसके हाथ पर हाथ रख दिया।

महेश ने कहा, ‘इन सब बातों का निचोड़ यह है कि आपने एक गंभीर गलती की है। हम यह तय नहीं कर पा रहे थे कि इस गलती को नज़रअंदाज़ करके आप सबको चेतावनी देकर जाने दें कि आज जो किया है उसे दोबारा न दोहराएं, या फिर आपको इस गुनाह के लिए सज़ा दें। एक पल के लिए भी यह मत सोचिए कि आपकी गलती मामूली है। आपने न सिर्फ अपनी बल्कि पूरे

गुरुकुल की सुरक्षा को खतरे में डाला है। लेकिन यह भी सच है कि आपने आज गंधर्वों से कुछ महत्वपूर्ण जानकारी हासिल करने में हमारी मदद की है; ऐसी जानकारी जो पहले नहीं मिल रही थी, और अगर आप अचानक उनके संसार में न गए होते तो शायद बिल्कुल भी न मिलती।'

माया को एहसास हुआ कि विश्ववासु ने वीरेंद्र और प्रमिला के साथ भी वही जानकारी साझा की होगी जो उसने उसके साथ साझा की थी, और उन्होंने बदले में महामति को सूचित किया होगा। क्या महामति वह बात समझ पाए थे जो बच्चे नहीं समझ पाए थे?

महेश ने परिषद के अन्य सदस्यों की ओर देखा। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उनके बीच एक अलिखित समझौता हो गया हो।

अंत में महेश ने कहा, "हमने आज रात तुम्हारे इस अपराध को नासमझी या अज्ञानता से हुई गलती मानकर नज़रअंदाज़ करने का फैसला किया है। हमें विश्वास नहीं है कि तुमने जानबूझकर अवज्ञा का कार्य किया होगा। लेकिन यह बात ध्यान से सुनो: हम इस गलती को दोबारा नहीं होने देंगे। अगली बार हम इतने समझदार या क्षमाशील नहीं होंगे।" उन्होंने बच्चों को जाने का इशारा किया।

तिवारी उठे और उन्हें अपने साथ लेकर हॉल से बाहर चले गए।

उनके जाने के बाद भी, जिग्नेश के शब्द माया के मन में घर कर गए। खासकर एक विचार उसे बार-बार परेशान कर रहा था।

क्या उसके अपने पिता की मृत्यु में उसकी अप्रत्यक्ष भूमिका थी?

अध्याय सत्तर

माया फिर से यात्रा करती है

उस रात

The Gurukul

माया ने शांताकारम मंत्र का जाप समाप्त किया। उसका शरीर शिथिल हो गया, उसकी सांसें धीमी हो गईं और वह बिस्तर पर लेटकर नींद आने का इंतजार करने लगी।

उसे पता था कि आज रात वह कहाँ जा रही है। वह पहले भी वहाँ जा चुकी थी, हालाँकि उस समय उसे इसका एहसास नहीं हुआ था। उस रात वह अपने लक्ष्य के कितने करीब पहुँच गई थी, इस बात से वह पूरी तरह अनजान थी। आज रात, उसने ठान लिया था कि वह उस काम को पूरा करेगी जिसे उसने तब अधूरा छोड़ दिया था।

कुछ देर बाद, उसे नींद आ गई, उसकी पलकें बंद हो गईं और माया शांति से सो गई।

कुछ ही समय बाद, उसकी आत्मा उसके शरीर से निकलकर गेस्टहाउस से बाहर तैरने लगी और दीवारों को पार करते हुए ऐसे उड़ गई मानो कोई भौतिक बाधा मौजूद ही न हो।

आज रात, उसे नाम याद करने के लिए ज्यादा ध्यान केंद्रित करने की भी जरूरत नहीं पड़ी। ऐसा लग रहा था मानो वह नाम उसके अवचेतन मन में समाया हुआ हो।

अपनी आत्मा के रूप में गंधर्व घाटी की यात्रा करने में असफल होने के बाद, माया को यह समझ आ गया था कि आत्मा यात्रा की एक विधि होती है; यह केवल विचारों द्वारा निर्देशित एक आकस्मिक प्रक्रिया नहीं है। अभिलेखों में किए गए उसके शोध से आत्मा यात्रा के दिशानिर्देश सामने आए। हालांकि ये दिशानिर्देश संक्षिप्त थे, लेकिन इनसे यह स्पष्ट हो गया कि वह अपनी आत्मा के रूप में गंधर्व घाटी की यात्रा क्यों नहीं कर पाई थी। गंधर्व घाटी की रक्षा करने वाला द्वार और उस द्वार तक पहुँचने का मंत्र उसकी असफलता के कारणों में से एक थे, यह तथ्य उसे अपने पहले प्रयास के समय ज्ञात नहीं था। लेकिन उस रात घाटी में प्रवेश न कर पाने का यही एकमात्र कारण नहीं था। अभिलेखों की पुस्तकों से उसे आत्मा यात्रा की तैयारी में हुई चूक के बारे में और अधिक जानकारी मिली।

आज रात उसने अभिलेखागार में मौजूद ग्रंथों से प्राप्त ज्ञान का उपयोग करते हुए खुद को तैयार कर लिया था।

और यह कारगर साबित हुआ।

बिना सोचे-समझे ही, वह अब नदी और जंगल के ऊपर तैर रही थी, जिसे उसने कुछ दिन पहले देखा था। उसे वही रास्ता मिल गया जो उसने पहले देखा था और वह उसका अनुसरण करते हुए पेड़ों के बीच बसी एक छोटी सी कुटिया तक पहुँच गई। यह वही इमारत थी जिसे उसने अपनी पिछली आध्यात्मिक यात्रा के दौरान ऊपर से देखा था।

क्या यही था?

वह धीरे-धीरे कुटिया की ओर बढ़ी, यह सोचकर कि उसे वहाँ क्या मिलेगा। पेड़ घने रूप से एक साथ clustered थे, मानो जंगल के अंधेरे में छिपे किसी अज्ञात, अदृश्य खतरे से बचने के लिए huddled हों।

झोपड़ी के पास कहीं से एक गहरी गुर्राहट की आवाज सुनाई दी।

एक कुत्ता।

या फिर वह भेड़िया था?

चौंककर वह रुक गई, पेड़ों के बीच में मंडराती रही, उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे आगे बढ़ना चाहिए या नहीं।

क्या सच में कोई कुत्ता या भेड़िया किसी आत्मा को नुकसान पहुंचा सकता है?

खुद को संभालते हुए, वह सावधानीपूर्वक झोपड़ी की ओर बढ़ने लगी।

अंधेरे में हलचल हुई और एक विशाल काली आकृति अचानक कहीं से तेजी से निकली और उसके सामने आकर खड़ी हो गई, जोर-जोर से भौंक रही थी।

एक विशालकाय कुत्ता; या शायद कुत्ते और भेड़िये का मिश्रित रूप। उसके रोंगटे खड़े थे और उसके विशाल मुंह से थूक निकल रहा था, वह सीधे उसकी ओर घूर रहा था और लगातार भौंक रहा था।

उसे अंदर से महसूस हुआ कि कुत्ता उसे देख सकता है।

माया को यकीन नहीं था कि वह राक्षस उसे आगे बढ़ने से रोक पाएगा या नहीं, लेकिन वह यह जानना भी नहीं चाहती थी। वह वहीं खड़ी रही, हिली नहीं, बस इंतज़ार करती रही।

आगे क्या?

कुटिया के अंदर एक बत्ती जल उठी, उसकी हल्की, झिलमिलाती रोशनी एक खिड़की से बाहर निकलकर आसपास के पेड़ों को एक अजीब से पीले रंग में नहला रही थी। कुटिया की तरफ से दरवाजे के कब्ज़ों की चरमराहट सुनाई दी, और एक बूढ़ा आदमी नज़र आया, जिसके कंधे पर हल्की पीली रोशनी मंडरा रही थी। वह लंबा था और अपनी उम्र के हिसाब से आश्चर्यजनक रूप से सीधा खड़ा था। वह धीरे-धीरे माया की ओर बढ़ा।

वह मंत्रमुग्ध होकर उसके लंबे, शुद्ध सफेद बालों, लहराती सफेद दाढ़ी और उसके चेहरे पर खुदी गहरी रेखाओं को देखती रही।

'तो फिर क्या बात है?' बूढ़े आदमी ने कुत्ते से पूछा, जिसने भौंकना बंद कर दिया और उसकी जगह कराहने लगा, उसकी पूंछ लगातार हिल रही थी, अपने मालिक को देखकर खुश था, जिसने झुककर कुत्ते के गले को खुजलाया और फिर सीधा होकर माया पर अपनी लालटेन की रोशनी डाली।

ऐसा होना ही था। आखिरकार, वह उस व्यक्ति के सामने थी जो उसे उन सवालों के जवाब दे सकता था जिनकी उसे तलाश थी।

Satyavachana.

अध्याय इकहत्तर

एक महर्षि के साथ वार्तालाप

कॉटेज

सत्यवचन के पहले शब्द माया के लिए आश्चर्यजनक थे।

“जी हां, मैं सत्यवचन हूं। मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था,” उसने सीधे माया की ओर देखते हुए कहा, हालांकि माया को यकीन नहीं था कि वह उसे देख भी पा रहा है या नहीं। “देर-सवेर तुम आ ही जाओगी। मुझे पता था। तो फिर अभी भी उम्मीद बाकी है,” उसने धीरे से अपने आप से कहा।

‘चलो।’ सत्यवचन मुड़कर कुटिया की ओर वापस चल पड़ा। माया उसके पीछे-पीछे गई। ऐसा प्रतीत हुआ कि महान महर्षि उसे देख सकते थे।

झोपड़ी के अंदर, वह लकड़ी के एक निचले चबूतरे पर पालथी मारकर बैठ गया, जो मोटे तौर पर लकड़ी के तख्तों को एक साथ ठोककर बनाया गया था और मिट्टी के फर्श पर रखा गया था।

सत्यवचना ने कहा, 'आराम से बैठो।'

माया ने कमरे में चारों ओर देखा। कमरा बिल्कुल खाली था, सिवाय उस लकड़ी के चबूतरे के, जिस पर महर्षि बैठे थे, और कमरे के दूसरे कोने में एक दूसरे, बड़े और लंबे लकड़ी के चबूतरे के, जिसे उसने उनका पलंग समझा। उसने सोचा कि क्या इस कुटिया में और भी कमरे हैं और उनमें क्या है।

सत्यवचन ने माया की ओर सीधे देखा। ऐसा लग रहा था मानो वह उसके विचारों को जान रहा हो। उसने हाथ हिलाते हुए कहा, 'हाँ, मैं तुम्हें देख सकता हूँ। मेरी योगिक शक्तियाँ मुझे तुम्हें तुम्हारे आत्मिक रूप में भी देखने और सुनने की अनुमति देती हैं। अब बताओ, तुम कौन हो?'

माया को इस सवाल का जवाब देने में मुश्किल हो रही थी। अपने आध्यात्मिक रूप में, उसके पास बोलने के लिए स्वरयंत्र या जीभ नहीं थी।

सत्यवचन ने आह भरते हुए कहा, 'एक नौसिखिया।' फिर उसने माया की ओर उत्सुकता से देखा। 'यह दिलचस्प है। तुम्हें आत्म यात्रा का प्रशिक्षण नहीं मिला है। तुम यह सब खुद ही कर रही हो।'

माया हैरान रह गई। ऐसा लग रहा था मानो यह आदमी उसके मन की बात पढ़ सकता हो।

‘नहीं, मैं तुम्हारे विचार नहीं पढ़ सकता,’ सत्यवचन ने कहा, मानो उन्हें इस बात का एहसास ही न हो कि वे माया के अनकहे विचार का जवाब दे रहे हैं। ‘आत्मा होने के नाते, तुम अपने विचारों के द्वारा संवाद करती हो। इसलिए अभी तुम्हारे विचार मेरे लिए शब्दों की तरह स्पष्ट हैं। लेकिन केवल एक शक्तिशाली योगी ही तुम्हारा संदेश ग्रहण कर सकता है। और, यदि तुम्हें आध्यात्मिक यात्रा का प्रशिक्षण प्राप्त होता, तो तुम अपने विचारों को छानना जानतीं, जिससे तुम केवल कुछ विचारों को ही व्यक्त कर पातीं और बाकी को अपने तक ही सीमित रखतीं। जाहिर है, इस समय तुम्हें यह नहीं आता। अब, तुम कौन हो? निश्चित रूप से वह एक नहीं।’

‘मेरा नाम माया है। मैं महर्षि ध्रुव की पुत्री हूँ।’

'बहुत बढ़िया। आप जल्दी सीख जाते हैं। मैं ध्रुव को जानता था। उनके निधन के बारे में

सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ।'

माया चौंक गई। 'तुम्हें पता है कि वह मर गया है?' अकेले जंगल में रहने वाले इस आदमी को यह खबर कैसे मिली?

'जी हां, मैं करता हूं।' इसके बाद कोई और स्पष्टीकरण नहीं दिया गया। 'और आप मेरी मदद मांगने आए हैं, है ना? वह एक कहां है?'

'एक?'

सत्यवचन ने अधीरता से कहा, 'जी हां, वही एक जो शुक्र के विरुद्ध संघ का नेतृत्व करेगा।'

'Oh, Arjun. He's back at the Gurukul.'

'हम्म। और बाकी पांच कहाँ हैं?'

'बाकी पांच?' माया असमंजस में थी।

सत्यवचन ने चिढ़कर कहा, 'गूंज की तरह व्यवहार मत करो। तुम। अब दो हो गए। बाकी पांच कहां हैं?'

'मुझे समझ नहीं आ रहा कि आप क्या कह रहे हैं,' माया ने व्याकुल होकर कहा। उसके मन में यह ख्याल आया कि सत्यवचन शायद इतने बूढ़े हो गए हैं कि उनकी मदद नहीं कर सकते। लेकिन उसने तुरंत इस विचार को मन से निकाल दिया, क्योंकि उसे याद आया कि वह अपने विचारों के माध्यम से संवाद कर रही है। अगर उसे आत्म यात्रा में सचमुच महारत हासिल करनी है, तो उसे इस पहलू पर वाकई काम करना होगा।

'नहीं, मैं बूढ़ा नहीं हूँ,' सत्यवचन हँसते हुए बोला। 'बूढ़ा ज़रूर हूँ। लेकिन मेरी बुद्धि अभी भी तेज़ है। और हाँ, आध्यात्मिक यात्रा के दौरान आपको अपने विचारों को नियंत्रित करना सीखना ही चाहिए।'

उसने एक पल सोचा। 'तो तुम्हें नहीं पता। अभी तक किसी ने तुम्हें बताया नहीं है। हम्म। तुमने कहा था कि तुम्हें किसी काम में मेरी मदद चाहिए। क्या काम था?'

मुझे बताया गया था कि आप कुछ छंदों का अनुवाद करने में मेरी मदद कर सकते हैं।

'यह तो इस पर निर्भर करता है। मैं महर्षि हूं, भाषाविद् नहीं।'

वे ब्रह्मभाषा में हैं।

महर्षि की भौहें आश्चर्य से ऊपर उठ गईं। 'ब्रह्मभाषा!'

'हाँ।'

'तुम्हें ब्रह्मभाषा में लिखे श्लोक कहाँ से मिले? यह तो एक मृत भाषा है।'

जी हाँ। महामति और गंधर्वों ने मुझे बताया था कि यह देवताओं की भाषा थी, जो अब प्रचलन में नहीं है। ये श्लोक मेरे पिता महर्षि ध्रुव की डायरी में हैं। मुझे इन्हें समझना होगा। मुझे लगता है कि इनमें ऐसे सुराग छिपे हो सकते हैं जो हमें भविष्यवाणी के गुम हुए हिस्सों को खोजने में मदद करेंगे और शायद शुक्र को हराने के लिए आवश्यक हथियार भी मिल जाएँ।

सत्यवचन ने मन ही मन सोचा, 'तो ध्रुव को वे श्लोक मिल ही गए।' वह एकदम उत्साहित हो गया और माया की ओर मुस्कुराते हुए बोला, 'माया, तुम पर शक करने के लिए मुझे क्षमा करना, लेकिन मुझे शक होने लगा था कि भविष्यवाणी से तुम्हारा कोई संबंध है भी या नहीं। तुम्हें इसके

बारे में कुछ भी पता नहीं था और ऐसा लग रहा था जैसे तुम्हें आत्म यात्रा का रहस्य संयोग से मिल गया हो। लेकिन तुमने अभी जो बताया है, उससे सब कुछ बिल्कुल बदल गया है।'

माया को समझ नहीं आया कि उसका क्या मतलब था या हालात में क्या बदलाव आया था। जहाँ तक उसकी बात थी, इस अजीबोगरीब बातचीत की शुरुआत से लेकर अब तक कुछ भी नहीं बदला था।

मैं बाद में समझाऊँगा। और हाँ, मैं आपको श्लोकों में मदद कर सकता हूँ, हालाँकि मैं उनका अनुवाद स्वयं नहीं कर सकता। लेकिन पहले, हमें कुछ काम करने हैं।

'क्या चीजें?'

'एक पल रुकिए।' सत्यवचन उठे और उस लकड़ी के चबूतरे की ओर चले गए जिसे माया ने उनका पलंग बताया था। वे लेट गए और अपनी आँखें बंद कर लीं।

अचानक, माया को अपने बगल में किसी और की मौजूदगी का एहसास हुआ। घबराकर, उसने सहज रूप से गुरुकुल और वहाँ मिलने वाली सुरक्षा के बारे में सोचा और पल भर में वह वापस अपने कमरे में बिस्तर पर पहुँच गई, गेस्टहाउस में अपने कमरे में, जैसे ही उसकी आत्मा उसके शरीर में पुनः प्रवेश कर गई, वह झटके से जाग उठी।

उसकी बालकनी के दरवाजे पर दस्तक हुई।

वह बिस्तर पर उठकर बैठ गई, दहशत की भावना ने उसे जकड़ लिया था।

रात के इस समय उसकी बालकनी पर कौन हो सकता है?

अध्याय बहत्तर

Satyavachana's Advice

अतिथिगृह

Gurukul

'माया, दरवाजा खोलो।'

माया की आंखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं। यह सत्यवचन की आवाज थी। लेकिन क्या उसने उसे जंगल में उसकी कुटिया में नहीं छोड़ा था?

'It is I, Satyavachana.'

माया बिस्तर पर जम सी गई, बालकनी का दरवाजा खोलने की हिम्मत ही नहीं जुटा पा रही थी। उसे इतना यकीन कैसे हो सकता था कि वाकई महर्षि ही हैं? उसने शुक्र की मायावी शक्तियों के बारे में काफी कुछ पढ़ा और सुना था। कहीं वह भृगु का पुत्र तो नहीं?

गुरुकुल की सीमा पर मंत्रों के जाप की याद उसके मन में कौंध गई और भय और घबराहट का बादल छंट गया। मंत्र का उद्देश्य गुरुकुल की सुरक्षा सुनिश्चित करना था। उसे जिग्नेश का आश्वासन याद आया कि शुक्र भी गुरुकुल को मंत्र द्वारा प्रदत्त सुरक्षा को भेद नहीं पाएगा।

लेकिन, अगर यह सत्यवचन था, तो वह यहाँ कैसे पहुँचा? अगर वह दरवाजा खटखटाने में सक्षम था, तो वह निश्चित रूप से अपने आत्मिक रूप में यहाँ नहीं था।

दरवाजे पर दस्तक जारी रही। माया ने प्राचीन ग्रंथों में महर्षियों द्वारा दिए जाने वाले श्रापों के बारे में काफी कुछ पढ़ा था, जो किसी को नाराज करने पर श्राप देने के लिए जाने जाते थे। वह कलियुग के प्रारंभ से अब तक के सबसे शक्तिशाली महर्षि माने जाने वाले महर्षि के श्राप का शिकार नहीं बनना चाहती थी। महर्षि को और इंतजार कराने से डरते हुए, वह बिस्तर से उछल पड़ी और बालकनी का दरवाजा खोल दिया।

सत्यवचन वहां खड़ा था, उसकी आंखें कोमल प्रकाश में चमक रही थीं, जिससे माया को बहुत आश्चर्य हुआ।

'मुझे खेद है कि मैंने आपको अपने आश्रम में चौंका दिया,' वह हँसते हुए बोला। 'मैं आपके कमरे में नहीं आऊँगा। आइए बालकनी में आ जाइए। हमें बात करनी है।'

माया बालकनी में बाहर निकली और अपने बालों और त्वचा पर रात की हल्की हवा का आनंद लेने लगी। उसे समझ आ गया कि वह क्या कह रहा था।

'यह आप ही थे।' उसे शर्मिंदगी महसूस हुई। 'आपके आश्रम में मैंने जो उपस्थिति महसूस की, वह आपकी आत्मा थी। आपने मुझे पूरी तरह से चौंका दिया!'

सत्यवचन के होठों पर एक शरारती मुस्कान सी दौड़ गई। 'दरअसल, मैंने तुम्हें चौंका दिया, है ना? तुम अकेले नहीं हो जो आत्मा यात्रा कर सकते हो, तुम्हें पता है।' उनका चेहरा गंभीर हो गया। 'मैं तुम्हें कुछ दिखाना चाहता हूँ। अगर तुम सचमुच सप्तों में से एक हो, तो शुक्र ने जो शुरू कर दिया है, उसे रोकना तुम्हारी और बाकी सप्तों की जिम्मेदारी है। मैं बस यही उम्मीद कर सकता हूँ कि अभी बहुत देर नहीं हुई है। संघ हमेशा की तरह आत्ममुग्ध है और उन्हें पता ही नहीं है कि क्या हो रहा है।'

सप्त? क्या बूढ़े महर्षि फिर से भटक रहे थे? वे किस बात का संकेत दे रहे थे?

सत्यवचन ने उससे कहा, 'मैं अब अपने आश्रम लौट रहा हूँ। तुम भी यथाशीघ्र अपने आत्मिक रूप में वहाँ लौट आना। आवश्यकता से अधिक देर मत करना।'

माया ने सिर हिलाया, लेकिन महर्षि तब तक गायब हो चुके थे। उसने अवाक होकर चारों ओर देखा। उन्होंने यह कैसे किया? क्या वे सचमुच यहाँ आए भी थे?

सत्यवचना के लहजे में व्याप्त हड़बड़ी को वह भलीभांति समझ गई थी। वह अपने कमरे में लौटी, बालकनी का दरवाजा बंद किया और अपने बिस्तर पर बैठकर शांताकारम मंत्र का जाप करने लगी, जिसे अब वह जानती थी कि यही मंत्र उसकी आत्मा के बल पर यात्रा करने की क्षमता का द्वार है।

कुछ ही देर में वह गहरी नींद में सो गई और उसकी आत्मा सत्यवचन के आश्रम की ओर चल पड़ी, हालांकि उसे अभी भी ठीक से पता नहीं था कि वह आश्रम कहाँ स्थित है।

माया उस छोटी सी कुटिया तक पहुंची और सत्यवचन की आत्मा को देखने के बजाय महसूस किया।

सत्यवचन ने उसके मन की बात सुनकर उसे आश्वस्त करते हुए कहा, 'कोई बात नहीं। आत्मा को सचमुच देखा नहीं जा सकता। यदि आपकी योगिक शक्तियां पर्याप्त रूप से विकसित हैं, तो आप उसे महसूस कर सकते हैं।'

'लेकिन मेरे पास कोई शक्तियां नहीं हैं,' माया ने निराशा से कहा। 'मुझे यह भी नहीं पता कि मैं साध्वी हूं या नहीं।'

सत्यवचन ने प्रसन्नतापूर्वक कहा, "अरे, आप तो सच में साध हैं। हर कोई साध होता है। हम सब जन्म से ही साध होते हैं। फिर यह हम पर निर्भर करता है कि हम योगी बनें या नहीं। या, संघ की तरह, ऋषि, महर्षि या क्षत्रिय बनें। यह सच है कि हमारे पिछले जन्मों का हमारे वर्तमान जीवन की परिस्थितियों पर प्रभाव पड़ता है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि हमारे पिछले जन्म हमारे वर्तमान जीवन की दिशा निर्धारित करते हैं। इस जीवन में हमारे कर्म ही यह निर्धारित करते हैं कि हम इस जीवन में क्या प्राप्त करेंगे। यही कर्म का नियम है। एक साध ऋषि बन सकता है। या महर्षि भी। विश्वामित्र को देखिए। वे शुरुआत में क्षत्रिय थे। फिर भी, साध ही थे। उनके पास संघ के क्षत्रियों जैसी शक्तियां कभी नहीं थीं। फिर भी, वे महर्षि बने। और कोई साधारण महर्षि नहीं। वे सप्तऋषि बने। वे वर्तमान सप्तऋषि मंडल के सदस्य हैं।"

'लेकिन मैं उच्चतर मंत्रों का उपयोग नहीं कर सकती,' माया ने उत्तर दिया। 'मैंने कोशिश की और असफल रही।' जैसे ही यह विचार उसके मन में आया, उसी समय एक और विचार उसके चेतना में कौंध गया—वह मंत्र जिसने उसे गंधर्व घाटी में प्रवेश करने में सक्षम बनाया था।

सत्यवचन ने उसे सुधारते हुए कहा, 'यहाँ आप हैं। आपने उच्चतम श्रेणी के मंत्रों में से एक का प्रयोग किया। एक ऐसा मंत्र जिसका प्रयोग केवल सबसे शक्तिशाली महर्षि ही कर सकते हैं। संघ में मुट्ठी भर लोग ही ऐसे हैं जो आपके जैसा कर सकते हैं।'

माया ने कुछ नहीं कहा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या सोचे।

सत्यवचन ने आग्रह किया, 'समय दीजिए। यदि आप मंत्र का प्रयोग करने में असफल रहे, तो

इसका कारण यह नहीं था कि आप ऐसा नहीं कर सकते। इसका कारण यह था कि आप अपने मन को ठीक से एकाग्र नहीं कर पाए। यह एक साधक का गुण है, मन से सभी भौतिक विकर्षणों को दूर करने में असमर्थता। जब आपने गंधर्व घाटी में प्रवेश करने के लिए मंत्र का प्रयोग किया, तब आपका मन अव्यवस्था और विकर्षणों से मुक्त था। आपका संपूर्ण अस्तित्व, आपकी चेतना मंत्र और आपके लक्ष्य पर केंद्रित थी। इसीलिए आप सफल हुए।'

माया ने पीछे मुड़कर सोचा और महसूस किया कि वह सही था। पन्ना के जंगल में, जब उसने प्रकाश का गोला बनाने का प्रयास किया था, तो उसका मन एकाग्र होने में संघर्ष कर रहा था। लेकिन पांडव जलप्रपात पर, उसका ध्यान पूरी तरह से केंद्रित था और उसने घाटी में प्रवेश करने पर ध्यान दिया था। वह घाटी में प्रवेश करना चाहती थी। उसे जिग्नेश के वे शब्द भी याद आए जो उसने अपने पहले पाठ के दौरान गुरुकुलों और साधकों के बीच अंतर के बारे में कहे थे। उसने ठीक वही बात कही थी जो सत्यवचन अब उसे बता रहा था।

सत्यवचन ने दृढ़ता से, लेकिन कोमलता से कहा, 'लेकिन इस बारे में बाद में बात करने का समय होगा। अभी हमें कुछ करना होगा, तभी सब कुछ खो सकता है। मैं अब तुम्हारी आत्मा को अपनी आत्मा से बांधने जा रहा हूँ, ताकि तुम मेरे पीछे-पीछे चल सको, चाहे तुम्हें पता ही न हो कि मैं कहाँ जा रहा हूँ। मैं नहीं चाहता कि तुम प्रेतलोक में खो जाओ। शायद तुम्हें एहसास नहीं हुआ होगा, लेकिन शुक्र अब प्रेतलोक पर शासन करता है। भगवान शिव, जो भूतगण के वास्तविक स्वामी हैं, के वरदान के फलस्वरूप सभी प्रेत उसके आदेश का पालन करते हैं। तुम्हें सावधान रहना होगा, अन्यथा तुम पाओगे कि तुम्हारी आत्मा शरीर में रहते हुए भी फँस गई है, और तुम अन्य प्रेतों की तरह शुक्र के दास बन जाओगे।'

माया कुछ कह पाती, उससे पहले ही वह गति के एक झटके में कहीं दूर चली गई। उसे समय या स्थान का कोई आभास नहीं था, बस इतना एहसास था कि वह सत्यवचन से किसी न किसी रूप में जुड़ी हुई है, जो एक अज्ञात गंतव्य की ओर तीव्र गति से बह रहा था।

कुछ ही क्षणों में वह अजीब हलचल रुक गई। वे अपने गंतव्य पर पहुँच चुके थे। माया ने खुद को संभाला और चारों ओर देखा। उसने नीचे एक ऐसा दृश्य देखा जिसने उसे भयभीत कर दिया।

अध्याय तिहत्तर

विश्वराज की खोज

दिन 12

The Gurukul

गुरुकुल के छात्रों के लिए दिन की शुरुआत एक आश्चर्य के साथ हुई।

सभी को सूचित किया गया, 'कुछ समय के लिए ध्यान की कक्षाएं नहीं होंगी।'

माया और अर्जुन को सबसे पहले इस बात का पता चला, जब वे ध्यान कक्षाओं के लिए सभागृह की ओर चल पड़े। जिग्नेश ने उन्हें भूमिगत सभागृह के द्वार पर मिलते हुए बताया, 'महामती महेश कुछ दिनों के लिए गुरुकुल में नहीं रहेंगे। उनके लौटने पर आपकी कक्षाएं फिर से शुरू हो जाएंगी।'

इसके बाद वह माया को अपने साथ ले गया ताकि वह उसके साथ अपनी कक्षाएं शुरू कर सके, जबकि अर्जुन अपने चाचा के साथ अभ्यास मैदान में अपने स्वयं के प्रशिक्षण सत्रों के लिए चला गया।

जैसे-जैसे दिन बीतता गया और महामति महेश की अनुपस्थिति की खबर विद्यार्थियों में फैलती गई, सभी इस बात पर सहमत हुए कि यह अत्यंत असामान्य था। इसके अलावा, उषा और अंबा की अनुपस्थिति भी रहस्यमय थी। आज अर्जुन के साथ युद्ध अभ्यास सत्र में केवल पार्थ ही उपस्थित था। अंबा का कोई नामोनिशान नहीं था।

वह न केवल अर्जुन के प्रशिक्षण सत्रों से अनुपस्थित थी, बल्कि अन्य क्षत्रियों के साथ उसकी कक्षाएं भी निलंबित कर दी गई थीं, जैसा कि उषा की कक्षाएं भी निलंबित कर दी गई थीं।

छात्रों ने तुरंत सारी बातें समझ लीं। महेश, अंबा और उषा के एक ही समय पर लापता होने से यह स्पष्ट हो गया कि वे तीनों एक साथ गुरुकुल छोड़कर चले गए थे।

लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हुई। दोपहर के भोजन के समय, अर्जुन ने अपनी माँ को हमेशा की तरह ढूँढा, लेकिन वह उसे नहीं पा सका।

अंत में उसने वीरेंद्र से पूछा, 'मां कहां है?'

वीरेंद्र ने कुछ बुदबुदाया जो अर्जुन को समझ नहीं आया।

'अंकल जी, कृपया मुझे बता दीजिए। मैंने तो आज उसे देखा भी नहीं है।'

वीरेंद्र ने अर्जुन का हाथ पकड़ा और उसे भोजन कक्ष के एक कोने में ले गया। 'वह अन्य महामति सदस्यों के साथ गई है,' उसने धीमी आवाज़ में अर्जुन को बताया।

अर्जुन हैरान था। तीनों महामतियों का गुरुकुल से एक साथ जाना समझ में आता था। वे सभी संघ परिषद की बैठक में जा रहे होंगे। लेकिन उसकी माँ का क्या?

‘वे कहाँ गए हैं?’ उसने धीमी आवाज़ में पूछा। वीरेंद्र के हावभाव से वह समझ गया कि इस खबर को गुप्त रखा जाना है।

वीरेंद्र ने उससे कहा, ‘हमें कल रात सूचना मिली कि विश्वराज मिल गया है। वे उसे लाने गए हैं। उन्हें दो क्षत्रिय और दो महर्षियों की ज़रूरत थी। मैं भी जाता, लेकिन तुम्हारी माँ ने जाने की ज़िद की।’

‘विश्वराज कौन है?’

वीरेंद्र ने उसे विश्वराज और त्रिवेदी के बारे में बताया और यह भी बताया कि कैसे संभव है कि गुरुकुल में उनके आगमन की रात शुक्र के राक्षसों द्वारा किए गए हमले में विश्वराज का हाथ रहा हो।

अर्जुन का हृदय धंस गया। यदि विश्वराज शुक्र के साथ मिले हुए थे, जैसा कि महामति मानते थे, तो वे खतरनाक हो सकते थे। अर्जुन ने तुरंत अपने विचार बदले। विश्वराज वास्तव में खतरनाक थे। इस अभियान का खतरा इस तथ्य में निहित था कि उन्हें लाने गए दल में दो महर्षि और दो क्षत्रिय शामिल थे। यह या तो विश्वराज की शक्ति की स्वीकृति थी या इस संभावना की कि उनके पास अतिरिक्त सैनिक थे जिन्हें भगोड़े ऋषि को पकड़ने के लिए वश में करना आवश्यक होगा।

और उसकी माँ भी उस मिशन का हिस्सा थी। उसने स्वेच्छा से खुद को बड़े खतरे में डाला था। उसके मन में गर्व का भाव उमड़ आया। लेकिन वह अचानक से अपने मन में उठे भय को भी दूर नहीं कर सका।

शुक्र के कारण उसके पिता की मृत्यु हो गई थी। अब वह अपनी माँ को खोना नहीं चाहता था।

अध्याय चौहत्तर

Satyavachana's Arrival

उस शाम

अतिथिगृह

The Gurukul

तिवारी माया के चेहरे को निहारते हुए उसके द्वारा कही गई बातों पर विचार कर रहे थे। माया ने महर्षि से निजी तौर पर बात करने का अनुरोध किया था, जिसके बाद वे दोनों गेस्टहाउस के बैठक कक्ष में बैठे थे।

माया दिनभर बेचैन रही, जिसके चलते मंत्रों पर ध्यान न देने के कारण जिग्नेश ने उसे डांट लगाई। लेकिन जब पिछली रात जो कुछ उसने देखा था, उससे उसका मन विचलित हो रहा था, तो वह उच्चारण और मंत्रों के उद्देश्य पर ध्यान कैसे केंद्रित कर सकती थी?

जमीन में बने विशाल छेद से निकलते हुए काले आकृतियों के उग्र समूह का दृश्य, उनकी काली-सिंदूरी रंग की खाल पर चमकती चांदनी और तारों की रोशनी, और स्वयं शुक्र द्वारा उकसाए गए उन जीवों का दृश्य उसकी स्मृति में बस गया था। सत्यवचन ने उसे शांत करने की कोशिश करते हुए, उनसे निपटने के लिए आवश्यक उपायों के बारे में विस्तार से बताया था, इसके बावजूद उसने पूरी रात कांपते हुए बिस्तर पर बिताई।

शुक्र के शब्दों की गर्जना के बीच, एक वाक्य सबसे अलग था। आत्मा यात्रा के बाद माया जब अपने बिस्तर पर दुबकी हुई थी, तो उन भयानक प्राणियों के बारे में सोचकर वह कांप रही थी जिन्हें उसने देखा था, और वे शब्द उसके दिमाग में गूंज रहे थे, जिससे उसकी रूह कांप रही थी।

'Destroy the Gurukul.'

माया को यह समझने में ज़्यादा मुश्किल नहीं हुई कि शुक्र किस गुरुकुल की बात कर रहा था। भविष्यवाणी के अनुसार, केवल एक ही गुरुकुल था जहाँ उसके शत्रु को शरण दी गई थी। यह स्पष्ट था कि पन्ना स्थित गुरुकुल पर हमला होना तय था।

'माया, तुम्हारी बात गंभीर है,' तिवारी ने काफी देर बाद कहा। 'मुझे बताने में तुमने इतनी देर क्यों कर दी?'

माया ने उदास स्वर में कहा, "मैं डर गई थी। मैं अपने शरीर से बाहर निकलने के अनुभवों का रहस्य उजागर किए बिना यह कैसे बता सकती थी कि मुझे यह जानकारी कैसे मिली? और आपने खुद मुझसे कहा था कि मुझे यह रहस्य अपने तक ही रखना चाहिए, कहीं लोग मुझ पर शुक्र से किसी तरह का संबंध होने का संदेह न कर लें। इसके अलावा, मैंने सोचा था कि गुरुकुल हमारे मंत्र से सुरक्षित है और शुक्र की किसी भी रचना से नष्ट नहीं हो सकता। इसलिए मुझे समझ नहीं आ रहा कि शुक्र हमारी सुरक्षा में सेंध कैसे लगा सकता है।"

तिवारी ने नरमी से कहा, 'मैं आपकी दुविधा समझता हूँ। लेकिन गुरुकुल की सुरक्षा से जुड़ी कोई भी जानकारी तुरंत परिषद को देनी होगी। आपको तुरंत मेरे पास आना चाहिए था। मैं आपकी बात उजागर किए बिना उन्हें बताने का कोई न कोई तरीका निकाल लेता।' उन्होंने थोड़ी देर रुककर अपनी बात जारी रखी।

तिवारी ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा, 'कल रात तुमने जो देखा, वो शुक्र की रचनाएँ नहीं थीं। वे सृष्टि के समान ही प्राचीन प्राणी हैं। यह सच है कि वे गुरुकुल पर कब्ज़ा नहीं कर सकते— उनके लिए प्रवेश करना भी मुश्किल होगा, हालांकि नामुमकिन नहीं— लेकिन वे गुरुकुल को घेरकर हमें हमारे आश्रय और सुरक्षा कवच से बेदखल कर सकते हैं। यही तुमने शुक्र को उनसे कहते हुए सुना। यही उसकी योजना है। यह उसकी ओर से एक मास्टरस्ट्रोक है। उसे मुक्त करने के लिए...'

'लो, तुम यहीं हो।' तिवारी की बात बीच में ही रुक गई जब वीरेंद्र कमरे में दाखिल हुआ। 'हम तुम्हें ढूंढ रहे थे।' उसने तिवारी से माया और फिर तिवारी की ओर देखा, उसे एहसास हुआ कि उसने एक गंभीर चर्चा में दखल दिया है। 'माफ़ करना, बीच में दखल देने के लिए, लेकिन यह बहुत ज़रूरी है। परिषद ने आप दोनों को बुलाया है।'

माया एकदम जम गई। उसके मन में सबसे पहला ख्याल यही आया कि परिषद को किसी तरह कल रात सत्यवचन के साथ उसकी आत्म यात्रा के बारे में पता चल गया होगा। नहीं तो वे उसे क्यों बुलाते?

वीरेंद्र ने कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया और वह क्षत्रिय के लंबे-लंबे कदमों के साथ कदम मिलाकर चलने लगी, जब वे गेस्टहाउस से असेंबली हॉल की ओर जा रहे थे।

वातावरण में उत्साह का एक स्पष्ट एहसास था; एक ऐसी हलचल जिसे माया पूरी तरह से समझा नहीं पा रही थी। छात्रों के समूह असेंबली हॉल की ओर जाने वाले केंद्रीय मार्ग के आसपास इकट्ठा होकर धीमी आवाज़ में बातें कर रहे थे।

माया ने वरुण, तनवीर और अर्जुन को देखा। उसके गुजरते समय वरुण ने चुपचाप कुछ कहा और अर्जुन ने उसे दबे स्वर में अंगूठा ऊपर करके इशारा किया।

क्या हो रहा था?

तीनों सभा भवन पहुँचे और ध्यान कक्ष की सीढ़ियों पर चढ़े जहाँ महामति महेश अपनी कक्षाएँ लेते थे। दरवाजे बंद थे। माया जानती थी कि इसका क्या मतलब है। महामति परिषद का सत्र चल रहा था।

उसके मन में घबराहट सी छा गई। परिषद क्यों चाहती थी कि वह उनके एक सत्र में उपस्थित रहे?

वीरेंद्र ने दरवाजा धक्का देकर खोला और वे अंदर चले गए।

कमरे में तीन लोग मौजूद थे। महामती परिषद के जिग्नेश और पार्थ दरवाजे की ओर मुंह करके कुर्सियों पर बैठे थे।

तीसरी कुर्सी पर बैठे व्यक्ति को देखकर माया ने अपनी सांस रोक ली।

Satyavachana!

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि पूरे परिसर में उत्साह की लहर दौड़ गई थी। सत्यवचन अपने एकांतप्रिय स्वभाव के लिए प्रसिद्ध थे और अपने साथी महर्षियों की संगति से दूर रहते थे। अधिकांश छात्रों और यहाँ तक कि कुछ शिक्षकों ने भी उन्हें कभी देखा तक नहीं था। जब गुरुमूर्ति ने पहली बार माया को इस एकांतप्रिय महर्षि के बारे में बताया था, तो उन्होंने उल्लेख किया था

कि सत्यवचन संघ से स्वेच्छा से वनवास पर थे, जिसके कारण किसी को याद नहीं थे - यह घटना बहुत पहले घटी थी।

फिर भी, वह यहाँ महामति परिवार के साथ बैठे थे।

वह यहाँ क्या कर रहा था?

जैसे ही माया ने खुद से यह सवाल पूछा, उसे जवाब मिल गया। उसके सबसे बुरे डर सच होने वाले थे।

सत्यवचन गुरुकुल पर होने वाले संभावित हमले के बारे में परिषद को चेतावनी देने के लिए पन्ना आया था।

क्या उसने उन्हें माया की आत्मा के उसके आश्रम तक जाने के बारे में बताया था? क्या उसने उन्हें बताया था कि कैसे माया और उसने मिलकर हमले की तैयारियों को देखा था?

वह दुविधा में फंसी हुई थी। क्या उसे सत्यवचन को स्वीकार करना चाहिए या उसे पहचानने का नाटक करना चाहिए? यदि उसने महामति को उसकी आत्मा के यात्रा करने के बारे में बता दिया होता और वह उसे न पहचानने का नाटक करती, तो वह मूर्ख प्रतीत होती। लेकिन यदि उसने उन्हें नहीं बताया होता और वह उसे पहचान लेती, तो वह गंभीर मुसीबत में पड़ जाती और उसी रहस्योद्घाटन का कारण बन जाती जिससे वह बचना चाहती थी।

माया वहां असमंजस में खड़ी थी, कोई फैसला नहीं ले पा रही थी।

अध्याय पचहत्तर

माया का रहस्य

सभा भवन

The Gurukul

सत्यवचन ने उसकी समस्या का समाधान कर दिया। 'तुम्हें फिर से देखकर अच्छा लगा, माया,' उसने उसी गहरी आवाज़ में उसका अभिवादन किया जो उसने कल रात उसकी कुटिया में सुनी थी।

माया ने अभिवादन के रूप में सिर झुकाया लेकिन जवाब में कुछ नहीं कहा।

जिग्नेश ने माया को तीखी निगाहों से देखा। 'महर्षि सत्यवचन ने हमें कल रात तुम्हारे उस छोटे से कारनामे के बारे में बताया। तुमने हमें कभी नहीं बताया था कि तुम आत्मयात्रा करने में सक्षम हो।'

यह कोई सवाल नहीं था, इसलिए माया को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या जवाब दे। क्या जिग्नेश माफी की उम्मीद कर रहा था?

तिवारी ने उसकी मदद के लिए हस्तक्षेप किया। उन्होंने स्वीकार किया, 'उसने मुझे बताया था। मैंने सोचा कि अभी इस बारे में बात न करना ही बेहतर होगा।'

जिग्नेश ने भौंहें चढ़ा लीं। ‘लगता है इस बारे में हमें अकेले में बात करनी होगी, महर्षि रतन।’ उन्होंने माया की ओर ध्यान दिया। ‘तुम तो आश्चर्यों का भंडार हो। पहले गंधर्वलोक का द्वार खोलने का मंत्र। और अब अपनी आत्मा का उपयोग करके यात्रा करना। फिर भी, तुमने अब तक अपनी शिक्षाओं में ऐसा कोई संकेत नहीं दिखाया है जिससे इन दोनों में से किसी भी कार्य को करने की तुम्हारी क्षमता का पता चले। हम इसका क्या अर्थ निकालें?’

सत्यवचन ने शांत स्वर में कहा, “हो सकता है कि उसे अपनी शक्तियों को विकसित करना सिखाया ही न गया हो। उसके पास कर्मों का ऐसा भंडार हो सकता है जिसके बारे में उसे जानकारी न हो। उसे उस भंडार का उपयोग करने के लिए मदद की ज़रूरत है। अब तक हमने जो देखा है, उससे यह पता चलता है कि उसे अपनी कर्म शक्तियों के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता नहीं थी, बल्कि वह उन्हें अवचेतन स्तर पर उपयोग करने में सक्षम थी।”

माया ने जिग्नेश के चेहरे पर गुस्से की एक झलक देखी। यह क्षण भर के लिए ही थी, और लगभग तुरंत ही गायब हो गई, लेकिन यह स्पष्ट थी।

“महर्षि सत्यवचन ने अभी हमें बताया है कि शुक्र ने महाताल के द्वार खोल दिए हैं,” जिग्नेश ने अपनी बात जारी रखी। “लेकिन आप यह पहले से ही जानते होंगे क्योंकि आप महर्षि के साथ गए थे और आपने यह दृश्य देखा था।” उसका लहजा असहमतिपूर्ण था।

अचानक पिछली रात की यादें ताजा हो गईं और माया को मतली महसूस होने लगी।

सत्यवचन ने जिग्नेश से धीरे से कहा, "मैंने तुम्हें कद्रू के वंशजों की रिहाई के बारे में इसलिए नहीं बताया था कि तुम बच्चे को कोस सको," लेकिन इतनी धीमी आवाज़ में नहीं कि माया न सुन सके।

जिग्नेश फटकार सुनकर शर्म से लाल हो गया। उसने विरोध करते हुए कहा, 'उसे हमें पहले ही

बता देना चाहिए था। सुबह मेरी उसके साथ क्लास थी। अगर हमें तब बता दिया जाता...'

'तुम फिर भी कुछ नहीं कर सकते थे।' सत्यवचन की तीखी निगाहें अब जिग्नेश पर टिकी थीं। उनका स्वर कठोर था। 'माया ने तुम्हें समय पर सूचना दी या नहीं, यह उतना महत्वपूर्ण नहीं है। पिछले सप्ताह की घटनाओं से ही यह स्पष्ट हो जाना चाहिए था कि आगे क्या होने वाला है। संघ सो रहा था! अब कार्रवाई की आवश्यकता है, अंतहीन चर्चा की नहीं। हमें उस चीज़ के लिए तैयार रहना होगा जो हमारा इंतजार कर रही है। मैं आज यहाँ अपना वचन तोड़कर आया हूँ, केवल इसलिए कि दुनिया खतरे में है और मुझे पता था कि माया सजा के डर से तुम्हें वह सब बताने में संकोच कर सकती है जो उसने देखा है। मुझे खुशी है कि मैं आया क्योंकि मुझे लगता है कि मैं सही था।'

माया सोच रही थी कि सत्यवचन किस प्रतिज्ञा की बात कर रहे हैं। वह दोनों महर्षियों को बड़ी उत्सुकता से देख रही थी। कमरे में तनाव साफ महसूस हो रहा था। जिग्नेश, सत्यवचन की खुली फटकार से स्पष्ट रूप से असहज थे, लेकिन यह भी साफ था कि उन्हें बड़े महर्षि की बात माननी ही थी। माया को समझ नहीं आ रहा था कि सत्यवचन उनका पक्ष क्यों ले रहे हैं, लेकिन उन्हें खुशी थी कि वह उनका पक्ष ले रहे हैं। गुरुकुल आने के बाद से ही वह खुद को अलग-थलग और सताया हुआ महसूस कर रही थीं। जिग्नेश के तीखे व्यंग्यों के बावजूद, उन्होंने मंत्रों में महारत हासिल करने का दृढ़ निश्चय कर लिया था और उनकी लगातार आलोचना से उत्पन्न होने वाली चिंता और निराशा से निपटने की पूरी कोशिश कर रही थीं। शायद, उसने सोचा, सत्यवचन सचमुच उनका पक्ष नहीं ले रहे थे। वह तो बस निष्पक्षता बरत रहे थे।

तिवारी ने एक बार फिर बीच में टोकते हुए कहा, 'उसने मुझे बताया कि हम आपके पास आने ही वाले थे कि हमें परिषद में बुलाया गया।'

सत्यवचन ने तिवारी की ओर देखते हुए दोहराया, 'कोई फर्क नहीं पड़ता। आप अपनी सुरक्षा मजबूत कर सकते हैं और उन्हें अंदर आने से रोकने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन आप उनसे लड़ नहीं सकते। और आप उन्हें हमेशा के लिए रोक भी नहीं सकते। आपके चार सबसे शक्तिशाली संघ सदस्य गुरुकुल से दूर हैं, जिससे आपकी सेना पहले ही बुरी तरह कमजोर हो चुकी है। मैं केवल यही आशा कर सकता हूँ कि विश्वराज के बारे में खबर शुक्र की कोई चाल न हो, ताकि उन्हें दूर ले जाकर गुरुकुल को कमजोर सुरक्षा में छोड़ दिया जाए। लेकिन अगर महेश और अन्य लोग यहाँ होते भी, तो भी आपके पास नागों को हराने के साधन नहीं होते। गुरुकुल को नागों द्वारा घेर लिए जाने में बस कुछ ही समय बाकी है। आप इसे रोक नहीं सकते। अगर आप घेराबंदी शुरू होने के बाद उसे तोड़ना चाहते हैं, तो आपके पास केवल एक ही रास्ता है। और मैंने आपको बता दिया है कि वह क्या है।'

उस छोटे से समूह में सन्नाटा छा गया।

माया सत्यवचन की बात भली-भांति समझ रही थी। पिछली रात, महाताल के खुले द्वारों से नागों की भीड़ को निकलते देख लौटने के बाद, माया बहुत चिंतित थी। तभी सत्यवचन ने एक योजना का सुझाव दिया था। उसने यह योजना बनाई थी कि यदि परिषद इसे करने में असमर्थ या अनिच्छुक हो, तो वह अर्जुन और उसके मित्रों की सहायता से स्वयं इसे अंजाम देगी।

सत्यवचन ने उसे यह नहीं बताया था कि वह स्वयं आकर यह सुनिश्चित करेगा कि योजना का कार्यान्वयन हो।

'यही कारण है कि माया को इस परिषद में शामिल होने के लिए कहा गया है,' सत्यवचन ने उसकी ओर ध्यान देते हुए कहा। 'यह केवल तुम ही कर सकती हो।'

जिग्नेश ने हठपूर्वक कहा, 'मुझे अब भी लगता है कि महामति में से कोई एक इस योजना को बेहतर ढंग से अंजाम दे सकता है। किसी नौसिखिए को भेजना बहुत बड़ा जोखिम है। अगर वह असफल हो गई तो क्या होगा?'

सत्यवचन ने उत्तर दिया, 'हम इस पर पहले भी चर्चा कर चुके हैं। गुरुकुल की रक्षा के लिए संघ के प्रत्येक सदस्य की, मुझ समेत, यहाँ आवश्यकता है। हम अपने सदस्यों की संख्या में और कमी नहीं कर सकते। हमें नहीं पता कि शुक्र ने कोई ऐसा मंत्र या हथियार विकसित किया है या नहीं जो सुरक्षा कवच को भेद सके और गुरुकुल की रक्षा के लिए आपके द्वारा प्रयुक्त मंत्र का प्रतिकार कर सके। हम किसी भी क्षत्रिय को नहीं भेज सकते—इसमें बहुत समय लगेगा। और आपके अन्य शिष्यों में से कोई भी आत्मा यात्रा करने में सक्षम नहीं है। केवल वह ही सक्षम है।' उन्होंने माया की ओर इशारा किया।

'ठीक है, फिर।' जिग्नेश ने हार स्वीकार कर ली, लेकिन वह जरा भी खुश नहीं दिखे।

सत्यवचन ने आग्रह किया, 'इसे उसके लिए एक और परीक्षा समझो। अगर वह सफल होती है, जैसा कि मुझे विश्वास है, तो मैं उसे अपने संरक्षण में लेकर स्वयं उसे शिक्षा दूंगा, क्योंकि तब वह यह साबित कर देगी कि वह वास्तव में एक ऋषि बनने की राह पर है।'

जिग्नेश ने कुछ नहीं कहा, बस सहमति में सिर हिलाया।

माया अपनी खुशी को रोक नहीं पा रही थी। कलियुग के प्रारंभ से लेकर अब तक के सबसे शक्तिशाली महर्षि ने न केवल उसकी सिफारिश की थी, बल्कि उसे अपना निजी महामति बनने का प्रस्ताव भी दिया था! यह ऐसी बात थी जिसकी उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

लेकिन इससे पहले कि ऐसा हो पाता, उसे एक काम पूरा करना था।

अब गुरुकुल का ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया का भविष्य उसके कंधों पर टिका था।

अध्याय छिहत्तर

यात्रा का समय

अतिथिगृह

The Gurukul

जब दोनों लड़कियां कॉटेज की पहली मंजिल पर स्थित माया के बेडरूम की ओर चल रही थीं, तब माया ने अमीरा को देखकर मुस्कुराया। पिछले कुछ दिनों में, चार दिन पहले रात के खाने के समय माया के रूखे व्यवहार के बावजूद, अमीरा ने कई बार उससे दोस्ती करने की कोशिश की थी।

अपनी ही परेशानियों में उलझी और अपने पिता की डायरी में लिखे रहस्यमय छंदों को समझने के एकमात्र लक्ष्य में डूबी माया ने उस नौसिखिया पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया था। लेकिन उसे एहसास हो गया था कि लड़की का इरादा अच्छा था और वह उसके साथ विनम्रता से पेश आई थी। बात बस इतनी थी कि इस समय माया की प्राथमिकता दोस्ती करना नहीं थी। लेकिन अमीरा ने बड़ी लगन से काम लिया और माया को धीरे-धीरे वह लड़की पसंद आने लगी।

आज जब परिषद ने नागों के आसन्न आक्रमण की तैयारी की योजना पर सत्यवचन से सहमति जताई, तो माया के जीवन की अब तक की सबसे महत्वपूर्ण यात्रा पर निकलने से पहले उसकी रक्षा करने की जिम्मेदारी एमीरा ने स्वेच्छा से आगे की। अर्जुन पहले यह जिम्मेदारी लेना चाहता था, लेकिन परिषद ने माया की रक्षा करने के उसके प्रस्ताव को खारिज कर दिया।

वीरेंद्र ने उससे कहा था, 'तुम्हारा स्थान यहीं गुरुकुल में है। अगर हमें नागों से लड़ना है, तो तुम्हें युद्ध में शामिल होना होगा। हम तुम्हारी प्रतिभा को पहरेदार के काम में बर्बाद नहीं कर सकते।'

परिषद के अन्य सदस्य वीरेंद्र से पूरी तरह सहमत थे और अर्जुन के पास कोई विकल्प नहीं बचा था। हालांकि वह माया के साथ रहकर उसकी सुरक्षा सुनिश्चित करना चाहता था, लेकिन उसे पीछे हटना पड़ा।

तभी अमीरा ने एक ऐसे काम के लिए स्वेच्छा से आगे आई जिसे कोई करना नहीं चाहता था। और माया इसके लिए आभारी थी। हालाँकि हर कोई इसे एक महत्वहीन काम समझ रहा था, माया जानती थी कि यह कितना महत्वपूर्ण था। अमीरा को न केवल यह सुनिश्चित करना था कि कोई माया को परेशान न करे, बल्कि उसे यह भी सुनिश्चित करना था कि जब तक माया अपना मिशन पूरा न कर ले, वह सुरक्षित रहे। किसी को नहीं पता था कि माया को अपनी खोज पूरी करने में कितना समय लगेगा। अगर इस दौरान कुछ भी हो जाता, तो वह अपनी रक्षा करने में असमर्थ होती।

माया अपनी नई-नई मिली आत्मा यात्रा की प्रतिभा का उपयोग करके अपनी खोज शुरू करने वाली थी।

वे दोनों अपने कमरे के दरवाजे पर खड़ी थीं और उन्होंने अमीरा का हाथ पकड़ रखा था। उन्होंने नौसिखिया से कहा, 'धन्यवाद।' उन्होंने यह बात दिल से कही थी।

अमीरा ने प्रसन्नतापूर्वक मुस्कुराते हुए जवाब दिया, 'मुझे खुशी है कि मैं आपकी सेवा कर

सकी। और जल्द ही हमारी मुक्ति लेकर वापस आना।'

अमीरा ने कमरे का दरवाजा अंदर से बंद कर दिया और बालकनी के दरवाजे और खिड़कियों की अच्छी तरह से जांच कर ली, फिर चुपचाप कमरे के एक कोने में फर्श पर बैठ गई, जबकि माया बिस्तर पर लेट गई और शांता-कारम मंत्र का जाप करने लगी।

उसे यकीन नहीं था कि शाम को इतनी जल्दी उसे नींद आ जाएगी, लेकिन मंत्र का असर हुआ और शांति की जानी-पहचानी अनुभूति उसके पूरे शरीर में फैल गई। जल्द ही, उसे नींद आने लगी और वह गहरी नींद में सो गई।

जब माया, अपने आत्मिक रूप में, अपने शरीर से बाहर निकली, तो उसने खुद को बिस्तर पर गहरी नींद में लेटे हुए पाया। अमीरा एक कोने में बैठी थी, उसकी निगाहें दरवाजे पर टिकी थीं। जाहिर है, वह अपने कर्तव्यों को बहुत गंभीरता से निभा रही थी। अगर माया मन ही मन मुस्कुरा सकती, तो वह जरूर मुस्कुराती।

लेकिन अब जाने का समय हो गया था। वह कुटिया से बाहर निकली, उसकी आत्मा सहजता से दीवार को पार करते हुए रात के आकाश में विलीन हो गई। अंधेरा छा चुका था और गुरुकुल की कुटियाओं की रोशनी और उनके बाहर चमकते हुए गोले जंगल को रोशन कर रहे थे, मानो माया जैसे-जैसे हवा में ऊपर उठती गई, पेड़ों पर जुगनू टिमटिमा रहे हों।

उसने मन ही मन सोचा, तूफान से पहले की शांति।

पिछली रात सत्यवचन से हुई बातचीत के बाद उसने इस यात्रा की अच्छी तैयारी कर ली थी। दिन में कक्षा के बाद, उसने अपना सारा खाली समय अभिलेखागार में बिताया, उन पुस्तकों और मानचित्रों का अध्ययन किया जिनसे उसे उस सटीक स्थान का पता लगाने में मदद मिल सके जहाँ सत्यवचन ने कहा था कि उसे वह चीज़ मिलेगी जिसकी उसे तलाश है। उस समय उसने अर्जुन और उसके दोस्तों की मदद से यात्रा करने की योजना बनाई थी। अब, ज़ाहिर है, योजना बदल चुकी थी।

सत्यवचना को अपनी सफलता पर पूरा भरोसा था, लेकिन माया कई तरह के संदेहों से घिरी हुई थी।

सबसे पहले, क्या वह वास्तव में उस जगह जितनी प्राचीन जगह का पता लगा पाएगी जिसकी वह तलाश कर रही थी? जिस शहर को उसे खोजना था, वह 5,000 साल पहले लुप्त हो गया था और आज उसका कोई निशान नहीं बचा था। प्राचीन ग्रंथों में भौगोलिक संदर्भ थे, और उन ग्रंथों में बताए गए क्षेत्र में हाल ही में पुरातात्विक खोजें भी हुई थीं, लेकिन कोई निर्णायक सबूत नहीं मिला था।

दूसरी बात, अगर उसे खोया हुआ शहर मिल भी जाता, तो वह जिस चीज़ की तलाश कर रही थी, वह शहर में नहीं थी। वह शहर के आस-पास ही कहीं थी। सत्यवचन उसे बस इतना ही बता सका।

'एक ऐसे द्वीप पर जो दुनिया से छिपा हुआ है,' उसने उससे कहा था। उसने उसे वह मंत्र भी दिया था जिससे द्वीप का पता चल सके। बशर्ते कि वह उसे ढूंढ ले।

यह उसका तीसरा डर था। क्या मंत्र कारगर होगा?

और एक चौथा संदेह भी था, लेकिन वह अभी उसके बारे में सोचना नहीं चाहती थी। अगर उसने सोचा तो सारी कोशिश व्यर्थ हो जाएगी और उसका मिशन असफल हो जाएगा। उसने सत्यवचन पर भरोसा रखा। अगर उन्होंने कहा था कि यह संभव है, तो वे सही ही होंगे।

बहुत सारी अनिश्चितताएं थीं। असफलता की बहुत सारी संभावनाएं थीं। और वह महज पंद्रह साल की थी, जो अभी तक गाना की सदस्य भी नहीं बनी थी।

गुरुकुल छोड़ने का समय हो गया था, लेकिन किसी चीज़ ने माया को रोक दिया। वह जंगल के ऊपर मंडराती रही और चारों ओर देखने लगी।

उसे कुछ महसूस हुआ था।

कुछ महसूस हुआ।

यह क्या था?

उसने नीचे जंगल में चारों ओर नज़र दौड़ाई। कुछ भी नहीं हिला।

उसे फिर से इसका एहसास हुआ।

हवा में उठती कोमल लहरों की तरह, मानो उसे सहला रही हों। यह एक अजीब सी अनुभूति थी। भले ही उसका शरीर नहीं था, फिर भी वह उन लहरों को महसूस कर सकती थी। उसे पता नहीं था कैसे।

लेकिन यह त्वचा पर कोमल हवा का हल्का स्पर्श मात्र नहीं था। लहरों में एक भावना समाई हुई थी। ऐसा लग रहा था मानो उस स्पर्श में घृणा, विनाश की लालसा और घिनौना क्रोध समाया हुआ हो।

वह पीछे हट गई लेकिन वह अनुभूति और भी तीव्र हो गई।

हवा में एक लहर दौड़ गई।

बिल्कुल! हवा!

उसने आकाश का जायजा लिया और बेहतर दृश्य प्राप्त करने के लिए और ऊपर चढ़ गई।

फिर उसने उसे देखा।

रात के अंधेरे के बीच, एक और भी गहरा पिंड।

यह तारों को ढक रहा था, रात को अपनी छाया में डुबो रहा था।

और वह उसकी ओर बढ़ रहा था।

क्या यह वही काला कोहरा था जो उसने उस रात देखा था जब वे गुरकुल पहुंचे थे? वही कोहरा जिसने शुक्र के राक्षसों को जन्म दिया था?

उसके मन में कहीं न कहीं यह बात थी कि यह वह काला कोहरा नहीं था। यह कुछ और भी घातक था। और भी खतरनाक।

उसके मन में एक भयानक आशंका कौंध गई। एक ऐसी आशंका जो अतीत की एक स्मृति पर आधारित थी।

नागा लोग आ चुके थे।

अध्याय सतहत्तर

गुरुकुल की घेराबंदी

गुरुकुल के ऊपर आकाश में
काला बादल अविश्वसनीय गति से आगे बढ़ रहा था। माया जल्दी से ऊपर की ओर तैरने लगी। वह बादल के रास्ते में नहीं आना चाहती थी, न ही उसमें समा जाना चाहती थी।

माया ने अपनी चेतना का उपयोग करते हुए, विचारों की गति से जंगल के ऊपर बहुत ऊँचाई तक उड़ान भरी।

सही समय पर।

उसके ऊपर उठने के क्षण भर बाद ही, काला, उमड़ता हुआ बादल उसके नीचे से तेज़ी से गुजरा और गुरुकुल के चारों ओर उतरकर उसे चारों ओर से घेर लिया। अपनी सुविधाजनक स्थिति से वह देख सकती थी कि नाग एक-एक करके जमीन पर उतर रहे थे और गुरुकुल के चारों ओर अपनी-अपनी जगह ले रहे थे।

सत्यवचन सही थे। नाग गुरुकुल के भीतर सीधे उतरने में असमर्थ थे, लेकिन उन्होंने गुरुकुल के हर इंच को घेर लिया था। गुरुकुल की घेराबंदी पूर्ण और सुदृढ़ हो चुकी थी। अब कुछ भी अंदर या बाहर नहीं जा सकता था।

जब तक कि वे हवा के रास्ते यात्रा न करें।

माया ने बहुत कुछ देख लिया था। अब उसके जाने का समय आ गया था।

नीचे के हृदयविदारक दृश्य पर अंतिम नजर डालकर वह गायब हो गई।

Inside the Gurukul

महामति के विद्यार्थी और छात्र समान रूप से अपने ऊपर घटित हो रहे दृश्य को विस्मय और भय से निहार रहे थे।

काले बादल, जो स्पष्ट रूप से गहरे, चमकदार, लहराते हुए आकृतियों से बना था, पश्चिम से तेज गति से आगे बढ़ा और उन सभी को आश्चर्यचकित कर दिया, हालांकि गुरुकुल को नागों के आगमन के लिए सतर्क कर दिया गया था।

'क्या वे उड़ सकते हैं?' अर्जुन आश्चर्यचकित रह गया।

अगस्त्य ने दांत भींचते हुए उत्तर दिया, "महाभारत पढ़ो। परिक्षित को मारने के बाद तक्षक वायु में उड़ गया। राजा के मंत्रियों ने उसे हवा में उड़ते हुए देखा। महाताल में तक्षक जैसे नाग निवास करते हैं। कौन जाने, शायद तक्षक स्वयं भी यहाँ के नागों में से एक हो।"

जैसे ही उन्होंने देखा, बादल अलग-अलग आकृतियों में बिखर गया, जो गुरुकुल की सीमाओं के साथ-साथ नीचे उतरने लगे।

गुरुकुल की सीमाओं के चारों ओर मंत्रों का जाप दुगुना कर दिया गया ताकि उनकी शक्ति और बढ़ जाए। यदि नाग गुरुकुल में प्रवेश करने में सफल हो जाते, तो उनका सर्वनाश निश्चित था। सत्यवचन का कथन सत्य था। उनके पास नागों को परास्त करने का कोई उपाय नहीं था।

अब उनकी एकमात्र उम्मीद माया ही थी।

अध्याय अठहत्तर

खोया शहर

पश्चिमी भारत के आकाश में
माया हवा में मंडराती रही और नीचे दूर-दूर तक फैले विशाल, काले आकाश को निहारती रही। उससे बहुत नीचे, तारों की रोशनी लहरों पर नाच रही थी, जो उसकी स्थिति का एकमात्र संकेत थी।

अगर उसने सही से रिसर्च की थी, तो यह लगभग वही जगह थी जहाँ 2003 में खोया हुआ शहर खोजा गया था। समाचार रिपोर्टों और कुछ लेखों के आधार पर, उसने गुजरात के हजीरा के पश्चिम में समुद्र के एक बड़े हिस्से की पहचान की थी। अब वह ठीक उसी हिस्से के ऊपर थी। सही जगह पर पहुँचने की पुष्टि के लिए, उसने गूगल अर्थ का उपयोग करके देशांतर और अक्षांश की सटीक जानकारी प्राप्त की थी, जिसे उसने याद कर लिया था। इन्हीं निर्देशांकों की मदद से वह इस स्थान तक पहुँची थी।

2003 में इस खोज को अंजाम देने वाली टीम को स्थल से बरामद कलाकृतियों के अलावा कोई ठोस सबूत नहीं मिला था, हालांकि उन्होंने प्राचीन शहर की नींव के अवशेष मिलने का दावा किया था। रिपोर्टों के अनुसार, उस समय इस्तेमाल की गई स्कैनिंग तकनीक से पता चला था कि शहर की नींव समुद्र तल से काफी नीचे तक फैली हुई थी।

माया ने एक बार फिर महाभारत के उन श्लोकों की समीक्षा की थी, जिनमें यह वर्णन किया गया था कि कैसे सागर ने इस शहर को अपना बना लिया था; कैसे समुद्र का पानी इसे धीरे-धीरे डुबोता चला गया जब तक कि यह पूरी तरह से लहरों के नीचे डूब नहीं गया।

निर्याते तु जने तस्मिन् सागरो मकरालय: ।
द्वारकां रत्नसम्पूर्णो जलेनाप्लावयत् तदा ॥ ४१ ॥

आखिरकार जब सभी लोग चले गए, तो समुद्र, शार्क का घर, और
मगरमच्छों ने द्वारका को बाढ़ में डुबो दिया, जो अभी भी हर तरह की दौलत से भरपूर थी।
अपने जल के साथ।

यद् यद्धि पुरुषव्याघ्रो भूमेस्तस्या व्यमुञ्चत ।
तत् तत् सम्प्लावयामास सलिलेन स सागर: ॥ ४२ ॥

जमीन का जो भी हिस्सा पार किया गया, समुद्र तुरंत
उसके जल से भर गया।

तदद्भुतमभिप्रेक्ष्य द्वारकावासिनो जना: ।
तूर्णात् तूर्णतरं जग्मुरहो दैवमिति ब्रुवन् ॥ ४३ ॥

इस अद्भुत दृश्य को देखकर द्वारका के निवासी और भी तेज़ी से चलने लगे।

और तेज़ी से कहते हुए, 'भाग्य का मार्ग कितना अद्भुत है।'

सत्यवचन के शब्द उसे याद आ गए। 'द्वारका के खोए हुए, प्राचीन नगर को खोजो; वह नगर जो कृष्ण के इस लोक से चले जाने पर सागर में समा गया था। यह भविष्यवाणी पहले ही की गई थी।' उन्होंने उसे एक ज्ञान भरी नज़र से देखा था। 'ठीक उसी भविष्यवाणी की तरह जिसे तुम और तुम्हारे मित्र पूरा करोगे। तुम जो खोज रहे हो वह एक द्वीप पर है, जो दुनिया से छिपा हुआ है और द्वारका से ज़्यादा दूर नहीं हो सकता। द्वारका को खोजो और तुम्हें गुरुकुल की घेराबंदी का हल मिल जाएगा, भले ही वह अस्थायी ही क्यों न हो।'

माया को वह शहर मिल गया था। लेकिन उसकी जिज्ञासा बढ़ गई थी। डूबा हुआ और खंडहर बन चुका वह शहर कैसा दिखता होगा? वह जानती थी कि उसे कभी भी पानी के नीचे गोता लगाकर उन खंडहरों को देखने का मौका नहीं मिलेगा। एक तो उसे गोता लगाना नहीं आता था; और अगर आता भी, तो उसे पूरा यकीन था कि उसे द्वारका के उस खोए हुए शहर को देखने की इजाज़त कभी नहीं मिलेगी। किसी अजीब वजह से, पानी के नीचे मौजूद खंडहरों की बताई गई जगह पर कभी कोई शोध या पुरातात्विक खुदाई नहीं हुई थी। यहां तक कि समाचार लेख, जिनमें से कुछ बीबीसी जैसी अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों के थे, भी संदेह से भरे थे, और पुरातात्विक सबूतों की कमी के कारण परोक्ष रूप से इस खोज की प्रामाणिकता पर सवाल उठा रहे थे।

उसने मन बना लिया। कुछ मिनट और लगने से कोई नुकसान तो नहीं होगा, है ना?

माया आकाश से गिरते पत्थर की तरह नीचे फैले काले जल की ओर तेज़ी से बढ़ी और समुद्र तल की ओर बढ़ते हुए जल को चीरती हुई आगे बढ़ी। जल में गिरते ही उसे कुछ भी महसूस नहीं हुआ और समुद्र का घनत्व भी उसके लिए कोई मायने नहीं रखता था। जैसा कि उसने पहले भी कई बार किया था, उसने आत्मा और उसकी क्षमताओं पर आश्चर्य करने के लिए कुछ क्षण लिए। यद्यपि इस रूप में उसके पास इंद्रियाँ नहीं थीं, क्योंकि वह उन्हें गुरुकुल में अपने भौतिक शरीर में ही छोड़ आई थी, फिर भी वह देख, सुन और महसूस कर सकती थी - ऐसी चीजें जो उसने अपने आत्मिक रूप में असंभव समझी होंगी; फिर भी यह देखने, सुनने और छूने की शारीरिक अनुभूति से बहुत अलग था।

उसने नीचे खंडहरों को उभरते देखा। पत्थर की संरचनाएं, जिनकी ऊंचाई एक फुट से अधिक नहीं थी, समुद्र तल से उठकर हर दिशा में दूर-दूर तक फैली हुई थीं, जहाँ तक उसकी नज़र जा सकती थी। क्या ये सचमुच प्राचीन शहर की पौराणिक दीवारें थीं?

शोध दल द्वारा रिपोर्ट की गई समुद्र तल से ली गई तस्वीरों के विवरण को याद करते हुए, जिनमें शहर की विशाल नींव का पता चला था, उसने समुद्र तल के नीचे खुदाई करके उन्हें स्वयं देखने का फैसला किया। अब वह काफी आनंदित थी और अपनी उस शक्ति की सराहना कर रही थी जो उसे ऐसे काम करने की क्षमता देती थी जिनके बारे में साधु केवल सपने ही देख सकते थे।

माया रेत से भरे समुद्र तल के नीचे उतरी और तुरंत ही चट्टानों के विशाल समूह से घिर गई, जो समुद्र तल की संरचना का निर्माण कर रहे थे। चट्टानों के बीच, उसे धंसे हुए विशाल खंभे दिखाई दिए - उन इमारतों की नींव जो तब ऊपर खड़ी होती थीं जब शहर लहरों के ऊपर था। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उन विशाल नींव के खंभों को सहारा देने के लिए नीचे की चट्टानों में

इतने बड़े छेद करने में कितनी मेहनत और तकनीक का इस्तेमाल किया गया होगा।

वह कुछ देर तक वहीं रुकी, शहर के निचले हिस्से की खोजबीन करती रही, उन सैकड़ों स्तंभों के बीच से गुजरती रही जो हजारों वर्षों के बीत जाने के बावजूद भी अपनी जगह पर डटे हुए थे, जबकि जिन इमारतों को उन्होंने सहारा दिया था वे समय के साथ ढह कर गायब हो गई थीं।

अंततः, उसने उदास मन से जाने का फैसला किया। उसे अपना काम करना था और यद्यपि उसने अपनी खोज का आनंद लिया था, उसका मिशन अधिक महत्वपूर्ण था।

जैसे ही वह समुद्र से बाहर निकली, उसके मन में द्वीप को खोजने का ख्याल आया। वह द्वीप आस-पास ही होना चाहिए, इंसानों की ताक-झांक से छिपा हुआ, किसी एकांतवासी का आश्रय स्थल।

वह जिसे ढूंढने आई थी।

केवल वही एक व्यक्ति था जो गुरुकुल को नागों से बचा सकता था।

अध्याय उनहत्तर

संदेह

The Gurukul

जिग्नेश, पार्थ, वीरेंद्र और तिवारी के चेहरे चिंता से भरे हुए थे। सत्यवचन एक छात्र के साथ गुरुकुल की परिक्रमा करने और सुरक्षा व्यवस्था की पुष्टि करने गया था। परिषद ने नागों को तब तक व्यस्त रखने की योजना बनाई थी जब तक माया मदद लेकर वापस नहीं आ जाती। उनकी योजना की सफलता के लिए उनकी सुरक्षा व्यवस्था का मजबूत होना आवश्यक था।

महेश की अनुपस्थिति में महामती परिषद के प्रमुख जिग्नेश ने माया की वापसी की प्रतीक्षा करते हुए नागों को दूर रखने की अपनी योजना की रूपरेखा तैयार की थी।

उनका विश्लेषण था, 'वे हमें थकाना चाहेंगे। हमारी दृढ़ता और सहनशक्ति को चूर-चूर कर देना चाहेंगे, हमें आसान शिकार बनाना चाहेंगे। हमें उनसे पहले ही उन पर काबू पाना होगा, उन्हें उलझाए रखना होगा।' और इस तरह योजना तैयार हो गई।

और, उम्मीदों के मुताबिक, नाग चुप नहीं बैठे थे। नदी से खबर आई थी कि उस मोर्चे पर नागों ने गुरुकुल और नदी के बीच स्थित वन क्षेत्र को नष्ट करना शुरू कर दिया है। नदी किनारे का जंगल आग की लपटों में घिर गया था, जिससे सीमा रक्षकों को गुरुकुल के भीतर पीछे हटना पड़ा, और इस तरह नागों को आगे बढ़ने का रास्ता मिल गया।

एक बार पेड़ हट जाने के बाद, गुरुकुल और नागों के बीच कोई भौतिक बाधा नहीं रहेगी। तब क्या होगा, इसका अंदाजा लगाना मुश्किल है।

जिग्नेश ने कड़वाहट से कहा, 'उनके जहर की ताकत में जरा भी कमी नहीं आई है।'

वीरेंद्र ने कहा, 'मुझे समझ नहीं आ रहा। उनका जहर पेड़ों को कैसे प्रभावित कर सकता है?'

तिवारी ने समझाया, 'नागों के पास सामान्य विष नहीं होता। हमें नहीं पता कि यह क्या है, क्योंकि आज तक किसी ने भी नाग के विष का प्रभाव नहीं देखा है। लेकिन यह भूलोक में घूमने वाले सामान्य साँपों के विष से भिन्न है। उदाहरण के लिए, महाभारत में सप्तऋषि कश्यप और तक्षक के बीच एक संघर्ष का वर्णन है, जब तक्षक पांडव अर्जुन के पुत्र परिक्षित को मारने जा रहा था। तक्षक किसी भी जीवित प्राणी को मारने की अपनी क्षमता का दावा करता है और कश्यप को चुनौती देता है कि वह उस बरगद के पेड़ को पुनर्जीवित करके दिखाए, जिसे उसने अपने विष से राख कर दिया था। संभवतः उन्होंने हमारे वन क्षेत्र के साथ भी ऐसा ही किया है।'

जिग्नेश ने गंभीर स्वर में कहा, "सत्यवाचन ने आगजनी देखी होगी, और वह उनके हमले का मुकाबला करने में व्यस्त होगा। उसकी अनुपस्थिति का यही एकमात्र कारण है। अन्यथा, उसे अब तक वापस आ जाना चाहिए था।"

वीरेंद्र ने कहा, 'अगर ऐसा है तो नदी का किनारा हमारी कमजोर कड़ी है।'

'हां,' पार्थ ने सहमति जताते हुए कहा। 'यह जानते हुए हमने वहां अधिकतम अतिरिक्त बल तैनात किए थे। बाकी तीन तरफ प्राकृतिक अवरोधों से उचित सुरक्षा है – दो तरफ दंडका वन और तीसरी तरफ पहाड़ी।'

जिग्नेश ने दृढ़ता से कहा, 'वे कभी भी दंडका को काटकर रास्ता नहीं बनाएंगे।'

‘नहीं, वे ऐसा नहीं करेंगे,’ पार्थ ने सहमति जताई।

जिग्नेश ने कमरे में चहलकदमी करते हुए कहा, 'सत्यवचन के लौटते ही हम जवाबी हमला शुरू कर देंगे।' उसने वीरेंद्र की ओर देखा। 'क्या हम तैयार हैं?'

वीरेंद्र ने गंभीर मुस्कान दी, एक ऐसी मुस्कान जिसमें हास्य का कोई अंश नहीं था। 'हम किसी भी क्षण हमला करने के लिए तैयार हैं।'

‘अच्छा। हमें अच्छा होना ही चाहिए।’ महान महर्षि के लौटने की प्रतीक्षा करते हुए जिग्नेश चुप हो गया।

द्वारका के ऊपर आकाश में

माया अपने विकल्पों पर विचार करते हुए आत्मसंदेह से घिर गई। उसने द्वारका का खोया हुआ शहर ढूंढ लिया था। एक शंका तो दूर हो गई थी। लेकिन कुछ शंकाएँ अभी भी बाकी थीं। उसे अभी भी नहीं पता था कि वह द्वीप कहाँ है। उसे यह भी नहीं पता था कि द्वीप को खोजने में मदद करने वाला मंत्र काम करेगा या नहीं। और सबसे बुरी बात यह थी कि अगर मंत्र काम कर भी गया, तो क्या उसका वही प्रभाव होगा जो वह चाहती थी?

आखिर जिग्नेश ने उसे यही तो बताया था कि मंत्र ध्वनि के प्रयोग से काम करते हैं, इसीलिए उच्चारण इतना महत्वपूर्ण है? लेकिन यहाँ, एक निराकार आत्मा होने के कारण, उसके लिए मंत्र का उच्चारण करना और उसमें छिपी शक्ति को सक्रिय करने के लिए आवश्यक ध्वनि उत्पन्न करना असंभव था। अगर मंत्र सुनाई ही न दे, तो सिर्फ मन लगाकर मंत्र के उद्देश्य पर ध्यान केंद्रित करने का क्या लाभ?

यह चौथा संदेह था जिसे उसने अब तक दबा रखा था। लेकिन अपने लक्ष्य के इतने करीब पहुँच जाने के बाद, उसे इसका सामना करना ही पड़ा।

सत्यवचना ने इस मिशन को उसे सौंपने पर इतना जोर क्यों दिया, जबकि ऐसी बहुत सी चीजें थीं जिन पर उसका कोई नियंत्रण नहीं था?

उसके मन में निराशा छा गई। यह तो बिल्कुल भी संभव नहीं था। उसका मिशन असफल होने वाला था।

और गुरुकुल का पतन निश्चित था।

अध्याय अस्सी

छिपा हुआ द्वीप

The Gurukul

‘खबर अच्छी नहीं है।’ वीरेंद्र का चेहरा ऐसा लग रहा था मानो पत्थर की तराशी गई हो। उसके दांत भींचे हुए थे और उसका पूरा शरीर तनावग्रस्त और अकड़ा हुआ था, जैसे कोई नया तपा हुआ धनुष।

उन्होंने अपनी रिपोर्ट दी। ‘हमने अपना गुरिल्ला हमला शुरू किया, पहाड़ियों से होते हुए नागों पर हमला किया, ताकि उनका ध्यान भटकाया जा सके। हमला कुछ हद तक सफल रहा, जिससे वहां डेरा डाले नागों की सेना में थोड़ी अफरा-तफरी मच गई, और हमारी तरफ कोई हताहत नहीं हुआ। लेकिन यह चाल कारगर नहीं हुई। शिविर को घेरने वाले नागों की संख्या इतनी अधिक है कि किसी भी तरह की ध्यान भटकाने वाली रणनीति कारगर नहीं हो सकती। इसके बजाय, जवाबी कार्रवाई में, नदी किनारे स्थित नागों ने आगे बढ़कर क्षत्रिय अभ्यास मैदान पर कब्जा कर लिया है। नागों ने जंगल और मैदान दोनों को जलाकर राख कर दिया है। हमारे क्षत्रियों और ऋषियों को पीछे हटना पड़ा; वे नागों के जहर से पैदा हुई आग की गर्मी सहन नहीं कर सकते। उनका शापित जहर चाहे जो भी हो, वह हमारे लिए सहन करने योग्य नहीं है।’

जिग्नेश ने सिर हिलाया। 'तो चलिए उस सीमा की रक्षा पूरी ताकत और आक्रामक ढंग से करते हैं।'

वीरेंद्र ने हताश स्वर में कहा, 'समय कम होता जा रहा है। अगर माया जल्द वापस नहीं लौटी तो...' उसने अपना वाक्य अधूरा छोड़ दिया, लेकिन हर कोई समझ गया कि उसके मन में क्या चल रहा था।

द्वारका के ऊपर आकाश में

माया अपनी दुविधा से जूझ रही थी। उसका एक हिस्सा खुद को साबित करने के लिए बेताब था, जबकि दूसरा हिस्सा हार मानकर गुरुकुल लौटने को तैयार था। वही पुराने संदेह फिर से उठ खड़े हुए, उसे यह समझाने की कोशिश कर रहे थे कि वह कभी ऋषि बनने के लिए नहीं बनी थी, कि उसके पास गण के सदस्य बनने के लिए आवश्यक शक्तियां नहीं थीं। क्या जिग्नेश ने सीधे तौर पर कहे बिना भी यही इशारा नहीं किया था?

दूसरी ओर, उसके पिता ने उसे डायरी सौंपी थी। उन्होंने उसे यह नहीं बताया था कि डायरी में लिखे छंदों को समझने में मदद के लिए किससे संपर्क करना चाहिए। अगर उनका यही इरादा होता तो वे उसे कुछ संकेत जरूर देते? या फिर वे माया पर भरोसा कर रहे थे कि वह खुद ही छंदों को समझने का तरीका खोज लेगी? यह तर्कसंगत नहीं लगता, सिवाय इसके कि...

उसके मन में एक विचार आया।

उसे यह बात पहले क्यों नहीं सूझी?

उसके मन में एक नया दृढ़ संकल्प जागृत हुआ।

वह ऐसा करेगी।

माया उन अनेक विचारों से जूझ रही थी जो उसका ध्यान भटका रहे थे, उसकी एकाग्रता भंग

कर रहे थे, उसे द्वारका से दूर गुरुकुल, नागों की ओर खींच रहे थे। उसने अपनी एकाग्रता को तब तक केंद्रित किया जब तक उसे अपने भीतर कहीं एक कसक सी गांठ महसूस नहीं हुई, और फिर उसने उस उद्देश्य पर ध्यान केंद्रित किया जिसके लिए वह यहाँ आई थी।

धीरे-धीरे, सत्यवचन द्वारा दिया गया मंत्र उसकी चेतना में प्रकट होने लगा।

माया मंत्र की शक्ति से चकित थी, जो उसके पूरे अस्तित्व में प्रवाहित हो रही थी, जिससे मंत्र का जाप करते समय उसका पूरा शरीर ऊर्जा से स्पंदित हो रहा था।

'ओम नमो भगवते गरुड़ाय त्रयंबकाय साधस्तवस्तु स्वाहा।'

जैसे-जैसे वह मंत्र दोहराती गई, उसे महसूस होने वाली शक्ति की तीव्रता बढ़ती गई।

किसी चीज ने उसकी आत्मा को झकझोर दिया।

यह क्या था? निश्चित रूप से कोई भौतिक बल नहीं था।

फिर वही एहसास हुआ। एक स्पष्ट खिंचाव।

माया मंत्र पर ध्यान केंद्रित करती रही और खुद को उस अदृश्य, अनसुनी शक्ति के वश में होने दिया जो उसे अपनी ओर खींच रही थी।

धीरे-धीरे, लेकिन निश्चित रूप से, वह नज़र आने लगी। धुंध में से गुज़रती किसी चीज़ की तरह एक अस्पष्ट, धुंधली आकृति, जिसकी परछाई पहले तो मुश्किल से पहचानी जा सकती थी, फिर धीरे-धीरे स्पष्ट होती गई, जब तक कि वह उसके सामने नहीं आ गई, उसकी रूपरेखा स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी और रात के अंधेरे के बावजूद रंग चमकीले थे।

यह ऐसा था मानो अंधेरे में देखने की क्षमता मिल गई हो, जैसे अचानक एक शक्तिशाली प्रकाश जला दिया गया हो; एक ऐसा प्रकाश जो दिखाई नहीं देता था लेकिन जिसकी किरणें उसके मार्ग में आने वाली हर चीज को रोशन कर देती थीं।

माया ने उसे ढूंढ लिया था। छिपा हुआ द्वीप अब छिपा नहीं रहा।

अध्याय इक्यासी

अंतिम स्टैंड

The Gurukul

कई फीके, चिंतित चेहरे केन नदी की ओर देख रहे थे। गुरुकुल के आधे से अधिक सदस्य - छात्र और महामति - यहाँ एकत्रित थे, जिनमें जिग्नेश, पार्थ, वीरेंद्र और तिवारी शामिल थे।

माया को द्वारका की खोज शुरू करने के लिए निकले हुए कई घंटे बीत चुके थे।

प्रकाश के चमकते गोले हवा में तैर रहे थे, जो रात के आकाश को रोशन कर रहे थे और जमीन पर दृश्य को प्रकाशित कर रहे थे।

यह दृश्य भयावह था। ऐसा इसलिए नहीं था कि क्षत्रिय अभ्यास मैदान के पार फैली वृक्षों की पट्टी गायब हो गई थी और उसकी जगह जले हुए ठूंठ और राख रह गई थी। न ही इसलिए कि मैदान का अधिकांश भाग झुलसकर काला पड़ गया था, जो नागों के क्रोध का मूक गवाह था, जिन्होंने अपने रास्ते में आने वाली हर चीज को नष्ट कर दिया था।

लेकिन नागों के दर्शन मात्र से ही। सभी भौतिक अवरोध नष्ट हो जाने के कारण नाग अब स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। वे विशालकाय जीव थे, पूरी तरह से खड़े होने पर उनकी ऊँचाई दस फीट से भी अधिक थी। हालाँकि, अधिकांश समय वे झुके हुए, कमर समेटे हुए चलते थे, और उनके शरीर पर मौजूद शल्कों से निकलने वाली रोशनी चमकती रहती थी। उन्होंने बहुत कम कवच पहना हुआ था, क्योंकि उन्हें अपनी इस क्षमता पर पूरा भरोसा था कि वे मनुष्यों द्वारा किए जाने वाले किसी भी प्रकार के हमले और किसी भी हथियार का सामना कर सकते हैं।

अर्जुन ने गौर किया कि उनमें मनुष्यों से कुछ समानताएं थीं। उनके दो जोड़ी अग्रपाद थे और वे दो पैरों पर सीधे चलते थे, हालांकि उनका कूबड़ काफी उभरा हुआ था।

उनके चेहरे इंसानों जैसे थे, चौड़ी नाक, उभरी हुई ठुड्डी और गाल की हड्डियाँ, और थोड़ा बाहर निकला हुआ जबड़ा, जो साँपों की बजाय बंदरों जैसा दिखता था, हालाँकि उनके चेहरे की त्वचा उनके बाकी शरीर की तरह सरीसृपों जैसी थी। उनकी आँखें भयानक भौहों के नीचे पीली पतली लकीरों जैसी थीं और उनमें से कुछ के सिर के पीछे से लहरदार सींग जैसी संरचनाएँ निकली हुई थीं। उनमें से किसी के पास कोई हथियार नहीं था। शायद उन्हें हथियारों की ज़रूरत ही नहीं थी। उनका ज़हर, चाहे जो भी हो, इतना शक्तिशाली था कि उनके रास्ते में आने वाली किसी भी चीज़ को नष्ट कर सकता था।

समय-समय पर नाग जोर से दहाड़ते थे, और गुरुकुल के निवासी नदी से और अधिक नागों को आते और समूहों में इकट्ठा होते हुए देखते थे।

गुरुकुल पर आक्रमण करने से रोकने वाली एकमात्र चीज थी गुरुकुल के ऋषियों द्वारा नागों पर लगातार बोले जाने वाला रक्षा मंत्र और 'गरुड़य त्रयंबकाय' का जयजयकार। नागों और मनुष्यों के बीच और कुछ भी बाधा नहीं थी।

ऋषियों द्वारा नागों पर दागे जा रहे आक्रमणकारी मंत्रों की शक्ति स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। इससे नाग लगातार सतर्क हो रहे थे, वहाँ एकत्रित नागों की भीड़ में निरंतर हलचल मची हुई थी, और उन्हें ऐसा संगठित होने का अवसर नहीं मिल रहा था जिससे वे गुरुकुल पर आक्रमण

कर सकें।

सत्यवचन सभा भवन में ही रुक गए थे और एक मंत्र का ध्यान कर रहे थे, जिसके बारे में उनका दावा था कि यह नागों को दूर रखने में गुरुकुल बलों के प्रयासों को मजबूत करेगा।

अर्जुन की निगाहों के बीच नागों की सेना में हल्की हलचल दिखाई दी। उनमें से कुछ नाग अलग हुए और अर्जुन से कुछ ही साल बड़ा एक युवक उन भयानक प्राणियों द्वारा बनाए गए खाली स्थान से होकर गुजरा।

'Vishwaraj!' Arjun heard Jignesh mutter, the surprise in his voice apparent.

अर्जुन का खून जम गया। उसकी माँ अन्य महामतियों के साथ विश्वराज का शिकार करने और उसे पकड़ने गई थी। आखिर हुआ क्या था? अगर वे अपने मिशन में सफल हो गए थे, तो विश्वराज को यहाँ नहीं होना चाहिए था।

और अगर विश्वराज यहाँ होते, तो...

उसके सबसे बुरे डर सच होते देख वह अवाक रह गया।

लेकिन प्रमिला और महामति परिवार के साथ जो कुछ हुआ था, उस पर विचार करने का समय नहीं था।

चारों तरफ अफरा-तफरी मच गई।

'सत्यवचन पाओ!' जिग्नेश दहाड़ा। 'हमें अब उसकी यहाँ ज़रूरत है!'

अर्जुन तिवारी के पास धीरे से पहुंचा, उसे शोरगुल का कारण समझ नहीं आ रहा था। 'क्या... क्या हो रहा है?' उसने कांपती हुई आवाज में पूछा, वह ध्यान केंद्रित करने और सब कुछ समझने की कोशिश कर रहा था।

तिवारी का चेहरा गंभीर था। 'मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता, लेकिन मुझे लगता है - और लगता है कि जिग्नेश भी यही सोचता है - कि विश्वराज प्रतिमंत्र का जाप कर रहा है।'

'क्या हमारे मंत्रों के प्रभाव को नष्ट करने वाला कोई मंत्र है?'

तिवारी ने सिर हिलाया। 'नहीं। सकारात्मक मंत्रों की शक्ति को नष्ट नहीं किया जा सकता। लेकिन यह संभव है कि शुक्र ने मंत्रों का उपयोग करके किसी प्रकार का कवच विकसित कर लिया हो। आखिर, जैसा कि आप जानते हैं, मंत्रों का उपयोग किसी भी चीज के लिए किया जा सकता है। बस बात यह है कि आज तक किसी ने भी मंत्रों की शक्ति का उपयोग बुरे उद्देश्यों की पूर्ति के लिए करने का विचार या साधन नहीं सोचा है। यदि विश्वराज नागों को हमारे मंत्रों की शक्ति से बचाने में सफल हो जाते हैं, तो उन्हें गुरुकुल पर कब्जा करने से कोई नहीं रोक पाएगा।'

इन अशुभ शब्दों के साथ, तिवारी मौन में डूब गए।

अर्जुन विश्वराज को वहाँ खड़े देखता रहा, मानो वह कुछ कर ही नहीं रहा हो। आखिर वह किस बात का इंतजार कर रहा था?

अचानक, अर्जुन के देखते ही देखते, विश्वराज ऊँची आवाज़ में बोलने लगे। गुरुकुल में मंत्रों के उच्चारण के कारण अर्जुन को शब्द समझ में नहीं आए, लेकिन यह स्पष्ट था कि विश्वराज कुछ

करने का प्रयास कर रहे थे।

विश्वराज के बोलते रहने के दौरान नागों का पुनर्गठन होता प्रतीत हुआ। स्पष्ट था कि वे किसी मंत्र का जाप कर रहे थे जिससे नागों को सहायता मिल रही थी। गुरुकुल को नागों से बचाने वाले मंत्रों के निरंतर जाप के बावजूद, यह स्पष्ट था कि नागों की सेना धीरे-धीरे अपना पुनर्गठन कर रही थी।

गुरुकुल के लड़खड़ाने में कितना समय लगेगा?

माया कहाँ थी?

क्या वह समय पर लौट पाएगी? और क्या वह अपने साथ मदद लेकर आएगी?

अर्जुन ने ऊपर के अंधेरे आकाश और नागों को घूरकर देखा, उसके हृदय में भय का एक सागर उमड़ रहा था।

A student ran up to Jignesh. 'Mahamati, Maharishi Satyavachana is not in the Assembly Hall.'

'तो फिर उसे ढूंढो!' मंत्रों के शोर, विश्वराज के स्वर और नागों की गर्जना के बीच जिग्नेश गरज उठा। 'उसे जल्दी ढूंढो! हमें उसकी यहाँ पहले से कहीं अधिक आवश्यकता है!'

अर्जुन का दिल बैठ गया। अगर सत्यवचन नहीं मिला, तो नागों के हमले के सामने उनकी क्या संभावना थी? एक ऐसा हमला जो अब और भी करीब आता दिख रहा था।

समय उनके पक्ष में नहीं था।

अध्याय बयासी

बहुत देर हो गई

The Gurukul

अर्जुन भयभीत होकर नागों को आगे बढ़ते हुए देखता रहा, अंततः वे उस अदृश्य अवरोध को तोड़कर आगे बढ़ गए जिसने उन्हें अब तक रोके रखा था। विश्वराज चुप हो गए और अपने विरोधियों को घूरते रहे, जबकि नाग उनके दोनों ओर से गुरुकुल की ओर बढ़ते चले गए। उन्होंने जो भी किया था, वह कारगर साबित हुआ। गुरुकुल के ऋषियों द्वारा नागों पर लगातार चलाए जा रहे मंत्रों का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा था।

भयभीत होकर अर्जुन ने अपने चाचा की ओर देखा और आक्रमण के आदेश की प्रतीक्षा में स्वयं को तैयार किया। ऋषियों ने नागों को यथासंभव देर तक रोके रखा था। अब क्षत्रियों को उस भयंकर आक्रमण को रोकना था, जिसके बारे में वह जानता था कि वह अवश्य आएगा।

गुरुकुल पहुँचने की पहली रात शुक्र की सेना के साथ हुए युद्ध से यह युद्ध बिल्कुल अलग था। वे सेनाएँ अनाड़ी और बेढंगी थीं, जिनके पास केवल संख्या बल का ही लाभ था। आज की रात अलग थी। नाग सेना एक सुव्यवस्थित युद्ध मशीन की तरह थी – यह उनके संगठित होने के तरीके से स्पष्ट था। और योद्धा के रूप में उनकी वीरता तो जगजाहिर थी। अपने हौसले को बनाए रखने के तमाम प्रयासों के बावजूद, अर्जुन को यह एहसास हो गया था कि यह एक ऐसा युद्ध है जिसे वे जीत नहीं सकते।

अर्जुन ने देखा कि पार्थ, वीरेंद्र और जिग्नेश जल्दी-जल्दी आपस में बातचीत कर रहे थे। तीनों के बीच कुछ ऐसी बातें हुईं जो अर्जुन को सुनाई नहीं दीं।

वे किस बारे में बात कर रहे थे?

पार्थ को आश्चर्य हुआ जब वह अचानक मुड़ा और चिल्लाया, 'पीछे हटो!'

वीरेंद्र अपने चारों ओर मौजूद सैनिकों के बीच से 'पीछे हटो!' का नारा लगाते हुए आगे बढ़ रहा था, तभी जिग्नेश, पार्थ और उषा गायब हो गए, निस्संदेह गुरुकुल के अन्य रक्षकों के बीच यह संदेश फैलाने के लिए।

वीरेंद्र अर्जुन के पास आया, जिसने अपने चाचा को प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा।

वीरेंद्र ने उसकी अनकही शंका को समझते हुए कहा, ‘हम बहुत बिखरे हुए हैं। रक्षा करने का क्षेत्र बहुत बड़ा है और हमारे सैनिक कम हैं। अगर हम यहीं डटे रहे तो भारी नुकसान होगा। हमने विधानसभा भवन में पीछे हटने का फैसला किया है। वहां बचाव करना आसान होगा। हमारी सेनाएं एक जगह केंद्रित होंगी। हम वहां कुछ देर और टिके रह सकते हैं और उम्मीद है कि कुछ समय मिल जाएगा। लेकिन ज्यादा देर नहीं। हम बस यही उम्मीद कर सकते हैं कि माया जल्द वापस आ जाए। वरना...’

अर्जुन ने अपने चाचा के गंभीर चेहरे को देखा और सिर हिलाया। हालाँकि उसका मन भयभीत था, पर वह जानता था कि यदि उन्हें डटकर मुकाबला करना पड़ा, तो सभा भवन ही उनके लिए सबसे सुरक्षित स्थान था। घेराबंदी शुरू होते ही नौसिखियों को सुरक्षा के लिए भूमिगत हॉल में ले जाया गया था। गुरुकुल की सेनाएँ हॉल के चारों ओर केंद्रित थीं, इसलिए उनके पास अभी भी

बचने का मौका था।

गुरुकुल के रक्षक धीरे-धीरे पीछे हटते हुए सभा भवन की ओर एकत्रित हो गए और क्षत्रियों के मैदान से सटे गुरुकुल के शेष हिस्से को असुरक्षित और बिना सुरक्षा के छोड़ दिया।

मंत्रों के उच्चारण और नागों की गर्जना के बीच सभा भवन के चारों ओर एक तंग घेरा बनने लगा, जो जैसे-जैसे वे करीब आते गए, उत्तरोत्तर तेज और भयावह होता गया।

'माया!' अर्जुन को अचानक याद आया कि माया अतिथिगृह में सो रही थी और उसकी रखवाली के लिए केवल अमीरा ही थी। गुरुकुल की पूरी सेना सभा भवन के चारों ओर इकट्ठी थी, और अतिथिगृह उन झोपड़ियों में से एक था जिन्हें असुरक्षित छोड़ दिया गया था। सत्यवचन के अचानक गायब हो जाने और नागों के आगे बढ़ने के कारण, ऐसा लग रहा था मानो सब लोग भूल गए हों कि माया का शरीर अभी भी गुरुकुल में ही है।

अर्जुन बाकी रक्षकों से अलग होकर गेस्टहाउस की ओर भागा।

'अर्जुन, रुको!' वीरेंद्र ने अपने भतीजे की योजना समझकर पुकारा। 'तुम अकेले नहीं जा सकते!' वह बेचैनी से चारों ओर देखने लगा, अपने भतीजे के पीछे जाने और रक्षा बलों के साथ रहने के बीच दुविधा में था।

'महामती कनकप्रताप।' वीरेंद्र ने हैरानी से चारों ओर देखा। यह वरुण था। उसके पीछे तनवीर, अगस्त्य और आदिरा थे। वरुण फिर बोला, 'हम अर्जुन के पीछे जाएंगे।'

समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं था। वीरेंद्र ने कृतज्ञतापूर्वक सिर हिलाया और चारों बच्चे गेस्टहाउस की ओर दौड़ पड़े।

गुरुकुल के ऊपर आकाश में माया नीचे ज़मीन पर घट रहे दृश्य को देखकर भयभीत हो उठी। उसने अतिथिगृह में अपने कमरे की चारदीवारी में लौटने के बजाय गुरुकुल के ऊपर आकाश में लौटने का फैसला किया था, और अंततः अपने शरीर में वापस लौटना चाहती थी। वह देखना चाहती थी कि घेराबंदी किस तरह आगे बढ़ रही है।

उसने देखा कि गुरुकुल के निवासियों के लिए हालात खराब होते जा रहे थे, और वे नागों के हाथों अपनी जमीन खोते जा रहे थे।

गुरुकुल के ऊपर नाचते हुए चमकते गोलों की रोशनी में, उसने नागों को क्षत्रिय अभ्यास क्षेत्र पार करते हुए और कक्षाओं और छात्रावासों वाले कुटियाओं की ओर बढ़ते हुए देखा। कक्षाओं के पार, उसने गुरुकुल के छात्रों और महामति को सभा भवन के चारों ओर घेरा बनाते हुए देखा।

जैसे ही उसे एहसास हुआ कि लौटने में शायद बहुत देर हो चुकी है, वह भयभीत हो गई। गुरुकुल लगभग पूरी तरह से तबाह हो चुका था। नागों पर हमला करने के लिए हथियारों के बिना वे सभा भवन की रक्षा कब तक कर सकते थे?

उसे अपराधबोध होने लगा। उसने द्वारका के खंडहरों और नींवों को देखने-समझने में बहुत अधिक समय बिता दिया था। यदि वह योजना से न भटकी होती, तो वह अपना मिशन पूरा करके जल्दी लौट आती।

उसने तुरंत अपनी गलती सुधार ली। उनके उद्देश्य के लिए उसकी वापसी महत्वपूर्ण नहीं थी। वह पलक झपकते ही यहाँ पहुँच गई थी।

लेकिन वह ऐसा नहीं कर सकता था। खंभात की खाड़ी से पन्ना तक की दूरी तय करने में समय लगता।

जब वह देख रही थी, तभी नाग लोग झोपड़ियों के पहले समूह तक पहुँचे और अपने नंगे अग्रभागों से उन्हें फाड़ना शुरू कर दिया, दीवारों और छतों पर वार करते, पीटते और लात मारते रहे जब तक कि झोपड़ियाँ चूर-चूर नहीं हो गईं।

जैसे ही उसने देखा कि नागा सेना का आधा हिस्सा अलग हो रहा है, उसके मन में एक भयानक विचार कौंध गया। वे कक्षाओं से आगे बढ़कर सभा भवन तक नहीं पहुंच पाए थे। यह एक अच्छा संकेत था। इसका मतलब था कि रक्षा व्यवस्था अभी भी मजबूत थी।

इसका यह भी अर्थ था कि नाग, जो गुरुकुल को नष्ट करने पर तुले हुए थे, सभा भवन को छोड़कर सीधे सभा भवन और पहाड़ी के बीच स्थित छात्रावासों को तोड़ने लगे। यह पहाड़ी गुरुकुल के वैकल्पिक प्रवेश द्वार का काम करती थी। माया को बढ़ते हुए डर के साथ याद आया कि अतिथिगृह भी उसी दिशा में था। नागों के अतिथिगृह तक पहुँचने और उसे भी नष्ट करने में बस कुछ ही समय बाकी था।

अमीरा!

माया का पहला ख्याल उस नौसिखिए शिष्या के बारे में आया जो उसके सोते समय उसकी रखवाली कर रही थी। यह एक साधारण काम माना जाता था, जिसके लिए किसी विशेष कौशल की आवश्यकता नहीं थी। इसीलिए जब अमीरा ने स्वेच्छा से यह जिम्मेदारी सौंपी थी, तो बिना किसी बहस या झंझट के उसे पहरेदार के रूप में स्वीकार कर लिया गया था। तब किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि नाग गुरुकुल की सुरक्षा को भेद पाएंगे, अतिथिगृह तक पहुंचना तो दूर की बात है। नौसिखिए शिष्या नागों के सामने टिक नहीं सकती थी, जबकि महामति भी उनके हमले के सामने बेबस थे।

माया भय से जम सी गई, जब नागों ने छात्रावासों को ध्वस्त करना शुरू किया और धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से गेस्टहाउस की ओर बढ़ने लगे।

अध्याय तिरासी

गेस्टहाउस पर हमला

अतिथिगृह

अर्जुन गेस्टहाउस पहुंचा और माया के कमरे की ओर सीढ़ियाँ चढ़ते हुए लड़खड़ा गया। उसने दरवाजा खोलने की कोशिश की, लेकिन वह बंद था। उसने जोर-जोर से दरवाजा पीटा।

'मुझे अंदर आने दो!' वह चिल्लाया।

लेकिन कोई जवाब नहीं मिला।

माया के कमरे में, अमीरा ने हैरानी से दरवाजे की ओर देखा। कोई अंदर आने के लिए बेचैन था। कौन हो सकता है? उसे निर्देश मिले थे कि किसी को भी अंदर न आने दे, किसी को भी माया की नींद में खलल न डालने दे। माया का मिशन गुरुकुल के अस्तित्व के लिए बेहद महत्वपूर्ण था। अगर उसकी नींद में खलल पड़ा, तो पूरा मिशन खतरे में पड़ सकता था।

दरवाजे पर लगातार दस्तक के बीच अमीरा फर्श पर दुबककर कोने में बैठी रही। वह दरवाजा खोलने वाली नहीं थी।

नहीं, यदि स्वयं महामति महेश उनसे ऐसा करने को कहें तो।

जब तक माया खुद से नहीं जाग गई, तब तक ऐसा नहीं हुआ।

अमीरा ने घबराकर माया की ओर देखा, जो अब भी शांति से सो रही थी, उसकी सांसें धीमी और नियमित थीं। दरवाजे पर हुई आवाज का उस पर कोई असर नहीं हुआ।

कमरे के बाहर, वरुण, तनवीर, अगस्त्य और आदिरा अर्जुन के साथ शामिल हो गए।

'दरवाजा बंद है,' अर्जुन ने संक्षिप्त स्वर में कहा।

'इसे तोड़ो।' वरुण ने बाकी लोगों की तरफ देखा। 'चलो मिलकर तोड़ते हैं।'

नागों की दहाड़ें करीब आती जा रही थीं। कुछ ही पलों में वे इस झोपड़ी तक पहुँचकर इसे तोड़ना शुरू कर देंगे।

गेस्टहाउस के बाहर, नागाओं ने आखिरी शयनकक्षों को ध्वस्त कर दिया और गर्जना करते हुए गेस्टहाउस की ओर बढ़े। यह उन कुछ आखिरी झोपड़ियों में से एक थी जो उनके और पहाड़ी के बीच खड़ी थीं।

यह सब देखते हुए माया अपनी स्तब्धता से बाहर निकली। अगर नाग उसके शरीर में आत्मा के पुनः प्रवेश करने से पहले गेस्टहाउस पहुँच गए तो...

यह विचार आते ही वह तुरंत उस जगह से दूर चली गई।

गेस्टहाउस के अंदर

माया अचानक झटके से जाग उठी और बिस्तर पर बैठ गई, बाहर के भयावह दृश्य की यादें अभी भी उसके दिमाग में घूम रही थीं।

अमीरा झट से खड़ी हो गई। 'माया! क्या तुम ठीक हो?'

माया ने सिर हिलाया और धीरे-धीरे बिस्तर से उठी। आत्मयात्रा के बाद के पहले कुछ मिनट हमेशा ही उसे भ्रमित कर देते थे। उसे हमेशा थकावट और मानसिक कमजोरी का एहसास होता था, जो उसे तुरंत वापस सुला देता था।

लेकिन आज रात, उनके पास यह सुविधा नहीं थी।

जैसे ही झोपड़ी कांप उठी और कांच के टूटने और दीवारों के ढहने की आवाजें, नागों की दहाड़ों के बीच, उनके कानों में गूंजने लगीं, दोनों लड़कियां भय से एक दीवार से लिपट गईं।

गेस्टहाउस के बाहर

नागों का पहला समूह अतिथिगृह पहुंचा और उस पर हमला करने लगा। पलक झपकते ही दो बालकनियाँ और आधी छप्पर वाली छत टूटकर बिखर गईं। खिड़कियाँ चकनाचूर हो गईं और खिड़कियों के फ्रेम अपनी जगह से उखड़कर दूर जा गिरे, क्योंकि नागों की शक्तिशाली भुजाओं ने झोपड़ी पर प्रहार किया और सरीसृपों की दहाड़ें रात भर गूंजती रहीं।

गेस्टहाउस के अंदर

अर्जुन और उसके दोस्तों के संयुक्त हमले से कमरे का दरवाजा खुल गया, क्योंकि ताला टूट गया था।

माया और अमीरा ने हैरानी से ऊपर देखा जब पांच शव कमरे में गिर पड़े।

'जल्दी करो!' अर्जुन फुफकारा। 'हमें अभी यहाँ से निकलना होगा!'

लेकिन बहुत देर हो चुकी थी।

दीवार का वह हिस्सा जिसमें बालकनी की ओर जाने वाला दरवाजा लगा था, अचानक उखड़ गया और गायब हो गया, जिससे एक बड़ा सा छेद रह गया।

उस ऊबड़-खाबड़ दर्रे से तीन विशालकाय नाग दिखाई दिए।

पलक झपकते ही तनवीर ने अपने धनुष पर तीर चढ़ाया और उसे चला दिया। लगभग तुरंत ही दूसरा तीर भी चला, फिर तीसरा और चौथा।

माया चकित रह गई। उसने तनवीर को धनुष चलाते हुए पहले कभी नहीं देखा था और न ही उसे उसके कौशल का कोई अंदाजा था, हालांकि उसने अर्जुन से तनवीर के अभ्यास सत्रों में अपनी दक्षता प्रदर्शित करने के बारे में बहुत कुछ सुना था।

तीरंदाज के हाथ इतनी तेज़ी से चल रहे थे कि वह नागों पर बाणों की बौछार करने लगा। हालाँकि बाणों से नागों को कोई गंभीर चोट नहीं पहुँची, लेकिन वे उन्हें परेशान ज़रूर कर रहे थे। बाणों के लगातार चुभने से परेशान होकर तीनों नाग आँखों से ओझल हो गए।

'हमें अभी निकलना होगा,' अर्जुन ने आग्रह किया। वह समझ गया था कि नागों से मिली राहत ज़्यादा देर तक नहीं टिकेगी। भागने का यही एकमात्र मौका था। 'नाग आ रहे हैं...' उसने कहना शुरू किया।

'देखो!' अमीरा ने बीच में ही टोकते हुए दीवार में बने छेद की ओर इशारा किया।

वे सब घूर रहे थे।

अपनी आशंकाओं के बावजूद, छह बच्चे बेहतर ढंग से देखने के लिए दीवार में बने छेद के करीब चले गए।

माया ने राहत की सांस ली।

उनकी मुक्ति निकट थी।

अध्याय चौरासी

अंतिम युद्ध

सभा भवन

The Gurukul

सत्यवचन की अचानक उपस्थिति को देखकर जिग्नेश स्तब्ध रह गया।

'महर्षि,' उसने अपने गुस्से को काबू में रखने की कोशिश करते हुए कहना शुरू किया, 'हम आपको ही ढूंढ रहे थे।'

सत्यवचन ने समझकर सिर हिलाया। 'मैंने तुम्हें नहीं छोड़ा था। देखो।' उसने आकाश की ओर इशारा किया।

जमीन पर मौजूद सभी लोगों के कानों में एक अजीब सी आवाज सुनाई दी।

पंख फड़फड़ाने की आवाज।

लेकिन ये कोई साधारण पंख नहीं थे। युद्ध के कोलाहल में भी सुनाई देने वाली ध्वनि उत्पन्न करने के लिए, ये बहुत विशाल पंख होने चाहिए थे।

लगभग एकमत होकर, सैकड़ों आँखें, मनुष्यों और नागों दोनों की, आकाश की ओर मुड़ गईं।

गेस्टहाउस के अंदर

छह बच्चे मंत्रमुग्ध होकर देख रहे थे जब एक विशालकाय आकृति आकाश से नीचे उतरी, और गुरुकुल के ऊपर हवा में तैरते सैकड़ों प्रकाश के गोलों के पास पहुँचते ही उसका स्वरूप प्रकट हो गया।

वह प्राणी जितना विचित्र था, उतना ही विस्मयकारी भी। उसका चेहरा चील जैसा और शरीर मनुष्य जैसा था—सुगठित, सुनहरे धड़ से निकली हुई दो अत्यंत मांसल भुजाएँ और पेड़ के तनों जैसी दिखने वाली टांगें—उस प्राणी के कंधों से जुड़े विशाल पंखों का एक जोड़ा था जो रात की हवा में धीरे-धीरे फड़फड़ाते थे, जब वह गुरुकुल के युद्धक्षेत्र के ऊपर से उड़ रहा था।

गरुड़।

नागों के लिए अभिशाप।

सभा भवन

गरुड़ को देखते ही गुरुकुल के सभी विद्यार्थियों में ज़ोरदार जयकार हुई। जिग्नेश ने सत्यवचन की ओर एक कसी हुई, थकी हुई मुस्कान के साथ देखा।

माया ने यह कर दिखाया था। वह मदद लेकर आई थी। वह उस इकलौते व्यक्ति को ढूंढने में कामयाब हो गई थी जो आज रात उन्हें नागों के प्रकोप से बचा सकता था।

नागों पर इसका असर बेहद भयावह था। कुछ क्षणों के लिए वे भी अविश्वास से स्तब्ध खड़े रह गए, अपने कट्टर दुश्मन को अपने ऊपर मंडराते हुए देखते रहे।

फिर, भय से भरी गर्जनाओं के साथ, जो पंक्तियाँ कुछ ही क्षण पहले संगठित की गई थीं, वे बिखर गईं क्योंकि नागा सैनिक सभी दिशाओं में तितर-बितर हो गए।

लगभग उसी समय, गरुड़ के विशाल रूप ने एक जोरदार दहाड़ लगाई और नीचे झपट्टा मारा, बिजली की गति से नीचे जमा नागों की भीड़ में गोता लगाया, उनकी पंक्तियों को चीरते हुए उन

पर हमला किया, उन्हें नोंच डाला और उन पर वार किया।

वीरेंद्र ने जिग्नेश की ओर देखा। 'यह हमारे लिए नागों को जितना हो सके नष्ट करने का मौका है। गरुड़ को हमारी मदद की ज़रूरत नहीं है, लेकिन अगर हम भी साथ दें, तो उनके पीछे हटने से पहले हम उनकी सेना को भारी नुकसान पहुंचा सकते हैं।' उसने महर्षि को अपनी योजना संक्षेप में बताई।

क्षत्रिय के शब्दों में ज्ञान देखकर जिग्नेश ने सिर हिलाया।

नागों की गर्जना और चीखों के बीच चारों ओर शोर गूंज रहा था, क्योंकि वीरेंद्र और जिग्नेश के नेतृत्व में महामति अपने छात्र सैनिकों को अंतिम हमले के लिए एकजुट कर रहे थे। गरुड़ द्वारा नागों में तबाही मचाए जाने के कारण, हार का कोई डर नहीं था।

वीरेंद्र की आवाज शोरगुल के बीच गूंजी। 'हमला करो!'

उनके आदेश के जवाब में, असेंबली हॉल के चारों ओर जमा बच्चों का समूह तीन अलग-अलग धाराओं में विभाजित होने लगा, जो छात्रों के मुख्य समूह से दूर चली गईं, और फिर अलग-अलग स्थानों पर फिर से एक साथ मिल गईं।

गेस्टहाउस में

'तुमने कर दिखाया!' अर्जुन ने खुशी से झूमते हुए कहा, उसका चेहरा खिल उठा था।

उन सातों ने जयकार की, उनकी आवाजें असेंबली हॉल के बाहर मौजूद लोगों के समूह में मिल गईं।

'अब क्या हो रहा है?' माया ने सोचा, जब उसने देखा कि छात्रों का समूह छोटे-छोटे हिस्सों में बंटने लगा है और अलग-अलग दिशाओं में जा रहा है।

उन्होंने देखा कि गुरुकुल के छात्र अपने महामति के साथ मिलकर नागों की सेना पर अंतिम हमला करने के लिए एकजुट हुए।

धीरे-धीरे, गेस्ट हाउस में मौजूद सात बच्चों को हमले की योजना स्पष्ट हो गई।

गुरुकुल की सेना तीन समूहों में बंट गई थी। इनमें से दो समूह, जिनमें अधिकतर छात्र शामिल थे, नागों को घेरने के लिए तेजी से आगे बढ़ रहे थे, जबकि तीसरा, छोटा समूह, नागों से सीधे मुकाबले के लिए जा रहा था।

'ये लोग क्या कर रहे हैं?' अदिरा को समझ नहीं आया। बाकी किसी ने भी जवाब नहीं दिया। वे भी उसकी तरह ही हैरान थे।

केवल अगस्त्य ही समझ पाए कि क्या हो रहा है। 'ध्यान से देखो। केंद्र में जो समूह नागों की ओर तेज़ी से बढ़ रहा है, वे सबसे उन्नत छात्र हैं; वे जिन्होंने मंत्रों की उच्च श्रेणियों में महारत हासिल कर ली है। आक्रमण के मंत्र, मायाजाल रचने के मंत्र और पदार्थ को नियंत्रित करने के मंत्र।' वे अपनी प्रशंसा करने से खुद को रोक नहीं पाए। 'मेरी तरह।'

वरुण ने नाक सिकोड़ी, लेकिन उसकी निगाहें उनकी आंखों के सामने घट रही घटना पर टिकी रहीं।

वरुण की बात अनसुनी करते हुए अगस्त्य ने आगे कहा, 'केवल वही नागों को किसी भी तरह का नुकसान पहुंचा सकते हैं। क्षत्रियों के पास जो भी हथियार हैं, वे वास्तव में नागों को नष्ट नहीं

कर सकते, लेकिन उनका इस्तेमाल रक्षात्मक रूप से किया जा सकता है।' उन्होंने छात्रों के अन्य दो समूहों की ओर इशारा किया, जिन्होंने अब तक नागों की भीड़ को लगभग घेर लिया था और नाग सेना के दोनों ओर रक्षात्मक स्थिति ले ली थी।

अगस्त्य ने निष्कर्ष निकालते हुए कहा, 'वे दोनों समूह नागों को खदेड़ने और उन्हें घेरने के लिए रक्षात्मक मंत्रों और अपने हथियारों का इस्तेमाल करेंगे।'

अर्जुन को इन सैन्य संरचनाओं के पीछे की रणनीति स्पष्ट होने लगी। 'मुझे समझ आ गया। केंद्र में स्थित समूह नागों पर हमला करेगा, जिससे गरुड़ के आक्रमण को मजबूती मिलेगी। नाग दो तरफ से हमारी रक्षात्मक टुकड़ियों से और एक तरफ से नदी से घिरे होंगे। उनके पास भागने की कोई जगह नहीं होगी, जिससे वे गरुड़ के लिए आसान निशाना बन जाएंगे। शानदार रणनीति। मुझे आश्चर्य है कि यह किसने सोची।'

नागों पर आक्रमण शुरू होते ही गुरुकुल सेना की तीखी चीखें उनके कानों तक पहुंचीं।

गुरुकुल सेना के आक्रमण शुरू होते ही गरुड़ ने नागों के विरुद्ध अपना हवाई आक्रमण जारी रखा। दिव्य पक्षी बार-बार नीचे नागों के समूह में गोता लगाता रहा, सूर्य के प्रकाश में भी उसका विशालकाय रूप धुंधला सा दिखाई दे रहा था।

बार-बार, गरुड़ नागों के झुंडों को बाहों में भर लेता था, अपने पंजों से और भी अधिक नागों को जकड़ लेता था और फिर आकाश में वापस उड़ जाता था, जहाँ वह उन प्राणियों को छोड़ देता था, उन्हें मरते हुए देखने के लिए नहीं रुकता था, बल्कि एक बार फिर गोता लगाकर उनकी कतारों को चीरता हुआ अपने पंजों का घातक उपयोग करता था।

अर्जुन की भविष्यवाणी के अनुसार, गुरुकुल की ओर से हुए नए हमले ने नागों के बीच अफरा-तफरी को और बढ़ा दिया, जो उस समय तक पूरी तरह से अस्त-व्यस्त हो चुके थे। तीन ओर से उन पर करीब से हमला किया जा रहा था और ऊपर से गरुड़ के रूप में घातक मृत्यु बरस रही थी।

सातों बच्चे नए सिरे से मिली खुशी के साथ देख रहे थे कि वे विशालकाय सरीसृप, जो कुछ ही समय पहले तक अजेय प्रतीत होते थे, अब इधर-उधर भाग रहे थे और छिपने की जगह खोजने की कोशिश कर रहे थे।

लेकिन वहां कोई नहीं था।

छात्रावासों और अतिथिगृह पर हमला करने वाले नाग भी अपने विनाश के कार्य को अधूरा छोड़कर भाग गए, उनका ध्यान केवल गरुड़ के प्रकोप से बचने पर केंद्रित था।

चित्र: ईशान त्रिवेदी

गुरुकुल की सीमा में पाई गई कमजोरी का फायदा उठाने के लिए सरीसृप इतनी बड़ी संख्या में एकत्रित हो गए थे कि वे दिव्य पक्षी के लिए आसान शिकार बन गए।

कुछ भाग्यशाली नाग नदी की ओर तेजी से भागने और उसे पार करने में कामयाब रहे, और किसी तरह अंधेरे में निकल भागे। लेकिन उनमें से कई ऐसा नहीं कर पाए।

केवल विश्वराज ही अपनी जगह पर डटे रहे और गुरुकुल को गुस्से भरी नजरों से घूरते रहे।

माया उस अकेले, स्थिर खड़े लड़के को देखती रही। उसे यकीन था कि उसने उसे पहले भी एक बार देखा था, उस रात जब वे पन्ना पहुँचे थे। उस रात उसका चेहरा दिखाई नहीं दिया था। आज रात भी, वह उसके चेहरे के हाव-भाव नहीं पहचान पा रही थी। लेकिन उसके मन में कहीं न कहीं यह बात थी कि आज रात उसने जिसे देखा, वह वही व्यक्ति था। आज रात तक तो वह जानती भी नहीं थी कि वह कौन है। अर्जुन ने अभी-अभी उसे बताया था। आज रात से पहले उसने विश्वराज के बारे में केवल एक बार सुना था, जब सत्यवचन के गुरुकुल आने के बाद सभा भवन में उसका नाम लिया गया था।

माया के देखते ही देखते विश्वराज अचानक मुड़ा और चला गया, रात के अंधेरे में गायब हो गया। माया को आश्चर्य हुआ कि वह गरुड़ से बिल्कुल भी डरा हुआ नहीं लग रहा था।

माया उस लड़के की दूर जाती हुई आकृति को देखती रही, जिसे शुक्र के पास जाना था। यही वह लड़का था जो इतिहास शिक्षक की मृत्यु से ठीक पहले डीजे सर से मिला था। इस लड़के और उसके पिता की हत्या के बीच एक संबंध था, क्योंकि अब उसे पता चल गया था कि त्रिवेदी ने उसके पिता की मृत्यु से कुछ मिनट पहले उन्हें फोन किया था।

वह संबंध क्या था?

अध्याय पचासी

The Saptas

अतिथिगृह

Gurukul

खंडहर हो चुके गेस्टहाउस के बैठक कक्ष में हंसी की गूंज सुनाई दे रही थी। निचली मंजिल लगभग सही-सलामत बची हुई थी, हालांकि ऊपरी मंजिलें नागों द्वारा पूरी तरह या आंशिक रूप से नष्ट कर दी गई थीं।

'नागा लोग बालकनी से अंदर आ रहे थे, और उसने हमारे लिए दरवाजा खोलने से इनकार कर दिया!' अगस्त्य ने हंसते हुए कहा, जिससे एक बार फिर हंसी का दौर शुरू हो गया।

महामती परिषद के साथ एक सत्र के बाद, सातों बच्चों - अर्जुन, माया, वरुण, आदिरा, तनवीर, अगस्त्य और अमीरा - को आज रात देर तक जागने की अनुमति दी गई थी। इस सत्र में सत्यवचन और अन्य लोगों ने उनके साहस और दृढ़ संकल्प की सराहना की थी। सत्र के दौरान ही अर्जुन को यह सूचना मिली थी कि परिषद को महामती महेश और विश्वराज को पकड़ने के लिए निकले अन्य लोगों से संदेश मिला है।

पार्थ ने कहा था, “हमें नहीं पता कि विश्वराज के मिलने की खबर शुक्र की चाल थी या उन्हें गुरुकुल छोड़ने के लिए उकसाने की, लेकिन हमने यह पुष्टि कर ली है कि वे चारों सुरक्षित हैं। अब जब हमें पता चल गया है कि विश्वराज को आखिरी बार यहीं गुरुकुल में नागों के साथ देखा गया था, तो वे वापस लौट रहे हैं। कौन जाने अब वह कहाँ होंगे।”

इस खबर से अर्जुन का मनोबल पूरी शाम की तुलना में काफी बढ़ गया था।

परिषद सत्र के बाद, अर्जुन ने समूह को एक साथ समय बिताने की अनुमति का अनुरोध किया था।

उन्होंने परिषद से कहा था, ‘महामति, हम सातों ने एक तरह से हर काम में एक टीम के रूप में काम किया।’ उन्होंने जो बात नहीं कही थी, वह यह थी कि उन सभी के मन में कई सवाल थे, जिनका जवाब नहीं मिला था, और वे सभी माया की गरुड़ से मदद मांगने की यात्रा के बारे में जानने के लिए उत्सुक थे।

वे सब अब साथ बैठे हंस रहे थे, लेकिन उन्हें कुछ क्षण पहले का खौफ अभी भी याद था। एमीरा का दरवाजा खोलने से इनकार करना, जो अब एक मजाक जैसा लग रहा था, उस समय जीवन और मृत्यु का मामला प्रतीत होता था।

अमीरा ने उन मज़ाकों को हल्के में लिया। एक नौसिखिया के लिए, गुरुकुल में एक विशिष्ट समूह के हिस्से के रूप में स्वीकार किया जाना, माया की उसकी अटूट रक्षा के लिए पर्याप्त पुरस्कार था।

‘अरे,’ अर्जुन ने आखिरकार कहा, ‘बहुत हो गया मज़ाक। वह अपना काम कर रही थी और मैं उसका सम्मान करता हूँ। उसके निर्देश बहुत स्पष्ट थे। माया को परेशान नहीं किया जाना था।’ उसने अमीरा की तरफ मुस्कुराया, जिसने भी झिझकते हुए जवाब दिया। ययाति के वंशज, जिसे भविष्यवाणी में 'एकमात्र' बताया गया है, से मिली यह प्रशंसा वाकई बहुत बड़ी बात थी।

‘मुझे कभी पता नहीं था कि महर्षि शारीरिक रूप से एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा कर सकते हैं,’ माया ने विषय बदलते हुए कहा। ‘मुझे पता था कि आत्मा यात्रा कर सकती है, लेकिन सत्यवचन ने जो किया वह मेरे लिए बिलकुल नया था।’

परिषद सत्र के दौरान सत्यवचन ने अपने गायब होने का कारण बताया था। उन्हें एहसास हुआ था कि माया भले ही अपने आत्म रूप में पल भर में द्वारका से लौट सकती है, लेकिन गरुड़ को अपने द्वीप से पन्ना तक उड़ने में समय लगेगा, चाहे उसके विशाल पंख और गति कितनी भी तेज़ क्यों न हो। इसलिए उन्होंने माया की मदद करने का फैसला किया और अपनी सिद्धियों का उपयोग करके द्वारका गए और गरुड़ को अपने साथ वापस ले आए।

अगस्त्य ने स्वीकार किया, ‘मैंने शक्तिशाली महर्षियों के बारे में कहानियां सुनी हैं कि वे अपनी सिद्धियों का उपयोग करके कम समय में शारीरिक रूप से लंबी दूरी तय कर लेते थे। लेकिन मुझे नहीं पता कि उन्होंने यह कैसे किया या महर्षि सत्यवचन ने यह कैसे किया। क्या उन्होंने आपको बताया?’

माया ने अपने होंठ सिकोड़ लिए। 'नहीं, उसने ऐसा नहीं किया। उसने कल रात भी ऐसा ही किया था, जब मैं एक आत्मा के रूप में उसके आश्रम गई थी। मैं गलती से गुरुकुल लौट आई और कुछ ही पलों में वह मेरी बालकनी पर था, दरवाजा खटखटा रहा था। मैंने उससे कभी नहीं पूछा कि उसने ऐसा कैसे किया और न ही उसने कभी कोई स्पष्टीकरण दिया।'

‘खैर, मुझे यकीन है कि आपको पता चल ही जाएगा,’ अगस्त्य ने थोड़ी ईर्ष्या भरी आवाज़ में कहा। ‘आखिरकार, उसने कहा है कि वह आपको खुद सिखाएगा।’

‘मुझे इस बात की चिंता है,’ माया ने सचमुच कहा। आज रात उसके लिए एक यादगार दिन था। परिषद ने, तीन सदस्यों की अनुपस्थिति में ही सही, माया को आधिकारिक तौर पर गुरुकुल में दाखिला देने का फैसला किया था। उसके कारनामों ने गुरुकुल और उसके निवासियों को विनाश से बचाया था। सत्यवचन ने यह विचार रखा था और जिग्नेश और पार्थ ने तुरंत सहमति दे दी थी।

‘तो,’ अर्जुन ने समूह की ओर देखते हुए कहा। ‘मैं इस बारे में सोच रहा था... क्या हम वही सप्त हैं जिनका जिक्र भविष्यवाणी में किया गया है?’

अदिरा ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मुझे तो ऐसा ही लगता है। मुझे लगता है कि हम सातों किसी खास वजह से एक साथ आए हैं। अगर आप पीछे मुड़कर देखें, तो आप पाएंगे कि हममें से हर किसी ने एक चुनाव किया था। एक फैसला लिया था। और उस फैसले के परिणामस्वरूप हमने जो कदम उठाए, उन्हीं की वजह से हम यहां तक पहुंचे हैं। मुझे नहीं लगता कि यह महज एक संयोग था।'

तनवीर ने सोच-विचार करते हुए कहा, 'अगर यह सच है, तो फिर भविष्यवाणी के बाकी हिस्से को पूरा करना हमारी जिम्मेदारी है।'

आज रात, कमरे में मौजूद सातों बच्चों ने पहली बार भविष्यवाणी सुनी थी। या कम से कम उसका वह हिस्सा जो भू-लोक में रह गया था।

शुक्र का ग्रहण एक दिन अवश्य समाप्त हो जाएगा।

क्या कलियुग में उसकी शक्ति बढ़ेगी?
सात हथियार, तीक्ष्ण और तेज
उसका मुकाबला करने का यही साधन होगा।
वह एक आएगा, जिसका जन्म उसी दिन होगा।
संक्रांति जो संकेत होगी
यायाति की संतान ही वह एक होगी।
सातों का नेतृत्व करते हुए युद्ध में उतरना।

'हां,' वरुण ने सहमति जताते हुए कहा। 'अगर हम भविष्यवाणी में वर्णित सात लोग हैं, तो हमें भविष्यवाणी में उल्लिखित सात हथियारों को ढूंढना होगा।'

'इससे पहले,' अर्जुन ने कहा, 'हमें भविष्यवाणी के बाकी दो हिस्से खोजने होंगे। जब तक हमें पूरी भविष्यवाणी का पता नहीं चलेगा, तब तक हमारे पास शुक्र को हराने का कोई साधन नहीं होगा। अगर सप्तऋषियों ने भविष्यवाणी को अलग-अलग हिस्सों में बाँटकर छिपाना बेहतर समझा, तो भविष्यवाणी में कुछ ऐसा जरूर होगा जो हमें शुक्र का सामना करने की शक्ति देगा। मेरा अंतर्ज्ञान माया के अंतर्ज्ञान से मिलता-जुलता है। मुझे लगता है कि हम दोनों मानते हैं कि भविष्यवाणी में बताए गए हथियार शुक्र को हराने के लिए पर्याप्त नहीं होंगे।'

और भविष्यवाणी के शेष भाग को खोजने की कुंजी शायद डायरी में ही मिल सकती है।

माया चुपचाप बैठी अर्जुन की बातें सुन रही थी। वह सत्यवचन की बातें भूली नहीं थी—कि सत्यवचन उसके पिता की डायरी में लिखे श्लोकों को समझने में उसकी मदद कर सकता है। उसने ठान लिया था कि वह सत्यवचन से ज़रूर यह पता लगवाएगी कि उसके पिता डायरी को इतना महत्वपूर्ण क्यों मानते थे। लेकिन उसने अपने विचार मन में ही रखे। वह दूसरों को कुछ भी बताने से पहले पूरी तरह आश्वस्त होना चाहती थी।

बैठक कक्ष के दरवाजे पर दस्तक हुई और वीरेंद्र अंदर आया।

'अब काम समेटने का समय हो गया है, दोस्तों,' उन्होंने मुस्कुराते हुए उनसे कहा। 'कल से हम गुरुकुल का पुनर्निर्माण शुरू करेंगे।'

'नदी किनारे पेड़ों के विनाश के बारे में हम क्या करें?' माया जानना चाहती थी। 'क्या साधुओं को पता नहीं चलेगा कि उन्हें जला दिया गया है?'

वीरेंद्र ने सिर हिलाया। "नदी के किनारे जंगल का ठीक वैसा ही भ्रम पैदा करने के लिए मंत्रों का जाप किया जा चुका है जैसा वह आज रात से पहले था। साधकों को कोई फर्क नहीं पड़ेगा। आप लोग सुबह खुद देख लेंगे। अब, सब लोग, काम समेट लो। आदिरा, माया अब तुम्हारे छात्रावास में है, है ना?"

अतिथिगृह के नष्ट होने और माया के गुरुकुल में औपचारिक प्रवेश के परिणामस्वरूप, उसे एक छात्रावास में ठहराया गया था जहाँ उसे आज रात से सोना था। वीरेंद्र को भी एक महामती के साथ एक कुटिया में रहना पड़ा। नष्ट हुए सभी छात्रावास लड़कों के थे। वे कुटियाओं के पुनर्निर्माण तक सभा भवन में रात बिताएंगे, जिसमें ज्यादा समय नहीं लगेगा क्योंकि मंत्रों के जाप से निर्माण प्रक्रिया में तेजी आएगी।

अदिरा मुस्कुराई और सिर हिलाया। 'मुझे खुशी है कि उसे हमारे छात्रावास में जगह मिली है। मैं उसे यहाँ बसने में मदद करूँगी।'

'बहुत बढ़िया,' वीरेंद्र ने अपने हाथ आपस में रगड़े। 'तो कल मिलते हैं। गुरुकुल को फिर से सामान्य स्थिति में लाने के लिए हमें बहुत काम करना है।'

उपसंहार

दिन 13

एसपी कपूर का कार्यालय

नई दिल्ली

रमन कपूर अपनी मेज पर बैठे उपाध्याय के अध्ययन कक्ष से लाए गए कागज के पन्ने को घूर रहे थे। उन्होंने पन्ने पर उकेरी गई तलवार का अधूरा चित्र देखा। एक लंबी, चौड़ी तलवार, जिसका मूठ देखने में भारी लग रहा था।

एक दोधारी तलवार जिसकी धार आग की लपटों में घिरी हुई थी।

आखिर ये चित्र किस बारे में था? क्या ये मामले के किसी ऐसे पहलू का सुराग था जिसका अभी तक खुलासा नहीं हुआ था? या फिर ये महज़ एक मामूली चित्र था?

उन्होंने चित्र के ऊपर और नीचे लिखे शिलालेखों की पंक्तियों का अध्ययन किया। लिपि तो निश्चित रूप से देवनागरी थी, लेकिन भाषा हिंदी नहीं थी। न ही संस्कृत थी। कपूर ने अनुवाद के लिए शिलालेखों की एक स्कैन की हुई प्रति भेजी थी और यह पुष्टि हो गई थी कि भाषा अज्ञात थी।

एक नई भाषा? या कोई पुरानी, भूली हुई भाषा?

दोनों ही मामलों में, उपाध्याय को इसकी जानकारी कैसे हुई? वे इतिहास के शिक्षक थे। क्या यह संभव था कि उन्हें ये शिलालेख कहीं मिले हों? शायद किसी प्राचीन स्मारक या शिलालेख पर? भारत भर में फैले स्मारकों और मंदिरों में हजारों शिलालेख थे। कपूर को इन जानकारियों को आपस में जोड़ने के लिए कहाँ से शुरुआत करनी चाहिए थी?

बहुत सारे सवाल।

तलवार का चित्र मिलने के बाद से पूरा एक सप्ताह बीत चुका था और पिछले सात दिनों में इस रहस्यमय मामले पर प्रकाश डालने वाली कोई नई जानकारी सामने नहीं आई थी।

और फिर, कल रात पन्ना राष्ट्रीय उद्यान में आग लगने की खबर आई। पार्क की सीमा से लगे गांवों में से एक गांव के एक व्यक्ति ने दावा किया कि उसने जंगल के एक सुनसान और कम आवाजाही वाले हिस्से में आग की लपटें देखीं, जो केन नदी से घिरा हुआ है। उस ग्रामीण ने कुछ आवाजें भी सुनीं, हालांकि वह यह नहीं समझ पाया कि शोर किस वजह से हो रहा था।

पार्क रेंजर तुरंत जांच के लिए निकल पड़े। तीन रेंजर एक मोटरबोट लेकर केन नदी के किनारे आग की तलाश में निकल पड़े। अगर जंगल में अभी भी आग लगी हुई थी, तो उसे बुझाने में मदद के लिए हेलीकॉप्टरों को तैयार रखा गया था।

लेकिन पर्वतारोहियों को कुछ भी असामान्य नहीं दिखा। उन्होंने नदी में कई बार गश्त की, लेकिन उन्हें जंगल में आग लगने का कोई संकेत नहीं मिला। बाद में हेलीकॉप्टर द्वारा जंगल के उस हिस्से का सर्वेक्षण भी निराधार रहा।

पार्क रेंजरों ने इस मामले को खारिज कर दिया था और इसे या तो मतिभ्रम या शराब के प्रभाव के कारण बताया था।

लेकिन कपूर इस मामले को इतनी आसानी से खारिज नहीं कर सकते थे। कई संयोग थे।

पन्ना वही जगह थी जहाँ वीरेंद्र अपने परिवार के साथ भागा था। यह वही जगह भी थी जहाँ उपाध्याय की बेटी के पहुँचने की संभावना थी, जो इस मामले में एक अप्रत्याशित मोड़ था। यह वही जंगल था जहाँ उनके एक खास आदमी ने दावा किया था कि उसे बुरी आत्माओं ने पीछा किया था। वीरेंद्र या उसके परिवार का अभी तक कोई पता नहीं था; और न ही उपाध्याय की बेटी का—अगर वह सच में वही थी—तो भी। पन्ना पहुँचने के बाद वे सब मानो हवा में गायब हो गए थे।

क्या उनके मामले और रहस्यमय जंगल की आग के बीच कोई संबंध था?

कपूरी को पता नहीं था। लेकिन उनके मन में जांच को आगे बढ़ाने के कुछ विचार थे। और उन्हें पूरा विश्वास था कि वीरेंद्र हमेशा के लिए छिपा नहीं रह सकता।

देर-सवेर उस आदमी को सामने आना ही था।

कपूर इंतजार कर रहे होंगे और देख रहे होंगे।

तब तक उनकी जांच जारी रहेगी।

रमन कपूर इस रहस्य की तह तक पहुंचने तक चैन से नहीं बैठने वाले थे।

लेखक का नोट

हालांकि यह एक काल्पनिक कहानी है और इसलिए पूरी तरह से मनगढ़ंत है, फिर भी पुस्तक में बहुत कुछ महाभारत, श्रीमद् भागवतम्, भगवद् गीता और पुराणों के वास्तविक श्लोकों पर आधारित है। मैंने सोचा कि पाठकों को यह समझने में मदद करनी चाहिए कि कहानी के कौन से भाग मेरी कल्पना की उपज हैं, और उन भागों के संदर्भ प्रदान करने चाहिए जो उपरोक्त ग्रंथों पर आधारित हैं या उनसे लिए गए हैं। नीचे दी गई सूची को यथासंभव कहानी में उनके प्रकट होने के क्रम के अनुसार व्यवस्थित किया गया है।

लुई एलेक्जेंडर बर्थियर: एक ऐतिहासिक व्यक्ति थे और जैसा कि बताया गया है, नेपोलियन के अधीन चीफ ऑफ स्टाफ थे। अधिक जानकारी के लिए देखें।

https://en.wikipedia.org/wiki/Louis-Alexandre_Berthier

रोसेटा स्टोन: वास्तव में, इसकी खोज कैप्टन पियरे बौचार्ड ने अगस्त 1799 में की थी। हालांकि, मिस्र के चित्रलिपि को समझने का साधन बनने में इसका बहुत समय लगा। मैंने नाटकीय प्रभाव के लिए कई वर्षों की कहानी को एक महीने के संक्षिप्त समय में समेटने की छूट ली है। लंदन के ब्रिटिश संग्रहालय में रखे इस पत्थर के बारे में अधिक जानकारी के लिए, कृपया द क्वेस्ट क्लब में लॉग इन करें और ब्रिटिश संग्रहालय द्वारा प्रकाशित पत्थर का संपूर्ण इतिहास पढ़ें, साथ ही मेरे द्वारा ली गई रोसेटा स्टोन की तस्वीरें भी देखें।

नेपोलियन की ग्रेट पिरामिड में रात: इसका कोई ऐतिहासिक रिकॉर्ड नहीं है, हालांकि प्रस्तावना में वर्णित घटना के कई संदर्भ मिलते हैं, जिनमें से कुछ प्रतिष्ठित लेखकों द्वारा वर्णित हैं। यह सच है कि अल-मामून ने सबसे पहले 820 ईस्वी में पिरामिड में सुरंग खोदी थी, और सिकंदर और सीज़र उससे पहले इसमें प्रवेश नहीं कर सकते थे। इस बारे में अधिक जानकारी और तस्वीरों के लिए, कृपया द क्वेस्ट क्लब में लॉग इन करें। अधिकांश वृत्तांतों के अनुसार, नेपोलियन ने उस रात की घटना का रहस्य अपनी मृत्यु तक छिपाए रखा और कहा जाता है कि जब उनसे उस रात के अपने अनुभव का वर्णन करने के लिए कहा गया, तो उन्होंने अपनी मृत्युशय्या पर ये शब्द कहे थे, 'अगर मैंने तुम्हें बताया तो तुम कभी विश्वास नहीं करोगे।' मैंने कहानी में कुछ बदलाव किए हैं, और प्रस्तावना में, नेपोलियन पिरामिड से बाहर आने के तुरंत बाद बर्थियर से ये शब्द कहते हैं।

भृगु ब्रह्मऋषि हैं, जिनकी रचना ब्रह्मा ने की थी। महाभारत के प्रथम खंड आदि पर्व के चतुर्थ खंड (पौलोमा पर्व) के पंचम श्लोक 6 में भृगु को ब्रह्मा द्वारा उत्पन्न बताया गया है। भृगु के जन्म का वर्णन आदि पर्व के 7वें खंड (संभव पर्व) के 66वें अध्याय में भी मिलता है।

शुक्राचार्य भृगु के पुत्र और इसलिए ब्रह्मा के पोते थे, जैसा कि अध्याय 30 में उल्लेख किया गया है। महाभारत में कई स्थानों पर शुक्र को एक अत्यंत शक्तिशाली ऋषि, 'तपस्वियों में भी तपस्वी' के रूप में वर्णित किया गया है। वे असुरों के गुरु थे और भगवान शिव के वरदान से मृतकों को पुनर्जीवित करने की क्षमता रखते थे, जिनके वे भक्त थे। रोचक बात यह है कि उनकी पत्नियों में से एक इंद्र की पुत्री जयंती थीं। उनकी एक आंख कैसे चली गई, इसका वर्णन भगवान विष्णु और बलि के वामन अवतार की कथा में किया गया है। आप इसके बारे में पुराणिक कॉस्मोलॉजी के पृष्ठ 760 (बिंदु 8) और पृष्ठ 103 (बिंदु 6) पर अधिक पढ़ सकते हैं।

सप्तऋषियों के बारे में यह कहानी कि कलियुग में उनकी शक्ति कम हो गई थी, काल्पनिक है। देवताओं के बारे में भी यही बात लागू होती है।
नरसिम्हा मंत्र: यह एक वास्तविक मंत्र है और पुस्तक में जहां भी इसका उल्लेख किया गया है, इसे हूबहू उसी रूप में प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक में प्रयुक्त इस मंत्र को नरसिम्हा महामंत्र के नाम से भी जाना जाता है।
हिरण्यकशिपु और प्रहलाद: यह कथा विष्णु पुराण के अध्याय 3, खंड 1, श्लोक 11-14 में पाई जा सकती है। यह श्रीमद् भागवतम् के सातवें सर्ग, अध्याय 2-10 में भी पाई जा सकती है।
विश्ववासु: महाभारत में, विश्ववासु को आदि पर्व: पुस्तक 4: पौलोमा पर्व, अध्याय 8, श्लोक 5 में गंधर्वों के राजा के रूप में वर्णित किया गया है।
साध: साधारण का संक्षिप्त रूप है, जिसका हिंदी में अर्थ 'साधारण' होता है। अध्याय 50 में बताए गए कारणों से इसका प्रयोग उन लोगों के लिए किया जाता है जो संघ या गण के सदस्य नहीं होते।
कचा और शुक्र: कचा और शुक्र की कहानी, जैसा कि अध्याय 29 में वर्णित है, महाभारत के आदि पर्व: पुस्तक 7: संभव पर्व, अध्याय 76 में पाई जा सकती है।
चंद्रवंशी: ययाति का इतिहास महाभारत, आदि पर्व: पुस्तक 7: संभव पर्व, अध्याय 75 में वर्णित है।
भगवान शिव और भूतगण: पुस्तक में भगवान शिव द्वारा भूतगण को दिए गए आदेश का उल्लेख श्रीमद् भागवतम् के चौथे स्कंध, दूसरे अध्याय के श्लोक 14-15 और 32; तीसरे अध्याय के श्लोक 7; चौथे अध्याय के श्लोक 34; और पाँचवें अध्याय के श्लोक 4, 13 और 25-26 में दिए गए विवरणों पर आधारित है। हालांकि, शुक्र को आदेश सौंपना पूरी तरह से काल्पनिक है।
विकृतियाँ: ये काल्पनिक पात्र हैं। वे कौन हैं? श्रृंखला आगे बढ़ने पर आपको पता चल जाएगा।
ब्रह्मभाषा: ब्रह्मभाषा को संस्कृत की पूर्ववर्ती भाषा और देवताओं की भाषा के रूप में वर्णित करने और उसकी व्याख्या करने का मेरा विचार अक्षय के. मजूमदार द्वारा अपनी पुस्तक 'द हिंदू हिस्ट्री' के अध्याय 6, पृष्ठ 68 में व्यक्त किए गए एक समान विचार से प्रेरित है: 'इन्द्रलय में उनकी भाषा ब्रह्मभाषा थी, जिसका उल्लेख उपनिषदों में अक्सर मिलता है। देवताओं द्वारा धीरे-धीरे परिष्कृत की गई वह भाषा संस्कृत बन गई।'
प्राचीन ग्रंथ: भारत में प्राचीन पांडुलिपियों पर शोध करने वाले डेविड पिंग्री के अनुसार, ऐसी पांडुलिपियों की संख्या 3 करोड़ से अधिक है। तमिलनाडु और केरल में वैज्ञानिक ग्रंथों का अध्ययन करने वाले के.वी. शर्मा का अनुमान है कि इनमें से केवल 7 प्रतिशत का ही अनुवाद और प्रकाशन हुआ है। अध्याय 46 में अंबा द्वारा लाखों अप्रकाशित ग्रंथों का उल्लेख इसी कम ज्ञात तथ्य पर आधारित है।
दंडक वन का उल्लेख वाल्मीकि रामायण के द्वितीय अध्याय, द्वितीय और पंचम में मिलता है। इस पुस्तक में दंडक वन का स्थान अरुण रामकृष्णन द्वारा रामायण के भूगोल के उत्कृष्ट विश्लेषण पर आधारित है, जिसमें उन्होंने पन्ना जिले के सारंगपुर गाँव के पास ऋषि सूतीक्षीण के आश्रम का वर्णन किया है। इसी आश्रम के आसपास भगवान राम, सीता और लक्ष्मण ने अपने वनवास के

दस वर्ष व्यतीत किए थे। उनके पूरे चौदह वर्ष का वनवास दंडक वन में ही बीता था। यह सत्य है कि शुक्र के श्राप के परिणामस्वरूप दंडक वन का निर्माण हुआ था। इसकी उत्पत्ति पुराणिक विश्वकोश के पृष्ठ 46 और 200 पर देखी जा सकती है।

पाताल लोक के सात स्तर और उनके निवासियों का विवरण श्रीमद् भागवतम्, सर्ग 5, अध्याय 24 में दिए गए विस्तृत विवरण से लिया गया है।

बाली की कहानी श्रीमद् भागवतम् के आठवें अध्याय, 15-23 में पाई जा सकती है।

सिद्धियों की प्राप्ति: श्रीमद् भागवतम् के 11वें अध्याय, 15 में सिद्धियों का विस्तृत वर्णन और उन्हें प्राप्त करने के तरीके बताए गए हैं।

त्वष्टा की कहानी, जैसा कि माया द्वारा अध्याय 50 में वर्णित है, श्रीमद् भागवतम् के छठे कांड, अध्याय 9 में पाई जा सकती है।

अध्याय 50 में जिग्नेश द्वारा सूचीबद्ध मंत्रों की छह श्रेणियां पूरी तरह से काल्पनिक हैं।

महाभारत के लुप्त श्लोक: इसका संदर्भ (अध्याय 56 में पुनरुत्पादित) आदि पर्व, अध्याय 1, श्लोक 104-105 में पाया जा सकता है।

आत्मा, सूक्ष्म शरीर और स्थूल शरीर की अवधारणा, जैसा कि अध्याय 57 में वर्णित है, भगवद् गीता और श्रीमद् भागवतम् के निम्नलिखित संदर्भों पर आधारित है:

भगवद् गीता: अध्याय 7, श्लोक 4-5

श्रीमद् भागवतम्: तीसरा स्कंध, पांचवा अध्याय, श्लोक 22-38; अध्याय 26, पद 23-49

शांता-कारम मंत्र: यह एक वास्तविक मंत्र है और इसे पुस्तक में इसके वास्तविक रूप में पुन: प्रस्तुत किया गया है, लेकिन माया पर इसका प्रभाव (जिससे उसकी आत्मा यात्रा कर पाती है) काल्पनिक है।

'काल्पनिक' मंत्र: पुस्तक में वर्णित लघु मंत्र पूरी तरह से काल्पनिक हैं, सिवाय गरुड़ मंत्र के लघु रूप के (नीचे "गरुड़य त्रयंबकाय" देखें)। निम्नलिखित सभी मंत्र मेरे द्वारा रचित हैं, हालांकि संस्कृत पाठ वास्तविक है और प्रत्येक मंत्र का एक अर्थ है जो सीधे उसके उद्देश्य से जुड़ा है, जैसा कि आप नीचे दिए गए अर्थों से देख सकते हैं।

विकुरूते व्यापनिया: रूप को बदलकर उसे पारगम्य बनाना

विद्युतते: प्रकाशित करना या चमकना

उदनयते: उठाना या ऊपर उठाना

वेजिटा वृद्धि: गति या वेग बढ़ाना

Gandharvo krpaya vishto : O Gandharvas, have compassion for me

अर्जुन और वृष्णि: मौसला पर्व के अध्याय 7, श्लोक 46-59 में उस घटना का वर्णन है जब डाकुओं ने विष्णु कन्याओं और उनके बच्चों पर हमला किया और अर्जुन अपने शस्त्रों को वापस नहीं बुला पाए। श्लोक 55 में विशेष रूप से बताया गया है कि वे अपने दिव्य शस्त्रों को वापस बुलाने में कैसे असफल रहे। हालांकि, अध्याय 63 में वीरेंद्र द्वारा अर्जुन को वर्णित क्षत्रियों के शस्त्रों का 'भंडार' या 'लॉकर' काल्पनिक है, हालांकि यह महाभारत की इस कहानी से प्रेरित है -

यह महाभारत के श्लोकों की मेरी काल्पनिक व्याख्या है।

कर्म का नियम: जैसा कि पुस्तक में कई स्थानों पर उल्लेख किया गया है, भगवद् गीता और श्रीमद् भागवतम् के निम्नलिखित संदर्भों पर आधारित है:

Bhagavad Gita: Chapter 14

श्रीमद्भागवत: सर्ग 1, अध्याय 15, श्लोक 18; कैंटो 3,

अध्याय 31, श्लोक 1; 11वां सर्ग, अध्याय 9, श्लोक 26

यह ध्यान देना अत्यंत रोचक है कि जरा और कृष्ण की कहानी में, जैसा कि वर्णित है।
इससे पहले, कर्म का नियम क्रियान्वित होता हुआ देखा गया, यहां तक कि कृष्ण के लिए भी, जो कि दिव्य हैं।
अपने पूर्व जन्म में, राम के रूप में, कृष्ण ने वाली (सुग्रीव के भाई) का वध किया था।
पीछे से। वली का पुनर्जन्म जरा के रूप में हुआ, और उसने बदले में कृष्ण की 'हत्या' कर दी।
कृष्ण के पिछले जन्म के कर्मों का प्रभाव पड़ा।
महाभारत के कृष्ण के रूप में उनके जन्म पर उनका वर्णन किया गया है। यह एक महान कृति है।
यह इस बात का उदाहरण है कि सर्वशक्तिमान कृष्ण ने भी स्वयं को इससे मुक्त नहीं किया। कर्म के फलस्वरूप।

कद्रु ऋषि कश्यप की पत्नियों में से एक थीं, जो सप्तऋषियों में से एक थे और नागों की माता थीं।

Takshaka and Parikshit: the story of Takshaka and Parikshit can be found in the Mahabharata, Adi Parva, Book 5 : Astika Parva, Chapters 42 to 43.

द्वारका: द्वारका के विनाश से संबंधित अध्याय 79 में उद्धृत श्लोक महाभारत के मौसला पर्व, अध्याय 7, श्लोक 41-43 में पाए जा सकते हैं। वर्ष 2003 में खंभात की खाड़ी में एक प्राचीन, डूबे हुए शहर के खंडहरों की खोज काल्पनिक है, हालांकि यह वर्ष 2001 में हजीरा के तट से दूर खंभात की खाड़ी में दो शहरों के पानी के नीचे के खंडहरों की वास्तविक खोज से प्रेरित है। इस खोज पर एक विस्तृत रिपोर्ट बीबीसी टेलीविजन श्रृंखला 'अंडरवर्ल्ड' में पाई जा सकती है, जिसे ग्राहम हैनकॉक ने अपनी इसी नाम की पुस्तक पर आधारित बनाया है, जिसमें शहरों की नींव की खोज भी शामिल है। अध्याय 78 में नींव का वर्णन, निश्चित रूप से, मेरी कल्पना पर आधारित है कि यदि वास्तव में खोज की जाती तो वे कैसी दिखतीं।

सब बॉटम प्रोफाइलिंग: यह समुद्र तल के नीचे स्थित चीजों का मानचित्रण करने की एक वास्तविक तकनीक है।

तक्षक और कश्यप: तक्षक और कश्यप की कहानी, और अध्याय 79 में वर्णित तक्षक द्वारा अपने विष की शक्ति से बरगद के पेड़ को जलाने की घटना, महाभारत के आदि पर्व, खंड 5: आस्तिक पर्व, अध्याय 42 से 43 में पाई जा सकती है।

नाग: अध्याय 81 में मैंने नागों का जो वर्णन किया है, वह पूरी तरह काल्पनिक है। अध्याय 74 में मैंने नागों के जिस सिंदूरी रंग का उल्लेख किया है, वह महाभारत के आदि पर्व, खंड 5: आस्तिक पर्व, अध्याय 44 में परिक्षित की हत्या के बाद भागते हुए तक्षक के वर्णन से प्रेरित है।

गरुड़य त्रयम्बकाय: यह गरुड़ मंत्र का संक्षिप्त रूप है। गरुड़ मंत्र का पूर्ण रूप है: ॐ नमो भगवते गरुड़ाय त्रयम्बकाय सदस्त्वस्तु स्वाहा।

उच्चारण कुंजी

नीचे पुस्तक में प्रयुक्त संस्कृत/हिंदी शब्दों के ध्वन्यात्मक समकक्ष दिए गए हैं, जो पुस्तक में उनके प्रकट होने के क्रम में सूचीबद्ध हैं। समझने में आसानी के लिए, मैंने देवनागरी ध्वन्यात्मक समकक्ष और अंग्रेजी में ध्वन्यात्मक उच्चारण दोनों प्रदान किए हैं, क्योंकि अंग्रेजी ध्वन्यात्मकता हमेशा संस्कृत या हिंदी शब्दों के सटीक उच्चारण के लिए उपयुक्त नहीं होती है।

	Word/phrase	Devanagari pronunciation	English phonetics
1.	Gana	गण	gʌnn
2.	Mahamati	महामति	mə:ha:mʌti:
3.	Sangha	सङ्घ	sʌŋ
4.	Kavach	कवच	kə:vʌtʃ
5.	Sadh	साध	sa:dh
6.	Preta	प्रेत	preɪt
7.	Udnayate	उद्नयते	ʊdnə:yə:teɪ
8.	Vegita Vriddhi	वेगिता वृद्धि	veɪgɪta: vrɪdd
9.	Vikurute Vyapaniya	वीकुरुते व्यापनीय	vɪkʊrʊteɪ vya:pə:ni:ɪə
10.	Vidyutate	वीद्योतते	vɪdyɔ:tə:teɪ
11.	Laghu	लघु	lə:ghu:
12.	Gandharva krpaya vishto	गान्धर्व कृपाय वष्टु	ga:ndharv krɪpa:y vɪsht
13.	Garudaya Trayambakaya	गरुडाय त्रमंबकाय	gə:rʊda:y trə:mbə:ka:y

स्वीकृतियाँ

प्रिय पाठक, आपके हाथों में जो पुस्तक है, वह सामूहिक प्रयास का परिणाम है। इस पुस्तक को अंतिम रूप देने में कई लोगों का योगदान रहा है और मैं उनके प्रयासों और योगदान को स्वीकार करते हुए उनकी सराहना करना चाहता हूँ।

हमेशा की तरह, मेरी पत्नी शर्मिला और बेटी शायनाया के प्रति मेरी हार्दिक कृतज्ञता और आभार। इस पुस्तक को लिखने के दौरान उन्होंने मेरा पूरा समर्थन और प्रोत्साहन दिया, भले ही इससे उनके साथ बिताने का मेरा समय कम हो गया। इसके अलावा, शर्मिला ने हमेशा की तरह पांडुलिपि का पहला मसौदा सबसे पहले पढ़ा और अपनी प्रतिक्रिया दी, और शायनाया, जो स्वयं एक किशोरी है, ने मुझे विभिन्न परिस्थितियों में किशोरों के व्यवहार के बारे में कुछ बहुमूल्य सुझाव दिए।

प्राचीन ग्रंथों को आधार बनाकर पुस्तक लिखना अत्यंत कठिन है, क्योंकि ये ग्रंथ आज भी पूजनीय और अनुज्ञापित हैं। यदि मैं मिस्र या ग्रीक पौराणिक कथाओं पर लिख रहा होता, तो यह बहुत आसान होता। लेकिन वेद, पुराण, श्रीमद् भागवतम् और भगवद् गीता, ये सभी ग्रंथ आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने हजारों वर्ष पूर्व उनकी रचना के समय थे। इसलिए, दृश्यों की रचना करते समय, विचारों को विकसित करते समय या काल्पनिक तत्वों का निर्माण करते समय, मैं ग्रंथों के प्रति निष्ठावान रहना चाहता था। यह शुभा विलास के निरंतर मार्गदर्शन के बिना संभव नहीं था, जिन्होंने यह सुनिश्चित किया कि मैं ग्रंथों के प्रति निष्ठावान रहूँ और उनकी शिक्षाओं को सटीक रूप से प्रतिबिंबित करूँ। शुभा विलास पिछले दो दशकों से वैदिक ग्रंथों का अध्ययन और अध्यापन कर रहे हैं और वे रामायण: द गेम ऑफ लाइफ श्रृंखला, द क्रॉनिकल्स ऑफ हनुमान और ओपन आइड मेडिटेशन्स के लेखक भी हैं। संस्कृत में उनकी विशेषज्ञता मेरे द्वारा आविष्कृत मंत्रों के प्रमाणीकरण में भी अमूल्य सिद्ध हुई।

मैं आर्टिका बख्शी को धन्यवाद देना चाहता हूं, जिन्होंने हमेशा की तरह पहले मसौदे को पढ़ा और मुझे अपनी बहुमूल्य प्रतिक्रिया दी।

मेरे मित्र और विलक्षण डिज़ाइनर आनंद प्रकाश ने मेरी पुस्तकों के लिए शानदार कवर डिज़ाइन करने की अपनी परंपरा को जारी रखते हुए एक ऐसा कवर बनाया जो पुस्तक के बिल्कुल अलग विषय के अनुरूप था, साथ ही कथानक के कुछ प्रमुख तत्वों को भी प्रतिबिंबित करता था। ईशान त्रिवेदी ने कवर का चित्रण किया और आनंद की कल्पना को साकार रूप दिया, जिसके लिए मैं उनका आभारी हूँ।

मैं पेट्रीसिया मैकएवेन, फिलिस आइरीन रैडफोर्ड, जॉन सी बन्नेल और एलिजाबेथ गिलिगन का आभारी हूं, जो मेरे लेखकों के शोध समूह में मेरे साथी लेखक हैं, जिन्होंने उन प्रमुख शोध विषयों पर मेरे सवालों के जवाब दिए जिनसे मुझे कभी-कभी जूझना पड़ता था।

इस तरह की किताब में, चित्र पाठक के अनुभव को और भी समृद्ध कर सकते हैं, जिससे उन्हें उन चीजों की कल्पना करने में मदद मिलती है जिन्हें मैंने लिखते समय देखा था। प्रियंकर गुप्ता, जिन्होंने मेरी पिछली किताबों के चित्र बनाए हैं, ने एक बार फिर मिस्र (स्फिंक्स और ग्रेट

पिरामिड) और माया के दृष्टिकोण से गुरुकुल के चित्रों के साथ उत्कृष्ट काम किया है। ईशान त्रिवेदी ने पांडव जलप्रपात की भव्यता और सुंदरता को जीवंत रूप से प्रस्तुत किया है और नागों से लड़ते हुए गरुड़ के मेरे चित्रण को भी साकार किया है।

वेस्टलैंड के सभी लोगों, विशेष रूप से गौतम पद्मनाभन, कृष्ण कुमार नायर, श्वेता भगत और पूरी मार्केटिंग टीम को बहुत-बहुत धन्यवाद, जिन्होंने इस पुस्तक के लिए जबरदस्त सहयोग दिया है।

हमेशा की तरह, मेरी संपादक संघमित्रा बिस्वास ने मेरे लेखन को निखारने और ऐसे बदलाव करने का शानदार और बहुत ही गहन काम किया, जिससे यह सुनिश्चित हो गया कि कथा अधिक सहज और कथानक के अनुरूप हो।

अंत में, मैं अपने माता-पिता का तहे दिल से आभारी हूँ जिन्होंने मुझे बचपन से ही पढ़ने-लिखने के लिए प्रोत्साहित किया और बड़े होने पर मुझे वो सभी किताबें उपलब्ध कराईं जिन्हें मैं पढ़ना चाहता था। उनके प्रोत्साहन और आशीर्वाद के कारण ही मैं लेखक बनने के अपने बचपन के सपने को पूरा कर पाया हूँ।

हालांकि मैं उन सभी लोगों के योगदान को स्वीकार करता हूं जिन्होंने मेरा समर्थन किया है, लेकिन इस पुस्तक में तथ्यों या विवरणों की सभी त्रुटियों और कमियों के लिए मैं पूरी तरह से जिम्मेदार हूं।

क्या आप क्वेस्ट क्लब में शामिल हो गए हैं?

अगर आपने अभी तक क्वेस्ट क्लब के सदस्य के रूप में पंजीकरण नहीं कराया है, तो इसके बारे में कुछ जानकारी। सदस्यता निःशुल्क है और इसके माध्यम से आप क्वेस्ट क्लब के उन कार्यक्रमों में भाग ले सकते हैं, जहाँ पाठक मुझसे ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों से बातचीत करते हैं। ये कार्यक्रम पूरे भारत में आयोजित किए जाते हैं। आने वाले वर्षों में क्लब के सदस्यों के लिए निःशुल्क ई-पुस्तकें, क्विज़, पहेलियाँ, प्रतियोगिताएँ और मेरी भावी पुस्तकों के विशेष पूर्वावलोकन उपलब्ध होंगे। अंत में, आप मेरे साथ मेरी पुस्तकों के शोध में शामिल हो सकते हैं और छवियों, वीडियो और मेरे शोध नोट्स तक निःशुल्क पहुँच प्राप्त कर सकते हैं। आप मेरी पुस्तकों के पात्रों, स्थानों और घटनाओं के बारे में भी अधिक जान सकते हैं। रोमांच और रहस्य से भरी एक रोमांचक यात्रा सभी क्वेस्ट क्लब सदस्यों का इंतजार कर रही है। आप यहाँ पंजीकरण कर सकते हैं:

www.christophercdoyle.com/the-quest-club पर तुरंत मुफ्त में जाएं।

***** *****

sjeet